

# प्रबन्धचिन्तामणिस्थश्लोकानामकोराद्यनुक्रमः



|                        |     |                          |     |
|------------------------|-----|--------------------------|-----|
| अकरात्कुरुते .....     | २५२ | अर्था न सन्ति ....       | ८७  |
| टि. अक्षत्रक्षत. ....  | २९७ | अर्थिम्यः कनकस्य....     | २४७ |
| अगाधः पाथोधिः....      | २९८ | अर्द्ध दानववैरिणा....    | १२७ |
| अयान्तरिक्ष.....       | २२१ | अलंकारः शङ्का. ....      | ६३  |
| अद्य मे फलवती....      | २६९ | अशाकमोजी .....           | ३१६ |
| अवाम धामधामाकं         | २०६ | अष्टमो मरुदेव्या....     | १५२ |
| अधिकाराश्रिभिर्मसैः    | ४४  | अष्टौ हाटककोटयः          | ६८  |
| अन्त्योप्याद्यः.....   | ९   | असेव्या मातङ्गाः ....    | १८  |
| मा. अन्धयसुपाण.....    | ७२  | असौ गुणी नमतु ....       | ११६ |
| अन्नदानैः पयः ....     | २६८ | अस्य श्रीभोज ....        | १२६ |
| मा. अन्नदिणे शिव. .... | ९६  | अहिंसालक्षणी ....        | १०२ |
| अपुत्राणां धनं ....    | २१७ | अहो मे सौभाग्यं....      | १२५ |
| अपूर्वैयं धनुः .....   | १५  | मा. आई विजयी आई....      | ६९  |
| अमावप्रभवेः .....      | ३०७ | आकाश प्रसर ....          | २९९ |
| अभूत्प्राची पिङ्गा.... | १२७ | आज्ञामद्भो नरेन्द्राणां  | ३७  |
| अभूमिजं .....          | ३१७ | आज्ञावर्तिषु मण्डलेषु    | २४३ |
| अभ्युदृता वसु.....     | ९५  | आतङ्ककारणं .....         | २३५ |
| अमुष्मै चौराय.....     | ६७  | आदौ मयैवायं ....         | १९७ |
| अमेध्यमश्राति.....     | ९७  | मा. आपण पर्ई प्रमु. .... | २०४ |
| मा. अम्बयफलं सु.....   | १२१ | आपदर्थे धनं .....        | ६४  |
| अम्बा तुष्पति न ....   | ७२  | आपद्रतं हसति.....        | ६२  |
| मा. अम्भणिओ संदेस....  | १७  | आप्ते दर्शनमागते ....    | १४  |
| अयमवसरः सरः ....       | ६५  | आद्याख्याधिगमात्....     | ९८  |
| आयि खलु विषमः....      | ९८  | आमोदैर्मरुती .....       | १२५ |
| अये लाजाउच्चैः ....    | १२५ | आयान्ति यान्ति च         | २६७ |

|                              |                               |
|------------------------------|-------------------------------|
| आयुक्तः प्राणद्वौ .... १५६   | कविपु वादिपु ..... १२८        |
| आरनालगल. .... १०२            | मा. कसिणुज्जलो ..... २७       |
| आहते तव निः ..... १९         | मा. कसुकुरु रे पुत्त .... १२१ |
| मा. इकह फुछह ..... २३८       | मा. काणवि विरह ..... ७०       |
| इदमन्तरमुप ..... ६९          | कात्वं सुन्दरि जल्प ३७९       |
| इयमाकृतिरयं ..... ८२         | कानीनस्य मुनेः ..... १०१      |
| इयमुच्चधियां ..... ३०२       | किं कारणं नु धन .... ९२       |
| उज्ज्वलगुणमभ्युदितं २११      | किं कृतेन न ..... २२३         |
| उत्थायोत्थाय ..... १११       | कियन्मात्रं जलं ..... ६६      |
| उद्धमकेशं पद ..... ४८        | किं वर्ण्यते कुच .... १०४     |
| उन्नाहश्चिबुकावाधिः १०४      | कुक्षिः कोटर एव. .... १२३     |
| टि. उपत्यकायामस्य .... १७    | कुमुदवनमप. .... ८६            |
| टि. उपोदरागाधित. .... २२     | टि. कुशाग्रपुर ..... १७       |
| उमया सहितः ..... ८           | टि. कूर्मः पाताल. .... १२४    |
| मा. उरुयन्तरवाहलयी .... १६   | मा. केवलहुजं न ..... १६९      |
| मा. ऊग्या ताविजं न जाहें ४६  | मा. केवलहुज वि ..... १६६      |
| मा. एऊ जम्मु नग्गुहं .... ८० | मा. को जाणइ तुह ..... १४१     |
| एकं मित्रं भूपतिः .... २०४   | कोणे कोङ्कणकः .... ७७         |
| एकस्त्वं भुवनो ..... २६२     | कोशेनापि युत ..... १९९        |
| एतस्मिन्महाति ..... २९०      | क्वचित्चूलं क्वचित् .... २६३  |
| एतस्यास्य पुरस्य .... १९४    | क्वचिदुष्णं ..... ३१४         |
| एवं वदन्ती ..... २२१         | क्षुत्सामः पयिको .... ८७      |
| कः कण्ठीरवकण्ठ. .... १६४     | क्षुद्राः सान्ति सहस्रशः १२९  |
| मा. कष्टं काउं मुकं .... २०  | क्षोणीरक्षण. .... २९७         |
| कतिपयीदवस. .... ६९           | मा. खङ्गारार्हं ..... १९८     |
| कतिपयपुर. .... ९१            | खद्योतशुतिमो ..... १६७        |
| कथाशेषः कर्णौ .... २२७       | खिन्नं मण्डलमैन्दवं .... १२९  |
| कन्ये कासि न .... १२३        | गतमायारात्रिः .... १०९        |
| टि. कपिलात्रेय. .... २८      | मा. गयगयरह. .... ६१           |
| मा. कयलितरू विज्ज ..... ३१   | गते तस्मिन् ..... २२१         |

|                                   |     |                               |     |
|-----------------------------------|-----|-------------------------------|-----|
| गिरनार .....                      | १९८ | त्रयोदशेश्वर .....            | १९८ |
| गुम्फान्विधूय .....               | १   | त्रिभिर्वर्षास्त्रिभिः .....  | २४५ |
| गूर्जरणाभिदं .....                | ३५  | त्वचं कर्णः शिबि .....        | २६२ |
| गोपीपीनपयोधर. ....                | ११८ | त्वं चेत्संचरसे .....         | २९० |
| गौरी रागवती .....                 | २६३ | त्वयि जीवति .....             | २९८ |
| घटो जन्मस्थानं .....              | १२६ | दत्ता कोटी सु .....           | १२३ |
| चक्रः पमच्छ .....                 | २९७ | दरिद्रान्सृजतः .....          | २९८ |
| चतुर्भासी यावत् .....             | २३३ | दातुर्नार्थिसमो .....         | १४० |
| चिन्तागम्भीरकृपात् .....          | ९८  | दानं प्रियवाक् .....          | २६५ |
| चौलः क्रोडं पयोधेः .....          | ७७  | दानं वित्तादृतं .....         | ७०  |
| छल्लीछन्नद्रुम .....              | १७३ | दारिद्र्यानल .....            | ८७  |
| छिन्नं ग्रहाशिरो ....             | २९० | दिदृक्षुर्भिक्षुरायातः ....   | १५  |
| जगदेव जगत् .....                  | २९८ | दिग्वासा यदि तत् ....         | ९६  |
| टि. मा. जह जह पणसिणि .....        | २७  | दीयन्तां दशलक्षाणि ....       | १५  |
| मा. जह सरसे तह ....               | २९  | दुःप्रापेषु बहु .....         | ३२२ |
| मा. जा मति पच्छइ ....             | ६२  | दृष्टे श्रीभोजरामेन्द्रे .... | १२८ |
| टि. जार्णे भोजनं .....            | २८  | देव त्वत्करनीरदे ....         | १२४ |
| टि. जुहोमि जीवान् .....           | २२० | देव दीपोत्सवे .....           | ८०  |
| मा. जैसलमोदि मवाह ....            | १५९ | देव श्रीगिरिदुर्गे. ....      | १५३ |
| मा. जो करिवराण .....              | २४७ | देवादेशय किं .....            | १६३ |
| मा. जो जेण मुद्धम्माम्मि. ....    | १३९ | देवे दिग्विजय .....           | ९८  |
| मा. झाली तुष्टी किं न ....        | ६१  | देशाधीशो ग्राम. ....          | ९२  |
| मा. तहं गकूया गिर. ....           | १५८ | मा. दोमुहय निरकरार ....       | १०० |
| तत्कृतं यन्न केन ....             | ६८  | हाम्यां यन्न हरिः ....        | ९५  |
| टि. तन्न चार्द्धः सांगतानां ..... | १७  | धनुः पौष्पं मौर्वी ....       | १२७ |
| तत्र प्रतापजयनात् .....           | ७१  | धर्मच्छदप्रयोगेण ....         | २६३ |
| टि. तस्मिन्त्यते .....            | २२० | धर्मलाभ इति .....             | १४  |
| मा. ताण पुरोयं .....              | २९  | पारायित्वा त्वया ....         | ७४  |
| मा. तित्थयरगुणा .....             | २५८ | टि. पारावरस्तदसि. ....        | १२४ |
| त्यागैः कल्पद्रुम .....           | १२४ | पाराधीश परा .....             | १०१ |

|                             |     |                                |       |
|-----------------------------|-----|--------------------------------|-------|
| विग्रोहणं .....             | ४   | पञ्चन्य इव भूतानां ....        | २२६   |
| नग्नस्तिष्ठति .....         | २९१ | पाणिग्रहे पुलकितं ....         | ९६    |
| नग्नो यत्प्रतिभा .....      | १७१ | पातु वो हेमगोपाल ....          | २२७   |
| नग्नैर्निरुद्धा युवती. .... | १६४ | पिवेद्वटसहस्रं .....           | १७७   |
| नद्युत्तारेध्व. ....        | २४६ | मा. पुत्रे वाससहस्रे ....      | १८१९४ |
| न भिक्षा दुर्भिक्षे .....   | ८७  | पूर्णः स्वामिगुणैः ....        | २६९   |
| न मानसे माद्यति .....       | १९९ | टि. पोतानेतात्रय .....         | ७६    |
| न यन्मुक्तं पूर्वेः .....   | २१६ | प्रतापो राजमार्त्तिण्ड ....    | २९०   |
| न सा समा यत्र .....         | १३० | टि. प्रतिदिशं विलोकयन्ते. .... | १७    |
| नाभेः सुतः स .....          | १९२ | प्रतिमाधारिणो .....            | २९८   |
| नारीणां विदधाति ....        | १६७ | प्रबन्धानां .....              | ३९२   |
| नाहं स्वर्गफलोप. ....       | ९३  | प्रहत मुरजमन्द्र .....         | १०४   |
| निजकरनिकर. ....             | ६९  | प्रायः सन्ति प्रकोपाय. ....    | २९१   |
| निजानपि गुजान् ....         | १२६ | प्रीणिताशेषविश्वासु. ....      | ११३   |
| टि. निपीयतां .....          | २२० | बड्डालसौणोपाल ....             | १२८   |
| मा, नियऊयरपूरणम्मि .....    | ७४  | चिन्दवः श्रीयशो ....           | २६०   |
| टि. निर्वाता न कुटी .....   | ७९  | दुर्वेः प्रबन्धाः .....        | २     |
| नौरक्षीरं गृहीत्वा ...      | १२६ | भजेन्माधुकरां .....            | ९०    |
| नृपव्यापार. ....            | २६९ | भवत्परीक्षार्थं .....          | २२१   |
| नैवाकृतिः फलति ....         | १८८ | भवबीजाङ्कुर. ....              | २१३   |
| मा. पइली ताव न .....        | १९७ | भुञ्जीमहि वयं .....            | २०४   |
| पञ्चाशत्पञ्च .....          | ९७  | भूपः प्राहरिके .....           | १३    |
| पञ्चाशद्भस्त. ....          | १२२ | भूर्मि कामगीव .....            | १४४   |
| पञ्चाशदादौ किल ....         | १९१ | भैकैः कोटर. ....               | ७९    |
| म. पद्मो नेहाहारो .....     | ३०  | भैजेवकीर्णतां .....            | १७१   |
| मा. पणसयरी वासाणं ....      | २७९ | भोगीन्द्र बहुधा ....           | २७१   |
| पयः प्रदानसामर्थ्यात् ....  | ९७  | भोजराज मया .....               | ७९    |
| मा. परपत्न्यापवर्त्तं ..... | ७९  | भोजे राज्ञि दिवं ....          | १२२   |
| मा. परिओसमुन्दराइं .....    | २८  | मा. भोय एहु गलि .....          | १०९   |
| परोक्षे कार्यहन्तारं ....   | १९३ | मा. भोलि मुन्धि म गन्वु. ....  | ६१    |

|                                 |                               |
|---------------------------------|-------------------------------|
| भ्रातः संवृणु पाणिने .. १४८     | यदि नाम् कुमुद ..... १७०      |
| मा. मगं चिय अलहन्तो... २७       | यदि नास्तमिते ..... ६६.       |
| टि. मद्रोः शृङ्गं शक्र..... २०  | यदेतच्चन्द्रान्तर्जल .... ६७  |
| मन्दश्चन्द्रकिरीट..... ३००      | यन्मार्गेपि चतुः ..... ३११    |
| मस्तकस्थायिनं ..... ११०         | यशःपुञ्जो मुञ्जः..... ६२      |
| महाराज श्रीमन् ..... १२६        | यशोवीर लिख ..... २६०          |
| महालयो महा ..... १५४            | यस्यान्तर्गिरिश..... १९३      |
| मा. माहिबीढह ..... २४८          | यांछिञ्जिनो..... २९८          |
| मा. महुकारसमा ..... ९०          | यावद्विवि कितवौ ..... ३२३     |
| मा. मा जाण कीर ..... २९         | यूकालक्षशतावली..... २३४       |
| मा. माणुसंढा दह ..... ११२       | यूपं कृत्वा पशून् ..... ९४    |
| मात्रयाप्पाधिकं ..... १८९       | येषां वल्लभया ..... ८१        |
| मानं मुञ्च सरस्वति .... १८९     | यौष्माकाधिप ..... ७६          |
| मान्वाता स मही ..... ९८         | रत्नाकर इव..... २९८           |
| गा मङ्कड कुरु ..... ६२          | रत्नाकरात्सद्गुरु ..... १     |
| मा स्म संधि ..... १४७           | रथस्यैकं चक्रं ..... १२७      |
| मीनानने प्रहसिते ..... २९       | रसातलं यातु तव ..... ९३       |
| मुक्ता भूषणमिन्दु .... ११९      | राजन्मोज कुल ..... ७१         |
| मुखं पद्मदल ..... १९३           | राजप्रतिग्रह ..... २०६        |
| मुखे हारावातिः..... ११८         | राज्यं यातु श्रियो ..... १८६  |
| मा. मुग्गमासाइ ..... ९१         | मा राणा सखे वाणिजा..... १५८   |
| मा. मुञ्ज खड्ग ..... ९६         | रात्रौ जानुर्दिवा ..... ७४    |
| मा. मुञ्ज भणइ ..... ९९          | रे रे चित्तं कथं ..... १३८    |
| मृगेन्द्रं वा मृगारिं ..... २७८ | रे रे यन्त्रक मा ..... ६२     |
| मृतो मृत्युर्जरा ..... १११      | लक्षं पुनर्लक्षं ..... ६६     |
| मेदिन्यां लब्धजन्मा ..... ४७    | लक्ष्मीक्रीडातवागं ..... १२९  |
| यः पञ्चग्राम ..... २६६          | लक्ष्मीयांस्पति गो ..... ६२   |
| यत्र तत्र समये ..... २१३        | लक्ष्मीश्रला शिवा..... २६९    |
| यथाश्रुतं ..... ३२२             | मा. लच्छि वाणि मुह..... २३९   |
| यदपाररति मेघः..... ४०           | लब्धलक्षा विपक्षेपु ..... १९४ |

मा. लिङ्गं जिणपत्रत्तं.....२५०  
 लिङ्गोपजीविनां .....२५८  
 लोकः पृच्छति मे ..... १११  
 वक्राम्भोजे सर ..... १५१६८  
 वचनं धनपाल ..... १०२  
 मा. वट्ठवाण..... १५९  
 मा. टि. वन्दे अजमुहत्थि.. १९  
 वन्यो हस्ती स्फुटिक.. ६  
 वरं भट्टिर्माव्यं .....२४९  
 गा. टि. वरिसाणे सय..... २३  
 वर्षामु यः .....३१७  
 वस्त्रप्रतिष्ठाचार्य ..... १७०  
 वहनि भुवनश्रेणी..... १२८  
 मा. वादीतो वट्ठवाण..... १५९  
 वादविद्यावतो ..... १७१  
 वासो जडाण ..... २८९  
 विजितव्या लङ्का..... १२७  
 विद्वन्मोक्षिणा ..... १२९  
 विद्धा विद्धा शिलेयं.... ११७  
 विवाहयित्वा यः.....३०५  
 विश्वामित्रपराशर ..... २०५  
 विलासहृष्ट ..... ११३  
 वीरिणोपिहि ..... ९३  
 व्रजतर प्राणाः ..... ८७  
 व्यापिद्धा नयने..... २२७  
 शक्तिद्वयपुटे ..... १२७  
 शीतेनोन्मुपितस्य ..... ७९  
 शीर्षं नाम गुणः..... २९०  
 शीर्षं प्रमाणे..... १०१  
 शीर्षं शम्भुः..... १०३

श्रीनाभिभूः ..... १  
 श्रीमज्जेनृगारि ..... १८९  
 श्रोतव्यः सौगतो ..... १०२  
 श्वः कार्यमद्य ..... १११  
 संग्रहिकपरः प्राप ..... १४०  
 संपत्तौ नियमः ..... १४१  
 संसारमृगतृष्णा ..... १३८  
 संसारार्णवसेतवः..... २२४  
 मा. सइरू नही स ..... १५८  
 मा. सउचित्त हरिस..... ६०  
 स एष भुवन ..... २६  
 टि. सत्यं त्वं भोज ..... ७७  
 सत्यं यूषं तपो ..... २४  
 सत्रागारमशेष ..... १७१  
 सात्ति ही गिहिमेत्ते.... २०७  
 सदृष्टमद्रुण ..... २९१  
 समुद्यते साधु ..... २२१  
 समुन्नतयन ..... १२७  
 मा. सयलजणाणन्द ..... ३०  
 सरस्वती स्थिता..... १५  
 सर्वदा सर्वदः ..... १५  
 मा. सायरखाई लंक..... ६३  
 सिंहो बली हिरद.... २०५  
 सिद्धेः स्तनशैल..... १४४  
 मुरुतं न कृतं..... २६८  
 मुरताय नमः..... १०५  
 मुह्येवेन्द्रस्य ..... ६३  
 सेनाङ्गपरिवार ..... १४०  
 सो जयउ कूड..... १८९  
 मा. सोहग्गोउ मादि..... २२८

|                          |     |                          |     |
|--------------------------|-----|--------------------------|-----|
| स्नाताः प्रावृषि .....   | ४८  | टि. हत्वात्मानं तत्..... | २२१ |
| स्वप्रतापानले येन ....   | ४७  | हत्वा नृपं पतिं .....    | ११६ |
| रवर्गाक्षोपाल कुत्र..... | १२६ | हरिरिव बलि .....         | १४८ |
| स्वापदि तथा महान्तो..    | १२३ | हारो वेणीदण्डः.....      | २६  |
| हंसैर्लब्धप्रशंसैः ..... | २६१ | मा. हेम तुहाला कर.....   | १३६ |
| हंहो श्वेतपटाः .....     | १६३ | मा. हेल निदलिय.....      | ७२  |
| हठादारुष्ठानां .....     | १२५ |                          |     |



## ॥नरनगनगरनद्यादिविशेषनाम्नामकराद्यनुक्रमः॥

|                         |             |                             |         |
|-------------------------|-------------|-----------------------------|---------|
| अग्निवेताल .....        | १६१७९       | अर्द्धाष्टमदेश .....        | २०७     |
| अङ्गराज.....            | १२८         | अर्जुद .....                | २०११२८३ |
| अच्छोदक ....            | १५५         | अर्जुदनामा नागः ....        | २८४     |
| अजयदेव ....             | २४९         | अर्जुदवसहिका .....          | २५९     |
| अजयपाल.....             | २४५१२४६ख.   | अवान्ति .....               | २७०१३१२ |
| अणार्हछ .....           | ३३१८०११९१   | टि. अवान्तिसुकुमाल.....     | १६      |
| अणार्हछपुर...           | ३४१४३१४७    | टि. अशोकचन्द्र .....        | १६११८   |
| १८४१२०३ख २१६१२१८        |             | टि. अशोकश्री .....          | १६      |
| २३२१२३३१२३५             |             | अश्विनीकुमार .....          | ३१६     |
| अनुपमा..                | २५२१२६४१२६५ | अष्टापद .....               | ३०८     |
| २६७१२६९                 |             | अष्टापदप्रासाद .....        | २५७     |
| अनुपमसरः.....           | २५६         | टि. मा. अस्तावबोहितित्थ २२५ |         |
| अन्निकापुत्र .....      | १८११९       | आकडदेव .....                | ३८      |
| टि. अभयकुमारः ....      | १८          | आकडेश्वर .....              | ३८      |
| अभयदेवसूरिः २७४१३११ख    |             | आकेवालीयात्रामे ....        | २६८     |
| अम्बह ....              | २०११२०२     | टि. आत्रेय ....             | २८ ख    |
| अम्बिका.....            | ३१८         | भानाकभूष .....              | १९०११९९ |
| अरिष्टनेमिप्रासादे .... | १६१         | २४२ ख                       |         |
| अर्जुन .....            | १२४         | आनाकनन्दन .....             | २५०     |
| अर्जुनदेव .....         | २५०         | आनादिभूपाति .....           | २३५     |





|                            |                               |
|----------------------------|-------------------------------|
| १३१११३२ ष १३३              | टि. कालामिरुद्र .... २१       |
| १३४१ २२७१२३७ ग             | कालिका .... ९                 |
| २६२१२९८                    | कालिदास .... ९                |
| कर्णदेवस्य ..... १९२       | कालिन्दी .... १८९             |
| कर्णमेरुप्रासाद... १७९११७६ | टि. मा. कालियकालकान्वय. २७    |
| कर्णसागर .... १३४          | काशहृदनगर .... ५६             |
| कर्णाट. १६१११६२११८५१       | काशिनगरी .... २२७१२४३         |
| टि. २४३                    | २९२                           |
| कर्णावती .... १३७ ग १६१    | टि. काश्मीर .... १४५          |
| १६२१२०९ ख ।                | कीरे .... २४३                 |
| कर्णेश्वर .... १३४         | कीर्तिराज .... ४५             |
| कर्पूरकविः .... १२३        | कुङ्कुणदेश .... २०११२०२       |
| कलविणि .... २०२            | टि. कुङ्कुणेश्वर १६१२११२२११९४ |
| कलहपञ्चानन १९८ ख. १९९      | टि. कुणाल .... १६             |
| कल्याणकटकै ..... ३१        | टि. कुन्तलपतेः .... २९७       |
| काकरग्राम .... ३४          | कुन्तलेश्वर .... १२८          |
| काकल .... १६९              | टि. कुमरस्य .... २४४          |
| काकू .... २७५ ख            | मा. कुमरनरिन्दो १९४१          |
| कातन्त्र .... १४८          | टि. कुमार .... २४४            |
| टि. कात्यायन .... २२       | कुमारदेवी .... २५१            |
| कान्हडदेव .... १९५ ग       | कुमारदेवीसरः .... २५६         |
| कान्हनान्नि .... २३१       | कुमारपाल .... १९१ ख.          |
| कान्त्पां'पुरि' २८५१३१२    | १९२ख. १९९४१९५                 |
| कामन्दकीयनीति .... २२५     | १९७ख १९९१२०३                  |
| कामलता .... ४५१४६          | २०४१२१८१२२५१                  |
| कामशास्त्र .... १०३        | २२६१२२७१२२९                   |
| कामित्तर्था .... २८३       | २३०१२३७१२४१                   |
| कालक .... २७               | २४३ । ग १२४५                  |
| कालभैरवीय .... १४५         | २४८१२५७                       |
| कालमेघ .... ३१८            | टि. कुमारपालचरित्र. ... २२२   |

|                                   |                                  |
|-----------------------------------|----------------------------------|
| कुमारपालविहारे २२८।२३६।           | गुणचन्द्र .... १                 |
| कुमाराविहारभासादे .... २३३        | गूर्जरदेश १६१।दि. २४३।           |
| कुमारसंभव .... ९६।                | गोदावरी .... २९।३९।९८            |
| कुमुदचन्द्र .... १६१।ख. १६३       | गोनश .... २०८                    |
| ख. १६९।ख १६६।ग १६७                | गोवर्द्धनराजा .... २८९           |
| १६८।ख १६९।ग १७०।ख                 | गोविन्दाचार्य .... ७२            |
| कुक्कुडादेवी .... १६९             | गौडदेश ८०।१७४।२८९                |
| कुलचन्द्रेण .... ८०।              | गौतम .... २२                     |
| टि. कुशाग्रपुर .... १७            | गौरी .... ३१९                    |
| कुसुमपुरे .... २८७                | चउलादेवी .... १९१।ख              |
| टि. कूणिक .... १०८                | चउलिङ्गनामा १९७।१९९              |
| रूपाणिकामञ्जव .... ३२०।           | टि. चण्डिका .... १४९।ख.          |
| केदाचण्डक .... १६९।               | टि. चण्डे ..... १४९।ख.           |
| कोच्छरजा .... १३४।                | टि. मा. चन्द्रगुर्जा राया. २२४   |
| टि. कौणिक .... १६१।८।ख.           | चन्द्रनाथदेव .... ४८             |
| कोपकालानल .... २९९।               | टि. मा. चन्द्रलेहा .... २६।२२४   |
| कोछापुर .... ३०।१८२।              | टि. चन्द्रगुप्त .... १६।१७।२२९   |
| कौटिल्य २०१।१०२।२०३               | चन्द्रप्रभ .... २९७।२७८          |
| २४३।२४४                           | चन्द्रलेखा. ३१०।                 |
| टि. कौशाम्बी .... १८              | टि. चन्द्रायती .... २९९          |
| टि. क्षितिप्रतिष्ठ .... १७        | टि. चम्पकपुर .... १७             |
| क्षेत्राधिपत्युत्पत्तिप्रबन्ध ३१९ | चाहदेव .... २०८।२०९              |
| क्षेमरान .... ३९                  | चाचिगेश्वर .... ४८               |
| मा. महार .... १९८                 | चाणाक्य १०३।१६४।                 |
| मैत्रपहास्थाने .... २७२           | चान्द्र .... १४८                 |
| महा .... १८९                      | चापोत्कटवंश .... ३८              |
| मण्डपूरस्वति २१२।२१३              | चानुष्ठा .... २०८                |
| २१४                               | चामुण्डराज ३७।४८।२५१             |
| माननी .... २४३।                   | टि. चारित्र्यमुन्दगाणि .... २२२। |
| माहरासिद्ध .... २४९               | २४४                              |

चाविग २०७।२०८।ख.२०९।मा. १९८।१९९।१८९  
ख. २१० ख.

चाहड . . . २९१

चित्रकूट . . . १९९

चिन्तामणिगणेश . ३१२

चौडदेश . . . २८९

जगन्मपणाविरुद्ध ४९

जगद्देव २९६ग.२९७ग.२९८

छ २९९ ख.

जम्बाभिवान . . ३२। ३४

जम्बद्वीप . १६३

जयकशीराज १३१।१३२

६८९ ख.

जयनन्द १८४।१८५।२९२

जयतलदेवी २९२।२९६

जयदेव १६२

टि. जयदेवभुवन १४९

जयन्तोदेवी १३४

जयमङ्गलमूरि . . . १५४

जयमिहदेव १३३।१७८

टि. १४९।१९०

टि. जयसिंहाचार्य .... १८

जयमेनमूरि २६७

जामातृश्रुद्धि . ९

जाम्ब .... १५९

जावालिपुर . २५९

जालन्धर . . . २४३

जालितरु . . . ३४

जिनदत्तमूर्तिवार्यटीयः २५८

जमिन्वाहनः . . २६२

जैसल. १९८।१९९।१८९

जैत्रभृगारिदेवनृप . . १८९

जैत्रसिंह . .... २६९

जैनव्याकरण . .... १४६

जैनेन्द्रव्याकरण . . . १४६

ज्ञानसागर . . . .... २४

झालाझातीय .... . १७९

झोलिकाविहारे .... २३८

झामर ... ७६ टि. ७७ ग.

७८।ख ८२।८३।१२०

१२१।१२२

झालदेशीय... १५६।२३७

ढङ्कशाला . . . २८२

ढङ्काभिवान . . . ३०८

तिलकमञ्जरी. . . ९९।१००

तुङ्गनामा . . . ३०१ ग.

तेज पाल . २५१।२५२

२५३।२६२। ७ २६३

२६५।२६६।२६७ ग.

२६८।२६९

तैलिप . . ५८।५९।७८।ग.

त्रिभुवनपाल . . . . १९१

त्रिभुवनपालविहार . . २१९

त्रिपुरुषधर्मस्थान. ४४।४५

२०३ ख.

त्रिपुरुषप्रासाद. ४३।१४९

त्रिपाटिशलाकापुरुषचौरत्र. २१६

त्रैलोक्यपाद .... ३१८

दण्डकुमार ... . ३८

|                          |                              |
|--------------------------|------------------------------|
| दधीचि .... २६२।२९८       | धुन्धुक्कनगर .... २०७।२०८    |
| दशरथ .... १६२            | २३८                          |
| टि. दशवैकालिक .... १८    | नगरपुराणे .... १५१           |
| मा. दसासिरु .... ६३      | टि. नडोलग्रामे .... १४५      |
| दान्त .... १०            | टि. नन्द १६।१९।२७।१४ ३०६     |
| टि. दिवाकरनामानं .... २१ | नन्दिर्वर्द्धन .... २८७      |
| दीप .... २४३             | टि. नन्दिपेण .... १८         |
| दुर्लभराज .... ४९        | नन्दीश्वरकर्मस्थायी .... २५६ |
| दुर्लभसरः .... ४९        | नन्दीश्वरावतारे .... २०५     |
| देमतीराइया .... १३२      | नयचक्रग्रन्थ .... २७४        |
| देवचन्द्र .... २०८।२०९   | नवघनाभिधं .... १५७।१५९       |
| देवराज .... २५०          | नव्यभोजस्वामिप्रासाद ८५      |
| देवसूरि .... १६१ ख १६२   | नहुष .... २१६                |
| ख १६३।१६४।१६६ ग.         | नाइकिदेव्या .... २४८         |
| १६९।१७१ घ.               | टि. नागज्जुण .... २५ ख २६ ग  |
| देवाचार्य .... १६१ १६२   | टि. नागपुरुष .... २८         |
| १६३।१६७।ख।१६८            | टि. नागहृदे .... २५।३१       |
| १६९।१७० घ.               | तागाज्जुन .... ४७।३०८        |
| देवादित्य .... २७२       | ३१।०।३१२                     |
| छासवत्यां .... ३०६ ग     | नाचिराज .... १२३ ह.          |
| धनदः .... ३२०।३२१        | नाभाग .... २१६               |
| धनपति .... ३०९           | नाभि. १। टि. २१।१५२ ग.       |
| धनपाल. ९९।१०१।१०२        | नीलकण्ठेश्वर १२३।२१२         |
| धनेश्वर .... ३१२         | टि. नेमिचन्द्रसूरिः .... २३  |
| धरणिग .... २६७           | नेमीश्वर .... १५९            |
| वर्णेन्द्र .... ३११      | टि. पञ्चाल .... २८ ग         |
| घर्मदेव .... १           | पञ्चासरग्राम .... ३१।३४      |
| धामणालिया .... ३१७       | पञ्चासरचेत्य .... ३४         |
| भासः. ४९।७९।८९।१०१       | पत्तनं .... १९२।२५७          |
| १४३।३१४।३१७।३१८          | टि. पद्माकर .... १४५ रा.     |

|                               |                              |
|-------------------------------|------------------------------|
| पद्मावती .... २९९ घ           | एथ्वीराज.... ३००व ३०२        |
| पम्पा .... १९९                | ३०१ग.३०४                     |
| परमर्दी .... २४९।२९९।टि.      | प्रतिष्ठानपुर .... २४।२७     |
| २९९।ख ३००ख                    | २९ख.३०                       |
| परमार .... ९९ ख.              | मद्युम्नाचार्य .... १७०      |
| परमारवंश .... ४९              | मन्त्रन्वाचिन्तामणि .... १।२ |
| पराशर ....                    | ममासक्षेत्र.....२२।२९७       |
| पछीग्राम .... २७९ टि.         | प्रवचनसारोद्धार .... २३      |
| दि पाटलीपुत्रनगर. .... १७।२७  | भियङ्गुमञ्जरी .... ६         |
| ३०९                           | फुलडाभिधान ..... ४६          |
| पाटलीपुर .... २७१             | वन्धेरानगर .... २४०          |
| पाताक .... २७९                | बप्पभाट्टिसूरि .... २३       |
| दि पादलिप्त .... २७ मा.       | बप्पहट्टि .... ३।८           |
| पादलिप्तपुर .... २९९          | वर्जर ... १८३ ख.             |
| पादलिप्ताचार्य .... ३०८       | बलानकमण्डप .... ३१९          |
| मा. दि. पायलिप्तायरिण.... २९  | बलि .... २६२।२९८             |
| पार्श्वनाथ. २१९।३०९ ख.        | बल्लाल .... १२८              |
| दि. पार्श्वनाथसंवत्सर .... २२ | बाजलाग्रामे .... २९४         |
| पालिताणके .... २९६            | बारव .... ४०ख.४२             |
| मा. दि. पालित्तउ .... २७      | बालचन्द्र .... २६३           |
| मा. दि पालित्तगणहर. २७        | बालमूलराज .... २४८           |
| पाहिणिनाम्नी. २०३।२०८         | बाहडनामा .... २४०            |
| पीपलुडाग्राम .... ३३          | बाहुलोड १३१।१३९।१४१          |
| पुण्यसार .... २८६।२८७         | निन्दुसार .... १६            |
| पुराणनृप .... २८९             | वीजकुमार .... ३८             |
| दि. पुष्पकेतुराजा ..... १८    | बृहस्पतिगण्ड. २१२।२९३        |
| दि. पुष्पचूलपुत्रः .... १८    | २१४।२३३ख.टि.२८ख.             |
| दि. पुष्पचूलापुत्री .... १८   | बौद्धमत .... १७२             |
| दि. पुष्पभद्रपुर .... १८      | ब्रह्मभासाद .... १९१         |
| दि. पुष्पवतीराज्ञी ..... १८   | भमेरी .... २४३               |

महमात्र .... ३४  
 महारिकाभिरुआणी. १३१  
 महारिकाश्रीयोगेश्वरी. ३७  
 महानाहु .... ३०६।३०७

टि १६ टि. मोपला .... २५

भरत. ११२सा२१६।२१९

भरतखण्ड .... १५२

भर्तृहरि .... ३१३ख.३१४

भारती .... १०२

भिछमाल .... ८८

भीम .... ७६।७८ख ७९

८०।८२वा१२१गा१२२ टि.

खा१२९।१३१

टि. भीमडीयाक .... ७७

भीमदेव. १९१ख२४९।२५०

भीममोजप्रचन्यौ .... ६४

भीमाभिवानं. ४९।५०।६४

७२ ख

भीमेश्वरदेव. १३१।१९१

भूपलनाम्नौ .... ३०८

भुयगहदेव .... ३८।३९

भुयगहडराज .... ३८।ख

भुयगहेश्वर .... ३९ टि.

टि. भृगुगुण्डपुर .... २०

भृगुगु. २२०।२२३।२१०

भैरवः .... ३१८

भैरवानन्दयोगी .... १२

भोगपुर .... ७८

भोज .... ५७।६३।६४ग टि.

७१ ग. ७२।१००।१०१।

१०३ख. १०४ १२१ ग

१२२ गा१२३।१२४ टि.

१२६घ. १२७।१२८ ख.

३१४।३१५ ख.

मोपला .... २५

मस्ततीर्थ .... २६३

मतिसार .... २८५

मदनपाल .... १३४।१३६

मदनराज्ञी .... २५०

मदनरेखा .... ३०४

मदनशंकरप्रासाद .... ४९

मनक .... १८

मयणछुदेवी. १३१। १३२

ग. १३३।१३९ ग. १६५

१८५।१८६

मरुदेवी .... १५२ ग

मरुमण्डल .... २७५

मरुनारिहमसूरी .... १३८

मछनामा. .... ७३ ग. २७४ ग

मछिकार्जुन .... २०१।२०२

घ. २०३

महाणिका .... ३३

टि. महाकाठ .... १६।१००

महाकालदेव. १७९।१९०

महानन्द .... ३०४

महाभारत .... १०१

महाराष्ट्रदेश. १७८।२४३

महालक्ष्मी ३०।१८३।२८२

महाउन्मीप्रासाद .... ३१

महाशैर .... १४६ टि. १६

|                              |                           |
|------------------------------|---------------------------|
| ग १८                         | मुनिमुद्रत .... २२४       |
| माङ्गनामा .... १७९ टि.       | मुष्ण्डराज .... २७        |
| माङ्गुथण्डिल .... १८०        | मूलराज .... ४० घ ४१ घ ४२  |
| माघपाण्डित, ८३। ग ८४ ख       | घ ४६ ग ४७ ख १२९। १३०      |
| ८५ ख ८६। ८८                  | १३१। १४८। २४३             |
| माणिक्यपाण्डित .... १६४      | मूलराजवसहिका .... ४३      |
| मानस .... १९५                | मूलेश्वरप्रासाद .... ४३   |
| मान्धाता .... ९८             | मृणालवती .... ९९ ख.       |
| मायासुर .... ३० ख. टि.       | मेघकुमार .... १८          |
| मारवे .... २४३               | मेघनाद .... ३१८           |
| मालव .... ३१। ८०। ८९         | मेरुतुङ्ग .... १। १७२     |
| ८६। १४२। १४९। २४३            | मेघाडे .... २४३           |
| मालवक .... १४९। ५० ख         | मोढवसहिका .... २०८        |
| १७७। १७८। १८४। ख.            | यशःपटहनाम्नि .... १४३     |
| १८७। १९०। १९१                | यशश्चन्द्रगणि ..... २०६   |
| १९४। २०३                     | २२३ ख.                    |
| मालवकमण्डलं .... ४९। ५७      | यशोधवलनामा .... १४३       |
| ६३। ६४                       | यशोभद्र .... १६९ ख.       |
| मालवेदेव .... २९९            | यशोवर्मा .... १४४। ख. १४६ |
| मोहिच .... ४६। ४७            | १४७। १४९। १८४। १९०        |
| मुञ्ज .... ४९। ५०। ५५        | यशोवीरमन्त्री .... २५९    |
| ५७ ग. टि. ९८। ९९ ग. ६२       | २६० ख.                    |
| ग ६३ ख. १२३                  | युगार्दिदेव १६१। २१७। २७३ |
| मुञ्जालदेव .... ३९           | युधिष्ठिर .... ९८         |
| मुञ्जालदेवप्रासाद .... ४३    | योगराज .... ३५। ३७        |
| मुञ्जालमन्त्री .... १३३। १४३ | योगशास्त्र .... २१६। २३०  |
| १४७। २५३                     | रङ्ग .... २७५। २७६। २७७   |
| मुञ्जालस्वामी .... १३६       | २७८। २७९                  |
| मा. मृणालवर्ह .... ९९        | रघु .... १०३। २५६         |
| मुनिदेवाचार्य .... १७१ टि.   | रणासिंह ..... २५। ३०८     |

|                             |                           |
|-----------------------------|---------------------------|
| रत्नपरिक्षाग्रन्थ .... १७२  | लवणप्रासाद. २६३।२६६ख      |
| रत्नप्रभ ..... १६३।१६९      | लवणसाहप्रासाद. २९० ग.     |
| रत्नमालपुरे .... २८०        | २९९                       |
| रत्नशेखर. २८०।२८२ ख.        | लाखाक. ४९।४६।ख. ४७        |
| रत्नाकर ..... १६४           | लाछीनाम्री .... १३७       |
| रत्नादित्य .... ३७ टि.      | लाट .... २४३              |
| राजकुमार .... ३८ ख.         | लीलादेवी .... ३९          |
| टि. राजगृह, .... १७ ख. १८   | लीलाभिधान .... १३४        |
| राजापतामहविरुद्ध .... २०३   | लूणपाल .... २६१ख.         |
| राजप्रतिग्रह .... २०६       | लूणपालेश्वर .... २६१      |
| रामचन्द्र .... १९४।१९९      | लूणिग .... २५९।२९९        |
| १९९ख. २२७।२२८।२४७           | लूणिगवसहिप्रासाद.... २९९  |
| रामेश्वर ..... ९९           | लूतारोग .... २४३ ख.       |
| राष्ट्रकूट .... २५१         | लूतिरोगण .... ४७          |
| रुद्रमहाकालप्रासाद. १४९ टि. | वज्रसेन .... २०           |
| रुद्रादित्य, .... ९९।९८ ख   | वटपद्रक .... २३१          |
| रेवा .... १८९               | वडसरग्रामे .... १४३       |
| रैवत .... १६०।३१७           | वडीधार .... ३१            |
| रौहक .... ६४                | वणनामि वृक्षे .... ३१     |
| रौहणाचल .... ३।४            | वनराज .... ३२।३३ग३४       |
| मा. लंकगढ़.... ६३           | ३९घ.                      |
| मा. लक्खल .... ४६           | वयजलदेव .... ४९।२४९       |
| लक्षजननी .... ४७ टि.        | वररुचि .... ६।२९          |
| लक्षणावती .... २८९          | वराहमिहिर ३०९।३०६।ख.      |
| लक्षहोम .... ४७             | वर्द्धमानपुर.... १।५७।२१७ |
| लक्षणसेन .... २८९           | वर्द्धमानप्रतिमा .... २७८ |
| लघुवाहद .... ३१४            | वर्द्धमानसंवत्सर .... २२  |
| टि. लघुमैवानन्द .... १४९    | वर्द्धमानमूरि .... २७८    |
| लङ्का .... ७९।१६३।१८१       | वलमी. २७५।ख२७६।२७७        |
| ललितसरः .... २९९            | २७८।२७९                   |



|                            |                           |
|----------------------------|---------------------------|
| घलभीमङ्ग ..... २७९         | विजया. .... १०३।१०४       |
| वह्मभदेव ..... ४९          | विजयसेनसूरि..... २९३      |
| वह्मभराज ..... ४९          | विनता ..... १००           |
| यस्तुपाल. २५२।२५४।२६०      | विभीषण ..... १८१।१८२      |
| ख. २६१।२६२।२६४             | विमलगिरि .... २१७।२७३     |
| २६७।२६८ख. २६९ख             | विमलवसहिता .... २९९       |
| वाग्भटपुर ..... २१९        | विरहकवृक्ष ..... २०१      |
| वाग्भटप्रबन्ध. ३१४।३१७     | विश्वल ..... २२९          |
| वाग्भटमन्त्री..... १९७।२२० | विश्वामित्र ..... २०९     |
| २३९।२४०।३१४                | विश्वेश्वरकवि.. .... २२६  |
| ३१६ख.                      | टि. विहङ्गकुमार ..... १८  |
| वात्स्यायन ..... १०३       | वीतरागस्तोत्र. २।६।२१६    |
| वामराशिविप्र..... २३४      | वीरधवल..... २५०।२५१ख      |
| वायटीयजिन'..... १३७        | २५२।२५५।२६३।२६४           |
| वाराणसी. ४९।१०५।२२६        | २६५।२६६।२६७ख              |
| वाराहीग्राम ..... १७७      | २६९घ                      |
| वाराहीसंहिता ..... ३०६     | वीरमती ..... ३२           |
| वालाकदेश ..... १७६         | टि. वीरसूरि..... १६९      |
| वासनाप्रबन्धः ..... ३१९    | वीसलदेव ..... २६७         |
| वासुके ..... ३०८           | टि. वृद्धवादिमूरि..... २१ |
| वाहड. १३८।१९७।१९८ख.        | वृषम ..... १५२ ख.         |
| मा. विक्रमराय ..... १९४    | वृद्धद्वाहड ..... ११५।३१४ |
| विक्रम. २।३५५ख६।७।१०       | टि. वैभारगिरि ..... १७    |
| ख १२ख१३।१४।१८।२०           | शकटालमन्त्री. ३०६टि. १९   |
| ख ६२।६९टि. २५ग२२           | शकुनिकाविहार. २१८।२२०     |
| ।२५ग३०ख                    | २२४।२५५टि. २०             |
| टि. विक्रमादित्य..... २९   | शक्रावतार ..... १००       |
| विक्रमार्क. ३४।२०७।२७०     | शङ्खनामा २६०।२६१ख. ३२०    |
| २७५ख. ३१३                  | शङ्खपुर. .... ३२०।३२१     |
| विन्दराम ..... २५९         | शतानन्दपुर ..... २०४      |

|                            |                             |
|----------------------------|-----------------------------|
| शत्रुञ्जय. १३८।१५१।१६०     | १२९।१३१।१३४                 |
| ख. २१२।२१८।२१२२.           | १४४।१५३।१५९                 |
| २३८।२९७ टि. २२             | १६२।१७२।२०७                 |
| टि. शय्यमवसूरी .... १८     | २०८।२१२।२२९                 |
| शाकंभरी .... ४०।४१         | २२६।२३१।२३२                 |
| शाकटायन .... १४८।१६९       | २४१                         |
| शातवाहन .... २४।३०८        | श्रीपालकवि.... १५४।१५५      |
| शान्तिसूरी .... १६२        | श्रीपुष्करानर २८।२८३।२८४    |
| टि. शालवाहन .... ३१        | टि. श्रीपुण्ये नगरे.... २२५ |
| टि. शालिवाहन .... २६।२८    | श्रीमाता.... २८३।ख२८४ख      |
| शिप्राश्रवन्ती ... २७०     | श्रीमालनगर. ८३।८५।८८        |
| शिबि .... २६२              | श्रीमालपुर .... २७८         |
| शिलादित्य .... २७२।२७३     | श्रीमालभूपाल.... २८६        |
| २७४।२७७।२७९                | श्रीसेद्धेन १५४।१५५।१५६     |
| शिवपत्तन .... २७८          | टि. श्रीहर्षनामा .... १५    |
| शिवपुराण .... ४४।२१३       | टि. श्रेणिक .... १६ ख. १८   |
| शीताभिवाना .... १०३        | संग्रहगाथाकोश .... २६       |
| शीलगुणसूरी .... ३१।३४      | संप्रति.... १६। टि. मा १९   |
| शीलीरोगेष .... ४९          | सङ्घदनामा.... २६०।२६१       |
| शुभकेशी .... १३१           | टि. मा. सउलियाविहारस्त २२५  |
| शुद्रक .... ३०।टि. ३१      | सज्जनदण्डाभिप.... १५९ख      |
| शैव्य .... २५७             | सत्यपुरावतारे .... २५५      |
| शोभन. १०१।२५९।२६६          | सपादलक्ष.... १९०।१९७ख.      |
| श्यामलनामा .... १४३        | १९८।१९९।२४३                 |
| श्रियादेवी .... ३४         | ३००।३०२                     |
| श्रीगिरिदुर्गमल्ल .... १५४ | सपादलक्षक्षितिपाते. ४० ग.   |
| श्रीगुणचन्द्र .... १       | ४१ख ४३।१५७                  |
| श्रीदेवी .... ३२           | सपादलक्षदेशे.... २३२        |
| श्रीनगरमहास्थान .... १५१   | सपादलक्षीयरान .... २२९      |
| श्रीपत्तन .... ३८।४३।४८    | सरस्वतीसरित् ४३।४४ १८९      |

|                           |                                   |
|---------------------------|-----------------------------------|
| सहस्रालिङ्गधर्मस्थान. १४२ | १७९१८११ १८२                       |
| १४९                       | घ. १८३ख. १८४ख.                    |
| सहस्रालिङ्गसरः १३११९०     | १८७ग. १९०। १९७                    |
| १९११८४। १८९               | टि. सिद्धसेन .... २३ घ.           |
| साखड .... ३३              | टि. सिद्धसेनदिवाकर २०। २२         |
| साङ्गण .... २९१           | सिद्धसेनाचार्य .... १३। १४        |
| सातवाहन २४। ३१० टि. २९    | ग. १७। १८                         |
| सान्नुमन्ती .... १३६। १३८ | सिद्धहेमामिबान १४७। १४८           |
| १४२। १८७ख. १८८            | सिद्धाविष .... १८९। १८७           |
| सान्नुवमहिका .... १३८     | १८९। १९९                          |
| साधननी .... १७६           | सिद्धिर्भुः १९९। १९० ख.           |
| सामलनामा .... १९८ ख.      | सिद्धेन्द्र .... १९४              |
| सालवाहन .... २४           | टि. सिन्धुराज .... ९९             |
| मा. सालाहण .... २९। २९    | टि. सिन्धुल .... ९९               |
| मालिगयसहिकाप्रासादे. २३२  | सिप्रासरित् .... ३१२              |
| माहसाङ्ग .... ६। ४७       | मा. टि. सिरिपुञ्जे नयरे. .... २२४ |
| सिहदन्तभट .... ९९         | सीन्यल. .... ९९ख. ९६ग.            |
| सिहपुर .... १७६ ख.        | सीलनाभिबान .... १८४               |
| सिद्धनक्रवर्ती .... २९६   | सीलनामा कीतुकी .... २४९           |
| सिद्धनृप १९२ ख.। २३३      | सुंवरनामा .... २९७                |
| २३४ ख. टि.                | सुदंसणा .... २२५                  |
| टि. सिद्धपुरिस .... २९    | सुधर्मा .... १८१                  |
| सिद्धराज .... १३४। १३९    | टि. सुप्रतिबुद्धाचार्य .... १६    |
| ग १४२। १४४ ख.             | सुमगा .... २७२                    |
| १४६। १४७। १४९             | सुमुख्यया .... २२                 |
| १९०। १९४। १९७             | सुरजाण .... २६४ख                  |
| १९०। १९२ख। १९६            | सुवतप्रामाद .... २२४              |
| ग १९९ग १७०                | सुवतस्वामी .... २२४               |
| २७२। १७२ग. १७५            | टि. सुस्तिनाचार्य .... १६। १७     |
| १७६। १७७। १७८             | सूरवनाम्नी .... २९२               |

|                               |                              |
|-------------------------------|------------------------------|
| सेढीतटिन्याः .... ३१०         | हरिपाल ... १९१               |
| मा. टि. सेढीनई .... २९        | हरिभद्र .... २९१             |
| सैन्धवीदेवी .... २२३          | टि. हल्लकुमार .... १८        |
| सैन्धवे .... २४३              | टि. हाल .... ३१              |
| सोमनाथ ४३१३९।२११              | हेमखण्ड ... २४९              |
| सोमेश्वर .... ४३।४७।१३१       | हेमचन्द्र .... १४४ख. १४९     |
| १३२।१४० ख १४१।                | टि. छ १४९।१९५टि.             |
| १६०।१७८।१८६।२०७               | १५६।१५७ख. १६३                |
| ।२९७।३०२।३१९ग.                | १६५।१६६।गा १७रु              |
| सोमेश्वरकावे .... २६१         | १७५।२०९त. २०३                |
| सोमेश्वरदेव. २६२।२६८          | २०५। २०६।२०७                 |
| सोमेश्वरपत्तन .... ३९।२३३     | २१०।२११।ख २१२                |
| सोलाकनामा २००ख. १३८           | २१३।२१४ख. २१५                |
| २४२                           | २३८।२३९घ. २४८                |
| सोहडनामा .... २४९             | मा. हेमडसेवठ .... २३४        |
| सौराष्ट्रे .... २४३           | हेमनिष्पात्तिविद्या .... २४० |
| टि. स्तम्भनक .... २७९।३१२     | हेममूरि. १७२।२२६।२३५         |
| स्तम्भतीर्थ .... १९३।२३२      | हेमाचार्य. १४७।१४८।१६२       |
| २६०टि. १४९                    | १७१।१७३।१७५।१९३              |
| टि. स्थूलिमंद्र .... १६ख. १९ग | २००।२१०।२१४ ख.               |
| टि. स्थूलिभद्रचरित. १४९।१४६   | २२३।२३५।२५७                  |
| हम्मीर .... २२७               |                              |

## ॥ प्राकृतशब्दपदानामकाराद्यनुक्रमः ॥



|                             |                            |
|-----------------------------|----------------------------|
| अइएहि-अतीतैः १२२४-८         | अनारि-अधुना १६-६           |
| अवक्रमे-अतिक्रमे २७९-१२     | अभिहाणा-अभिधाना १२६-१      |
| अचमूड-अत्यद्भुत. ७१-१       | अंबडेण-आम्नभटेन १२२५-४     |
| अचमू आश्चर्यभूत. २३६-५      | अंबय-आम्नभट. १२१-३         |
| अच्छङ्कार-आश्चर्यकार. २०१-६ | अम्मणिओ-अस्मदीयः १७-१      |
| अच्छाणि-अक्षाणि २३५-१८      | अम्मीण-आस्माकीनः १५८-७     |
| अज्ज-आर्य ११९-९             | अयं-इदम्. २९-३             |
| अज्जप्प-अध्यात्म २५९-२      | अरीठं-अनवगणना २९-३         |
| अट्ट-अष्टौ १३४॥४६॥          | अलहंतो-अलभमानः २७-१        |
| अट्टहि-अष्टभिः १२७९-६       | अवरि-अपरा ११२-९            |
| अट्ठावीस-अष्टाविंश. १२२५-१  | असमत्या-असमर्थाः ७४-११     |
| अणिस्सिया-अनिश्चिताः ९०-८   | असाट्टि-आपादीय. ५६-६       |
| अणु-अनु ११३-४               | अस्सावबोह-अश्वावबोधा २५५-७ |
| अणुदिणं-अनुदिनम् २९-५       | अहवा-अथवा ४६-१८            |
| अणुहरइ-अनुसराति १५७-३       | अहिण-आधिके १८-३            |
| अणोगानि-अनेकानि १२२५-३      | आइवा-आगच्छामः १२१-१०       |
| अत्तणो-आत्मनः २९-४          | आई-अग्ना ६९-११             |
| अत्थमणु-अस्तमन. २४८-२       | आउराणं-आतुराणाम् ९२-३      |
| आत्थि-आस्ति ९२-१            | आणंदयरो-आनन्दकर. ३०-३      |
| अत्थि-अस्थि २०४-३           | आणोहि-आनिनाय १२७-२         |
| अट्ठि-अट्टा १५७-५           | आपण-आत्मा २०४-२            |
| अंधय-अन्यक. ७२-६            | आयरिण-आचार्यम्. १२५-११     |
| अन्न-अन्य. ३०-२             | आया-आयातो १२६-२            |
| अन्नादेणे-अन्यादेने ९६-१०   | आवइ-आवाति १५९-२            |
| अत्तो-अन्यः १२७९-७          | आविसिइ-आगमिष्यति १८१-२     |
| अप्पणे-आत्मनः १२७-३         | आहार-आधार. ३०-१            |
| अप्पाणं आत्मानम् २०-४       | इक्क-एक. ७०-१८९            |

इक्क-एक एव ११२-९  
 इक्कस-एकस्य ७९-८  
 इक्कह-एकस्य २३८-८  
 इक्कारसोहि-एकादशभिः १२२४ ७  
 इच्छए-इच्छति २०७-१  
 इत्थंतरि-इत्थन्तरे १८१-२  
 इत्थी-रत्नी. १६५-१६६  
 इस-एषा ५९-१४  
 ई-इति १६५-१३  
 ईस-ईपत् २३५-१८  
 उच्छंग-उत्सङ्ग २९-६  
 उज्जंत-उज्जयन्त १३१९-१  
 उडावियउ-उडायितः ७०-१६  
 उत्ताणु-उत्तानं २२८ ७  
 उत्तु-पुत्रः १४१ १६  
 उन्नयाण-उन्नतयोः २७-१  
 उप्पत्ती-उत्पत्तिः १२२५-२  
 उव्वी-उद्विग्नः २७-२  
 उव्वुय-उद्धूत. २९-२  
 उम्मीयइ-उन्मीयते १५७-५  
 उम्मुहं-उन्मुसं ६१-५  
 उर-उरसि १०९-५  
 उयर-उदर. ७४-११  
 उरुयंतर-ऊर्जन्तर. १६-१  
 उरे-उरसि २७-२  
 उवएसोर्ड-उपदेशात् १२७-२  
 उएवरि-उपरि २२४-५  
 उवसगो-उपसर्गः २२५-६  
 उव्वण्णो-उत्पन्नः १२३-२

उव्वरिए-उद्धारित. ९१-८  
 उग्या-उद्यताः ४६-१७  
 उण-पुनः २७९-१२  
 उपहरी-उपहृताः २३६-६  
 एऊ-एतन् ८०-३  
 एकला-एकाकी १२१-१०  
 एक्क-एकम् १५८-९  
 एक्को-एकः ३१९-१  
 एगारस-एकादश १२२५-१  
 एयं-एतत् १६५॥२९॥  
 एयइ-एतैः २३५-१७  
 एयाइ-एताः २६-७  
 एयाओ-एताः ३१-२  
 एरिसं-एतादशम् ७५-१  
 एस-एषः १३०-२२५  
 एसा-एषा १२२५-२  
 एसो-एषः १३४-३  
 एहु-एतस् १०९-४  
 कइ-किमपि २०४-२  
 कओ-कृतः १२२५॥७५॥  
 कच्चम्मि-अपेक्षे ९१-७  
 कज्ज-कार्य. १२१॥२०४॥  
 कंयउ-कथुकः २२८-७  
 कठं-कष्टम्. २०-४  
 कणग-कनक. ९२-३  
 कणमु-कनकम् ९२-२  
 कणयं-कनकम् १००-९  
 कंठि-कण्ठे ७०॥१७॥  
 कंठुउ-कण्ठीयम् १०९-४

कंतह-कान्तस्य ११२-२  
 कंति-कान्ति १२१-१३  
 कन्ह-कृष्ण (कर्ण) १७-१  
 कप्पो-कल्प. १२२१ ७  
 कमलस्स-कमलस्य ११७-३  
 कमु-किमु १२१-९  
 कमेण-क्रमेण १२१-३  
 कयं-कृतम् १८९ ४  
 कयलि-कदलि. ३१-१  
 कयली-कदली २९-३  
 कयावि-कदापि १२१ ११  
 करसन-कृत्स्न. १२१-२  
 करालिङ्-करालितया ७०-१६  
 करि-कृत्वा (कुरु) ६१ ॥ स ॥  
 करिवा-कर्तुम् २०४-३  
 करु-करोमि १२१-९  
 करेड-करोति. २२८ ॥ ख ॥  
 कवणु-कस्मै ७०-१३  
 कामेणुज्जउ-कृष्णोज्ज्वल. २७-३  
 कमु-किम् १२१-९  
 कहवि-कथमपि ३०-१  
 वाहिज्ज-कथय १७-१  
 कहेड-कीदृशम् १०९-४  
 काइ-किम् १०९-१  
 काउ-कृत्वा (कस्य) २०॥७०॥७१  
 काणवि-कापि ७०-१६  
 कारिण-कारितः १२२१-४  
 कारिओ-कारितः १२२१-५  
 रागिड-मारयाति १२२४-६  
 कागाउ-कागन् २७९-१३

कालिय-कालिक. १२७-२  
 काहू-कथम् ११८॥ख॥  
 किउ-कृतः ४६-१७  
 किपि-किमापि ७४-११  
 कीजड-क्रियते २०४-२  
 कीरंति-कीर्यन्ते (कृण्वन्ति) २८-२  
 कीस-कीदृशः २८९-२  
 कुमर-कुमारपाल. १८-४  
 कुलाईउ-कुलान्येव ११८ ४  
 वूडच्छरडो-कूटाक्षरदः वूटोच्छद-  
 वो वा १८९-३  
 के-किवा ४६-१८  
 केहीसाटी-किमर्थम् २३८-८  
 मोडि-कोटि. २६॥३१॥२०३  
 खउ-क्षयः २३८-१  
 खगु-सङ्गः ८०-३  
 खगार-खेद्गार ११८-९  
 खगारिहे-खेद्गारे १५८-५  
 खड्डुगलियाइ-भुक्तोद्गोर्णानि  
 २६॥२८॥  
 खड्डुछा-खलिता १६-५  
 खाड-पारिखा ६३ ६  
 खीरु-क्षीरम् ७०-१३  
 गइंइ-गजेन्द्र. ७२-१  
 गउसि-गतोमि १००-९  
 गणहे-गतैः २७९-६  
 गओ-गतः २७९-७  
 गज्जिडि-गर्जति १६-६  
 गडूआ-गुरव ११८-८  
 गड-दुर्गः ६३॥११८॥

गढपङ्क-दुर्गपतिः ६३-६  
 गणहर-गणधर. १२७-२  
 गणियं-गणितम् ७२-८  
 गणिया-गणिताः ४६-१८  
 गदा-गतानि १२३-१  
 गंधवा-गन्धर्वाः १६-२  
 गम्मारि-जाह्न १६-१  
 गघ-गज (गत) ६१-४घ.  
 गयणि-गगने १८१-१  
 गयह-गजानाम् ६१-११  
 गयाङ्-गतानि ६१-११  
 गयं-गतम् १२-१३  
 गरूया-गुरवः २९-६  
 गालि-गले ८०॥१०९॥  
 गवु-गर्वम् ६१-१०  
 गहणु-ग्रहणम् २२८-९  
 गहणे-गहने १६-१  
 गहिऊ-गृहीत्वा ३०-१  
 गहियाङ्-गृहीताः २६-७  
 गहीयाओ-गृहीनाः ३१-२  
 गिउ-गतम् ८०-३  
 गिहिणा-गृहिणा १३९-१  
 गिहिमत्ते-गृहिमात्रे २०७-१  
 गुंजाहि-गज्जामिः १००-९  
 गुरू-गुरुः १२९-११  
 गुरूणं-गुरूणां १२२४-६  
 गोरी-गौरी ११७-३  
 गोवाल-गोपाल. १३४-२  
 चउळढ-चापोत्वट १३४-३  
 चउडस-चतुर्दश ६१-११

चउसउ-चतुःशत. १२२४-८  
 चक्रवड्-चक्रवर्ती. १४१-१९  
 चंदगुत्तो-चन्द्रगुप्तः १२२४-४  
 चंदण-चन्दन. ३१-१  
 चंदलेहा-चन्द्रलेखा १२६॥२२४॥  
 चंदस्त-चन्द्रस्य ११७-१  
 चारित्त-चारित्र्यम् ११९-१०  
 चिक्खलि-पिच्छिला १६-६  
 चिंतंति-चिन्तयति २९-४  
 चितवड्-चिन्तयति ७०-१३  
 चिय-एव २७॥१३०॥  
 चीत-चित्तम् १४१-१९  
 चुलसीहिं-चतुरशीत्या १२२४-८  
 चूरि-चूर्णिना १९-१४  
 चेइयस्त-चैत्यस्य १२२४-६  
 चेव-एव १३९-६  
 छक-पट् १२३-१  
 छइंति-त्यजन्ति २९-६  
 छहूत्तरइं-पडुत्तराणि ६१-११  
 छार-भस्म. ६१-१  
 छित्तूण छित्त्वा १८९-४  
 जं-यत् ३०-२  
 जइ-यादि ५९॥७०॥११३॥  
 जइयि-यद्यापि २१९-२  
 जउणानइ-यमुनानदी २७-२  
 जग-जगत् १७-६  
 जडाग-जडानाम् २८९-१  
 जण-जन. ३०-३  
 जणाणि-जननी ७०॥७१॥  
 जणेत-जनय ७१-१



जन्मूय-जन्मूक. २४७-८

जन्मु-जन्म ८०-३

जयउ-जयतु १८९-३

जयपयहो-जयप्रकटः १२३-७

जरठत्तण-जरठत्वेन २९-२

जरि-यदि १८१-२

जसु-यस्य २२८-९

जस्त-यस्य ३०-३

जह-यथा १२७।१२९।ख॥

जहा-यथा १२९-१२

जहि-यैः ४६-१७

जाह-यत्र २३६-९

जा-यावत् (या) ९१॥६९॥

जाआ-जातः (जाता) १२९ ॥

१२२४ ॥

जाइ-यानि २८-१

जाइवो-यामः १२१-१०

जाइयउ-जातः ७०-१२

जाउ-जातः १२९-११

जाण-जानातु २९-१

जाणइ-जानाति १४१-१९

जाणीसीइ-ज्ञायते १८१-२

जाणुउम्मि-जानौ १२७-९

जायइ-जायते १३९-६

जायंते-जायते २८-१

जिण-जिन. २३८॥२४८॥११९

जिणंद-जिनेन्द्र. १२३-१

जिम-यथा ६१॥१९॥

जिवितं-जीवितः २२९-१

जीविज्ज-जीम्यते २८९-२

जीवुप्पत्ती-जीवोत्पत्तिः ९१-८

जुत्त-युक्तम् २२८-७

जुवण-यौवन. ९९-१३

जे-ये २९॥९०॥६०॥२३९

जेण-येन ११९॥७२॥१३९॥

१८९॥

जेवं-यदेवं २३६-६

जेसल-जयसिंह. १८९-३

जेसलु-जयसिंह. १९८-६

जेहि-यैः ७९-३

जो-यः १३९॥२४७॥

जोगिंदो-योगीन्द्रः १२७-३

झाडि-वर्षित्वा १२१-१०

झाली-ज्वलित्वा ६९-१

झीणित्ते-क्षीणत्वे २८९-२

झुरि-खिद्यस्व ९९-१३

ठाणे-स्थाने १३४॥१२७॥

ठाविउ-स्थापितः. १३९-९

ठाविमु-स्थापयित्वा १२९-१३

डीहियां-दाक्षिण्यां ६०-१३

डुड्विउ-दुडितं १७-६

टालिउं-टौकितम् १९८-९

णह-नच १७-६

णिव्वाणं-निर्वाणं १२३-१

तइ-तदा १९८-८

तउ-ततः १८९॥२७९॥

तउ-ततः १२९॥१२७९॥

तडे-तटे १२९-१३

तत्प-तत्र १२६॥ख॥

तदणु-तदनु २२९-४

तवो-ततः १२८०-१  
 तस-त्रस. ९१-८  
 तमु-तस्य २४८-२  
 तस्स-तस्य. ३०॥१३९॥२२४  
 तह-तथा २७॥ख.२९॥३०॥  
 तहय-तथात्र २६-६  
 ताह-तत्र २३६-६  
 ता-तस्मात् । तदा ६१॥९१॥  
 ताई-तानि २८-२  
 ताए-ताभ्यां १२६-२  
 ताण-तेषां २९-३  
 तारय-तारक १७-१  
 तालाहलं-हालाहलम् २९२  
 ताव-तावत् १९७ ३  
 ताविउ-तापितः ४६-१७  
 तिवखा-तीक्ष्णाः ८०-४  
 तिगसी-त्र्यशीति. १२३ १  
 तिणिसिउं-तन्निश्रयां २३८ ९  
 तित्थयर-तीर्थकर. ख. २९८-१३  
 तित्थस्म-तीर्थस्य १२२९-७  
 तिथ्याणि-तीर्थानि १२२९-३  
 तिदिण-त्रिदिन. ९१-८  
 तिन्नि-त्रीणि २७९-१२  
 तिम-तथा ६१-२  
 निसिण्हि-ताभिः ३०-१  
 तिहुयण-त्रिभुवन. १८९-३  
 तीमा-तस्याः १२९-९  
 तोसे-तस्याः १२२४-१  
 तुम्म-तव ७२॥१००॥  
 तुयी-मुद्रिता ६१-१

तुम-त्वम् १२२४-६  
 तुम्ह-तव ९२-२  
 तुरय-तुरग. ६१-४  
 तुरिया-स्त्रीकटाक्षाः ८०-४  
 तुह-तन १८॥१४१॥  
 तुहाला-तावकीनः २३६-९  
 ते-तौ १२६-२  
 तेण-तेन ९०-९  
 तेनेव-तेनैव १२६-३  
 तेहिं-तैः ३०-१  
 तौ-तदपि (तु) ९९॥१९९॥  
 तोलंतु-तोलयन् १००-९  
 थण-स्तन १६-१  
 थणार्ण-स्तनयोः २७-१  
 थमण-स्तम्भन. १२६-४  
 थमाण-स्तम्भानाम् २९-३  
 थिय-स्थितं (जाता) ९८ १९  
 थिया-स्त्रियाम् ६०-१४  
 दुडु-दुट्टम् ६०-१४  
 दलइ-दलति २४७-७  
 दमासिरु-दशाशिरा ६३ ६  
 दसा-दशा ११२ ॥ग॥  
 दह-दश २६॥७०॥  
 दहक-दशक. ४६-१८  
 दहिण-दाहि ९१ ८  
 दाउण-दत्ता २४७-७  
 दाणार्ड-दानान् १३९-६  
 दाणिदिहि-दारिद्र्येण १७-९  
 दिक्कण-दीक्षायाः १२२९-१  
 दिट्ट-दृष्टम् ७१-१

द्विणेशरह-दिनैश्वरस्य २४८-२  
 दिण्हा-दत्ता २४८-१  
 दिता-ददन्त. २९-४  
 दीहडा-दिनानि ४६ १८  
 दुःख-दुःखम् २३८-५  
 दुर्बलो-दुर्बलः ९६-११  
 दुमस्त-द्रुमस्य ३० २  
 दुमो-द्रुमः ३१-१  
 दुरुत्तरेषु-द्व्युत्तरेषु १३४-२  
 दल्ललिय-दुर्ललितम् २९-२  
 दुवार-द्वार. ९६-१०  
 देअइ-ददाति २३८-८  
 देवीए-देव्या १२२५-५  
 दोजीहा-द्विजिह्वाः २८९-१  
 दोण्हं-द्वयोः १२६-१  
 दोमुहय-द्विमुखक. १०० ७  
 दोरडी-दवरकी ५६-२  
 धडकइ-गर्जति १८१-१  
 धम्मगुरू-धर्मगुरु १३९-६  
 धम्मम्मि-धर्म १३९-५  
 धम्मो-धर्म ९२-१  
 धरइ-धरति २९-५  
 धारिउ-धृतः १९८-८  
 धरिज्जमु-धारय ७५-३  
 धी-ही १२१-९  
 धुआ-पुत्री १२५॥६९१२२४॥  
 नई-नदी १२५॥११३॥१५९॥  
 नकुलाइ-नकुलानि १९८-४  
 नगवीआ-नग्रीकृताः १६-२

नग्गु-नग्नः ८०-३  
 नच्चतस्स-नृत्यतः १२२५-६  
 नात्थि-नास्ति १६५॥२५८॥  
 नमसाति-नमस्यन्ति २५९ १  
 नयरे-नगरे १२६॥२२४॥  
 नरिंदो-नरेन्द्र १८॥१८९॥  
 नवइ-नवाति १२२५-१  
 नवनवइ-नवनवाति १८ ३  
 नवरि-नवरम् २६॥३१॥  
 नवोरहि-अनपरा ११२ ९  
 नाऊण-ज्ञात्वा १२५॥१२६॥  
 नांगेज्जुण-नागाज्जुन. १२५॥  
 १२६॥  
 नाणा-नांना ९०-९  
 नामिआ-नामिका १२५ ९  
 नाराय-नाराच. १००-७  
 नाह-नाथ. १४१-१५  
 निअ-निज. १२६-१  
 निअ-निजम् २६-२  
 निएवि-निजेपि ९६-१०  
 निग्गुणपि-निर्गुणमपि २९-६  
 निधट्टु-निकुष्ट. ४६ १७  
 निदलिय-निर्दलित. ७२-१  
 निवडि-निवडम् १०९-५  
 निभिच्च-निर्मृत्य ६१-४  
 निम्मिओ-निर्मित ७२-६  
 निय-निज. ७४-११  
 निरक्खर-निरक्षर. १०० ७  
 निव-नृप. ९६-११

निवारित-निवारितः १२२९-६  
 निवेद्यं-निवेदितम् १२६-२  
 निवेसियं-निवेशितम् १२४-४  
 निष्वाणं-निर्वाणम् १६९ ॥  
 १६६४

निहर्त्त-निहतः १२६-३  
 निहाण-निधान. २७-४  
 निहालङ्-पश्यति १४१-१६  
 नेय-नैव ७२-२  
 नेह-स्नेह. ३०॥३१॥१८॥१॥  
 पङ्-पातिः (अपि) ७०॥२०४॥  
 पङ्गुली-प्रकृतिः १९७-३  
 पणसिणि-प्रदेशिनीम् १२७-९  
 पण-पदम् १२१-१०  
 पच्छङ्-पश्चात् ६२॥२२८॥  
 पच्छेदु-पच्छेदपट. २०३-६  
 पंचेव-पञ्चैव १२३-७  
 पङ्क-पतति २९॥९१॥  
 पाङ्गुली-प्रतिप्रकृति १९७-६  
 पाङ्गुमासु-प्रतिमासु २९८-१३  
 पाङ्गुगा-प्रतिगङ्गाः २८९-१  
 पाङ्गुहाङ्-प्रतिभाति १०९-४  
 पाङ्गु-लघुपिठरम् ६१-१०  
 पाङ्गु-प्रथमः ३०-१  
 पाणालेहि-पङ्कशता १२७९-६  
 पाणसयरी-पङ्कशताति. २७९-१२  
 पाणसङ्-पण्ड्यति १२७-१०  
 पाण्डया-पाण्डताः २३९-१८  
 पत्तं-प्राप्तम् २०॥११३॥

पत्तो-प्रातः १२८०-१  
 पत्थण-प्रार्थना. ७९॥ख.  
 पन्नत्तं-प्रज्ञप्तम् २९९-१  
 पमुहं-प्रमुखम् ९१-७  
 पयं-पदम् ९२-२  
 पयद्यो-प्रवृत्तः १२२४-८  
 पयडिय-प्रकटित. ७२-१  
 पयाव-प्रताप. ७२-१  
 पराण-प्राणाः १५९-४  
 परिओस-परितोष. २८-१  
 पलिट्टं-पर्यस्तम् ११३-३  
 पलोड्य-प्रलोक्यते ९६-११  
 पवणो-पवनः १२१-३  
 पवत्तं-प्रवृत्तम् ७९-१  
 पवरं-प्रवरम् ११९-९  
 पव्वय-पर्वत. १६-१  
 पसरस्त-प्रसरस्य ७२-१  
 पासिद्ध-प्रासिद्ध ११२-८  
 पासिद्धि-प्रसिद्धिम् ११९-१२  
 पह-पद. २३६-६  
 पहया-प्रहता १२२४-६  
 पाहेली-प्रथमा ६२-९  
 पहीणं-प्रहीणम् २५९-२  
 पाङ्-पाणिम् ६१-१०  
 पायं-पादम् २४७-७  
 पाय-प्रायः २४८-१  
 पायक्या-पादगाः ६१-४  
 पायय-पादपे २९-९  
 पायलित्त-पादलित्त. १२९-११

पायाल-पातालम् १००-९  
 पालित-पादलिप्त, २७-२  
 पालित्तउ-पादलिप्तः १२७-९  
 पावङ्ग-प्राप्नोति २९८-११  
 पाविओ-प्रापितः ११९-१०  
 पासं-पार्श्वम् १२६-२  
 पासनाह-पार्श्वनाय, १२९-१२  
 पासाय-प्रासाद, १२२९॥ख॥  
 पिउणो-पितुः १२२९-४  
 पिक्खि-प्रेक्ष्य ६१-१०  
 पिच्छति-पठ्यति ३०-२  
 पियसाहि-प्रियसाहि २८-२  
 पियावउ-पाययामि ७०-१३ख.  
 पिछ्छणं-पीडनम् २४७-८  
 पुट्टिहि-पुट्टैः २२८-९  
 पुट्टो-प्रष्टः ९६-११  
 पुत्तं-पुत्रम् ७९-१  
 पुत्ताणं-पुत्रयोः॥ पुत्राणां च १२६  
 पुण-पुनः १२२९-१  
 पुणो-पुनः ११३-४  
 पुण्णत्थ-पुण्यार्थम् १२२९-१  
 पुत्तेण-पुत्रेण १२२९-३  
 पुत्ते-पूर्ण १८-३  
 पुरिसुत्ति-पुरुष इति १२९-१०  
 पुरिसाण-पुरुषाणाम् २९-३  
 पुहवी-पृथ्वी १२९॥७३॥७५  
 पूरणम्मि-पूरणे ७४-११  
 पेत्तिस्सि प्रेक्षसि ५६-५

कुल्लह-पुष्पस्य २३८-८  
 वत्तीस-वार्तायाम् ६०-१३  
 वापो-पिता ६९-१०  
 वाहडेण-वाग्मटेन १२२९-४  
 विटं-वृन्तम् १२१-३  
 विवम्मि-विश्वे २७-३  
 वीजउ-द्वितीयः २०४-३  
 वे-द्वौ १२१-१०  
 भग्गक्खय-भाग्यक्षये ६३-७  
 भग्गु-भग्नः ८०-३  
 भंगि-भृङ्गि, ९६-१०  
 भज्जिगय-भग्नम् ६३-७  
 भंजिऊण-भङ्गुका १२७९-७  
 भंजिचा-भङ्गुका १२८०-३  
 भडसिरि-भटश्री, ८०-३  
 भणङ्ग-भणति ४६॥१९॥  
 भाणिमो-भणामः १००-८  
 भमङ्ग-भ्रमति २७-२  
 भमाडे-भ्रामयति १२७-९  
 मरउ-भृतः २३९॥२३६॥  
 मरीया-भृताः १८१-१  
 मरुअत्थे-भृगुकच्छे १२२९-३  
 मवणे-भवने ९६-१०  
 मुंजङ्ग-भुङ्क्ते १६९॥१६६॥  
 भुयंग-भुजंग, २७-४  
 भागो-भाग्यैः २३९-१७  
 भारिआ-भार्या १२२४-४  
 भावम्मि-भावे ३०-४  
 भावी-भविष्यति १२२९-२

भावीयइ-भाव्यते १५९-१  
 भोगवीइ-भुक्ताः १५९-४  
 भोगवह-भोगवर्त्तेन १५९-४  
 भोय-भोज. १०९-४  
 भोलि-हेअन्ने ६१-१०  
 भोलिम-मुग्व. २३८-९  
 मडलिअं-मलिनितः २०-४  
 मई-माया ७१-१  
 मएण-मृगेण ७२-२  
 मकरि-मा कुरु ६३-७  
 मग-मार्ग. २७॥११३॥  
 मगगडा-मार्गाः १८१-१  
 मग्गु-मार्गम् १४१-१६  
 मंकड-मर्कट. ६१॥६२॥  
 मज्झमि-मध्ये १८९-३  
 मज्झे-मध्ये २८९-१  
 माणि-मनासे १५८-८  
 मंतण-आमन्त्रण. ६१-४  
 मम्मणह-मन्मथ. ६०-१३  
 मयं-मतम् १६६-२  
 मयण-मदन. १६-२  
 मवाह-मत्वाप्त. १५९-१  
 मह-मम ११२-९  
 महछ-महान् ११३-३  
 महुकर-मधुकर ९०-८  
 माहंदं-माकन्दम् २९-१  
 माग-मार्गः २०४-३  
 -नेमिचाम् २३८-८  
 यां-अनुभूताः ८०-४

माणुसडा-मनुष्याः ११२-८  
 माणुसह-मानुपस्य २०४-३  
 मांडीड-मण्डितम् १५८-७  
 मारिओ-मारितः १२७९-७  
 मारीतां-भृते १५८-९  
 मासाइ-मापादि. ९१-७  
 मिच्छादिष्टी-मिथ्याद्याष्टि. १२२५-५  
 मिलहण-म्लान. १२१-४  
 मीट्टि-मृष्टा १९-१४  
 मुइज्ज-मोचितः १७-६  
 मुकं-मुक्तम् १२०-४  
 मुखाओ-मुखात् १२५-१२  
 मुग्ग-मुद्र. ९१-७  
 मुज्झारा ऊर्ध्वतैर्यग्वदकाष्टसदृशाः  
 ३०-२  
 मुंजह-मुञ्जस्य ६१-११  
 मुणालनई-मृणालावती ५९॥६२॥  
 मुणि-मुनि ११९-९  
 मुणियं-ज्ञातम् ९२-१  
 मुचाहल-मुक्ताफल. १३४-३  
 मुचिए-मौक्तिकानि २४७-७  
 मुत्तुं-मुक्ता १२६-२  
 मुन्धि-हेमुग्धे ६१-१०  
 मुह-मुस. १०९॥१५७॥२३५॥  
 २३६  
 मुहकाणि-प्रमुखाणि २३५-१७  
 मिहु-मैवः १८१-१  
 मोडि-संमर्द्य. (मृत्का) १५९-१  
 य-च १२३१॥२७॥३१॥७४॥

यशु-जनः २२८-९  
 याणिमो-जानीमः १२१-४  
 रक्त्रिवयण-रक्षिते १३४-२  
 रक्ता रक्षा २७-४  
 रज्जु राज्यम् २६-२  
 रट्ट-रौति २२९-१  
 रणसीहो-रणसिंहः १२९-९  
 रन्नो-रान्नः १२९॥१२॥  
 रयणं-रत्नम् ११२-४  
 रयणायर-रत्नाकरे ११३-४  
 रया-रताः ९०-९  
 रह-रथ ६१-४  
 राडणा-राज्ञा १३४-३  
 राउ-राज्ञा ६३-६  
 राजो-राजः १२३-१  
 गणइ-राणरुः १५८-४  
 राणा-राजानः १५८-६  
 राय-राज-१८॥१८९॥  
 रायपिण्डे-राजपिण्डे २०७-१  
 रायस्स-राज्ञः २७-१०  
 राया-राजा ११९॥२२४॥२७९॥  
 रायाउ-राज्ञः १२५-९  
 रावणु-रावणः ७०-१२  
 रिद्धि-रुद्धिः २३६-५  
 रुद्धाच्च-रुद्रादित्यः ६१-५  
 रेहइ-राजते २७-३  
 लउ-लब्धुम् १४१-१५  
 लवणउ-लक्षः ४६-१७  
 लक्खेहि-लक्षैः १२२४॥२२५॥

लग्गं-लग्नम् ११३-४  
 लग्गु-लग्नः ८०-४  
 लक-लंका ६३-६  
 लच्छिउ-लक्ष्मीः २३५-१७  
 लच्छिहि लक्ष्म्याः १०९-५  
 लब्धइ-लभ्यते ४६-१८  
 लालियं-लालितम् २९-१  
 लाहो लाभः २८९-२  
 लिद्ध-लब्धा ११२-९  
 लुद्धा-लुब्धौ १२६-२  
 लोइय-लौकिक १२२५-३  
 लोय-लोक-११२-८  
 लोहमइ लोभमतिः १००-७  
 वंसं-वंशम् १३४॥१८८॥  
 वइ-पातिः १२८०-१  
 वाट्टियं-वर्तितम् २९-६  
 वडुउ-वीर्यः १५८-६  
 वटवाण-वर्द्धमानः १५९-३  
 वयणं-वचनम् १२२४-६  
 वराउ-वराकः ७०-१६  
 वराण-वराणाम् २४७-७  
 वरिस-वर्ष २३-७  
 वरिसाण-वर्षाणाम् १८१२७९॥  
 वरिसाणे-वर्षाणि १२३-१  
 वलतो-वलन् २८०-१  
 वलही-वलभी २७९-१३  
 वलिवलि-पुनः ११९-१  
 वसओ-वशात् २४७-८  
 वादी-वादी १२१-९

वादी-वृश्चितः १५०-३

वाणिजा-वणिजः १५८-६

वास-वर्ष. १८-३

वासाङ्-वर्षाणि २७९-१२

वासाणं वर्षाणाम् २२४॥२२५॥

वासेषु-वर्षेषु ३४-२

वाहली-लघुस्त्रोतः १६-१

वि-अपि २९॥३०॥६१॥११३॥

खा॥२१८॥३१९

विउपी-विदुपी ६९-११

विउल-विपुल. २५८॥२५९

विक्रम-विक्रम. १८॥२०॥१२३॥

त३४॥१२२४॥१२२९॥२७९॥

विक्खाओ-विख्यातः २९-१०

विग्गहो-विग्रहः ७२-२

विघन-विघ्न. ६२-६

विज्जुंमं-विद्यापुञ्जम् ६९-१३

विज्जा विद्या २२५-७

विज्झ-विन्ध्य. २९॥३१॥

वाणिजडु-वाणिज्यम् १५८-७

विणु-विना १५९-२

विदलं-द्विदलम् ९१-७

विम्हउ-विस्मयः २८९-२

वियणा-वेदना २७-१०

वियंभी-विजृम्भिणी ७०-२३

वियरंतो-विचरन् २९-१०

वियाणंनो=विज्ञानन्तः २५८-१३

विरहाओ-विरहाद् २८-२

विदुछइ-विदुछति ७०-१४

विसाउ-विपादः ६३-७

विसारतां विस्मारितम् १५९-३

विहारस्स-विहारस्य २२५-२

विहि-विधि २४७-८

विहिणा--विधिना ७२-७

वीरस्स वीरस्य २३-१

वीसरइ-विस्मरति ६०॥१५९॥

वुच्चंति उच्यन्ते ९०-९

वेढइ-सहते ६२-६

वैसानरि-वैश्वानरे १५८-५

व्व-इव २७ स्त.

संजयेण-संयतेन १३९-५

संदेसडओ-संदेशकः १७-१

संपइ-संप्रति ११९-९

संपज्जइ-संपद्यते ६२-५

संपसे-संप्राप्ति १२३-२

संवच्छरो-संवत्सरो १२२४-८

सइं-शतानि ६१-११

सइ-सत्यः १५८-५

सइरू-सख्यः १५८-४

सइ-सती १२६-१

सउलिया-शकुनिका १२२९-२

सउ-सर्व. ६०॥१५८॥

सउणी-शकुनी. १२२४-५

सउलिआ-शकुनिका १२२५-५

सएहि-शतैः १२७९-६

सकर-शर्करा ५९-१४

सग्गठिय-स्वर्गीस्थित. ६१-५

सच्चउरे-सत्यपरे १२८०-१



सठाणं-स्वस्थानम् १२७९-७  
 सत्तरोहि-सप्तदशभिः १२२४-८  
 सन्नहं-मतानाम् १२२४-९  
 सत्ति-शक्ते २०७-१  
 सत्येण-शस्त्रेण १२६-३  
 सन्नेण-सैन्येन १२७९-६  
 समुत्पन्नो-समुत्पन्नः २७९-१३  
 समुत्पन्नो-समुत्पन्नः १२१-३  
 मय-शत. २३॥१९॥  
 सयम्पि-शतमपि ७२-८  
 सयाम्भ-शते १८-३  
 सयल-सकल. ३०-३  
 सयाइ-शतांश २७९-१२  
 मये-शते १२३-७  
 सयेसु-शतेषु १३४-२  
 मसिय-स्वसित ९२-२  
 सहइ-सहते २४७-८  
 सहस्ते-सहस्ते १८-३  
 महस्तेहि-सहस्तेः १२२४॥१२२५  
 साह-सखि ७१॥२२८  
 सहिअस्स-साहितस्य १६५॥१६६  
 सरइ-सराति ११३-४  
 सरसति-सरस्वत्याः १०९-५  
 सारिस-सट्टश. २९-३  
 सरीरु-शरीरे ७०-१२  
 सवण-श्रवण २८९-१  
 सव्व-सर्व. ११९॥११९८  
 सव्वत्थ-सर्वत्र ९२-१  
 साडी-शाटिका २०३-६

सामि-स्वामी १२४॥२३८॥२८९  
 सामिअ-स्वामिन. १२२९.१  
 सायर-सागर. ६३-६  
 सारित्थो-सट्टशः १८-४  
 सत्थाहण-शालिवाहन १२४॥१२५  
 २६॥३१॥  
 सामणं-शासनम् ९२-१  
 साहणत्थे-साधनार्थे १२९-१२  
 साहा-शाखा १२९-४  
 साहुणो-साधवः ९०-९  
 सिज्झइ-सिध्यति १६५॥१६६  
 सिट्ठिलं-शिथिलम् १२१-३  
 सित्तुज्ज-शत्रुंजय. १२२९-४  
 सिरि-श्री १२९॥१२६॥१२७॥  
 १२२४॥ख. १२२९॥  
 २४८  
 सिहरु-शिखरम् १५८-९  
 सिहरे-शिखरे १२२९॥ ३१९  
 सीज्झे-सिध्यते ६०-१४  
 सीहो-सिंहो २४७-८  
 सुकस्स-शुक्रस्य ३०-३  
 सुक्के-शुक्के २९-५  
 सुक्खाइ-सौख्यानि २८-१  
 सुच्चा-श्रुत्वा १२२४-६  
 मुण्ण-श्रुत्वा १२२९-१२  
 मुणियइ-श्रूयते ११२-८  
 मुदंसणा-मुदर्शना १२२४-५  
 मुद्धीए-शुद्ध्या २९९-२  
 मुंदराइ-मुन्दराणि २८-१

मुपकं-मुपकम् १२१-३

मुयाण-सुतानाम् ७२-६

मुरय-मुरत. २७॥२८॥

मुवय-मुवत. T२२४-T२२५॥

मुहु-मुखम् २३८-८

सूरिहि-सूरीभिः T२२५-७

से तस्य T२७-१०

सेष्टि-श्रेष्ठिः १५८-६

मेडड-सरिका २०३-८

सेल-शैलः T३१२-२

सेवड-सेवते T२५-११

सो-सः T२५ख.॥६३॥१३९॥

१८९॥२४७॥T२७९

सोड-स तु T२२५-६

सोनासमा-सुवर्णसमाः १५९.४

सोहगीड-सौभाग्यतः २२८.७

हरडड-हरीतकी २२८-१२

हरिसष्टी-हर्षार्थे ६०-१३

हाथ-हस्त. १२१-१०

हाथि-हस्ते २०४-२

हारिओ-हारितः २०-५

हालेड-जट्यालाति १४१-१५

हिअम्मि-हृदये ६०-१४

हिठा-अधः २३६ ६

हिडड-हिण्डति ६१-२

हुज्ज-भवेत् ३०-४

हुज-भूताः १६५-११

हुजवि-भूतोपि १६६ १

हुयड-भवयम् ६१ १

हुया-भूता १६५-१३

हुयानि-भूतापि १६६ २

हैठि-अधः १५८-७

होइ-भवेत् ६२-५

होइ-भवति २४८-२

होइअ-भवेयम् २०४-२

होउत-भविष्यम् २४८-२

होमीइ-जुहुमः १५८ ५

होसे-भविष्यति ५६ ६

होही-भविष्यति १८-४

पत्र. पाङ्के. अशुद्धम्. शुद्धम्.

२-१८ सन्यरः-सन्परः

३-६ संस्पृश्य-संस्पृश्य

३-१२ आचख्यौ-आचख्यौ

३-११ लक्ष्य-लक्ष.

३-२० आच्छिद्य-आच्छिद्य

४-१ दाद्य-दार्दर्य

४-१५ आछादित-आच्छादित.

५॥११४॥१५३॥  
२०४॥२०५ } मित्र-मित्र.

५-१४ उपरुध्य-उपरुध्य

६॥११४. ४२॥

५७॥५८॥११७ } राज्ञः-राजस्य  
११४६॥१८३ }

६-१ गतः स. गतस्तत्.

६-२० त्वादिपां-त्वादिपां

७-४ रोचते-रोचन्ते

७-१८ अभावात्पशु-अभावा-  
त्पशु.

८॥३१॥५५॥  
१३२॥१६२ } दत्त्वा-दत्त्वा

९-९ प्रतिष्ठां-प्रतिष्ठां

१०-३ वर्द्धकि-वर्द्धकि.

१०-६ तावत्य-तावत्य.

११-२ बुध्वा-बुध्वा

११॥२०२॥२८९ सत्त्व-सत्त्व.

१२-१३ श्रीक्रमो-श्रीविक्रमो

१२-१४ किक्रम-विक्रम.

१४-९ तत्पारि-तत्पारि.

१९-१३ लक्षाणि-लक्षाणि

१८-९ जगत्प-जगत्प.

२०-८ याके-पाके

२४-८ युरा-पुरा

२४॥२९॥१७॥

६६॥२०६॥ } काष्ट-काष्ट.

२०७॥२८०॥घ

२६॥१९॥ चष्टय-चतुष्टय.

३१-९ पाङ्क्षित-पाङ्क्षित

३१-१३ अपराद्धे-अपराद्धे

३६-१९ सर्वो-सर्वा.

४०-१६ सं कुचति-संकुचति

४२-८ तिष्ठति-तिष्ठति

४३-१ त्य-तंनिहत्य

४४-१९ निमार्य-निर्माय

४४॥९८॥ ८०॥

९४॥१११॥११२

१११८॥१३१॥ पत्र-पत्र

११६॥१९४॥

२०९॥२२९॥

२४४॥२६४

४९-१८ कामलता-कामलता

४६-१ कमलता-कामलता

४७-११ आयातं-आयातम्

४७-१९ आमूला-आमूलं

४९-१६ मातुः-प्रातुः

५४-१६ हम्मरि-हम्मोर.

५६-१४ स्पर्शात्-स्पर्शात्

६०-२ अपि-अपि

|        |                       |        |                              |
|--------|-----------------------|--------|------------------------------|
| ६१-८   | तदसत्त्वो-तत्पत्नी    | ११०-२  | अल्प-अल्प.                   |
| ७१-८   | छत्रेण-छत्रेण.        | ११२-५  | मिति-मिति.                   |
| ७१-११  | प्राहिणाते-प्राहिणोत् | ११६-८  | कस्यात्-यस्यात्              |
| ७६-३   | चितां-चिन्तां         | ११६-१२ | दष्ट-दष्ट.                   |
| ७६-१०  | रूप-रूप.              | ११७-१  | प्रत्युत्पन्न-प्रत्युत्पन्न. |
| ७७-९   | अप्यत्र-अप्यत्र       | ११७-८  | यापाण-पापाण.                 |
| ८२-१५  | इमाकृतिः-इयमा-        | ११७-८  | अतीशय-अतिशय.                 |
|        | कृतिः                 | ११७-१० | उत्पातं-उत्पातं              |
| ८२-१८  | दृतादृश-दृक्ता-       | ११९-११ | प्रसादं-प्रासादं             |
|        | दृशं                  | १२०-६  | आसीत्-आसीत्                  |
| ८३-१३  | संकृत्य-संकृत्य       | १२२-१  | मत्यरि-मत्परि.               |
| ८३-५६  | आछादन-आच्छा-          | १२२-१४ | वाल-वाल.                     |
|        | दन.                   | १२३-१  | कौटिभ-कौटिभ.                 |
| ८५-६   | प्रसादं-प्रासादं      | १२९-१५ | व्याप-व्यापार.               |
| ८६-९   | संप्रमाश-संप्रमःश.    | १३०-३  | भृत जगत्-भृतजगत्             |
| ८६-१६  | अल्प-अल्प             | १३०-१० | वपा-वर्षा.                   |
| ८७-८   | दानत्-दानात्          | १३१-१२ | वृक्षछाया-वृक्ष-             |
| ८७-९   | याञ्चा-याचा           |        | छाया                         |
| ८७-९   | लायव-लायव.            | १३७-१६ | चाहड-चाहड                    |
| ९०-६   | वृहस्पति-वृहस्पति.    | १३९-१७ | स्वमिनि-स्वामेति.            |
| ९१-१   | ताम्य-ताम्या          | १४०-३  | प्रदक-प्रदक.                 |
| ९१-१   | निर्गत्य-निर्गत्य     | १४१-१२ | अल्प-अल्प.                   |
| ९१-११  | भित्ति-भित्ति         | १४४-१४ | प्रत्य-प्रत्य.               |
| ९२-६   | भृत-भृत.              | १४९-११ | देवद्रव्य-देवद्रव्य.         |
| ९२-८   | पौर्त्य-पौर्त्य       | १५१-१० | पतका-पताका.                  |
| १०१-६३ | बान्धव-बान्धव.        | १५२-१३ | पञ्चजन-पञ्चजन.               |
| १०६-५  | नगर-नगर.              | १५३-३  | पदप-पदप.                     |
| १०७-६  | प्रमाद-प्रमाद.        | १५०-१३ | इत्यत्र-इत्यत्र.             |
| १०७-१६ | प्रमाद-प्रमाद.        | १५२-७  | वासुत-वासुत.                 |

|         |                      |         |                     |
|---------|----------------------|---------|---------------------|
| १६९-२   | पालि—पश.             | १६९-१३  | उद्धव—उध्व.         |
| १६९-४   | चयण—चार्यण           | १६९-९   | प्रवेश—प्रदेश       |
| १६९-१३  | कुमुद—मुक्तकुमुदः    | २००-१७  | ददशयु—दशयु          |
| १६९-३   | पाडश—पोडश            | २०४-३   | आत्थि—अत्थि         |
| १७०-१७  | चन्द्र—चन्द्र        | २०७-१८  | चादिग—चाविग.        |
| १७४-९   | स च—सा च             | २०९-८   | पाल्य—पाल्य.        |
| १७४-१३  | तरोत्थाया—तरो-       | २१२-४   | ऊपतः—उपेतः          |
|         | शछाया.               | २१४-१०  | इत्याभि—इत्याभि     |
| १७९-८   | चित्रयिमाण—चित्रा-   | २१४-१६  | हन्द—हन्द.          |
|         | यमाण                 | २१६-१७  | उत्पत्ति—उत्पत्ति.  |
| १७९-१६  | प्रमोदा—प्रमोद.      | २१९॥३३१ | मातेष्टा—मातेष्टा   |
| १७६-२   | अन्यास्यां—अन्यस्या  | २२३-२   | अप्यतः—अप्यतः       |
| १७६-११  | कम्या—कम्पा          | २२८-११  | प्रत्यूषे—प्रत्यूषे |
| १७६-१६  | तच्छाशने—तच्छासने    | २२८-१४  | अन्त्यापि—अन्त्योपि |
| १७७-११  | प्रभुष्ण—प्रभुष्ण.   | २२९-९   | लितित्वा—लितित्वा   |
| १७८-१०  | एच्छमाने—एच्छय-      | २३२-६   | नाग—नायक.           |
|         | माने                 | २३९-१   | परस्मिन्—परस्मिन्   |
| १७८-१२  | एच्छना—पृच्छता       | २४८-१९  | मंग—मङ्ग.           |
| १८०-७   | इत्युप—इत्युप.       | २४९-१४  | उत्तंग—उत्तमङ्ग     |
| १८२-९   | पमाने—पन्थानं        | २५१-१४  | यत्तने—यत्तने.      |
| १८३-११  | नगरराज्ञ—नगरस्थ      | २५२-८   | कर्पूरमयी—कर्पूरमयं |
|         | राज्ञः               | २५२-१२  | पुनरव—न पुनरव       |
| १८४-१९  | अस्त्य—अस्त्यु.      | २५३-४   | मुञ्जाउ—मुञ्जाउ.    |
| १८४-१२  | मयकाः—मेयकाः         | २५६-८   | यद्—यद्             |
| १८७-७   | पूताने—पूतान्तं      | २५९-१४  | प्रपञ्च—प्रपञ्च     |
| १८८॥२६९ | एष्ट—एष्ट.           | २६३-१९  | वर्षः—वर्षः         |
| १९२-२   | तग—तस्य              | २७०-१२  | ताड—ताड             |
| १९२-१४  | मृत्वात्राणा—मृत्वा- | २७१-४   | पत्रितं—पावेत्रितं  |
|         | त्राणा               | २७२-६   | अमृत्—अमृत्         |

|        |                       |        |                         |
|--------|-----------------------|--------|-------------------------|
| २७३-१७ | भीष्म—_ओष्म           | २८८-१० | अन्तरिमेव-अन्तरि-       |
| २८३-१८ | पमच्छ—_पमच्छ          |        | तमेवं                   |
| २८४-४  | पटकं—_पेटकं           | ३०२-१० | पतिर्विग्रह पातिविग्रह. |
| २८५-६  | रुं चरता-संचरता       | ३०३-१  | निग्रही-_-निग्रहीत.     |
| २८५-६  | ज्ञानवृत्त्या-अज्ञान- | ३०४-१८ | अधिष्ठातृ-अधिष्ठातृ.    |
|        | वृत्त्या              | ३०७-२  | उविदिर्पवः-उविधी.       |
| २८७-१२ | सम्यर्थयन्-समम्य-     |        | पवः                     |
|        | र्थयन्                | ३०७-१९ | निष्ठं—_निष्ठं          |
| २८८-२  | अनापृच्छय-अना—        | ३११-१  | परपरया-परंपरया          |
|        | पृच्छय                | ३१५-१७ | यदद्या—_यदद्य           |
| २८८-८  | गहीत्वा—_गृहीत्वा     | ३१९-१९ | बुभारव—_बुभारव.         |



## अथ विषयवर्णनम्

पञ्च.

२ विक्रमप्रबन्धः

- ६ राज्यप्राप्तिः
- ९ कालिदासोत्पत्तिः
- १० सुवर्णपुरुषसिद्धिः
- ११ सत्त्वासिद्धिः
- १५ सिद्धसेनदिवाकर-  
सङ्गः
- २३ गर्वपरिहारपूर्वकस्व-  
र्गतिः

२४ शालिवाहनप्रबन्धः

३१ वनराजादिप्रबन्धाः

- ३५ राज्यप्राप्तिः
- ४० मूलराजराज्यप्राप्तिः
- ४५ लाक्षाकोत्पत्तिवि-  
प्रतिपत्ती
- ४९ भीमस्य राज्याभि-  
षेकः

५५ मुञ्जराजप्रबन्धः

६३ भोजराज्यप्राप्तिः

**प्रथमसर्गसमाप्तिः**

६४ भोजभीमप्रबन्धौ

- ६८ भोजगर्वपरिहारः
- ७२ भीमेन संवादः
- ७६ रानशेसरसङ्गः
- ७९ राधावधसाधनम्

पञ्च.

७९ धारानगरीस्थापनम्

८० कुलचन्द्रदिगम्बरे-  
णाणहिल्लपुरमञ्जनम्

८२ भोजसभायां भीम-  
स्य गुप्ततयानयनम्

८३ भोजस्य माघपण्डि-  
तेन समागमः

८८ धनपालसंवन्धः

१०३ सीतापण्डिताप्र-  
बन्धः

१०५ मानतुङ्गाचार्यप्रबन्धः

११० अनित्यताश्लोक-  
तुष्टयप्रबन्धः

११२ बीजपूरकप्रबन्धः

११३ इक्षुरसप्रबन्धः

११५ अश्ववारप्रबन्धः

११६ गोपगृहिणीप्रबन्धः

१२१ भोजस्वर्गमनम्

**१२४ द्वितीयसर्गसमाप्तिः**

१२९ सिद्धराजप्रबन्धः

१३४ राज्यप्राप्तिः

१३५ वैद्यलीलाप्रबन्धः

१३६ मन्त्रिसानूद्वेदधर्म-  
ताप्रबन्धः

१३९ सीमेश्वरतीर्थयात्रा.

- १४२ दिग्विजयगमनाग-  
मनादिषर्णनम्  
१५९ रैवतकोद्धारप्रबन्धः  
१६१ देवसूरिचरिते दिग-  
म्बरविवादः  
१७२ आमडप्रबन्धः  
१७३ सर्वदर्शनमान्यता  
प्रबन्धः  
१७५ चणकाविक्रयैवाणिज  
प्रबन्धः  
१७६ षोडशलक्षप्रबन्धः  
१७७ वाराहीयावृचप्र-  
बन्धः  
१७८ उज्झावास्तव्यग्रा-  
मीणप्रबन्धः  
१८० माङ्गलालाप्रबन्धः  
१८१ म्लेच्छागमननिषेध-  
प्रबन्धः  
१८२ कोल्लपुरराजप्र-  
बन्धः  
१८४ जयचन्द्रराजेन गू-  
र्जरप्रधानस्योक्ति-  
प्रबन्धः  
१८५ पापघटप्रबन्धः  
१८७ बुद्धिवैभवप्रबन्धः  
१८८ वण्ठमर्ममाधान्य-  
प्रबन्धः

१९० तृतीयसर्गसमाप्तिः

१९१ कुमारपालप्रबन्धः

- १९५ कुमारपालराज्य-  
प्राप्तिः  
१९९ बाहडकुमारप्रबन्धः  
२०० आश्चर्यकारकसो-  
लाकप्रबन्धः  
२०१ आम्नडप्रबन्धः  
२०३ हेमचन्द्रकुमारेपा-  
लयीमन्त्री  
२१७ वाग्भटकृतशत्रुजयो-  
द्धारः  
२२० आम्रभटप्रबन्धः  
२२५ कुमारपालाध्ययन-  
प्रबन्धः  
२२८ हरडप्रबन्धः  
२२९ उदयचन्द्रप्रबन्धः  
२३० अभक्ष्याभक्षणानि-  
षेधप्रबन्धः  
२३२ यूकाविहारप्रबन्धः  
२३२ प्रभुदीक्षावसहिको-  
द्धारप्रबन्धः  
२३३ बृहस्पतिगण्डप्र-  
बन्धः  
२३३ आलिङ्गवृद्धप्रवान-  
प्रबन्धः  
२३४ वामराशिविप्रबन्धः  
२३५ सौराष्ट्रचारणयोः  
प्रबन्धः  
२३७ तीर्थयात्राप्रबन्धः  
२३९ सुवर्णासिद्धये गुरुरा



जयोर्मिथ्याश्रमः

२४० राजघरद्वबाहडप्र०

२४१ लवणप्रसादप्रबन्धः

२४२ कुमारपालरोगनि-  
राकरणम्

२४४ हेमचन्द्रकुमारपा-  
लयोः स्वर्गमनम्

२४५ अजयदेवराज्या-  
भिषेकः

२४६ कपर्दिप्रबन्धः

२४७ रामचन्द्रप्रबन्धः

२५० वरिवलराज्यप्राप्तिः

२५१ वस्तुपालतेजःपाल-  
योरुत्पत्तियात्रादि-  
प्रबन्धाः

२६९ चतुर्थसर्गसमाप्तिः

२७० प्रकीर्णकप्रबन्धाः

२७० विक्रमार्कस्य पात्र-  
परीक्षाप्रबन्धः

२७१ नन्दप्रबन्धः

२७२ शिलादित्योत्पत्तिः

२७३ मछ्वादिप्रबन्धः

२७५ रङ्गोत्पत्तिः

२७७ बलभीमद्वः

२८० श्रीपुञ्जराजपुत्री-

श्रीमातृप्रबन्धः

२८१ गोवर्द्धननृपप्रबन्धः

२८१ पुण्यसारप्रबन्धः

२८७ कर्मसारप्रबन्धः

२८९ लक्ष्मणसेनोमापति-  
वरयोः प्रबन्धः

२९२ जयचन्द्रप्रबन्धः

२९६ जगदेवपरमार्दितु-  
ङ्गसुभट्टद्वीराज-  
प्रबन्धाः

३०४ कौङ्कणोत्पत्तिप्रब०

३०५ वराहमिहिरोत्पत्तिः

३०८ नागार्जुनोत्पत्तिस्त-  
म्भनकतीर्थप्रबन्धौ

३१२ भर्तृहर्षोत्पत्तिप्रबन्धः

३१४ वाग्भट्टैवद्यप्रबन्धः

३१७ रैवतक्षेत्राधिपत्युत्प-  
त्तिप्रबन्धः

३१९ वासनाप्रबन्धः

३१९ कृपाणिकाप्रबन्धः

३२० धनदप्रबन्धः

पञ्चमसर्गसमाप्तिः

## ग्रन्थकर्तृविषये विशेषवक्तव्यता

— ० —

चण्डप्रद्योतनपुत्रस्य पालकनाम्नोऽवन्तौ राज्येऽपापायां पुरि श्रीमहावीरस्वामी ७२ वर्षायुःप्रान्ते मोक्षं गतः । तस्यैकादश गण-  
धरास्तत्रेन्द्रभूतिः (गौतमः) रग्निभूतिः २ वासुभूतिः ३ रितित्रयो भ्रात-  
रो गौतमगोत्राः । व्यक्तो ४ भारद्वाजगोत्रः । सुधर्मा ५ त्रि-  
वेश्यायनगोत्रः । मण्डिकपुत्रो ६ वाशिष्ठगोत्रः । मौर्यपुत्रः ७ काश्यप-  
गोत्रः । तावेकमातृत्वाद्भ्रातरौ भिन्नगोत्रत्वं पृथग्जनकापेक्षया. म-  
ण्डिकस्य पिता धनदेवस्तस्मिन्मृते मौर्यः पतिस्तत्पुत्रो मौर्यपुत्रः, माता तु  
विनयादेर्वानाम्न्यैकैव । अकम्पितो ८ गौतमगोत्रः । अचलभ्राता ९  
हारीतगोत्रः । मेतार्यः १० प्रभास ११ एतौ कौण्डिन्यगोत्रौ, सर्वेपि  
निरपत्याः सुधर्मणो वशः ॥

श्रीमहावीरमोक्षात्सुधर्मा २० वर्षे मोक्षं गतः ।

तत्पुत्रे काश्यपगोत्री जम्बूस्वामी<sup>१</sup> ६४ वर्षे मोक्षं गतः ।

तत्पुत्रे कात्यायनगोत्री प्रभवस्वामी ७५ व. मो. ग.

त० वात्स्यायनगोत्री शश्यंभवः<sup>२</sup> ९८ व. मो. ग.

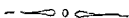
त० तुङ्गिकायनगोत्री यशोभद्रः १४८ व. मो. ग.

त० माठरगोत्रो सभूतिविजयः १५६ व. मो. ग.

त० प्राचीनसगोत्री भद्रबाहुः<sup>३</sup> १७० व. मो. ग.

१ महावीरमोक्षादिति सर्वत्रान्वयः २ मनकपिता दशवैकालि-  
कसूत्रकर्ता ३ अयं वृद्धभद्रबाहुः श्रुतकेवली वीरात् १६२ वर्षे तदा  
दिगम्बरबौद्धमते १४ स्वप्ने; श्वेताम्बरमते १२ स्वप्ने; सूचितो भद्रबाहुना  
निर्दिष्टस्वप्नफलो गुप्तवंशाद्यो विक्रमापरनामा चन्द्रगुप्ताभिधोन्तिभो  
मुकुटबद्धः क्षत्रियवंश्यः कौटिल्यापरनाम्ना चाणाक्येन स्थापितो जैनी-  
यो राजा (भीलसाटोप) पञ्चे १४३-१५१ पर्यन्तं तद्विषये द्रष्टव्यम् ।

## ग्रन्थकर्तृविषये विशेषवक्तव्यता



चण्डप्रशोतनपुत्रस्य पालकनाम्नोऽवन्तौ राज्येऽपापाया पुरि श्रीमहावीरस्वामी ७२ वर्षायुःप्रान्ते मोक्षं गतः । तस्यैकादश गण-  
धरास्तत्रेन्द्रभूतिः १ (गौतमः) रश्मिभूतिः २ र्वायुभूतिः ३ रिति त्रयो भ्रात-  
रो गौतमगोत्राः । व्यक्ती ४ भारद्वाजगोत्रः । मुवर्मा ५ शि-  
वेश्यायनगोत्रः । मण्डिकपुत्रो ६ वाशिष्ठगोत्र । मौर्यपुत्रः ७ काश्यप-  
गोत्रः । तविकमातृत्वाद्भ्रातरो भिन्नगोत्रत्वं पृथग्जनकापेक्षया. म-  
ण्डिकस्य पिता धनदेवस्तस्मिन्मृते मौर्यः पतिस्तत्पुत्रो मौर्यपुत्रः, माता तु  
विनयादेवी नाम्न्येकैव । अकम्पितो ८ गौतमगोत्रः । अचलभ्राता ९  
हारीतगोत्रः । येतार्यः १० प्रभास ११ एतौ कौण्डिन्यगोत्रौ, सर्वेपि  
निरपत्याः सुधर्मणो वशः ॥

श्रीमहावीरमोक्षात्सुधर्मा २० वर्षे मोक्षं गतः ।

तत्पुष्टे काश्यपगोत्री जम्बूस्वामी<sup>१</sup> ६४ वर्षे मोक्षं गतः ।

तत्पुष्टे कात्यायनगोत्री प्रभवस्वामी ७५ व. मो. ग.

त० वात्स्यायनगोत्री शय्यभवः<sup>२</sup> ९८ व. मो. ग.

त० तुङ्गिकायनगोत्री यशोभद्रः १४८ व. मो. ग.

त० माठरगोत्री सभूतिवज्रयः १५६ व. मो. ग.

त० प्राचीनसगोत्री भद्रबाहुः<sup>३</sup> १७० व. मो. ग.

१ महावीरमोक्षादिति सर्वत्रान्वयः २ मनकपिता दशदिक्कालि-  
कसूत्रकर्ता ३ अथ वृद्धमद्रबाहुः श्रुतकेवली वीरात् १६२ वर्षे तदा  
दिगम्बरबोद्धमते १४ स्वप्नेः श्वेताम्बरमते १२ स्वप्नेः सूचितो भद्रबाहुना  
निर्दिष्टस्वप्नफलो गुप्तवशाद्यो विक्रमापरनामा चन्द्रगुप्ताभिव्योन्तिगो  
मुकुटबद्ध क्षत्रियवश्यः को ५१ आया स्थापितो जैनी  
यो राजा (मीलसादोष) पत्रे १४३-१५१ पृष्ठे द्रष्टव्य

धर्मप्रभसूरिः  
सिंहतिलकः  
महेन्द्रप्रभः

मैरुतुङ्गाचार्यः  
स च वीरात् ९८ पद्ये जातः

वादिवेताल. उ. टी. शान्तिसूरिः थिरापद्रगच्छीयः

वि० १०९६ व. मृतः ॥ नवाङ्गवृत्तिरुदभयदेवः

वि० ११३९ व. मृतः ॥ ११९९ पूर्णिमायकमतोत्पत्तिः ॥

कुमुदचन्द्रदिगम्बरं विजित्प संवत् १२०४ वर्षे

फलवर्द्धिग्रामे आरासणे च नेमिनाथप्रातिष्ठाकर्त्ता

तथा चतुरशीतिसहस्रपरिमितस्याद्वादरत्नाकरनाम्नो ग्रन्थस्य  
कर्त्ता वादिदेवसूरिः सं. १२२६ वर्षे मृतः ।

हेमचन्द्रश्च १२२९ मृतः ॥ १२०४ वर्षे खरतरोत्पत्तिः ।

१२१३ वर्षे अञ्चलिकमतोत्पत्तिः ॥ १२२६ वर्षे सार्द्धपूर्णि-  
मीयमतोत्पत्तिः ॥ १२९० वर्षे आगमिकमतोत्पत्तिः

निग्रन्थ. १ कोटि. २ चन्द्र. ३ वनवासी. ४ वटगच्छ. ५  
मपीगच्छ ६ इति षण्णां नाम्नां प्रवृत्तिहेतवः आचार्याः क्रमेण श्रीसु-  
धर्मा १ सुस्थितसूरि. २ श्रीचन्द्रसूरि. ३ समन्तभद्रसूरि. ४ सर्वदेव-  
सूरि. ५ जगच्चन्द्रसूरिनामानः

नाणकगच्छेऽर्बुदाचलस्थवटावः स्थितेभ्यः सर्वदेवसूरिभ्यो वट-  
गच्छोभूत्स च बृहत्वाद्बृहद्रक्षस्तदाम्नाये जयसिंहसूरीणा शिष्या आ-  
र्यरक्षितमुरयस्तेषां दन्ताणोग्रामे जन्म पितृदत्तनाम गोदड गुरुद-  
त्तनाम विजयचन्द्रोपाध्यायः सूरिदत्तनाम आर्यरक्षितः संवत् ११३६  
जन्म ११४१ व्रतं १२२६ परलोकः सर्वानुर्वर्षाणि ९१ ते च सी-  
उदगं न सेविजा इत्यादिसिद्धान्तपाठात्संविशतयाविहर्तुकामाः पूर्णि-  
मागच्छं प्रातिपद्यमानैः स्वमानुजैः श्रीशीलगणसूरिभिः सर्वान्नपारीणान्  
रुत्वा मालारोपणादिसावद्यभयादाचार्यत्वमनिच्छवो बलादुपाध्याय-

पदे स्थापिताः । ततश्चात्मचतुर्थी विविना विहरमाना भालिजनगरं प्राप्ताः । तत्र यशोधनश्रेष्ठिना ऋषभदेवप्रासादं कारयित्वा प्रतिष्ठाकारणावसरे तन्निवारणायोपस्थितेषु संगमखेटोयश्रीदेवेन्द्रसूरि, आशापङ्क्त्याय श्रीमलयचन्द्रसूरि, पिप्पलीयश्रीशातिसूरिमुख्येषु देवप्रभावात्प्रतिष्ठोत्सवे जाते संवत् ११६९ वर्षे विविनार्गप्रवृत्तिं कुर्वन्तः स्थिरपद्मपुरं प्रापुः ॥ इतश्च सोपारकपत्तने महेभ्यश्रेष्ठिदाहडस्तत्सुतो जासिकुमारस्तेन जम्बूचरित्रं श्रुत्वा प्रतिबुद्धेन मित्रासवरेण सह श्रीपत्तने सिद्धचक्रवर्त्तिश्रीजयसिंहदेवप्रासादमवाप्य तत्रागतेन प्रथमागमे दशवैकालिकमेकपाठेन पठित्वा गुरुपार्श्वे दीक्षां गृहीत्वा तन्नाम यशश्चन्द्रगणय इति ते च पञ्चमिवर्षेः सर्वस्वपरसमयाम्भोधिपार प्राप्य मन्दारपुरे महतोत्सवेन श्रीजयसिंहसूरयोभूवन् । ततस्तैराशातनाभीतैः स्वगुरूश्रीसूरित्वे संस्थाप्य श्रीआर्यरक्षितसूरीति च नाम दत्त्वा विजणपतटे चाचार्योपाध्यायादि २० पदानि चक्रिरे । तस्य सं० ११७९ जन्म ११९७ व्रतं १२०२ सूरिपदं १२९८ परलोकः सर्वायुः ८० ॥ जयसिंहसूरिपट्टे धर्मवोपसूरयः । तेषां मरुदेशे श्रीचन्द्रः पिता सं० १२०८ जन्म १२१६ व्रतं १२३४ सूरिपदं १२६८ स्वर्गः सर्वायुः ६० ॥ तेषां पट्टे आगमकालामुखविरुदाः महेन्द्रसिंहसूरयः तेषां सरनगरे साणदेवप्रासादः पिता सं० १२२० जन्म सं० १२३७ दीक्षा १२६३ सूरिपदं १२७१ गच्छेशपदं १३०९ स्वर्गः सर्वायुः ८२ ॥ तत्पट्टे सिंहप्रभसूरयः तेषां च बीजापुरे श्रे० अरसीहः पिता सं० १२२८ जन्म १२९१ दीक्षा १३०८ सूरिपदं १३१३ स्वर्गः सर्वायुः ३१ ततः श्रीअजितसिंहसूरयः, यस्य समरासिंहः शिष्यः तस्य कोकग्रामे शा० जिनदेवः पिता सं० १२८३ जन्म १२९१ दीक्षा १३१४ सूरिपदं १३१६ गच्छेशपदं १३३९ स्वर्गः सर्वायुः ५७ ॥ तत्पट्टे देवेन्द्रसिंहसूरयः तस्य पाल्हणपुरे जन्म पिता सान्नुनामा

१२९९ जन्म १३०६ दीक्षा १३२३ सूरिपदं १३३९ गच्छेशत्वं  
 १३७१ स्वर्गः सर्वायुः ७३ ॥ तत्पट्टे श्रीधर्मप्रमसूरयः, तेषां भिन्नमाले  
 व्यवहारी लिम्बनामा पिता सं. १३३१ जन्म १३४१ दीक्षा १३५९  
 सूरिपदं १३७१ गच्छेशपदं १३९३ स्वर्गः सर्वायुः ६३ ॥ ततः श्री-  
 सिंहातिलकसूरयः, तेषां आदित्यवाटके श्रे० आसवरः पिता सं.  
 १३४५ जन्म १३५२ दीक्षा १३७१ सूरिपदं १३९३ गच्छेशपदं  
 १३९५ स्वर्गः सर्वायुः ५१ ॥ तत्पट्टे महेन्द्रप्रमसूरयः तेषां वडग्रामे  
 परीख आधानामा पिता सं. १३६३ जन्म १३६९ दीक्षा १३८९  
 सूरिपदं १३९८ गच्छेशपदं १४४३ स्वर्गः सर्वायुः ८१ ॥ तत्पट्टे मे-  
 रुतुङ्गसूरयः ॥ अत एव दिगम्बरोक्तक्रमो यथा ॥

## ॥ दिगम्बरपट्टावली ॥

महावीरमोक्षात्स्वमोक्षपर्यन्तं वर्षाणि.

आचार्यनाम  
 गौतमस्वामी व. १२  
 सुवर्मा व. २४  
 जम्बूस्वामी<sup>१</sup> व. ६२  
 विष्णुकुमारः व. ७६  
 नन्दिमित्रः व. ९२  
 अपराजितः व. ११४  
 गोवर्द्धनः व. १३३  
 भद्रनाहुः<sup>२</sup> व. १६२  
 विशाखाचार्यः व. १७२  
 प्रोष्ठिलाचार्यः व. १९१

क्षत्रियाचार्यः व. २०८  
 जयसेनः व. २२८  
 सागरसेनः व. २४७  
 सिद्धार्थाचार्यः व. २६४  
 धृतिसेनाचार्यः व. २८२  
 विजयाचार्यः व. २९५  
 बुद्धलिङ्गाचार्यः व. ३१५  
 देवाचार्यः व. ३२९  
 धर्मसेनाचार्यः<sup>३</sup> व. ३४५  
 नक्षत्राचार्यः व. ३६३  
 जयपालाचार्यः व. ३८३

१ एते त्रय एव केवलिनः २ एते पञ्च श्रुतकेवलिनः  
 ३ एते ११ दशपूर्विणः

पाण्डवाचार्यः व. ४२२  
 ध्रुवसेनाचार्यः व. ४३६  
 कसाचार्यः व. ४६८  
 सुभद्राचार्यः व. ४७४  
 यशोभद्राचार्यः व. ४९२  
 भद्रबाहुः व. ५१५

लोहाचार्यः<sup>१</sup> व. ५१५  
 अहिदिलाचार्यः व. ५९६  
 माघनन्दाचार्यः व. ६१४  
 धरसेनाचार्यः व. ६३३  
 पुष्पदन्ताचार्यः ६८३  
 भूतबल्याचार्यः व. ७०३

महावीरमोक्षवर्षा ६८३ द्वर्षे विक्रमादित्यस्य जन्म तथा च  
 महावीरमोक्षात् ४९३ वर्षे त० सुभद्राचार्यात् २४ वर्षे त० विक्रम-  
 जन्मतः २२ वर्षे त० तद्राज्याच्चतुर्थे वर्षे भद्रबाहुर्जातस्तमाश्रित्याह

आचार्यस्य मोक्षः संवत्

|                                |      |      |     |                         |      |      |     |
|--------------------------------|------|------|-----|-------------------------|------|------|-----|
| भद्रबाहुः                      | .... | .... | २६  | कुमारनन्दिः             | .... | .... | ४२७ |
| गुप्तिगुप्तः <sup>२</sup>      | .... | .... | ३६  | लोकचन्द्रः              | .... | .... | ४५३ |
| माघनन्दिः                      | .... | .... | ४०  | प्रभाचन्द्रः            | .... | .... | ४७८ |
| जिनचन्द्रः <sup>३</sup>        | .... | .... | ४९  | नेमिचन्द्रः             | .... | .... | ४८७ |
| कुन्दकुन्दाचार्यः <sup>४</sup> | .... | .... | १०१ | भानुनन्दिः              | .... | .... | ५०८ |
| उमास्वातिः <sup>५</sup>        | .... | .... | १४२ | हरिनन्दिः               | .... | .... | ५२५ |
| लोहाचार्यः <sup>६</sup>        | .... | .... | १५३ | वसुनन्दिः               | .... | .... | ५३१ |
| यशःकीर्तिः                     | .... | .... | २०१ | वीरनन्दिः               | .... | .... | ५६१ |
| यशोनन्दिः                      | .... | .... | २५८ | रत्ननन्दिः <sup>७</sup> | .... | .... | ५८५ |
| देवनन्दिः                      | .... | .... | ३०८ | माणिक्यनन्दिः           | .... | .... | ६०१ |
| पूज्यपादः                      | .... | .... | ३५३ | मैधचन्द्रः              | .... | .... | ६२७ |
| गुणनन्दिः                      | .... | .... | ३६४ | शान्तिकीर्तिः           | .... | .... | ६४२ |
| वज्रनन्दिः                     | .... | .... | ३८६ | मेरुकीर्तिः             | .... | .... | ६८६ |

१ एते ९ एकादशाङ्गधारिणः २ श्वेताम्बरोत्ततिः ३ घण्टाके  
 विशेषो द्रष्टव्यः ४ पद्मनन्दि, वक्रग्रीव, गृध्रापेच्छ, एलाचार्या इति-  
 तस्यैव नामानि ५ काष्ठासंबेत्पत्तिः ६ प्रागुदगिति पञ्चद्वय तत एव  
 ७ रत्न कीर्ति.

|                               |      |                            |      |
|-------------------------------|------|----------------------------|------|
| महाकीर्तिः                    | ७०४  | गुणचन्द्रः                 | १०९६ |
| विष्णुनन्दिः                  | ७२९  | लोकचन्द्रः <sup>६</sup>    | १०७९ |
| श्रीभूषणः                     | ७३९  | श्रुतकीर्तिः               | १०९९ |
| शीलचन्द्रः <sup>१</sup>       | ७४९  | भावचन्द्रः                 | १११५ |
| श्रीनन्दिकीर्तिः <sup>२</sup> | ७६९  | महाचन्द्रः <sup>७</sup>    | ११४० |
| देशभूषणः                      | ७६९  | माघचन्द्रः                 | ११४४ |
| अनन्तकीर्तिः                  | ७८९  | ब्रह्मनन्दिः <sup>१०</sup> | ११४८ |
| धर्मनन्दिः                    | ८०८  | शिवनन्दिः                  | ११९९ |
| वीरचन्द्रः <sup>३</sup>       | ८४०  | विश्वचन्द्रः <sup>११</sup> | ११९६ |
| रामचन्द्रः                    | ८९७  | सिंहनन्दिः <sup>१२</sup>   | ११९० |
| रामकेतुः <sup>४</sup>         | ८७८  | भावनन्दिः                  | ११९७ |
| अभयचन्द्रः                    | ८९७  | देवनन्दिः <sup>१३</sup>    | ११७० |
| नरचन्द्रः <sup>५</sup>        | ९१६  | विद्याचन्द्रः              | ११७६ |
| नागचन्द्रः                    | ९३९  | सुरचन्द्रः                 | ११८४ |
| नयननन्दिः                     | ९४८  | माघनन्दिः                  | ११८८ |
| हरिचन्द्रः                    | ९७४  | ज्ञाननन्दिः <sup>१४</sup>  | ११९९ |
| महीचन्द्रः                    | ९९०  | गङ्गाकीर्तिः               | १२०६ |
| माघचन्द्रः <sup>१</sup>       | १०२३ | सिंहकीर्तिः                | १२०९ |
| लक्ष्मीचन्द्रः                | १०३७ | हेमकीर्तिः                 | १२१९ |
| गुणकीर्तिः <sup>७</sup>       | १०४८ | अभयचन्द्रः*                | .... |

१ श्रीचन्द्रः २ नन्दिकीर्तिः ३ विद्यानन्दिः ४ रामकीर्तिः ५  
नरनन्दिः ६ माघचन्द्रः ७ गुणनन्दिः ८ यासवचन्द्रः ९ महीचन्द्रः  
१० गुणनन्दिः ११ यमुचन्द्रः १२ संयनन्दिः १३ सुरकीर्तिः  
१४ ज्ञानकीर्तिः

नेमिनन्दिः—नेमिकीर्तिः—नेन्दरशाः—श्रीचन्द्रः—यमकीर्तिः—  
वन्दनानः—अक्षयः चन्द्रगुरुः—रेशवः—चन्द्रः—अभयकीर्तिः—यमन्त-  
कीर्तिः—यमामी—(पूर्वोक्तानुसंगानं लभेया विषयम्)

७ बाह्यनन्दिः पादस्याह देहलीराजाज्ञया वत्स।रिण



तथा च सिद्धराजसमक्षं दिगम्बरकुमुदचन्द्रे जिते वादिदेवसूरि-  
 प्रशंसाकर्तृषु प्रद्युम्नाचार्य, हेमाचार्य, उदयप्रमदेव, मुनिदेवाचार्य,  
 मेरुतुङ्गाचार्येषु सत्सु खरतरगच्छीयोऽञ्जलगच्छीयश्च द्वयोर्मध्ये नैको-  
 स्य ग्रन्थस्य कर्ता सभवति ग्रन्थान्ते १३६१ वर्षे कृत इत्युक्तत्वात् ।  
 तदुत्तरमपि, १ तथा च ग्रन्थकर्त्रा येभ्यो ग्रन्थेभ्यः पद्यानि गृहीतानि  
 तत्स्थलमपि, २ तथा च जैनोयानां चरित्रग्रन्थेष्वेकनामानो यावन्तः  
 प्राचीनार्वाचीना राजानः सूरयश्च तेषां सहैव चरितानि वर्णयन्ति  
 ग्रन्थकर्तारस्तत्तेषां कालभेदनिरूपणमपि ३ मत्कृतैतन्मुद्रणोन्मुद्रिता  
 भगवन्तो दर्शयिष्यन्तीत्याशयाश्रयणीयं सद्गुणदिष्ट ज्ञापमेवाधुना श्रेय-  
 स्करमित्यलं पञ्चवितेन, अथवाल्पकालभाविन्यामस्यैव द्वितीयावृत्तौ  
 समीचीनशुद्धतरायां सर्वं स्फुटं भविष्यति ॥ तथा च । सं. १२६२  
 वर्षे धर्मघोषसूरिभिः कृता "शतपदिका" सैव १२९४ वर्षे महेन्द्र-  
 सिंहसूरिभिः सुखावबोधा कृता । तस्या एव शतपदिकासारोद्धारो नाम  
 ग्रन्थो मेरुतुङ्गसूरिणा कृतः । तथा सूरिमन्त्रसारोद्धारः २ मेघदूतका-  
 व्यम् ३ कातन्त्रव्याकरणस्य व्याख्यानम् । तत्र युगत्रयेन्दुसंख्येन्दे,  
 ग्रन्थः कृत इत्युक्तं तथा रंभेपि नत्वा चन्द्रप्रभं गुरुमित्यादौ विशेषोपि  
 सूचितः । ४ महापुरुषचरित्रं प्राकृतम् ५ एतेषु मत्परिचितेषु मेरुतु-  
 ङ्गकृतेषु प्रबन्धचिन्तामणेरस्य सर्वोपनिषद्भूतत्वाच्चात्प्रगटीकरणं स-  
 मञ्जसमिति ॥ इति प्रस्तावना ॥ रा० दी० ॥



## ॥ प्रबन्धचिन्तामणिः ॥



॥ ॐ नमः श्रियै ॥ श्रीस्वामिने नमः ॥

श्रीनाभिभूर्जिनः<sup>१</sup> पातु परमेष्ठी भवान्तरुत् ।

श्रीभारत्योश्चतुर्द्वारमुचितं<sup>२</sup> यच्चतुर्मुखी ॥ १ ॥

नृणामुपलतुल्यानां यस्य द्रावकरः करः ।

ध्यायामि तं कलावन्तं गुरुं चन्द्रप्रभं प्रभुम् ॥ २ ॥

गुम्फान्विधूय विविधान्सुखबोधाय धीमताम् ।

श्रीमेरुतुङ्गस्तद्वद्वयवन्वाद्ग्रन्थं तनोत्यमुम् ॥ ३ ॥

रत्नाकरात्सद्गुरुसंप्रदाया—

प्रबन्धचिन्तामणिमुद्दिधीर्षीः ।

श्रीधर्मदेवः प्रथमोपरोध—

वृत्तेश्च साहाय्यामिह व्यधत् ॥ ४ ॥

श्रीगुणचन्द्रगणेशः प्रबन्धचिन्तामणिं नवं ग्रन्थम् ।

भारतामिवाभिरामं प्रथमादर्शं प्रदर्शितवान् ॥ ५ ॥

१ श्रीरूपभदेवः २ मणिरत्नमयमुवर्णययतैव्यमण्यदुर्गत्रये  
समग्रसणे चतुर्दिक्षु द्वारस्य विद्यमानत्वाच्चतुर्द्वारमुचितं च-  
तुर्दिशदक्षिणपप्रभाशस्तर्वाभिमुख्येन देवता दद्यानस्य तीर्थरूपस्य  
प्राप्त्याश्चतुर्द्वारमुचितं यस्तस्योन्धनी श्रीनारदनी च चतुर्मुखी देव-  
नाथे प्रसिद्धा

भृशं श्रुतत्वान्न कथाः पुराणाः  
 प्रीणान्ति चेतांसि तथा बुधानाम्  
 वृत्तैस्तदासन्नसतां प्रबन्ध—  
 चिन्तामणिग्रन्थमहं तनोमि ॥ ६ ॥  
 बुधैः प्रबन्धाः सुधियोच्यमाना  
 भवन्त्यवश्यं यदि भिन्नभावाः ।  
 ग्रन्थे तथाप्यत्र सुसंप्रदाया—  
 दृब्धे न चर्चा चतुरैर्विधेया ॥ ७ ॥

॥ अथ विक्रमार्कप्रबन्धः ॥

अन्त्योप्याद्यः समजनि गुणैरेक एवावनीशः  
 शौर्यौदार्यप्रभृतिभिरिहोर्वीतले विक्रमार्कः ।  
 श्रोतुः श्रोत्रामृतसवनवत्तस्य राज्ञः प्रबन्धं  
 साक्षिप्योच्चैर्विपुलमपि तं वच्मि किञ्चित्तदादौ ॥८॥  
 तथाहि ॥

अवन्तिदेशे<sup>१</sup> सुप्रतिष्ठाननामानि नगरेऽसमसा-  
 हसैकनिधिर्दिव्यलक्षणलक्षितो<sup>२</sup> विक्रमादिगुणैः  
 संपूर्णो<sup>३</sup> विक्रमनामा राजपुत्र आसीत् । स  
 पुनराजन्म दारिद्र्योपहतोप्यतिनीतिपरः सन्यरः-

शतैरप्युपायैरथानुपलभमानः कदाचिद्वदमात्रमि-  
त्रसहायो रोहणाचलं प्रति प्रतस्थे । तत्र तदासन्ने  
प्रवरनामानि नगरे कुलालस्थालये विश्रम्य प्रभात-  
समये स भट्टमात्रेण खनित्रं याचितः प्राह । अत्र  
खनीमध्यमध्यास्य प्रातः पुण्यश्रवणपूर्वं ललाटं  
करतलेन संस्पृश्य हा दैवमित्युदीरयन्वाते पातिते  
सति दुर्गतो यथाप्राप्त्या रत्नानि लभतोऽस वृत्तान्तममुं  
तस्मात्सम्यगवगम्य विक्रमेण तदैन्यं कारयितुमक्ष-  
मस्तान्युपकरणानि सहादाय रत्नखननार्थं खनीम-  
ध्ये प्रहारोद्यतं विक्रममभिदधे । यत्कश्चिदवन्त्याः  
समागतो वैदेशिकः स्वगृहे कुशलोदन्तं दृष्टो भवन्मा-  
तुः पञ्चत्वमाचरन्त्यौ । तत्तप्तवज्रशूचीनिभं वचो नि-  
शम्य ललाटं करतलेनाहत्य हा दैवमित्युच्चरन्व-  
नित्रं करतलाच्चिक्षेप । तेन खनित्राग्रेण विदारिता-  
यां भुवि देदीप्यमानं सपादलक्ष्यमूल्यं रत्नं प्रादुरासी-  
त् । भट्टमात्रस्तदादाय विक्रमेण सह प्रत्यावृत्तः ।  
तच्छोकशङ्कुशङ्कापनोदाय खनीवृत्तान्तज्ञापनपूर्वं  
तत्कालमेव मातुः कुशलमुक्तवान् । विक्रमः सहजां  
लोलुभतां विमृश्य भट्टमात्रस्य कुप्रा तत्कराद्रत्नमा-  
छिद्य पुनः खनीकण्ठे प्राप्तः ।

भृशं श्रुतत्वान्न कथाः पुराणाः

प्रीणन्ति चेतांसि तथा बुधानाम्

वृत्तैस्तदासन्नसतां प्रबन्ध—

चिन्तामणिग्रन्थमहं तनोमि ॥ ६ ॥

बुधैः प्रबन्धाः सुधियोच्यमाना

भवन्त्यवश्यं यदि भिन्नभावाः ।

ग्रन्थे तथाप्यत्र सुसंप्रदाया—

दृढ्ये न चर्चा चतुरैर्विधेया ॥ ७ ॥

॥ अथ विक्रमार्कप्रबन्धः ॥

अन्त्योप्याद्यः समजनि गुणैरेक एवावनीशः

शौर्यौदार्यप्रभृतिभिरिहोर्वीतले विक्रमार्कः ।

श्रोतुः श्रोत्रामृतसवनवत्तस्य राज्ञः प्रबन्धं

संक्षिप्योच्चैर्विपुलमपि तं वच्मि किञ्चित्तदादौ ॥ ८ ॥

तथाहि ॥

अवन्तिदेशे<sup>१</sup> सुप्रतिष्ठाननामानि नगरेऽसमसा-

हसैकनिधिर्दिव्यलक्षणलक्षितो<sup>२</sup> विक्रमादिगुणैः

संपूर्णो<sup>३</sup> विक्रमनामा राजपुत्र आसीत् । स

पुनराजन्म दारिद्र्योपद्रुतोप्यतिनीतिपरः सन्यरः-

तालमालोक्तवान् । स च बुभुक्षाक्षामकुक्षिस्तानि  
 भोज्यानि यदृच्छयोपभुज्य गन्धद्रव्यैश्च स्वशरीरं वि-  
 लिप्य ताम्बूलास्वादनेन परितुष्टस्तत्र पत्यङ्गे स-  
 मुपविश्य श्रीविक्रमं प्राह । रे मनुज अहमग्निवेताल-  
 नामा देवराजप्रतीहारतया प्रतीतः प्रतिदिनमे-  
 कैकं नृपं निहन्मि । किं तु तवानया भक्त्या प्रीणि-  
 तेन मयाऽभयदानपूर्वं तव राज्यं प्रदत्तं परमेताव-  
 द्भक्ष्यभोज्यानि मम सदैवोपढौकनीयानि । इत्थ-  
 मुभाभ्यामपि प्रतिपन्ने कियत्यपि गते काले श्रीवि-  
 क्रमेण राज्ञा निजमायुः पृष्टः । नाहं वेद्मि किं तु  
 स्वस्वामिनं विज्ञाप्य भवन्तं विज्ञापयिष्यामीत्युक्त्वा  
 गतः । पुनरन्यस्यां निशि समेतः । महेन्द्रेण संपूर्ण-  
 शतायुरादिष्ट इति तं जगौ । स राज्ञा मित्रधर्मम-  
 धिकमधिरोप्येत्युपरुध्य<sup>१</sup> यन्महेन्द्रपाश्र्वादेकेन हा-  
 यनेन हीनं वर्षशतं कारयेति स तदङ्गीकृत्य भूयोऽ-  
 भ्युपेतः सन्नित्युवाच । महेन्द्रेणापि न नवनवतिर्नै-  
 कोत्तरं वर्षशतं भवतीति<sup>२</sup> निर्णये ज्ञाते यावत्परस्मि-  
 न्दिने तद्योग्यं भक्ष्यभोज्यादिपाकं निषिध्य नृपः  
 संग्रामसज्जो भूत्वा निशि तस्यौ । तावत्तत्रैव पूर्व री-

धिग् रोहणं गिरिं दीनदाद्यत्रणरोहणम् ।

दत्ते हा दैवमित्युक्ते रत्नान्यर्थिजनाय यः ॥

इत्युदीर्य सकललोकप्रत्यक्षं तत्रैव तद्रत्नमुत्सृ-  
ज्य पुनर्देशान्तरं परिभ्राम्यन्नवन्तिपरिसरं<sup>१</sup> प्राप्तः ।  
पटुपटहध्वनिमाकर्ण्य वृत्तान्तमवबुध्य च तं लुप्त-  
वान् । तेन समं स राजमन्दिरे समायातः । तस्मि-  
न्नेवाष्ट्रे मुहूर्त्ते अहोरात्रप्रमिते राज्ये सचिवैरभि-  
षिक्तो दीर्घदर्शितयेति दध्यौ । यदस्य राज्यस्य प्र-  
बलः कोप्यसुरः सुरो वा क्रुद्धः सन्प्रतिदिनमेकैकं  
नृपं संहरति नृपाभावे देशविनाशं करोति । अतो  
भक्त्या वा शक्त्या तदनुनयः समुचित इति ना-  
नाविधानि भक्ष्यभोज्यानि<sup>२</sup> निर्माप्य प्रदोषसमये  
चन्द्रशालायां सर्वमपि सज्जीकृत्य निशारात्रिका-  
वसरानन्तरमङ्गरक्षैर्वृतस्तत्र भारशृङ्खलायां निहित-  
पल्यङ्के निजपट्टदुकूलाच्छादितमुच्छीर्षिकं नियोज्य  
स्वयं प्रदीपच्छायामाश्रित्य कृपाणपाणिधैर्यनि-  
र्जितजगत्त्रयो दिगवलोकनपरो यावदास्ते तावन्म-  
हानिशीथसमये वातायनद्वारेण प्रथमं धूमं ततो  
ज्वालां ततः साक्षात्प्रेतपतिरूपमिव करालं वे-

तालमालोक्तवान् । स च त्रुभुक्षाक्षामकुक्षिस्तानि  
भोज्यानि यदृच्छयोपभुज्य गन्धद्रव्यैश्च स्वशरीरं वि-  
लिप्य ताम्बूलास्वादनेन परितुष्टस्तत्र पत्यङ्गे स-  
मुपविश्य श्रीविक्रमं प्राह । रे मनुज अहमग्निवंताल-  
नामा देवराजप्रतीहारतया प्रतीतः प्रतिदिनमे-  
कैकं नृपं निहन्मि । किं तु तवानया भक्त्या प्रीणि-  
तेन मयाऽभयदानपूर्वं तव राज्यं प्रदत्तं परमेताव-  
द्भक्ष्यभोज्यानि मम सदैवोपढौकनीयानि । इत्य-  
मुभाभ्यामपि प्रतिपन्ने कियत्यपि गते काले श्रीवि-  
क्रमेण राज्ञा निजमायुः पृष्टः । नाहं वेद्मि किं तु  
स्वस्वामिनं विज्ञाप्य भवन्तं विज्ञापयिष्यामीत्युक्त्वा  
गतः । पुनरन्यस्यां निशि समेतः । महेन्द्रेण संपूर्ण-  
शतायुरादिष्ट इति तं जगौ । स राज्ञा मित्रधर्मम-  
धिकमधिरोप्येत्युपरुध्य<sup>१</sup> यन्महेन्द्रपाश्वर्वादेकेन हा-  
यनेन हीनं वर्षशतं कारयेति स तदङ्गीकृत्य भूयोऽ-  
भ्युपेतः सन्नित्युवाच । महेन्द्रेणापि न नवनवतिर्नै-  
कोत्तरं वर्षशतं भवतीति<sup>२</sup> निर्णये ज्ञाते यावत्परस्मि-  
न्दिने तद्योग्यं भक्ष्यभोज्यादिपाकं निषिध्य नृपः  
संग्रामसज्जो भूत्वा निशि तस्यौ । तावत्तत्रैव पूर्व री-



त्या समुपागतः स नृपं जगौ । तद्भोज्यादिकमनी-  
 क्ष्यराजानमधिचिक्षेप च तयोश्चिरं द्वन्द्वयुद्धे जायमा-  
 ने सुकृतसहायेन राज्ञा तं पृथ्वीतले पातयित्वा  
 हृदि चरणमारोप्येष्टं दैवतं स्मरेत्यादिष्टः स नृपं  
 जगौ । अमुनाद्भुतसाहसेन पारितुष्टोस्मि यकृत्यादे-  
 शकारी अग्निवेतालनामाहं तव सिद्धः॥एवं निष्कण्टकं  
 तस्य राज्यमजनि। इत्थं तेन पराक्रमाक्रान्तदिग्वल-  
 येन<sup>१</sup>पणवतिप्रतिनृपतिमण्डलानि स्वभोगमानिन्ये  
 वन्यो<sup>२</sup> हस्ती स्फुटिकघटिते भित्तिभागे स्वविम्बं  
 दृष्ट्वा दूरात्प्रतिगज इति त्वद्विपां मन्दिरेषु ।

हत्वा कोपाद्बलितरदनस्तं पुनर्वीक्ष्यमाणो  
 मन्दं मन्दं स्पृशति करिणीशङ्कया साहसाङ्क<sup>३</sup> ॥१॥  
 अवन्त्यां पुरि श्रीविक्रमादित्यराज्ञः सुता प्रियङ्गुम-  
 ज्जरी साध्ययनाय वररुचिनाम्नः पाण्डितस्य समर्पिता  
 सा प्राज्ञतया सर्वाणि शास्त्राणि तत्पार्श्वे कियद्भि-  
 र्यासैररधोत्ययौवनभरवर्त्तमाना जनकं नित्यमाराध-  
 यन्ती कदाचिद्वसन्तसमये वर्त्तमाने गवाक्षे सुखास-  
 नासीना मध्यान्दिनप्रस्तावे ललाटन्तपे तपने पथि

१ C भाक्रान्तमण्डलेन २ वररुचिना राज्ञः स्तुतिः रुनेपम् ।  
 साहसाङ्क इति विक्रमस्यापरं नाम ३ A D G साहसाङ्कः

संचरन्तमुपाध्यायमालोक्य वातायनच्छायासु वि-  
 श्रान्तं तमुवाच । परिपाकपेशलानि सहकारफलानि  
 दर्शयन्ती तं तल्लोलुभमवबुध्यामूनि फलानि शीत-  
 लान्युष्णानि वा तुभ्यं रोचत इति तद्वचनचातुरी-  
 तत्त्वमनवबुध्य तान्युष्णान्येवाभिलषामीति तेनोक्ते  
 तदुपढौकितवस्त्राञ्चले तिर्थगुप्तानि मुमोच । भूतल-  
 पाताद्रजोवगुण्ठितानि करतलाभ्यामादाय स्वमुख-  
 मारुतेन तद्रजोपनयन् राजकन्यया सोपहासमभि-  
 दधे । किमत्युष्णान्यमूनि वदनवातेन शिशिरीकुरु-  
 पे इति तस्याः सोपहासवचसा सामर्पः स द्विजः  
 प्राह । रे विदग्धमानिनि गुंसुवितर्कपराया भवत्याः  
 पशुपाल एव पतिरस्तु । इति तच्छापं श्रुत्वा त-  
 योक्तं यस्तव त्रैविद्यस्याप्याधिको विद्यतया<sup>१</sup> परमगुरु-  
 स्तमेव विवाहयिष्यामि सेति प्रतिज्ञातवती । अथ  
 श्रीविक्रमे तदुचितप्रवरवरचिन्तासमुद्रमग्रे स पण्डि-  
 तः कदाचिदभिलपितवरनिवेदनोत्सुकीकृतराजशा-  
 सनादरण्यानीमयगाहमानोतिवृष्णातरलितः<sup>२</sup> सर्व-  
 तः सर्वतो मूर्खाभावात्पशुपालमेकमालोक्य जलं  
 याचितवान् । तेनापि जलाभावाद्बुद्धं पिवेत्युत्का

करवडीं विधेहीत्यभिहिते सर्वेष्वभिधानेष्वभिधान-  
मिदं<sup>१</sup> मश्रुतमाकर्ण्य चिन्ताचान्तस्वान्तः स्वहस्तं त-  
न्मस्तके दत्त्वा महिष्यास्तले निवेश्य करवडीसंज्ञां क-  
रतलयुगलयोजनां कारयित्वाकण्ठं पयः पायितः ।  
स तं मस्तके हस्तदानात्करवडीविशेषशब्दज्ञापना-  
च्च गुरुप्रायं मन्यमानस्तस्याः<sup>२</sup> समुचितपतिमवगम्य  
महिषीपरिहारान्नं निजं सौधमानीय पण्मासीं याव-  
त्तद्वपुःपरिकर्मपूर्व<sup>३</sup> उं नमः शिवायेत्याशिर्वादाध्या-  
पनंकारितः । पङ्क्तिर्मसैस्तस्य तान्यक्षराणि कण्ठपीठ-  
स्थितान्यवगम्य शुभे मुहूर्त्ते कृतशृङ्गारः स पाण्डितेन  
नृपसभां नीतो नृपं प्रति सदभ्यस्तमाशिर्वादं स-  
भाक्षोभवशादुशरटेत्यक्षरैर्जगौ । विसंस्थूलवचसा  
विस्मितस्य नृपतेरसतीं<sup>४</sup> तच्चातुरीमारोपयितुका-  
मः पाण्डितः<sup>५</sup> प्राह ॥

उभया सहितो रुद्रः शंकरः गूलपाणिभृत् ।

रक्षतु त्वां महीपाल टंकारबलगर्वितः ॥ १ ॥

इति विदितेन श्लोकेन तत्पाण्डित्यगम्भीरतां व-  
चनविस्तरेण व्याख्यातवान् । तत्प्रत्ययप्रीतेन नृ-

१ A अभिधानेऽपिदं २ C गुरुप्रायं तस्याः ३ A D परिकर्मणा  
पूर्वं ४ B नृपतेर्नैवसे तच्चातुरीं ५ A C पाण्डितः । उभया

पतिना हि महिषीपालः स्वां पुत्रीं परिणायितः  
 पण्डितोपदिष्टं सर्वधामौनमेवालम्बमानो राजकन्य-  
 कया तैद्वैदग्ध्यजिज्ञासया नवलिखितपुस्तकस्य शो-  
 धनायोपरुद्धः। करतले पुस्तकं विन्यस्य तदक्षराणि  
 विन्दुमात्रारहितानि नखञ्छेदिन्या<sup>१</sup> केवलान्येव कु-  
 र्वन् राजपुत्र्या महिषीपाल एव निर्णोतः । ततः  
 प्रभृति जामातृशुद्धिरिति सर्वतः प्रसिद्धिरभूत् ।  
 कदाचिच्चित्रभित्तौ महिषीनिबहे दर्शिते सति प्रमो-  
 दात्स्वप्रतिष्ठां विस्मृत्य तदाब्धानोचितानि विकृति-  
 वचनान्युच्चरन्महिषीपाल इति निश्चिन्त्ये । स तां  
 तदवज्ञामाकलय्य कालिकां देवीं विदत्ताकृते आ-  
 रराध । पुत्रीवैधव्यभीतेन राज्ञा निशि छद्मना दा-  
 र्सीं ग्रहित्य तवाहं तुष्टास्मीत्यभिधाय यावत्स उ-  
 त्याप्यते तावद्विप्लवभीतकालिकैव देवी प्रत्यक्षीभू-  
 य तमनुजग्राह । तद्वृत्तान्तावबोधात्प्रमुदितया रा-  
 जकन्यया तत्रागत्यास्ति कश्चिद्वाग्विशेष इत्यभिहि-  
 ते स तदैव कालिदासनाम्ना प्रसिद्धः कुमारसंभव-  
 प्रभृतिमहाकाव्यत्रयपट्प्रबन्धान्<sup>२</sup> रचयामास । अ-

१ B राहेनाने केनानि A अदरञ्छेदिन्या D क्षेपिन्या

२ A महाकाव्यत्रयं पट् प्रबन्धान् C महाकाव्यप्रबन्धान्

न्यदा<sup>१</sup> तन्नगरवास्तव्यो दान्ताभिधानश्रेष्ठी सभास-  
स्थितं विक्रमार्कमुपायनपाणिरुपागत्य प्रणामपूर्वकं  
विज्ञपयामासे । स्वामिन्मया शुभे सुहृत्ते प्रधानव-  
र्द्धकिभिर्द्धवलगृहं कारितं तत्र महतोत्सवेन प्रवेशः  
कृतः यावदहं तत्र निशथि पत्यङ्कस्थितः सुतजा-  
ग्रदवस्थया तिष्ठामि तावत्यतामीत्याकस्मिकीं गिरं  
निशम्य भयभ्रान्तो मा पतेत्युदीरयंस्तदैव पलाय-  
नमकार्षे । तस्य धवलगृहस्य सम्बन्धिनैमित्तिकैः  
स्थपतिभिश्च यथावसरमहोनादिभिः सत्कारैर्वृथा  
दण्डित<sup>२</sup> इत्यर्थे देवः प्रमाणं । तमुदन्तं सम्यगवधार्य  
तदुक्तं तद्धवलगृहमूल्यं लक्षत्रयं तस्मै प्रदाय संध्या-  
सर्वावसरानन्तरं तस्मिन्नात्मीयीकृते सौधे श्रीवि-  
क्रमः सुखं प्रसुतः । तामेव पतामीति गिरमाकर्ण्या-  
समसाहसिकतया सत्वरं पतेत्युदीरयन्समीपे पति-  
तं सुवर्णपुरुषं प्राप । इत्थं पुरुषसिद्धिः ॥ अथा-  
स्मिन्नवसरे कश्चिद्विधपुरुषः करकृतलोहमयकृ-  
शतरदरिद्रपुत्रको द्वाःस्थनिवेदितो नृपं ग्राह ।  
स्वामिन्भवता नाथेन प्रथितायामवन्त्यां सर्वाण्य-

१ ० अथान्यदा २ १ यथावसरं महादानादिभिः सत्का-  
रैश्च गृहाहं दण्डित

पि वस्तूनि सत्वरमत्र विक्रयं यान्ति लभ्यन्ते चेति  
 प्रसिद्धिं ब्रुवा चतुरशीतिसंख्येषु चतुःपथेष्वहो-  
 रात्रं विक्रयाय दरिद्रपुत्रको भ्रामितोपि केनापि  
 न गृहीतः । प्रत्युताहं निर्भत्सित इति नगर्या  
 यथावस्थितं कलङ्कं महाराज्ञे विज्ञप्य यथागतं ब्र-  
 जामीत्याष्टच्छन्नस्मि । तदैव तं महान्तं कलङ्कपङ्क-  
 पुर्याः पर्यालोच्य दीनारलक्षं तस्मै प्रदाय नृपस्तं  
 लोहपुत्रकं कोशे निवेशयामास । तस्यामेव निशि  
 प्रथमयामे सुखसुप्तस्य राज्ञः समीपे राज्याधिष्ठातृ-  
 दैवतं द्वितीययामे हयाधिष्ठातृदैवतं तृतीययामे  
 लक्ष्मीश्चाविर्भूय महाराज्ञा दारिद्र्यपुत्रके क्रीते ना-  
 स्माकमिहावस्थातुमुचितमित्याष्टच्छन्न राज्ञः सा-  
 हसभङ्गो माभूदित्यनुज्ञातानि तानि जग्मुः । चतुर्थ-  
 यामेत्र कश्चिदुदारपुरुषो दिव्यतेजोमयमूर्तिः प्रादु-  
 र्भूयाहं सत्त्वनामा भवन्तमाभवं श्रितो गन्तुमाष्टच्छ-  
 इत्युदिते करतलेन नृपः कृपाणिकामादाय याव-  
 दात्मघाताय व्यवस्पति तावत्तेनैव करे गृहीत्वा  
 तुष्टोस्मीत्यभिधाय स्खलितः । गजाद्यधिष्ठातृणि  
 त्रीणि दैवतानि प्रत्यावृत्त्य नृपं शोचुः । गमन-  
 संकतव्याघातिना सत्येन विश्रलब्धानां नृपं विहाय

नास्माकं गमनमुचितमिति तान्यप्ययत्नं तस्थुः ।  
 अथान्यस्मिन्नवसरे सभास्थितं श्रीविक्रमं सामु-  
 द्रिकशास्त्रवेदी कश्चिद्वैदेशिको द्वाःस्थनिवेदितः प्र-  
 विश्य नृपलक्षणानि निरीक्ष्यमाणः शिरोधूननपरो  
 नृपेण स विपादकारणं पृष्ट ऊचे । यत्त्वां सर्वापल-  
 क्षणनिधिमपि पणवतिदेशसाम्राज्यलक्ष्मीं भुञ्ज-  
 नमवेक्ष्य सामुद्रिकशास्त्रे निर्वदपरोऽभवं । तत्कि-  
 मपि कर्तुरान्तं न पश्यामि यत्प्रभावेण त्वमपि  
 राज्यं करोषि । तद्वाक्यानन्तरं कृपाणिकामादाय  
 यावदुदरे निधत्ते तावत्तेन किमेतदिति पृष्टः श्री-  
 विक्रमः प्राह । उदरं विदार्य तव तद्विधमन्तं दर्श-  
 यिष्यामीति वदन्द्वात्रिंशतोधिकमिदं सत्त्वलक्षणं  
 तव नोवगतमिति पारितोषिकदानपूर्वकं नृपस्तं  
 विससर्ज ॥ अथ कस्मिंश्चिदवसरे परपुरप्रवेशवि-  
 द्या निराकृताः सर्वा अपि विफलाः कला इति  
 निशम्य तदाधिगमाय श्रीपर्वते भैरवानन्दयोगिनः  
 समीपे श्रीविक्रमस्तं चिरमाररायं । तत्पूर्वसेवकेन  
 केनापि द्विजातिना राज्ञोऽग्रे इति कथितं । यत्त्वया  
 मां विहाय परपुरप्रवेशविद्या गुरोर्नादेया । इत्यु-

परुद्धो नृपो विद्यादानोद्यतं गुरुं विज्ञपयामास । य-  
त्प्रथममस्मै द्विजाय विद्यां देहि पश्चान्मह्यं हे राज-  
न्नयं विद्यायाः सर्वथाऽनर्हं इति गुरुणोदिते 'भूयो-  
भूयस्तव पश्चात्तापो भविष्यतीत्युपदिश्य नृपोपरो-  
धात्तेन विप्राय विद्या प्रदत्ता । ततः प्रत्यावृतौ द्वाव-  
प्युज्जायिनीं प्राप्य पट्टहस्तिविपत्तिविषण्णं राजलोक-  
मालोक्य परपुरप्रवेशविद्यानुभवनिमित्तं च राजा  
निजगजशरीरे आत्मानं न्यवेशयत् ॥

तद्यथा ॥

भूपः प्राहरिके द्विजे निजगजस्याङ्गेऽविशद्विद्यया  
विप्रो भूपवपुर्विवेश नृपतिः क्रीडाशुकोऽभूत्ततः ।  
पल्लीगात्रनिवेशितात्मनि नृपे व्यामृश्य देव्या मृत्तिं  
विप्रः कीरमजीवयन्निजतनुं श्रीक्रमो लब्धवान् १ ॥  
॥ इत्थं विक्रमार्कस्य परपुरप्रवेशविद्या सिद्धा ॥

अथास्मिन्नवसरे श्रीविक्रमो राजपाटिकायां व्र-  
जंस्तन्नगरनिवासिना श्रीसङ्केनानुगम्यमानं वन्दिपु-  
त्रैः श्रीसर्वज्ञपुत्र इति स्तूयमानं श्रीसिद्धसेनाचार्य-  
मागच्छन्तमवलोक्य सर्वज्ञपुत्र इति वचसा कुपि-  
तः । तत्सर्वज्ञतापरीक्षार्थं तस्मै मानसं नमस्का-  
रमकरोत् ॥



आते दर्शनमागते दशशती संभाषिते चायुतं  
यद्वाचा च हसेहमाशु भवता लक्षोस्य विश्राण्यताम् ।  
निष्काणां परितोपके मम सदा कोटीर्मदाज्ञा परा  
कोशाधीश सदेति विक्रमनृपश्चक्रे वदान्यस्थितिम् १

सिद्धसेनोपि पूर्वगतबलेन नृपभावमवगम्य द-  
क्षिणपाणिमुदस्य धर्मलाभाशि वंददौ । नृपतिनाशि-  
र्वादहेतुं पृष्ठः सन्महर्षिस्तव मानसं नमस्कारस्याशि-  
र्वादः प्रदीयमानोस्तीत्यभिहिते तज्ज्ञानचमत्कृतेन  
राज्ञा तत्पारितोषिके सुवर्णकोटिर्व्यतीर्यत ॥ अ-  
थान्यस्मिन्नवसरे राज्ञा कोशाध्यक्षस्तस्मै दापितसुव-  
र्णवृत्तान्तं पृष्ठः प्राह । यद्धर्मवाहिकायां श्लोकवन्धे-  
न मया सुवर्णदानं निहितं ॥

तथाहि ॥

धर्मलाभ इति प्रोक्ते दूरादुच्छ्रितपणये ॥

सूरये सिद्धसेनाय ददौ कोटिं नराधिपः ॥ १ ॥

ततः श्रीसिद्धसेनसूरीन्सभायामाकार्य तत्सुवर्णं  
गृह्यतामिति प्रोक्ते वृथा तत्स्य भोजनमित्युच्चा-  
रपुरःसरमनेन सुवर्णेन ऋणयस्तामवनीमनृणीं  
कुरु । इत्युपदिष्टे तत्सन्तोषपरितुष्टेन राज्ञा तद-  
ङ्गीकृतं ॥

दिदृक्षुर्भिक्षुरायातस्तिष्ठति द्वारि वारितः ।

हस्तन्यस्तचतुःश्लोको यद्वागच्छतु गच्छतु ॥ १ ॥

दीयतां दशलक्षणि शासनानि चतुर्दश ।

हस्तन्यस्तचतुःश्लोको यद्वागच्छतु गच्छतु ॥ २ ॥

सर्वदा सर्वदोसीति मिथ्या संस्तूयसे वुधैः ।

नारयो लेभिरे पृष्ठिं न वक्षः परयोपितः ॥ ३ ॥

सरस्वती स्थिता वक्त्रे लक्ष्मीः करसरोरुहे ।

कीर्तिः किं कुपिता राजन् येन देशान्तरं गता ॥ ४ ॥

अपूर्वेयं धनुर्विद्या भवता शिक्षिता कुतः ।

मार्गणौघः समभ्येति गुणो याति दिगन्तरम् ॥ ५ ॥

आहते तव निःस्वाने स्फुटितं रिपुहृद्घटैः ।

गलिते तत्प्रियानेत्रे राजंश्चित्रमिदं महत् ॥ ६ ॥

वक्त्राभोजे सरस्वत्यधिवसति सदा शोण एवाधरस्ते

बाहुः काकुत्स्थर्वीर्यस्मृतिकरणपटुर्दक्षिणस्ते समुद्रः ।

वाहिन्यः पार्श्वमेताः क्षणमपि भवतो नैव मुञ्चन्त्य-

भीक्ष्णं

स्वच्छेन्तर्मानसेऽस्मिन्कथमवनिपते तेभ्युपानाभि-

लापः ॥ १ ॥

अष्टौ ० ॥ २ ॥

उरुयन्तरवाहलयीथणपव्वयरोमरायवणगहणे ।

सुरनरगणगन्धवा तग्गवीआ मयणचोरेण ॥३॥\*

तस्यामेव निशि नृपो वीरचर्यायां पुरि भ्रमन्  
भूयो भूयस्तैलिक मुखेन पठयमानमिदमश्रौषीत् ।

१ उर्वोःसक्थ्योरन्तरे वानही लघुश्रोत स्त्रीपदे पर्वतपदे तु  
यहान्तो लघवश्च प्रवाहा स्तनपर्वतरौमराजिवनगहने सुरनरगण-  
गन्धर्वा नप्रीकृता मदनचोरेण

\* महावीरमोक्षान् १७० वर्षेषु गनेषु चन्द्रबाहु स्वर्गं गत-  
तच्छिउप्पस्य स्थूनिभद्रस्य सर्गयु २२ वीरान् २१९ वर्षेषु मृतस्त  
त्पदे अर्धमहागिरिः सर्गपूर्वेषाणि ८५ एव श्रे वीरान् ३०५ वर्ष  
सम्प्रती राजा स्थूनिभद्रस्य अर्धमहागिरिः १ अर्धसुहस्ती २ शिष्यौ  
सुहस्तिमयीपे कश्चिद्रुद्र मिहयैमुण्डितोनिभरणेन मृतः स चो-  
वक्कापिन्या श्रेणकराज्यपदे कोणिकः यस्यापरं नामाशोकवन्द  
स्वर्पदे उदायी स पष्ठवार्षिक पौषधस्थश्च उनेन हत्वा नन्दो  
राजा ततो नागिनाणिकापुत्र नरमनन्दं चाणाकपो हत्वा  
मौर्धश्य चन्द्रगुप्तं राज्येऽभ्यारयत् । नन्दो विन्दुमारस्तस्य  
हेऽजोऋक्षस्य पुत्रं कृष्णाननपुत्रो राजा सम्प्रतिनामा स  
रुद्रनीपो ज्ञान वीरान् ३०५ वर्षं प्राप्तराज्यः । सुहस्तिना  
प्रतिबोधितः स अर्धसुहस्ती शतवर्षं सर्वयुःप्रतिपात्य वीरान् २२१  
वर्षं स्वर्गत् । अत्र तिसृहस्तीनोरि सुहस्तिनेय प्रयोगित पूर्वं तन्तु  
तेनैव कुड्मेश्वरः शिवः पितुर्परायणस्थाने स्थापितमनस्यैव महाकाल  
शनि नामान्तरं । सुहस्तिमूर्खशिष्टगोत्रस्य द्वादशशिष्यान्वर्ग  
शिष्यौ सुस्थिनमुप्रतिबुद्धनामातौ यात्रायां गोत्रौ काटिककाक-

अम्भणिओ सन्देसइओ तारय कन्ह कहिज्ज<sup>१</sup> ।

अभातशेषां रजनीमवधीकृत्य तदुत्तरार्द्धम-  
शृण्वन्निर्विण्णो नृपः सौधं प्राप्य निद्रामकरोत् । प्र-  
त्यूषकालेऽवसरकृत्यानन्तरं नृपेण तत्राहूतस्तैलिक-  
स्तदुत्तरार्द्धं पृष्टः ।

जग दालिदिहि दुख्खिउं<sup>२</sup> बलिबन्ध ण ह सुइज्ज ॥\*  
श्रीसिद्धसेनोपदेशं पुनरुक्तं निष्कर्षय पृथिवीमनृणां  
कर्तुमारम्भे ॥

न्दिरुविहरी, तत्र सुस्थिताचार्यशिष्यौ कुल्लुकी सन्तापदृश्यविद्यया च-  
न्द्रगुप्तनृपतिना समं युजुतनु पाटलीपुत्रनगरे । तद्वरान्तिस्तु यथा ॥  
प्रतिदिशं विलोकयन्ते विहाराश्चारुसोगताः ।

यत्रारुह्य निर्वर्णं प्रापुस्तेपि महर्षयः ॥ १ ॥  
उपत्यकायामस्याद्रेर्भाति ( वैभारगिरेः ) राजगृहं पुरम् ।

दितिप्रतिष्ठचम्पकपुरर्षजपुराभिधम् ॥ २ ॥  
कुशाग्रपुरसंज्ञं च क्रमाद्राजगृहान्हयम् ।  
सहस्राः किञ्च पद्भिर्नयत्रासन्वणिता गृहा ॥ ३ ॥  
तत्र चार्द्धाः सौगतानां मध्ये चर्क्षितसंज्ञिनाम् ।

१ अम्भार्क सन्देशक तारक कृष्ण कवय कथयेः !

२ A G दालिदिहि दुख्खिउं D दालिदिहि दुख्खिउं \* जगद्वा-  
गिद्रेण शब्देन बलिबन्धो न च मोक्षितः ॥ तारयति दारिद्र्य-  
दुःखसमुदादिति तारकः कथं । कर्षति दुःखमिति कृष्णः कथं  
तत्र कथयते शनि भागः ! !

अथ मत्सदृशः कोपि जैनो नृपतिर्भावीति पृ-  
ष्ठे श्रीसिद्धसेनसूरिभिरभिदधे ॥

पुत्रे<sup>१</sup> वाससहस्ते सयम्भि वरिसाण नवनवइआहिण  
होही कुमरनरिन्दो तुह विक्रमराय सारित्यो<sup>२</sup> ॥१॥

अथान्यस्मिन्नवसरे जगत्पनृणीक्रियमाणे नि-  
जौदार्यगुणेनाहंरुतिं दधानः प्रातः कीर्त्तिस्तम्भं  
कारयिष्यामीति चिन्तयंस्तस्मिन्नेव निशीथे वीरच-  
र्यया चतुःपथान्तः परिभ्रमन् युद्धयमानवृषाभ्यां

यत्र श्रीमाञ्जरास्तन्धः श्रेणिकः कोणिकोभयः ॥ ४ ॥

मेघहलविहलश्रीनन्दिपेणादयोनवन् ॥

श्रेणिकसुनोऽंशोकचन्द्रः कूणिकापराख्यः पितुः शोकाद्राजगृहं  
विहाय कौशाम्भ्याः परिसरे नवीनां चम्पां राजधानीमकरोत् ।  
सत्रैव शप्येभ्यसूरिर्मनकशिष्यार्थं दशैकाजिकं महावीरान् ९८ वर्षे  
कृतवान् । नवीनचम्पायां श्रेणिकपुत्रे कोणिके मृते तत्पुत्र उदायी  
राजा जातः सोपि पितुः शोकेन नूननस्थानगवेषणार्थं सेवकान्ने-  
पयामास ते गङ्गातटं ययुः । तत्रानमितच्छायं पाटलीतरुं प्रेक्ष्य त-  
त्कारणं पृष्ठः कोपि महामुनिस्त्वदन् । अभिकापुत्रो जयसिंहाचा-  
र्यपार्थे दीदां गृहीत्वाऽभिकापुत्राचार्यनाम्ना विहरन्गङ्गातटस्थं  
पुण्यभद्रपुरं प्राप । तत्र पुण्यकेतुर्नृपः पुण्यवती राज्ञी तयोः पुत्रः  
पुण्यचूजः पुत्री पुण्यचूला तयोर्गार्ढानुरागादारस्परं विरहो मानु-

१ B पुण्ये \* पुण्यं वर्षसहस्रे दाने वर्षाणां नवनवत्यधिके  
भाविष्याति कुमारपावननेन्द्रस्तव हे विक्रमराजन् सदृशः ॥

आसितः कस्यापि दारिद्र्योपद्रुताद्विजन्मनो जीर्णवृष-  
भकुटीस्तम्भमध्यारूढो यावत्तिष्ठति तावत्तावेव वृ-  
षौ शृङ्गायेण तं स्तम्भं भूयो भूयस्ताडयतः । अ-  
त्रान्तरे स विप्रोकस्मान्निद्राभङ्गमासाद्याकाशे शुक्र-  
गुरुभ्यां निरुद्धं चन्द्रमण्डलमवलोक्य गृहिणीमुत्था-  
प्य चन्द्रमण्डलसूचितं तन्नृपतेः प्राणसङ्कटमवगम्य  
होतव्यद्रव्याणि तदुपशान्तये होमार्थमुपढौकयेति  
सावधानं नृपे गृण्वति स गृहिण्योचे । अयं नृपः  
पृथिवीमनृणां कुर्वन्मम कन्यासप्तकस्य विवाहाय

दिति राज्ञा जातृभगिन्योः परस्परं विवाहः कृतस्ततो वैराग्येण  
राज्ञान्निष्ठापुत्राचार्यपार्श्वे दीक्षा गृहीता कात्रेण केरिनिनी जाता ।  
तन्मरणानन्तरं तस्याः करोटिका गङ्गायां वहमाना देवाद्गृहिर्निगता  
कचित्स्थाने । तत्र कालेन पाटलीतल्लतस्ततः सेवकैर्योग्यं स्थानं  
यात्रराज्ञे निवेदिनं । तेन राज्ञा पाटलीपुत्रनामकं तत्र नगरं निवेदिनं ।  
ततो नन्दराजा तदा शरुटाजमन्त्रिपुत्रः शूनिभद्रः । राज्ञः पाण्डि-  
तो वररुचिः । सार्यमहागिरिः भार्यमुहस्ती द्वौ भ्रातरी शूनि-  
भद्रस्य मिथ्यो तत्राद्यो जिनरुग्निहोऽन्यः सूरिपदे । तल्लोकं ।

• उन्ने भस्ममुहर्तिं मुनिपत्रं जेण सम्पर्गं राया ।

मिर्दि सव्यपासिर्द्धं चारिर्त्तं पाविर्धं परं ॥ १ ॥

[ • वन्दे भार्यमुहस्तिमूर्तिं मुनिप्रवरं येन सम्प्रती राज्ञा

मोर्द्धं सर्वप्रसिद्धिं चारिर्त्तं प्रापितः प्रवरम् ॥ १ ॥ ]

मुहस्तिमिथ्येवैतः साधुर्बुद्धिरेऽन्येनैवैवैवरा पठति यदा  
तदा गच्छेत्तं किं मुहर्त्तं पुष्पागस्तद । ताम्बदपमानात्तेन गच्छे

द्रव्यमयच्छत्रशान्तिकर्मणा कथं व्यसनान्माचयितु-  
मुचित इति तद्वचसा सर्वथा परिहृतगर्वस्तत्सङ्क-  
टाच्छुद्धितः कीर्त्तिस्तम्भं विस्मन् राज्यं चिरं चकार॥  
कटुं काउं मुक्तं च साहसं मङ्गलिअं च अप्पाणं ।  
अजरामरं न पत्तं हा विक्रम हारिओ जम्मो<sup>१</sup> ॥१॥

कदाचिदायुःप्रान्ते केनाप्यायुर्वेदविदा श्री-  
विक्रमस्य वपुरपाटवे वायसपिशिताहारेण रोगशा-  
न्तिर्भवतीत्युपदिष्टे नृपेण तस्मिन्याके कार्यमाणे  
प्रकृतिव्यत्ययं विमृश्य नृप इति ज्ञापितः । साम्प्र-

वीमाराध्य सकजा विद्याः संप्राप्य चतुःपथे मुद्राजं मण्डयित्वा  
फुल्लवितं च चमकृताः सर्वे । नूपः काव्यमिदं पपाठ ।

मन्त्रोः शृङ्गं शक्रपट्टिप्रमाणं  
शीतो वन्निर्मास्तो निःप्ररुग्मः ।

योयं ब्रूते सर्वथा तन्न किञ्चि-  
वृद्धोवादी किं क्रियाहात्र वादी ॥ १ ॥

ततः प्रसिद्धेन वृद्धादिसूरिणा जितः सिद्धसेनदिवाकरो विप्रः।  
तत्संवन्धश्चायम् ।

श्वेताम्बराचार्येण चारणमुनिना वज्रसेनेन शक्रावतारनीये ना-  
भेयः स्थापितस्तत्र पूर्वज्ञातदेशमण्डननृगुरुचउपुराजद्वारे शकुनि-

१ काउं । उपमाननूतमिति देशी० कटुं मुक्तं साहसं च निरोज-  
स्विनमात्मानं कृत्वा । अजरामरं न प्राप्त । हे विक्रम हा जन्म  
हारितम् !

तं धर्मोपधमेव बलवत् । प्रकृतेर्विकृतिरुत्पातः । जीवि-  
तलोलुपतया लोकोत्तरां सत्त्वप्रकृतिमपहाय काक-  
मांसमभिलपन्सर्वथा न जीवसीति वैद्येनाभिहित-  
स्तं पारितोषिकदानपूर्वं परमार्थवान्धवमिति श्लाघ-  
मानो गजतुरगकोशादिसर्वस्वमार्थिभ्यो वितीर्य  
राजलोकं नगरलोकमापृच्छय विजने कापि धवल-  
गृहप्रदेशे तत्कालोचितम्लानदानदेवार्चनपूर्वं दर्भ-  
स्वस्तराधिरूढो ब्रह्मद्वारेण प्राणोत्क्रान्तिं करिष्या-  
मीति विमृशन्नकस्मादाविर्भूतमप्सरोगणं स ददर्श ।

काविहारे स्थिताः श्रीवृद्धादिसूरयः । तत्र येन जीयते तस्याहं  
शिष्यो भविष्यामीति कृतप्रतिज्ञं महाविद्याहंकारिणं दक्षिणपथायातं  
कर्णाटभट्टं दिवाकरनामानं मुक्त्या वादे निर्जित्य शिष्यं चक्रुः ।  
तेनैकदा सकलं जैनसिद्धान्तं संस्कृते करोमीति पृष्ठो गुरुराह ।  
तस्या तीर्थकरवचनाशातना कृता । ततस्तस्यापप्रायाश्चित्तग्रहणाग्रहे  
द्वादशवर्षकृतपात्रान्ते कश्चिन्महानृपो बोधिनव्य इति गुरुवाक्यमङ्गी-  
कृत्य द्वादशवर्षान्ते विक्रमराजप्रतिबोधार्थमुक्त्वपिन्यां काला-  
मिश्रद्रुडगेश्वरदेवालोपे शिवसन्मुखं पादौ धृत्वा तेन सुप्तं । सेवकै-  
स्ताडितस्तत्ताडनमन्तःपुरे राक्षीपु जात । ततो महाते कोलाहले  
तच्छ्रुतवृत्तान्तेन चमत्कृतेन विक्रमेण सविनयं पृष्ठो मुनिराह । यदि  
मया नमस्कारः क्रियते तदेतत्तुल्यं द्विधा भविष्यति । ततो राजाज्ञया  
नमस्कारस्तुतिः समारब्धा द्वाविंशद्वाविंशकाद्यकाव्ये पठिते तत्तुल्यं  
द्विधाभूत् । प्रथमं धूमस्ततस्तेजस्ततो नानिस्सुनिर्गमात् । विक्रमः



अञ्जलिं वध्वा प्रणामपूर्वं कां यूयामिति पृष्ठे । न  
वाग्विस्तरार्होऽयमवसरः । आपृच्छनायैव वयमुपाग-  
ता इत्यभिधायाप्सरसोऽपसरन्त्यो नृपेण भूयोभि-  
दधिरे । नवीनब्रह्मणा निर्मितानां भवतीनामद्वैत-  
रूपवतीनामेव रूपं नासया हीनमिति जिज्ञासुर-  
स्मि । अथ ताः सहस्ततालं विहस्य निजमपराध-  
मस्मासु संभावयसीति ता मौनमाश्रिता नृपेणो-  
चिरे । स्वर्गलोकस्थितासु भूवतीषु ममापराधः क-  
थं संभाव्यत इति नृपवचःप्रान्ते तासु मुख्यया सु-  
मुख्ययाचक्षे । राजन्प्रागपुण्योदयेन साम्प्रतं नवा-

सपरिवारः शिष्योजूत् ॥ तदुक्तम् ॥

वपीढरागाञ्चितसिद्धसेन-

दिवाकराचार्यकृतप्रतिष्ठः ।

श्रीमान्कुड्मेश्वरनाभिसूनु-

देवः शिवायाम्बु त्रिनेश्वरो वः ॥ १ ॥

ग्रामाणां क्षेत्रं । शासनपट्टिकां । श्रीमदुल्लापिन्यां संवत् १  
चैत्रसुदि १ गुरौ माढदेशीयमहारूपटाशिकपरमार्हितश्वेनाम्बर-  
पासकृत्राक्षणगौतममुनकात्यायनेन राजाज्ञेयम् । शत्रुञ्जयोच्चार-  
मनृणां पृथ्वीं सूरिवचसा कृत्वा निजं संशस्तरं प्रावर्त्तयत् । पूर्वं  
पार्श्वनाथसंवत्सरानन्तरं वर्द्धमानसंवत्सरोत्तमद्वेदे । श्वेनाम्बरमते  
महावीरान् ४७० वर्षं विक्रमो राजा । दिगम्बरमते तु

पि निधयस्तव सौधेऽवतेरुस्तदधिष्ठात्र्यो वयं। भवता  
देवतारूपेणाजन्मावधि महादानानि ददतैकस्यै-  
व निधेरेतावदेव व्यवकलितं यावत्त्वं नासाग्रं न  
पश्यसि । इत्थं तदुक्तिमाकर्ण्य ललाटं करतले-  
न स्पृशन् यद्यहं नवनिधीन्वेद्मि तदा नवभ्यः पु-  
रुषेभ्यस्तात्समर्पयामीति दैवेनाज्ञानभावाद्बन्धित  
इत्युच्चरंस्ताभिः कलौ भवानेवोदार इति प्रतिवो-  
धितः परलोकमाप । ततः प्रभृति तस्य विक्रमा-  
दित्यस्य जगत्पथमधुनापि संवत्सरः प्रवर्तते ।  
श्रीविक्रमार्कस्य दाने विविधाः प्रवन्धाः ॥

§ वरिसाणि सपच्छकतिगती गदा य जिणन्दरीरस्त ।

णिज्वाण सम्पत्ते उव्वण्णो विक्कमो राठे ॥ १ ॥

[ § निर्व्याणं प्राप्तस्य जिनेन्द्रवीरस्य अश्लीत्यधिकरूपदृशनानि  
वर्षाणि गतानि तदा विक्रम उप्तन्नो राजा ॥ १ ॥

तथाच कदाचित्कारणवशाल्लब्ध्या सैन्यमिकुवर्णेन राज्ञा दत्तं  
सिद्धसेनाविरुद्धं प्राप्य सिद्धसेनदिवाकर इति नाम्ना प्रसिद्धोऽनूत् ।

• पक्षेत्र य वरिस्सपे सिद्धसेनो य जयपण्डो ॥

[ • महागिरात्पञ्चशते एव वर्षे शते जयप्रकटः सिद्धसेनोऽनूत् ।  
वप्वज्रोद्वमूरिगुप्तः सिद्धसेनोन्यः स तु विक्रमस्य सप्तमशते संवत्स-  
रेऽनूत् । नेमिचन्द्रमूरिगुप्तप्रवचनसारोद्धारस्य टीकाकर्त्ता सिद्ध-  
सेनोऽन्यः स तु विक्रमस्य द्वादशशते संवत्सरेऽनूत् ॥

॥ अथ शालिवाहनप्रबन्धः ॥

अथ दाने विद्वत्तायां च श्रीसातवाहनकथा\*  
यथाश्रुता ज्ञेया । तत्पूर्वभवकथा चैव । श्रीप्रतिष्ठा-  
नपुरे शातवाहनभूपो राजपाटिकायां गच्छन्नगरप्र-  
त्यासन्ननद्यां वीचिभिर्नीरतिरक्षितं मत्स्यमेकं हस-  
न्तमालोक्य प्रकृतेर्विकृतिरुत्पात इति भयभ्रान्तो  
नृपः सर्वानेव विदग्धपुरुषान्सन्देहममुं पृच्छन्नज्ञा-  
नसागरनामानं जैनमुनिं पप्रच्छ । ज्ञानातिशयेन  
तेन तत्पूर्वभवं विज्ञायेत्युपदिष्टं । यत्युरातनभवे  
त्वमस्मिन्नेव पत्तने उच्छिन्नवंशः काष्ठभारवाहनैक-  
वृत्तिस्तस्यामेव नद्यां भोजनावसरे संनिहित-  
शिलातले सक्तूपयसालोडय नित्यमश्नासि ।  
कस्मिन्नप्यहानि जैनमुनिं मासोपवासपारणाहेतोः  
पुरो व्रजन्तमाहूय तं सक्तुपिण्डं तस्मै प्रादात् ।  
तस्य पात्रदानस्यातिशयात्त्वं शालवाहननृपतिरा-  
सीः । स मुनिर्देवो जातस्तदेवताधिष्ठानवशात्तं का-

\* शाजिगहन, शालवाहन, साजवाहन, साजगहन, साजाहन,  
सातवाहन, हाजित्पेकस्य नामानि ॥ नदकथाज्ञेया यथा ॥

दक्षिणखण्डे महाराष्ट्रे प्रतिष्ठानं नाम पुरं । तत्रै कदा द्वौ प्रदे-  
शिनोऽस्मात्किञ्चिदानीं भविष्यतीति कुमापि गन्तुकामाः कुम्भकारशा-

एभारवाहिनो जीवं त्वां नृपतितयोपलक्ष्य प्रमोदा-  
द्वसितवान् ॥

तत्कथासंग्रहश्चैवं ॥

मीनानने प्रहसिते भयभीतमाह

श्रीशालिवाहनमृषिर्भवतात्र नद्याम् ।

यत्सक्तुभिर्मुनिरकार्यत पारणं प्राक्

दैवाद्भवन्तमुपलक्ष्य झपो जहास ॥ १ ॥

स श्रीशालिवाहनः पूर्वभववृत्तान्तं जातिस्मृत्या  
साक्षात्कृत्य ततः प्रभृति दानधर्ममाराधयन् सर्वे-

जाया निवास चक्रुः । मुखपा जज्ञाहरणार्थं गोदावर्यां नागहृदे  
गता । तद्रूपग्रेहिनी नागपुरुषो यज्ञात्तां वुञ्चते । सति दु खे स्म-  
रणोपोह तत्र दुःख निर्भूजमुष्मूजयिष्यामीने कृतप्रतिज्ञो नागपुरुषो  
गतः । तस्या गर्भश्चरूप ज्ञात्वा तौ भ्रातरो ता निर्भर्त्य कुम्भाका-  
रजज्ञायां ता स्पृक्का देशान्तरे निर्गतौ । सापि कुम्भकारगृहे सेवां  
कुर्यती काञ्चे पुत्रं मुपुत्रे । देवानुभावात्स वाजो महानेत्रश्ची प्रना-  
पी जातः । मृन्मयानि हस्त्यश्वरथपुरुषादिक्रीडनकानि बहूनि च-  
कार । सदाजः शालिवाहननामासीत् । इतश्च ॥

रघुनाथीहरायाव भोरजनाभिभा पुभा तीता नागज्जुषो नाम  
जाभो । सो सिद्धपुरिमुत्ति विद्वज्जार्थ पुदयि विभरन्तो सालाहणर-  
न्तो रुज्ञागुरु जार्थ । सो पायजित्तायसि हि सेरद । कयावे गु-  
रुमृषाव मुणउ । जदा हि सिरिपासनादग्निव्य रससाहणत्ये ।  
तर्धे कन्तिपुरार्थे नाद्वय नागज्जुषो सिद्धरता सेटीनरितडे ठागिमु ।

पां महाकवीनां विदुषां च संग्रहपरः । चतसृभिः  
स्वर्णकोटीभिर्गाथाचतुष्टयं क्रीत्वा सप्तशतीगाथाप्र-  
माणं शालिवाहनानिधानं संग्रहगाथाकोशं शास्त्रं  
निर्माप्य नानावदातनिधिः सुचिरं राज्यं चकार ।  
तद्गाथाचष्टयमेतद्यथा ॥

हारो वेणीदण्डो खट्वगलियाइ तह य तालुत्ति ।  
एयाइ नवरि सालाहणेण दहकोडिगहियाइ ॥१॥\*

तत्थ सिरिसाजिवाहणरत्नो चन्दजेहाभिहाणसर्द दोण्हं निभपुत्ताणं  
ताए निवेश्यं । ते रसजुद्धा निभं रज्जं मुत्तुं नागज्जुणपासमाया ।  
तर्जे रससिद्धिं नाऊण तेणेव सत्थेण नागज्जुणो निदरुं । तत्थ  
धम्मणं नाम नपरं ।

[ रत्नसिंहराज्ञो भोपलनाम्नी सुता तस्या नागार्जुनो नाम पुत्रः ।  
स सिन्धुपुरुष इति विख्यातः पृथिवीं विचान् शालिवाहनराज्ञः  
कलागुरुर्जातः । स पादलिप्ताचार्यं निषेधते । कदापि गुरुपुत्राद्भुतं ।  
यथा हि पार्श्वनाथविम्बं रससाधनार्थं । ततो नागार्जुनो तदभिप्रायं  
ज्ञात्वा कान्तिपुरात्कपटेनसेडीनदीनटे समानीय तद्विम्बं स्थापयि-  
त्वा रससिद्धो जातः । तत्र श्रीशालिवाहनराज्ञश्चन्द्रजेलानिधाना  
सनी द्वयं निजपुत्रस्य तस्मै नागार्जुनाय द्वाभ्यां शिष्यार्थं नि-  
षेदेतं । तौ रसजुग्धौ निजं राज्यं मुक्त्वा नागार्जुनपार्श्वे आयातौ ।  
ततो रसासिद्धिं ज्ञात्वा तेनैव शस्त्रेण ताभ्या नागार्जुनो निहतः ।

\* यत्र गाथायां हात्वर्यनं वेणीदण्डवर्णनं । उक्तोद्रीर्णनुष्यत्ववर्ण-  
नं तथा च तात्राहजौषधमन्योक्तया । नवरं शालिवाहनेनेताश्चतस्रो  
गाथा दशकोटिभिर्गृहीताः ॥ १ ॥

मगं चिय अलहन्तो हारो पीणुन्नयाण थणयाण ।  
उव्विम्बो भमइ उरे जउणानइफेणपुञ्जु व्व ॥२॥  
कसिणुज्जलो य रेहइ वेणीदण्डो नियम्बविम्बाम्मि ।  
तह सुन्दरि सुरयमहानिहाणरक्खाभुयहु व्व ॥३॥

तस्मिन्स्थाने स्तम्भनं नाम नगरं ज्ञातम् ॥

कात्रियकालकान्धयपालित्तगणहरो वरसार्ध ।

नागज्जुणत्तोमिन्दो आणेहि भण्णे ठाणे ॥ १ ॥

[ कालिककालकाचार्यवंशजातपादीजसगणधरोपदेशा-

न्नागार्जुनयोर्गीद्र आनिनाय आत्मनः स्थाने । कान्तिपुरात्कपटवृत्त्या  
रत्नमयपार्श्वनाथविम्बम् ]

॥ पादजिप्तोपि पाटजीपुत्रस्थमुकुण्डराजमस्तकपीडां मन्त्रशक्त्या  
निवार्य प्रतिष्ठानपुरं प्राप्तस्तद्यथा ॥

जह जह पएसिणिं जाणुगम्मि पालित्तवं भमाहेइ ।

तह तह से सिरवियणा पणस्सइ मुकुण्डरायस्स ॥ १ ॥

कोपि साभिजापः कस्याश्चित्पीनोन्नतपरोधराया हां  
वर्णयति ॥ मगं चियेति । मार्गभेदाज्जमानो हारः पीनोन्नतयोः  
स्तनयोरुद्विगो धमत्पुरसि यमुनानदीफेनपुञ्ज इव । अत्र यमुनाफे-  
नसादृश्येन स्तनमुलक्ष्यामता व्यज्यते । तथा च सत्याधानेऽनुपभो-  
ग्यतेत्यादिश्रयमूहनीयम् ॥ २ ॥ !

रुण्णोऽज्जलश्च राजते वेणीदण्डो निनग्गविम्बे तदा हे सुन्दरि  
सुरतमहानिधानरत्ताजुज्जइ ॥ ३ ॥ !

B C मगं । पीणुण्णभाण थणभाण । उव्विम्बो । पुञ्जो र A  
उव्विम्बो ॥

परिओससुन्दराइं सुरएं जायन्ति जाइ सुक्खाइं ।  
विरहाओ ताइ पियसहि खहुंगलियाइ कीरन्ति ४

[ यथा यथा प्रदेशिनी जानौ पादलिप्तो भ्रामयति ।

तथा तथा तस्य शिरोवेदना प्रणश्यति मुरुण्डराजस्य ॥ १ ॥ ]

शालिवाहनपुरःसरा नृपा-

श्चित्रकारिचारिता इहाभवन् १ ।

दैवैर्वहुविधैराधिष्ठिते

चान्नसत्रसदनान्यनेकशः ॥ १ ॥

कपिलान्नेपवृहस्पतिपञ्चालोह<sup>२</sup> महीभृङ्गपरोधात्<sup>३</sup> ।

न्यस्तस्वचतुर्नक्षत्रार्थं श्लोकमेकमप्रथमम् ॥ २ ॥

स चायम् ।

जणिं भोजनमात्रेयः कपित्तः प्राणिनां दया ।

वृहस्पतिरविश्वासः पञ्चालः स्त्रीषु मार्दवम् ॥ ३ ॥

[ १ प्रतिष्ठानपुरे २ कामशास्त्रकर्त्ता वाभ्रव्यः ३ शालिवाहनराज्ञे आप्रहात् ] ते चत्वारोपि स्वस्वग्रन्थं राज्ञेऽदर्शयन्तच्छ्रोतुमसमर्थं राजानं श्लोकेकपादेन स्वस्वसकलग्रन्थाभिप्रायं निवेदयामासुः

परितोषमुन्दराणि सुरते जायन्ते यानि सौख्यानि विरहात्तानि हे प्रियसाखि खद्वशब्दे जुक्तार्थवाची देशी० जुक्तोद्गीर्णानि सन्ति कीर्यन्ते कृण्वन्ति ॥ २ ॥ !

B परितोषमुन्दराद G D सुरसु जहन्ति जाइ सोक्खाइं तादक्षिय वण विरहे B खण्डुगिभाइ D खण्डुगिणिहाइ

मा जाण कीर जह चञ्चुलालियं पडइ पक्कमाइन्दं ।  
जरढत्तणदुल्ललियं उब्भुयतालाहलं एयं ॥ ५ ॥  
ताण पुरोयमरीढं कयलीथम्भाण सरिसपुरिसाण ।  
जे अत्तणो विणासं फलाइं दिन्ता न चिन्तन्ति ६  
जह सरसे तह सुक्के वि पायवे धरइ अणुदिणं विञ्झो ।  
उच्छंगवाट्टियं निग्गुणंपि गरूया न छड्डन्ति ॥ ७ ॥

। इतश्चोक्तपिण्यां विक्रमादित्येन कश्चिद्वैवशः पृष्ठः मद्राज्यहर्ता  
कश्चित्तमर्थो जूयौ तिष्ठति पुरुषः । तेनोक्तं । प्रतिष्ठानपुरे कुम्भ-  
कारगृहे तादृशो बाजोस्ति । तच्चतुत्वा तं हन्तुं सैन्यो विक्रमः  
प्रतिष्ठानपुरं प्राप्तः । सैवकैर्बलान्तन्मारणायोगे कृते तथा सुख-  
पया मात्रा नागपुरुषः स्मृतः । तेन प्राञ्ज्रूपासुतकुम्भो दत्तः महती  
शक्तिः कुमाराय दत्ता तेन कुमारेणासुतसिञ्चनेन मृन्मय सर्व सैन्यं

मा जानानु हे कीर यथा चञ्चुलाजितं पतति पक्कमाइन्दं ।  
पक्काम्नफलं ॥ कठिणत्वपिण्डं उद्भूतं पातान्तरे सरलं सुजभमि-  
त्यर्थः ताज्जाइजं देशी० शालिदेवमेतन् । पिरुस्य भोगयोग्यं सुख-  
क्षममितिभावः ॥ ५ ॥ !

तेषां कदलीस्तम्भैः सदृशपुरुषाणां पुरोयं । अरीढमनवगणनं  
यतः कारणाद्ये आत्मनो विनाशफलाणि ददन्तः सन्तो न चिन्तयन्ति ।  
आत्मानं विनाश्यापि परोपकारफलप्रदाः सत्पुरुषाः सम्मानयोग्या  
एवेति भावः ॥ ६ ॥ ।

यथा सरसे तथा शुष्केऽपि पादपे धरत्यनुदिनमनुरागे विन्ध्या-  
चलः । उत्सङ्गवर्त्तिन निर्गुणमपि गुरवो न त्यजन्ति ॥ ७ ॥

B पडइ पक्क. A उब्भुयताज्जाहलं



पठमो नेहाहारो तेहिं तिसिएहिं तह कहवि गहिऊ ।  
 पिच्छन्ति जं न अन्नं तच्चिय आजन्म मुञ्जारा ८  
 सयलजणाणन्दयरो सुकस्त वि एस परिमलो जस्त ।  
 तस्त नवसरसभावम्मि हुज्ज किं चन्दणदुमस्त ९

जीवितं तेन विक्रमसैन्यं नाशितं विक्रमोपि पलाय्य गतः । तदनु-  
 धावितस्ततो द्वयोः सन्धिर्जातः । तापीतीरपर्यन्तमुत्तरापथं साधयि-  
 स्त्वा प्रतिष्ठानपुरे राज्यं चकार । स्वकीयं संवत्सरं प्रावीवृतत् ।

तत्रैकस्य द्वितस्य सूनुः सदर्पः शूद्रकाख्यः बहुशिक्षामर्दनं तेन  
 कृतं । तदृष्ट्वा राजा तं पुराभ्यक्ष्यकरोत् । ततो गीतमोहितां देवीं  
 मायासुरः कश्चिदहरत् । तदन्वेषणाय शूद्रकं प्राहिणोत् । सोपि  
 सकौलेयकः कोलापुरस्थां महालक्ष्मीमाराभ्य तमसुरमरमारयत् ।  
 देव्या दत्तं षड्भूमादाय मायासुरभ्रात्रा दर्शितां महिषीमादायागतः ।

प्रथमः स्नेहाधारस्तैः पुरुषैस्तथा ताभिः स्त्रीभिः कथमपि के-  
 नापि कारणेन गृहीतः । यद्यस्मात्कारणादन्यं श्रेष्ठमप्यवलम्बनत्वेन  
 न पश्यति स तामैव सा च तमेव सर्वगुणाधारत्वेन पश्यती यत आ-  
 तन्म परस्परानुरागोत्पत्तिं समाभ्य मुञ्जाराशब्दो देशी० गृहम-  
 ध्यस्थोर्भर्तिर्यद्वदद्वाची तद्वत्तावपि स्तः ॥ ८ ॥ ।

सकलजनानन्दकरः यस्य शुकस्यापि वीर्यस्य वा शुक्लस्य पुरुष-  
 स्य वा काणस्थेत्यादिव्यञ्जना । एष परिमलः सुगन्धः संज्ञोगश्च तस्य  
 नवसरसभावे प्रवेत्ति चन्दनद्रुमस्य ज्वेज्वैव ॥ ९ ॥ ।

A B C मुञ्जारो B D गहिउ C तहावि कहवि

कयालितरू विञ्जगिरी नेहाहारो य चन्दणदुमो य ।

एषाओ नवरि सालाहणेण नवकोडिगहियाओ १०

॥ अथ शीलव्रते प्रबन्धः ॥

तद्यथा ॥

पाड्रिंशद्यामलक्षप्रमिते कन्यकुञ्जे नगरे कल्या-  
णकटके पानीयाधिकृतप्रियाभिलाषव्यतिकराद्राजा  
भूदेवो मालवके श्रीकद्रमहाकालमाराध्य मालवकं  
तस्मै देवाय दत्त्वा स्वयं तापसोभूदिति सक्षेपः ॥

॥ गुर्जरभुवि वढीयाराभिधानदेशे पञ्चाशर-  
ग्रामे चापोत्कटवंश्यं झोलिकासंस्थं वालकं वणना-  
म्नि वृक्षे निधाय तन्मातेन्धनमवचिनोति । प्र-  
स्तावात्तत्रायातैर्जेनाचार्यैः श्रीशीलगुणसूरिनाम-  
भिरपराद्देहिपि तस्य वृक्षस्य छायामनमन्तीमालो-  
क्य झोलिकास्थितस्य तस्यैव वालकस्य पुण्यप्र-  
भावोयमिति विमृश्य जिनशासनप्रभावकोयं भा-

तस्मै शूद्रकाय तुष्टेन राज्ञा राज्यार्द्धं दत्तं एवं नानाविधानि हाज-  
हिनिपालस्य चरियाणि । स्थापितोनेन गोदावरीतीरे महाजक्ष्मी-  
प्रासादः । नरपनिर्गहदे निधनं प्राप्तः ॥

कदञ्जीतकः । विन्ध्यगिरिः । मोहाधारश्च चन्दनद्रुमश्च एता-  
श्चतस्रो गाथा नवं सात्रराक्षसेन राज्ञा नवकोटिमृद्विनाः ॥ १० ॥ !

वीत्याशया वृत्तिदानपूर्वं तन्मातुः पार्श्वात्स वालो  
जगृहे । वीरमतीगणिन्या स बालः परिपाल्यमानो  
गुरुभिर्दत्तवनराजाभिधानोऽष्टवर्षिको देवपूजावि-  
नाशकारिणां मूपकाणां रक्षाधिकारे नियुक्तः । स  
तांहाष्टैर्निघ्नन् गुरुभिर्निषिद्धोपि चतुर्थोपायसाध्या-  
स्तानेवं जगौ । तस्य जातके राजयोगमवधारयं  
महानृपतिर्भावीति निर्णयि स मातुः पुनः समर्पि-  
तो मात्रा समं कस्यामपि पल्लिभूमौ<sup>२</sup> स्वमातुलस्य  
चौरवृत्त्या वर्त्तमानस्य सर्वत्र धाटीप्रपातमकरोत् ।  
काकरग्रामे खात्रपातनपूर्वं कस्यापि व्यवहारिणो  
गृहे धनं मुष्णन्दधिभाण्डे करे पतिते सत्यत्र  
भुक्तोहमिति विचिन्त्य तत्सर्वस्वं तत्रैव मुक्ता  
विनिर्ययौ । परस्मिन्नहनि तद्भगिन्या श्रीदेव्या नि-  
शि गुप्तवृत्त्या सहोदरवात्सल्यादाहूतः । तथा भो-  
जनवसुदानपूर्वकमुपकृतो मम पट्टाभिपेके भवत्यैव  
भगिन्या तिलकं विधेयमिति प्रतिपेदे ॥ अथान्य-  
स्मिन्नवसरे चरटवृत्त्या वर्त्तमानस्य चौरैः काप्यर-  
ण्यप्रदेशे रुद्धो जम्बाभिधानो वणिग्तं चौरत्रयं दृष्ट्वा  
वाणपञ्चकमध्याद्वाणद्वयं भञ्जस्तैः पृष्ट<sup>३</sup> इति प्राह-

भवाचितयाधिकं बाणद्वयं<sup>१</sup> विफलमित्युक्ते तदुक्तं व-  
 लवेध्यं<sup>२</sup> बाणेनाहत्य तैः परितुष्टैरात्मना सह नीत-  
 स्तद्योधविद्याचमत्कृतेन श्रीवनराजेन मम पट्टा-  
 भिषेके<sup>३</sup> त्वं महामात्यो भावीत्यादिश्य विसृष्टः ।  
 अथ कन्यकुन्नादायातपञ्चकुलेन तादृशराज्ञः सुता-  
 याः श्रीमहणिकाभिधानायाः<sup>४</sup> कञ्चुकसम्बन्धे पितृप्र-  
 दत्तगूर्जरदेशस्योद्ग्राहणकहेतवे समागतेन सेल्लभृद्व-  
 नराजाभिधानश्चक्रे । पण्मासीं यावदेशमुद्ग्राह्य  
 चतुर्विंशतिसंख्यान् । रूप्यकद्रम्मलक्षांस्तेजोजात्यां-  
 श्वतुःसहस्रसंख्यांस्तुरङ्गमान्गृहीत्वा पुनः स्वदेशं प्रति  
 प्रस्थितं पञ्चकुलं सौराष्ट्राभिधानंघाटे वनराजो  
 निहत्य कस्मिन्नपि वननिकुञ्जे तद्राजभयाद्वर्षे  
 यावद्भुक्तवृत्त्या तस्थौ ॥ अथ निजराज्याभिषेकाय  
 नगरनिवेशचिकीः गूरां भूमिमवलोकमानः पीपलु-  
 लातडागपाल्यां सुखनिपण्णेन भीरूयाडसाखड-  
 सुतेनाणहिल्लनाम्ना पृष्टः । किमु विलोक्यते नगर-  
 निवेशयोग्या गूरा भूमिरवलोक्यते इति तैः प्रधा-  
 नैरभिहिते यदि तस्य नगरनिवेशस्य नाम मम

१ B जवेन २ A चजेवे ३ A B महणका. A ४

वदत ततस्तां भुवमावेदयामीत्यभिधाय जालिवृ-  
क्षसमीपे गत्वा यावती भूः शशकेनोच्छासिता  
तावतीं भुवं दर्शयामास । तत्राणहिलपुरनाम्ना  
नगरं निवेश्य संवत् ८०२ वर्षे वैशाखसुदि २  
सोमे श्रीविक्रमार्कतस्तस्य जालितरोर्मूले ध-  
वलगृहं कारयित्वा राज्याभिषेकलघ्ने काकरग्राम-  
वास्तव्यां तां प्रतिपन्नभगिनीं श्रियादेवीमाहूय  
तया कृततिलकः श्रीवनराजो राज्याभिषेकं  
पञ्चाशद्वर्षदेश्यः कारयामास । सजम्बाभिधानो वं-  
णिक् महामात्यश्चक्रे । पञ्चासरग्रामतः श्रीशीलगु-  
णसूरीन् सभक्तिकमानाय धवलगृहे निजसिंहासने  
निवेश्य कृतज्ञचूडामणितया सप्ताङ्गमपि राज्यं ते-  
भ्यः समर्प्ययंस्तैर्निःस्पृहैर्भूयो निषिद्धः । प्रत्युपका-  
रबुद्ध्या तदादेशाच्छ्रीपार्श्वनाथप्रतिमालंकृतं पञ्चा-  
सराभिधानं चैत्यं निजाराधकमूर्तिसमेतं च कारया-

। A G नाम शशकेन आशासिता : C शशकेनोच्छासिता : २  
धनुसप्रेषु दुष्कृतेषु विक्रमशतेषु अणहिलगोवाजपरिरक्षि-  
षे ए एतो सवस्त्रारद्यापे पट्टपं चरुद्वयं समुत्ताद्वजेण वनरापरि-  
णा निवेशिभं [ अष्टशतेषु विक्रमवर्षेषु विष्कृतेषु अणहिलगोवाज-  
परिरक्षेत् एतन् अक्षरस्थाने पट्टनं चापोत्कटयं समुत्ताफलेन वनरा  
अपरा निवेशनम्

मास । तथा तेन धवलगृहकण्ठे कण्ठेश्वरीप्रासादश्च  
कारितः ।

गूर्जराणामिदं राज्यं वनराजात्प्रभृत्यपि -

जैनैस्तु स्थापितं मन्त्रैस्तद्वेपी नैव नन्दति ॥ १ ॥

पूर्वं निरुद्धं वर्ष ५९ मास २ दिन २१ श्रीव-  
नराजेन राज्यं कृतं । श्रीवनराजस्य सर्वायुर्वर्ष १०९  
मास । २ दिन २१ । संवत् ८६२ वर्षे आपाढसुदि  
३ गुरौ अभिन्यां सिंहलग्रे वहमाने वनराजसुत-  
स्य श्रीयोगराजस्य राज्याभिषेकस्तस्य त्रयः कुमा-  
राः । अन्यस्मिन्नवसरे क्षेमराजनाम्ना कुमारेण रा-  
जेति विज्ञपयांचक्रे । देशान्तरीयस्य राज्ञः प्रवहणानि  
वात्स्यावर्त्तेन विपर्यस्तानि । अन्यवेलाकूलेभ्यः श्री-  
सोमेश्वरपत्तने समागतानि । ततस्तेषु तेजस्वितुरं-  
गमसहस्रं १००० तथा गजानां सार्द्धशती संख्यया-  
परिवस्तूनि कोटिसंख्यया । एतावत्सर्वं निजदे-  
शोपरि स्वदेशमध्ये भूत्वा संचरिष्यति । यदि स्वा-  
म्यादिशति तदा तदानीयते इति विज्ञप्तेन राज्ञा त-  
न्निषेधः कृतः । तदनन्तरं तैस्त्रिभिः कुमारैः राज्ञो  
वयोवृद्धभावाद्वैकल्यमाकल्य तस्यामपि स्वदेश-

प्रान्तभूमौ सैन्यं सज्जीकृत्याज्ञातचौरवृत्त्या तत्सर्वमाच्छिद्य स्वपितुरुपनिन्ये । अन्तः कुपितेन मौ-  
 नावलम्बिना राज्ञा न किमपि तेषां प्रतिपत्त्यादि  
 कृतं । तत्सर्वं नृपतिसात्कृत्वा क्षेमराजकुमारेणैत-  
 त्कार्यं सुन्दरं कृतमसुन्दरं वेति विज्ञप्तो नृपतिर्व-  
 भाषे । यदि सुन्दरमुच्यते तदा परस्वलुण्टनपातकं  
 यद्यसुन्दरमभिधीयते तदा भवदीयचेतसो विराक्तिः ।  
 अतो मौनमेव श्रेय इति सिद्धं । श्रूयतां भवदीय-  
 प्रथमप्रश्ने परवित्तापहृतौ निषेधहेतुः । यदा परम-  
 ण्डलेषु नृपतयः सर्वेषामपि राज्ञां राज्यप्रशंसां  
 कुर्वन्ति तदा गुर्जरदेशे चरटराज्यमित्युपहसन्ति ।  
 अस्मत्पुरुषैरित्यादिस्वरूपं विज्ञप्तिकया ज्ञाप्यमानाः  
 किञ्चिन्निजपूर्वजवैमनस्यमावहन्तो द्वयामहे । यद्ययं  
 पूर्वजकलङ्कः सर्वलोकहृदये विस्मृतिमावहति तदा  
 समस्तराजपङ्क्तिषु वयमपि राजशब्दं लभामहे । धन-  
 लवलोलुभैर्भवद्भिः स पूर्वजकलङ्क उत्सृज्य पुनर्नवी-  
 कृतः । तदनन्तरं राज्ञा शस्त्रागाराग्निजं धनुरूपानीय  
 यो भवत्सु बलवान् स इदमारोपयत्विति समादिष्टे  
 सर्वाभिसारेण तन्नैकेनाप्यधिरोप्यत इति राज्ञा  
 हेलयैवाधिर्ज्याकृत्याभिदधे ॥

आज्ञाभङ्गो नरेन्द्राणां वृत्तिच्छेदोऽनुजीविनाम् ।

पृथक्शय्या च नारीणामशस्त्रो वध उच्यते ॥ १ ॥

इति नीतिशास्त्रोपदेशादस्मास्वशस्त्रवधकारिषु  
पुत्रेषु को दण्ड उचितः । अतो राज्ञा प्रायोपवेशन-  
पूर्वकं विंशत्यधिकवर्षशते पूर्णे चिताप्रवेशः कृतः ।  
अनेन राज्ञा भट्टारिकाश्रीयोगेश्वरीप्रासादः कृतः ।

[!संव० ८७८ श्रावणसुदि ४ निरुद्धं वर्ष १७ मास १  
दिन १ श्रीयोगराजेन राज्यं कृतं ॥ सं० ८७८!  
श्रावणसुदि ५ उत्तराषाढनक्षत्रे धनुर्लग्ने रत्नादि-  
त्यस्य राज्याभिषेको बभूव । सं० ८८१ कार्तिकसुदि  
९ निरुद्धं वर्ष ३ मास ३ दिनान्यनेन राज्ञा  
राज्यं चक्रे ॥ सं० ८९८! वर्षे ज्येष्ठसुदि १३ शनौ  
हस्तनक्षत्रे सिंहलग्ने श्रीक्षेमराजदेवस्य राज्याभि-  
षेकः समजनि । सं० ९२२! भाद्रपदसुदि १५ रवौ  
वर्ष ३८! मास ३ दिन १० अस्य राज्ञो राज्य-  
निबन्धः । ५ । सं० ९३५! वर्षे आश्विनसुदि १  
सोमे रोहिणीनक्षत्रे कुम्भलग्ने श्रीचामुण्डराजदेवस्य  
पट्टाभिषेकः समजनि ॥ ६ ॥ सं० ९३८ माघवदि! ३  
सोमे निरुद्धं वर्ष १३! मास ४ दिन १६ अनेन  
राज्ञा राज्यं विदधे ॥ सं० ९३८! माघवदि १४ भौमे



स्वातिनक्षत्रे सिंहलग्ने श्रीआकडदेवो राज्ये उप-  
 विष्टः। अनेन कर्करायां पूर्यामाकडेश्वरकण्टेश्वरी-  
 प्रासादौ कारितौ । सं० ९६५ ! पौषशुदि ९ बुधे  
 निरुद्धं वर्ष २६ ! मास १ दिन २० राज्यं कृतं ॥  
 सं० ९९० ! पौषसुदि १० गुरौ आर्द्रानक्षत्रे कुम्भलग्ने  
 भूयगडदेवः पट्टे समुपविष्टः। अनेन राज्ञा भूयगडे-  
 श्वरप्रासादःकृतःश्रीपत्तने प्राकारश्च सं० ९९१ ! वर्षे  
 आपाढसुदि १५ निरुद्धं वर्ष २७ ! मास ६ दिन ५०  
 राज्यं कृतं एवं चापोत्कटवंशे पुरुषाः ७ तद्वंशे  
 १९० वर्ष मास २ दिनसप्त राज्यं जातं ॥] !

असेव्या मातङ्गा परिगलितपक्षाः शिखरिणो  
 जडप्रीतिः कूर्मो फणिपतिरयं च द्विरसनः ।

इति ध्यातुर्धातुर्धराणिघृतये सान्ध्यचुलका-

त्समुत्तस्थौ कश्चिद्विलसदसिपट्टः सुसुभटः ॥ इति ॥

अथ पूर्वोक्तश्रीभूयगडराजवंशे मुञ्जालदेवसु-  
 ता राजवीजदण्डकनामानस्त्रयः सहोदरा यात्रा-  
 यां श्रीसोमनाथं नमस्कृत्य ततः प्रत्यावृत्ताः । श्री-  
 भूयगडदेवनृपं बाह्केल्यामवलोकमानास्तुरगस्य नृपे-  
 ण कशाघाते दत्ते सति कार्पटिकवेषधारी राजना-  
 मा क्षत्रियोऽनवसरे दत्तेन तेन कशाघातेन पीडितः

शिरःकम्पपूर्वं हा हेति शब्दमवादीत् । राज्ञा त-  
त्कारणं पृष्ठः स तुरङ्गमेन कृतं गतिविशेषं न्युञ्छ-  
न्नयोग्यमनवधार्य कशाघाते दीयमाने ममैव मर्मा-  
घातः समजानि । तेन तद्वचसा चमत्कृतेन राज्ञा  
स तुरङ्गो वाहनाय समर्पितः । तस्यैवाश्वाश्ववार-  
योः सदृशयोगमालोक्य पदे पदे तयोर्न्युञ्छनानि  
कुर्वन्तेनैव तदाचारेण तस्य महत्कुलमाकलय्य लीला-  
देवीनाम्नीं स्वभगिनीं ददौ । आधानानन्तरं कियत्यपि  
गते कालेऽकाण्डमरणे संजाते सचिवैरपत्यमरणं पर्या-  
लोच्य तदुदरविदारणपूर्वमपत्यमुद्धृतं । मूलनक्षत्र-  
जातत्वात्स श्रीमूलराजाभिधया समजानि । बाला-  
र्क इव तेजोमयत्वात्सर्ववह्मभतया पराक्रमेण मा-  
तुलमहीपालं प्रवर्द्धमानसाम्राज्यं कुर्वन् मदमत्तेन  
श्रीभूयडदेवेन साम्राज्येऽभिपिच्य तेन तु मत्तेनो-  
त्थाप्यते च तदादि चापोत्कटानां दानमुपहासप्र-  
सिद्धांस इत्थमनुदिनं विडम्बमानो निजपरिकरं स-  
ज्जित्य विकलेन मातुलेन स्थापितो राज्ये तं  
निहत्य सत्य एव भूपतिर्बभूव ॥ सं० ९९३ वर्षे  
आपाढसुदि १५ गुरौ, अश्विनीनक्षत्रे सिंहलग्ने  
रात्रिप्रहरद्वयसमये जन्मत एकाविंशतितमे वर्षे

श्रीमूलराजस्य राज्याभिषेकः समजनि । कस्मिन्न-  
 प्यवसरे सपादलक्षीयक्षितिपतिः श्रीमूलराजमभि-  
 षेणयितुं गूर्जरदेशसन्धौ समाजगाम् । तद्यौगपद्येन  
 नरपतेस्तिलङ्गदेशीयराज्ञो वारवनामा सेनापतिरु-  
 पाययौ । श्रीमूलराजेन तयोरेकस्मिन्विग्रह्यमाणेऽ-  
 परः पार्ष्णिधातं कुरुते इति सचिवैः सह विमृशंस्तै-  
 रूचे । श्रीकन्यादुर्गे प्रविश्य कियन्त्यपि दिनान्य-  
 तिवाह्यन्ते । नवरात्रिकेषु समागतेषु सपादलक्ष-  
 क्षितिपतिः स्वराजधान्यां शाकम्भर्यामेव स्वगोत्र-  
 जामाराधयिष्यति । तस्मिन्नवसरे श्रीवारवनामा  
 सेनानीर्जीयते तदनुक्रमतः सपादलक्षक्षोणीपतिर-  
 पीत्यं तदीये मन्त्रे श्रुते सति नृपः प्राह । मम लो-  
 के पलायनापवादः किं न भविष्यतीत्यादिष्टे ॥  
 ते ऊचुः ॥

यदपसरति मेषः कारणं तत्प्रहर्षं

मृगपतिरपि कोपात्सं कुचत्युत्पतिष्णुः ।

हृदयनिहितवैरा गूढमन्त्रप्रचाराः

किमपि विगणयन्तो बुद्धिमन्तः सहन्ते ॥ १ ॥

इति तद्वचसा श्रीमूलराजः श्रीकन्यादुर्गे प्रवि-  
 षेष्टः । श्रीसपादलक्षीयभूपतिः श्रीगूर्जरदेशे वर्धा-

कालमतिक्रामन्नवरात्रेषु समागतेषु तस्यामेव कट-  
कभूमौ शाकम्भरीनगरं निवेश्य तत्र गोत्रजामानी-  
य तत्रैव नवरात्राणि प्रारेभे । श्रीमूलराजस्तत्स्व-  
रूपमवगम्य निरुपायान्मन्त्रिणो ज्ञात्वा तत्कालो-  
त्पन्नमतिवैभवो राजा लिहणिकं प्रारभ्य राजादे-  
शेन समस्तान्समन्ततः सामन्तानाहूय कूटलेखक-  
व्ययकरणप्रतिवद्धपञ्चकुलमुखेन सर्वानपि राजपु-  
त्रान्पदार्तीश्चान्वयावदाताभ्यामुपलक्ष्य यथोचितदा-  
नादिभिरावर्ज्य च समयसंकेतज्ञापनापूर्वं ता-  
न्सर्वान्सपादलक्ष्मीयनृपतिशिविरसंनिहितान्विधाय  
निर्णीति वासरे प्रधानकरभीमारुह्य तत्प्रतिपा-  
लकेन समं भूयसीमपि भुवमाक्रम्य प्रत्यूषकालेऽ-  
तर्कित एव सपादलक्ष्मीयनृपतेः कटकं प्रविश्य कर-  
भ्या अवरुह्य रुपाणपाणिरेकाक्येव श्रीमूलराजस्त-  
द्वौवारिकमभिहितवान् । साम्प्रतं नृपतेः कः समयः  
श्रीमूलराजो राजद्वारे प्रविशतीति स्वस्वामिने  
विज्ञपयेति वदंस्तं दोर्दण्डप्रहारेण द्वारदेशादपसार्या-  
यं श्रीमूलराज एव द्वारे प्रविशतीति तस्मिन्नभिद-  
धाने गुरुदरान्तः प्रविश्य तस्य राज्ञः पत्यङ्गे स्वयं

निपसाद । भयभ्रान्तः स राजा क्षणमेकं मौनमवलम्ब्यैषत्साध्वसं विधूयं भवानेव श्रीमूलराज इत्यभिहिते श्रीमूलराजः स्पष्टं जगौ । उमिति गिरमाकर्ण्य यावत्समयोचितं किञ्चिद्वक्ति तावत्पूर्वसंकेतितैस्तैश्चतुःसहस्रप्रमितैः पत्तिभिः स गुरुदरः परिवेष्टयांचक्रे । अथ मूलराजेन स नृप इत्यभिदधे । अस्मिन्भूवलये नृपतिः समरवीरः समरे यो मम सन्मुखस्तिष्ठति स कोपि नास्त्यस्ति वेति मम विमृशतस्त्वमुपयाचितैरुपास्थितोसि परमशनावसरे मक्षिकासन्निपात इव तिलङ्गदेशीयतैलपाभिधानराज्ञः सेनापतिं मज्जयाय समागतं यावच्छिक्षया मि तावत्त्वया पार्णिधातादिव्यापाररहितेन स्थातव्यमिति त्वामुपरोद्धुमहमागतोस्मि मूलराजेनेत्यभिहिते भूपतिरेवमवादीत् । यत्त्वं नृपतिरपि सामान्यपत्तिरिव जीवितनिरपेक्षतेयत्थं वैरिगृहे एक एव प्रविशसि तेन त्वया सार्द्धमाजीवितान्तमेव मे सन्धिः । तेन राज्ञेत्युदिते मा मैवं वदेति तं निवारयंस्तेन भोजनाय निमन्त्रितोऽवज्ञया तं निपिध्य करेतरवारिमादायोत्थितः । तां करमीमारुह्य तेन स्कन्धावारेण परिवेष्टितो वारवसेनापतिकटके पतितः । तं निह-

त्य दशसहस्रसंख्यांस्तद्वाजिनोऽष्टादशगजरूपाणि  
 चादाय यावदावासान्दत्ते तावत्प्रणिधिभिरस्मि-  
 न्वृत्तान्ते ज्ञापिते सपादलक्षः पलायांचक्रे । तेन रा-  
 ज्ञा श्रीपत्तेन श्रीमूलराजवसहिका कारिता । श्री  
 मुञ्जालदेवस्वामिनः प्रासादश्च । तथा नित्यं २ सो  
 मवासरे श्रीपत्तने यात्रायां शिवभक्त्या व्रजंस्तद्भ-  
 क्तिपरितुष्टः सोमनाथ उपदेशदानपूर्वं मण्डलीनगर-  
 मागतः । तेन राज्ञा तत्र मूलेश्वर इति प्रासादः का-  
 रितः तत्र नमश्चिकीर्षाहर्षेण प्रतिदिनमागच्छतस्त-  
 स्य तद्भक्तिपरितुष्टः श्रीसोमेश्वरः ससागर एवं भ-  
 वन्नगरे समेप्यामीत्यभिधाय श्रीमदणहिल्लपुरेऽव-  
 तारमकरोत् । समागतसागरसंकेतेन सर्वेष्वपि  
 जलाशयेषु सर्वाण्यपि वारीणि क्षाराण्यभवन् ।  
 तेन राज्ञा तत्र त्रिपुरूपप्रासादः कारितः । अथ  
 तस्य चिन्तायकमुचितं तपस्विनं कंचिदालोकमा-  
 नः सरस्वतीसरिर्चरे एकान्तरोपवासपारणकेऽ  
 निर्दिष्टपञ्चग्रासभिक्षाहारं कन्यडिनामानं स तप-  
 स्विनमश्रौषात् । यावत्तन्नमस्याहेतवे नृपति-  
 स्तत्र प्रयाति तावत्तेन तृतीयज्वरिणा स ज्वरः  
 कन्थायां नियोजित इति नृपतिरालोक्य तेन राज्ञा

कथं कन्था कम्पते इति पृष्ठो नृपेण सह वार्त्ता  
 कर्तुमक्षमतयेह ज्वर आरोपित इत्यभिहिते  
 पार्थिवः प्राह । यद्येतावती शक्तिर्भवतस्तदा ज्वरः  
 किं न सत्यथा प्रहीयते इति राजादेशे ॥

उपतिष्ठन्तु मे रोगा ये केचित्पूर्वसंचिताः ।

आनृण्ये गन्तुमिच्छामि तच्छम्भोः परमं पदम् ॥

इति शिवपुराणोक्तान्यधीयन्नभुक्तं कर्म न  
 क्षीयते इति जानन्कथममुं विसृजामीति तेना-  
 भिहिते त्रिपुरुषधर्मस्थानस्य चिन्तायकत्वाय नृ-  
 पतिरभ्यर्थयामास ।

अधिकारात्रिभिर्मसैर्माठापत्यात्रिभिर्दिनैः ।

शीघ्रं नरकवाञ्छा चेद्दिनमेकं पुरोहितः ॥ १ ॥

इति स्मृतिंवाक्यं जानंस्तपउडुपेन संसारसागर-  
 मुत्तार्य गोप्यदे निमज्जामि किमिति वचसा नि-  
 पिद्धो नृपस्ताम्रशासनं मण्डकवेष्टितं निमार्य तस्मै  
 भिक्षागताय पत्रपुटे मोचयामास । स तदजानं-  
 स्ततः प्रत्यावृत्तः । पुरा दत्तमागोपि सरस्वत्याः  
 पूरे तदा न दीयमानमार्ग आजन्म निजदूषणानि  
 विमृशंस्तात्कालिकभिक्षादोषपरिज्ञानाय यावद्वि-

लोकते तावत्ताम्रशासनं ददर्श । तदनु क्रुद्धं तपो-  
धनं विज्ञाय तत्रागत्य नृपस्तत्सान्त्वनाय यावद्वि-  
नयवाक्यानि ब्रूते तावत्तेन मया दक्षिणपाणिना-  
गृहीतं भवेत्ताम्रशासनं कथं वृथा भवतीति वयजल्ल-  
देवनामा निजविनेयो नृपाय समर्पितः । तेन वय-  
जल्लदेवेन प्रतिदिनमङ्गोद्धर्तनाय जात्यधुसृणस्याष्टौ  
पलानि मृगमदपलचतुष्टयं कर्पूरपलमेकं द्वात्रिंश-  
द्वाराङ्गना ग्रामसहितं सितातपत्रं च यदा ददासि  
तदा चिन्तायकत्वमङ्गीकरोमीत्पभिहिते राज्ञा त-  
त्सर्वं प्रतिपद्य त्रिपुरुषधर्मस्थाने तपस्विभूषपदे  
सोऽभिपिक्तः । कंकरौलं इति प्रसिद्धः । इत्थं भो-  
गान्भुञ्जानोप्यजिह्वब्रह्मचर्यनिरतः । स कदाचिन्नि-  
शि मूलराजपत्न्या परीक्षितुमारब्धः । ताम्बूल-  
प्रहारेण कुष्ठिनीं विधाय पुनरनुनीतो निजोद्धर्त-  
नविलेपनस्नानोत्सृष्टपयःप्रक्षालनाच्च सज्जीचकार ।  
अथात्रैव लाखाकोत्पत्तिविप्रतिपत्तिप्रबन्धः ॥

पुरा कस्मिन्नापि परमारवंशे कीर्तिराजदेशाधिपतेः  
सुता कामालतानास्त्री सा बाल्ये सममालिभिः कस्या-  
पि प्रासादस्य पुरो रममाणा वरान्वृणीतेति ताभि-



व्याह्रियमाणा सा कमलता घोरान्धकारनिरुद्धनयन-  
मार्गा प्राप्तादस्तम्भान्तरितं फुलडाभिधानं पशुपाल-  
मज्ञातवृत्त्या तमेव वृत्त्वा तदनन्तरं कतिपयैर्वैः  
प्रधानवरेभ्य उपढौक्यमाना पतिव्रताव्रतनिर्वहणा-  
यं पितरावनुज्ञाप्य निर्वन्धात्तमेवोपयेमे । तयोर्नन्द-  
नो लापाकः स कच्छदेशाधिपतिः प्रसादितयशोरा-  
जवरप्रसादात्सर्वतोप्यजेयः । एकादशकृत्वस्त्रासित-  
श्रीमूलराजसैन्यः । कस्मिन्नप्यवसरे कपिलकोटिदुर्गे  
स्थित एव राज्ञा लापाकः स्वयं निरुद्धः । तदनु स  
लक्षः क्वाप्यवस्कन्ददानाय प्रहितं निर्व्यूढसाहसं  
माहेवाभिधं भृत्यमागच्छन्तमियेष । तत्स्वरूपम-  
वधार्य श्रीमूलराजेन तदागमनमार्गेषु निरुद्धेषु  
स समाप्तकार्यस्तत्रागच्छन् शस्त्रं त्यजेति राजपुरु-  
षैरुक्तः स्वामिकार्यसमर्थनाय तथैव कृत्वा समर-  
सज्जं लापाकमुपेत्य प्राणंसीत् । अथ संग्रामा-  
वसरे ॥

ऊंग्या ताविउ जहिं न किउ लखवउ भणइ निघट्ट॥  
गणिया लब्धइ दीहडा के दहक अहवा अट्ट ॥१॥

१ येनीयता सता तापितो न कृतः । तर्हि लक्षो निकृष्टो भग्य-  
ते । गणिता लभ्यन्ते दिवसाः किं वा दश । अथवाऽष्ट ॥

इत्यादिवोधवाक्यानि विविधानि व्याहरन्माहिचभृ-  
त्येनोद्भटवृत्तिदर्शनेन प्रोत्साहितसाहसः श्रीमूलरा-  
जेन समं द्वन्द्वयुद्धं कुर्वाणस्तस्याजेयतां दिनत्रयेण  
विमृश्य तुर्यादिने श्रीसोमेश्वरमनुस्मृत्य ततोवती-  
र्णरुद्रकलया स लक्षो निजघ्ने ॥ अथ तस्याजि-  
भूपतितस्य वातचलिते श्मश्रुणि पदा स्पृशन् रा-  
जा लक्षजनन्या लूतिरोगेण भवद्वंशो विपत्स्यत  
इति प्रशस्तः ॥

स्वप्रतापानले येन लक्षहोमं वितन्वता ।

सूत्रितस्तत्कलत्राणां वाष्पावग्रहनियहः ॥ १ ॥

कच्छपलक्षं हत्वा सहसाधिकलम्बजालमायातं ।

संगरसागरमध्ये धीवरता दर्शिता येन ॥ २ ॥

इति लापाकोत्पत्तिविपत्तिप्रबन्धः ॥

मेदिन्यां लब्धजन्मा जितवलिनि बलौ बद्धमूला  
दधीचौ

रामे रूढप्रवाला दिनकरतनये जातशाखोपशाखा ।

किञ्चिन्नागार्जुनेन प्रकटितकलिका पुष्पिता साह-  
साङ्के

आमूलामूलराज त्वयि फलितवती त्याग्निनि त्या-  
गवल्ली ॥ ३ ॥

स्नाता प्रावृषि वारिवाहसालिलैः संरूढदूर्वाङ्गुर-  
व्याजेनात्तकुशाः प्राणालसलिलैर्दत्त्वा निवापाञ्ज-  
लीन्॥

प्रासादास्तव विदिपां परिपतत्कुड्यस्थपिण्डच्छला-  
त्कुर्वन्ति प्रतिवासरं निजपतिप्रेताय पिण्डक्रियाम्॥४

इत्थं तेन राज्ञा पञ्चपञ्चाशद्वर्षाणि निःकण्टकं  
साम्राज्यं विधाय सन्ध्यानीराजनाविधेरनन्तरं रा-  
ज्ञा प्रसादीकृतं ताम्बूलं वण्ठेन करतलाभ्यामादाय  
तत्र कृमिदर्शनात्तत्स्वरूपमवगम्य वैराग्यात्संन्या-  
साङ्गीकारपूर्वं च दक्षिणचरणाङ्गुष्ठे बन्धियोजनापूर्वं  
गजदानप्रभृतानि महादानानि ददानोष्टभिर्दिनैः ॥

उद्धूमकेशं पदलग्नमग्नि-

मेकं विप्रेहे विनयैकवश्यः ॥

प्रतापिनोऽन्यस्य कथैव का य-

द्विभेद भानोरपि मण्डलं यः ॥ १ ॥

इत्यादिभिः स्तुतिभिः स्तूयमानो दिवमारुरोह ॥

अथ सं. १०५०! (५२) श्रावणसुदि ११ शुक्ले पुष्य-  
नक्षत्रे वृषलग्ने श्रीचामुण्डराजो राज्ये उपाविशत् ।  
अनेन श्रीपत्तने चन्दनाथदेव, चाचिणेश्वरदेव प्रसादौ  
कारितौ ॥ सं० १० ५५ आश्विनशुदि ५ सोमे नि

रुद्धं। वर्ष १३ मास १ दिन २४ राज्यं कृतं ॥ सं०  
 १०६५ आश्विनशुदि ६ भौमे ज्येष्ठानक्षत्रे  
 मिथुनलग्ने श्रीवल्लभराजदेवो राज्ये उपविष्टः। अ-  
 स्य राज्ञो मालवकदेशे धाराप्राकारं वेष्टयित्वा  
 शिलीरोगेण विपत्तिः संजाता। अस्य राजदमनशं-  
 कर इति तथा जगद्वपण इति विरुद्धयं संजातं॥  
 सं० १०६५ चैत्रशुदि ५ निरुद्धं मास, ५ दिन  
 २९ अनेन राज्ञा राज्यं कृतं ॥ सं० १०६५ चैत्रशु-  
 दि ६ गुरौ, उत्तराषाढिनक्षत्रे मकरलग्ने तद्भाता  
 दुर्लभराजनामा राज्येऽभिषिक्तः। अनेन श्रीपत्तने  
 सप्तभूमिधवलगृहकरणं व्ययकरणहस्तिशालाघ-  
 टिकागृहसहितं कारितं ॥ स्वभ्रातृवल्लभराजश्रे-  
 यसे मदनशंकरप्रासादः कारितस्तथा दुर्लभसरः  
 कारयाचक्रे ॥ एवं १२ वर्षं राज्यं कृतं ॥ तदनु  
 सं० १०७७ ज्येष्ठशुदि १२ भौमे अश्विनीनक्षत्रे  
 मकरलग्ने श्रीभीमाभिधानं मातुः सुतं राज्येभिषिच्य  
 स्वयं तीर्थोपासनवासनया वाणारसीं प्रति प्रति-  
 ष्ठासुर्मालवकमण्डलं प्राप्य तन्महाराजश्रीमुञ्जेन  
 छत्रवाप्रशदिराजाचिन्हानि विमुच्य कार्पटिकंवे

पेणैव पुरतो व्रजेति यद्वा युद्धं विधेहीत्यभिहिते-  
 ऽन्तरा धर्मान्तरायमुदितमवगम्य तं वृत्तान्तं निता-  
 न्तं श्रीभीमराजाय समादिश्य कार्पटिकवेपेण तीर्थे  
 गत्वा परलोकं साधयामास । ततः प्रभृति माल-  
 विकराजभिः सह गुर्जरनृपतीनां मूलविरोधः संवृत्तः॥  
 अथ प्रस्तावायातं मालवकमण्डनमुञ्जराजचरित-  
 मेवम् ॥



१ C मानवराज्ञा.

२ B C मालवकमण्डनमण्डन.

३ D ततः प्रभृति मालवकं राजचरितमेकं.

कालीनविनिश्चितराजप्रसिद्धिर्यथा॥

पोत्कट (चावडा) वंशराजानः ॥

इस्विसनः प्रारम्भः समाप्तिः वर्षाणि

राजः इ० ७४६ ८०६ ६०

राजः इ० ८०६ ८४१ ३५.

राजः इ० ८४१ ८६६ २५

डः इ० ८६६ ८९५ २९

सिंहः } इ० ८९५ ९२० २५  
(विजयासिंहः)

६ रत्नादित्यः } इ० ९२० ९३५ १५  
(रावतसिंहः)

७ सामन्तसिंहः इ० ९३५ ९४२ ७

॥ चौलुक्य (सोलङ्की) वंशराजानः ॥

६ मूलराजः इ० ९४२- ९९७-५५

२ चामुण्डराजः इ० ९९७-१०१०-१३

३ वल्लभसेनः इ० १०१०-१०१०- ०

४ दुर्लभसेनः इ० १०१०-१०२२-१२

५ भीमदेवः प्रथमः इ० १०२२-१०७२-५०

६ कर्णः इ० १०७२-१०९३-२२

७ सिद्धराजः । } इ० १०९४-११६३-४९  
(जयसिंहः)

८ कुमारपालः इ० ११४३-११७४-३१

९ अजयपालः इ० ११७४-११७७- ३

१० मूलराजः।द्वितीयः इ० ११७७-११७९- २

११ भीमदेवः।द्वितीयः इ० ११७९-१२४२-६३  
(४३)

१२ त्रिभुवनपालः इ० १२४२-१२४४- २

॥व्याघ्रिय (वाघेला) वंशराजानः॥

१ विशलदेवः इ० १२४२ १२६२ १८

२ अर्जुनदेवः इ० १२६२ १२७५ १३

३ सारंगदेवः इ० १२७५ १२७९ ४

४ कर्णराजः } इ० १२७९ १३०४ २५  
(कर्णयेलो)

(ख)॥सपादलक्षयिचाहमाननृपवंशोलिख्यते॥

१ वसुदेवराजः संवत् ६०८ वर्षे (चवडाण रात्रा)

२ सामन्तराजः

३ नरदेवः

४ अजयराजः। अजयमेरुदुर्गकारकः

५ विग्रहराजः

- ६ विजयराजः  
 ७ चन्द्रराजः  
 ८ गोविन्दराजः। सुरत्राणस्य वेगवरिसिनाम्नोजेता  
 ९ दुर्लभराजः  
 १० वत्सराजः  
 ११ सिंहराजः। सुरत्राणस्य हाजिवदीननाम्नो जेठा-  
 णके जेता  
 १२ दुर्योजनः निसरदीनसुरत्राणजेता  
 १३ विजयराजः.  
 १४ वप्यइराजः। शाकम्भर्यो देवताप्रसादाद्धेमादि-  
 खानिसंपन्नः  
 १५ दुर्लभराजः  
 १६ गण्डूराजः। महमदसुरत्राणजेता  
 १७ बालपदेवः  
 १८ विजयराजः  
 १९ चासुण्डराजः। सुरत्राणभङ्गा  
 २० दूतलदेवः। येन गूर्जरधराधिपतिर्वद्धानीतोऽ-  
 जयमेरुमध्ये तक्रविक्रयं कारितः  
 २१ वसिलदेवः। स च स्त्रीलम्पटो महासत्यां ब्राह्म-  
 ण्यां विलग्नो वलात्तच्छापाद्दुष्टव्रणसंक्रमेण मृतः



- २२ वृहत्पृथ्वीराजः। बलुगीसाहसुरत्राणभुजमर्दी  
 २३ आल्हणदेवः। सहावदीनसुरत्राणजेता  
 २४ अनालदेवः  
 २५ जगदेवः  
 २६ वीसलदेवः। तुरुष्कजित्  
 २७ अमरगाङ्गेयः  
 २८ पेथडदेवः  
 २९ सोमेश्वरदेवः  
 ३० पृथ्वीराजः संवत् १२३६ वर्षे राज्यं चकार।  
 संवत् १२४० मृतः।  
 ३१ हरिराजदेवः  
 ३२ राजदेवः  
 ३३ बोलणदेवः वावरीआलविरुदं तस्य।  
 ३४ वरिनारायणदेवः तुरुष्कसमसदीनगृहे मृतः  
 ३५ बाहडदेवः मालवजेता  
 ३६ जैत्रसिंहदेवः  
 ३७ श्रीहिम्मरिदेवः संवत् १२४२ वर्षे राज्ये स्थितः  
 संवत् १२५० वर्षे युद्धे मृतः  
 ॥ इति सपादलक्षयिन्पुवशः ॥

## मुञ्जराजप्रबन्धः

पुरा तस्मिन्मण्डले श्रीपरमारवंश्यः सिंहवन्त-  
भटनामा नृपती राजपाटिकायां परिभ्रमन् शरव-  
णमध्ये जातमात्रं रूपपात्रमतिमात्रं कमपि बाल-  
मालोक्य पुत्रवात्सल्यादुपादाय देव्यै समर्पयामा-  
स । तस्य सान्वयं मुञ्ज इति नाम निर्ममे । तदनु  
सीन्धलं इति नाम्ना सुतः समजनि । निःशेषगुणपु-  
ञ्जमञ्जुलमुञ्जस्यै राज्याभिषेकचिकीर्णपस्तस्य सौ-  
धमलंकुर्वन्नमन्दमन्दाक्षतया निजवधूं वेत्रासनान्त-  
रितां विधाय प्रणामपूर्वं भूपतिमारराध । राजा तं  
प्रदेशं विजनमवलोक्य तज्जन्मवृत्तान्तमादित एव  
तस्मै निवेद्य तव भक्त्या परितोषितः सन्सुतं  
विहाय तुभ्यं राज्यं प्रयच्छामीति वदन् परमनेन  
सीन्धलनाम्ना बान्धवेन समं प्रीत्या वर्तितव्यमि-  
त्यनुशास्तिं दत्त्वा तस्याभिषेकं चकार । स्वजन्म-  
वृत्तान्तप्रसरशङ्किना तेन स्वदयितापि निजघ्ने ।  
तदनु पराक्रमाक्रान्तभूतलः समस्तसज्जनचक्रवर्ति-  
रुद्रादित्यनाम्ना महामात्येन चिन्तितराज्यश्चिरं सु-

१ C श्रीसिंहभट D श्रीवर्षनामा. २ B सिन्धुज. D सिन्धुराज. ३ A पु-  
ञ्जमुञ्जस्य. D निः शेषराजगुणपुञ्ज. ४ D समस्तविद्वन्जन.

खमनुभवन्कस्यामपि योपित्यनुरक्ताश्चिरकिह्याभिध-  
करभमधिरुह्य द्वादशयोजनीं निशि प्रयाति प्र-  
त्यायाति च तथा समं विश्लेषे जाते इमं दोषक-  
मप्रैषीत् ॥

मुँअ पडह्ला दोरडी पेक्खिस्सि न गम्मारि ।

असाढि घण गज्जीइं चिक्खिलि होसेऽवारि ॥ १ ॥

तं सीन्धलनामानं भ्रातरमुत्कटतयाज्ञाभङ्गकारिणं  
स्वदेशान्निवास्य सुचिरं राज्यं चकार । स सीन्धलो  
गूर्जरदेशे समागत्य काश-हृदनगरसन्निधौ निजां  
पत्नीं निवेद्य दीपोत्सवे रात्रौ मृगयां कर्तुं प्रयातः।  
चौरवधभूमेः सन्निधौ शूकरं चरन्तमालोक्य शूलि-  
कायाः पतितं चौरशत्रुमजाजन् जानुनाधो विधाय  
यावत्प्रतिकिरि शरं सज्जीकुरुते तावत्तेन शवेन  
संकेतितः । ततस्तं करदपर्शान्निवार्य शूकरं तं श-  
रेण विदार्य यावदाकर्पति तावत्स शवोऽदृष्ट्वा सपूर्व-  
मुत्तिष्ठन् सीन्धलेन प्रोचे तव संकेतकाले शूकरे-

• हे मुञ्ज स्थलिता दवरकी [रज्जुः] प्रेक्षसे न ता हे जान्म  
आपाद्दीपो घनो गज्जति पिच्छता चूर्णविष्यत्पथुना । इत्यन्योक्तयो-  
पाजम्भेनाक्रहन् । त्वदिरहत्तन्वाश्रुधाराभिः पद्भिर्नागा जुवि कथं  
मागमिषीसीति त्रिकः]

शरप्रहारः श्रेयान् किं वाऽवबुध्य महाप्रदत्तः प्रहार  
इति तदाकथान्ते सच्छिद्रान्वेपी प्रेतः तन्निःसीमस्ता-  
हसेन परितुष्टो वरं वृणु । इत्यभिहितो मम बाणः  
क्षितौ मा पतत्विति याचिते भूयोपि वरं वृणु ।  
इति श्रुत्वा मद्भुजयोः सर्वापि लक्ष्मीः स्वाधीनेति ।  
तत्साहसचमत्कृतः स प्रेत इत्याह । त्वया मालव-  
मण्डले गन्तव्यमिति । तत्र श्रीमुञ्जराजा संनिहि-  
तविनाशस्तथापि तत्र त्वया गन्तव्यमेव तत्र  
तवान्वये राज्यं भविष्यतीति तत्प्रेषितस्तत्र गत्वा  
श्रीमुञ्जराज्ञः संपदः पदं कमपि जनपदमवाप्य पु-  
नरुत्कटतया श्रीमुञ्जेन निगृहीतनेत्रः काष्ठपञ्जर-  
नियन्त्रितो भोजं सुतमर्जाजनत् । तोऽभ्यस्तसम-  
स्तराजशास्त्रः षट्त्रिंशदायुधान्यधीत्य द्वासप्तति-  
कलाकूपारपारंगमः समस्तलक्षणलक्षितो ववृधे ।  
तज्जन्मानि जातकविदा केनापि नैमित्तिकेन जातकं  
समर्पितं ॥

पञ्चाशत्पञ्चवर्षाणि माताः सप्त दिनत्रयम् ।

भोक्तव्यं भोजराजेन सगौडं दक्षिणापथम् ॥ १ ॥

इति श्लोकार्थमवगन्यास्मिन्सति मत्सूनो राज्यं

न भविष्यतीत्याशङ्क्यान्त्यजेभ्यो वधाय तं समर्प-  
यामास । अथ तैर्निशीथे माधुर्यधुर्या तन्मूर्तिमव-  
धार्य तैर्जातानुकम्पैः सकम्पैश्चेष्टदैवतं स्मरेत्य-  
भिहिते ॥

मान्याता स महीपतिः कृतयुगालंकारभूतो गतः  
सेतुर्येन महोदधौ विरचितः कासौ दशास्यान्तकः ।  
अन्ये चापि युधिष्ठिरप्रभृतयो यावद्भवान् भूपते  
नैके नापि समं गता वसुमती मन्ये त्वया यास्यति १

इदं काव्यं पत्रके आलिरव्य तत्करेण नृपतये स-  
मर्पयामास । नृपतिस्तद्दर्शनात्स्वेदमेदुरमना अश्रू-  
णि मुञ्चन् भ्रूणहत्याकारिणं स्वं निनिन्द । अथ  
तैस्तं सवहुमानमानीय युवराजपदवीदानपूर्वं सं-  
मान्य तिलिङ्गदेशीयराज्ञा श्रीतैलिपदेवनाम्ना सैन्य-  
प्रेषणैराक्रान्तो रोगग्रस्तेन रुद्रादित्यनाम्ना म-  
हामात्येन निषिध्यमानोपि तं प्रति प्रतिष्ठासुगौदा-  
वरीं सरितमवधीकृत्य तामुल्लङ्घ्य प्रयाणकं न का-  
र्यमिति शपथदानपूर्वं व्यापिद्धोपि तं पुरा पोढानि-  
र्जितमित्यवज्ञया पश्यन्नतिरेकवशात्तां सरितमुत्ती-  
र्य स्कन्धावारं निवेशयामास । रुद्रादित्यो नृप-

तेर्वृत्तान्तमवगम्य कामपि भाविनीमविनीततया  
विपदं विनृश्य स्वयं चिंतानले प्रविवेश । अथ  
तैल्लिपेनं तत्सैन्यं छलवलाभ्यां हतविप्रहतं कृत्वा  
मुञ्जरज्या विवध्यै श्रीमुञ्जराजो जगृहे । कारागृहे  
निहितः काष्ठपञ्जरनियन्तितो मृणालवत्या तद्भागि-  
न्या परिचार्यमाणस्तया सह जातकलत्रसंबन्धः ।  
पाश्चात्यैर्निजप्रधानैः सुरङ्गादानपूर्वं तत्र ज्ञापितसं-  
केतः । कदाचिद्वर्षेण स्वं प्रतिविम्बं पश्यन्नज्ञात-  
वृत्त्या पृष्ठतःसनागताया मृणालवत्या वदनप्रतिविम्बं  
जराजर्जरं मुकुरे निरीक्ष्य चूनः श्रीमुञ्जस्य वदनता-  
मोप्यात्तादिशेषविच्छाद्यतया तां विपण्णामालोक्यै-  
वमवादीत् ॥

\*मुञ्ज भण्डे मृणालवड जुज्वण गयुं न झूरि।

जइ सकरसयखण्ड थिय तो इस्त मीठी चूरि ॥१

इति तां संभाष्य स्वस्थानं प्रति प्रियासुस्तद्वि-  
रहासहो भयात्तं वृत्तान्तं ज्ञापितुमशक्तो भूयो भूयः

\* मुञ्जो मृणाले दे मृणालजरी यौवन मन तदपि मा प्रियस्व ।  
ता दृष्टान् । यदि शर्मा वनखण्डा जाता, तदपिमिष्टा, ततोपी-  
य चूर्णिता मर्दिता प्रियै ! ॥

१ A B चिन्मनजे. २ C D वैश्वमे. ३ A C D मुञ्जं राजा  
वदति. ४ C D मनजः मुञ्ज ५ जुज्वणु निषज य झूरि

प्रोच्यमानोपि तां चिन्तामनुच्चरन् । अलवणाति-  
 लवणरसवतीं भोजितोपि तदास्वादानवबोधात्तया  
 निर्वन्धवन्धुरया गिरा सप्रणयं पृष्ठः प्राह । अहम-  
 नया सुरङ्गया स्वस्थाने गन्तास्मीति चेन्नवती तत्र  
 समुपैति तदा महादेवीपदेऽभिपिच्य प्रसादफलं द-  
 र्शयामीत्यभिहिते यावदाभरणकरण्डिकासुपनया-  
 मि तावत्क्षणं प्रतीक्षस्वेत्यभिदधानाऽसौ (कात्या-  
 यिनी तत्र गतो मां परिहरिष्यतीति विमृशन्ती  
 स्वभ्रातुर्भूपतेस्तं वृत्तान्तं निवेद्य विशेषतो विडम्ब-  
 नाय बन्धनवद्धं कारयित्वा प्रतिगृहं भिक्षाटनं का-  
 रयामास । स प्रतिगृहं परिभ्रमन्निर्वेदमेदुरतयेमानि  
 वाक्यानि पपाठ ॥ तथाहि ॥

\*सउचित्तहरिसट्टी मन्मणहर्वतीसडीहियां ।

हिअम्मि ते नर दट्ट सीझे जे वीसत्तइं थियां ॥ १ ॥

• सर्गचित्तदर्पार्थं मणमणादरैर्मन्मथवार्त्तासु दाक्षिण्य-  
 शीलायां छिवा ये विश्वसन्ति ते हृदये ददुःखिन्ते ॥ अत्र  
 प्राचीनदेशीशब्दाः । १ ॥

१ A B तद्वती. (२ अर्धतरनी मनसा विचारयति)

२ A चित्तहसट्टीपणह ४ अस्ती ते नर B हंसिटी मन्मणउ-  
 त्ति । हिअम्मि C D पञ्चासडीहियाद्वग्मी ५ तिपजे पत्तिह  
 ताह D अग्मी सीजे ६ पत्तिप्वरतिपाहं.

\*झाली तुष्टी किं न मुड किं न हूयड छारपुञ्ज ।  
हिण्डइ दोरीबधोयड जिममङ्कड तिम मुञ्जे ॥२  
तथा च ॥

\*गयगयरहगयतुरयगयपायकडो निभिच्च ।  
सग्गट्ठिय करि मन्तण उन्मुहुं ता रुद्धाद्ध ॥ ३ .  
अथान्यस्मिन्वासरे कस्यापि गृहपतेर्गृहे भिक्षानि-  
मित्तं नीतः ॥

पहुकपोणिं तत्त्यत्नी तक्रं पाययित्वा गवोद्धु-  
रकन्धरां भिक्षादाननिपेधं विदधतीं मुञ्जः४ प्राह॥  
\*भोलि मुन्धि म गव्वु करि पिक्खि वि पहुगुपाइ-  
अउदसइ तइं छहुत्तरइं मुञ्जह गयह गैयाइं ॥४

• ज्ञाजित्वा वुटित्वा किं न भवेयं भस्मपुञ्जः हिण्डति दवरक-  
बद्धो यथा मर्कटस्तथा मुञ्जः ॥२॥

१ C जोजी तुष्टि वि किं न ऊय मुपठ । छारपुञ्ज घरिघ-  
रि तिम्म नचायिपड जिम । D नुट्टवि A जोजी तुष्टी । B हुयड,

• गतगतरथगतनुरगगतपट्टो निर्दृश्यो जागोहं । तस्मान् हे रुद्रा-  
दित्य उन्मुहं मां सर्गस्थितः सम्मन्त्रणमायन्त्रणं कुर्याः । ३

२ C D पायकडाठकुम्हडाठव. ३ B उंमुहु ४ D मनपुमहना

• हे सत्ते हे मुग्घे मा गर्ह कुम्ह प्रेक्ष्य जवुपिउरकहस्ते पडु-  
कगधो देशो • पट्टसप्तपुत्तरचतुर्दशशतानि मुञ्जस्य गतानि  
तान्यपि गतानि ! ४

५ C D धनरत्नी म गव्वु पहुकपो. A चउदसइ C उउत्तर.



मा मङ्गुड कुरुद्वेगं यदहं खण्डितोनया ।

रामरावणमुञ्जाद्याः स्त्रीभिः के के न खण्डिताः ५

रेरे यन्त्रक मा रोदीर्यदहं भ्रामितोऽनया ।

कटाक्षाक्षेपमात्रेण कराकृष्टौ च का कथा ॥ ६ ॥

\*जा मति पल्लइ लम्पज्जइ सा मति पहिली होइ ।

मुञ्ज भणइ सुणालवइ विवण न वेढइ कोइ ॥ ७ ॥

यशःपुञ्जो मुञ्जो गजपतिरवन्तिक्षितिपतिः

सरस्वत्यावाशः समजनि पुरा यः कृत्तिरिति ।

स कर्णाटेशेन स्वसचिवबुद्धयैव विधृतः

कृतः शूलाग्रीवस्त्वहह विपमाः कर्मगतयः ॥ ८ ॥

\*सुहृदेवेन्द्रस्य ऋतुपुरुषतेजोऽशजनकः

प्रमीलः शय्यायां सुतविरहदुःखादशरथः ।

ज्वलत्तैलद्रोण्यां निहितवपुषस्तस्य नृपते-

श्विरात्संस्कारोऽभूदहह विपमाः कर्मगतयः ॥ ९ ॥

आपद्रुतं हसति किं द्रविणान्धमूढ

लक्ष्मीः स्थिरा न भवतीति किमत्र चित्रम् ।

किं त्वं न पश्यासि घटीर्जलयन्त्रचक्रे

ह. C पट्टकवाणि B पट्टकवाणि. A पट्टकवाणि.

\*ग मतिः पश्चात्तमपरो सा मतिर्यदि प्रथमा धरेत्तर्हि मुञ्जो  
मनानि केवृ पश्यासि मित्र न गहो ज्ञोति ! ॥

रिक्ता भवन्ति भरिता भरिता च रिक्ताः ॥ १० ॥

अलङ्कारः शङ्खाकरनरकपालं परिजनो

विशीर्णाङ्गो भृङ्गी वसु च वृष एको बहुवयाः ।

अवस्थेयं स्थाणोरपि भवति सर्वामरगुरो—

विधौ वक्रे मूर्द्ध्नि स्थितवति वयं के पुनरमी ॥ ११

\* सायर पाई लंक गढ गढवइ दससिरु राउ ।

भगवत्सय सो भजिगय मुञ्ज म करि विसाउ १२

इत्थं सुचिरं भिक्षां भ्रामयित्वा वध्यभूमौ नृपा-

देशाद्वधविधौ नीतः । तैरुक्तमिष्टं दैवतं स्मर ।

लक्ष्मी र्यास्पति गोविन्दे वीरश्रीर्वीरवेश्मनि ।

गते मुञ्जे यशःपुञ्जे निरालम्बा सरस्वती ॥ १ ॥

इत्यादि तद्वाक्यानि यथाश्रुतमवगन्तव्यानि ॥

तदनु मुञ्जं निहत्य तच्छिरो राजाङ्गणे शूलिकाग्रेतं

कृत्वा नित्यं दधिवेष्टितं कारयन्निजममर्षं पुषोप ।

अथ मालवमण्डले तद्वृत्तान्तवेदिभिः तच्चिदैस्त-

द्भ्रातृजं भोजनामानं राज्येऽभ्यभिच्यत ॥

॥इति श्रीविक्रमप्रमुखनृपवर्णनो नाम प्रथमः सर्गः॥



\* सागरः पाण्ड्या । लंका दुर्गः । दुर्गेतिदेशसिद्धा राजा । भा

॥१२॥ तद्वद्वे भध के मुञ्ज मा कुह विषादयिनि त्पुनराविशयम् १

## भोजभीमप्रबन्धौ

अथ यदा मालवकमण्डले श्रीभोजराजा राज्यं  
चकार तदाऽत्र गुर्जरधरिज्यां चौलुक्यवंशीयश्रीभीमः  
पृथिवीं शशात् । कस्मिन्नपि निशाशेषे स श्रीभो-  
जः श्रियश्चञ्चलतां निजचेतसि चिन्तयन् कल्लोल-  
लोलं निजं जीवितं च विमृशन् प्रातःकृत्यानन्तरं  
दानमण्डपेऽनुचरैराहूतेभ्योऽर्थिभ्यो यदृच्छया सुव-  
र्णटङ्कुकान्दातुमारेभे । अथ रोहकाभिधानस्तन्म-  
हामात्यः कोशविनाशात्तदौदार्यगुणं दोषं मन्यमा-  
नोऽपरथा तं दानविधिं निषेद्धुमक्षमः सर्वावसरे  
भग्रे सभामण्डपभारपट्टे ॥

आपदर्थं धनं रक्षेत्

इत्यक्षराणि खटिकयाऽलेखितं । प्रातर्यथावसरं  
नृपतिस्तान्वर्णान्निर्वर्ण्य समस्तपारिजने तं व्यति-  
करमपन्हुवाने ।

भाग्यभाजः क चापदः ।

इति नृपतिना लिखिते

दैवं हि कुप्यते क्वापि

एवं मन्त्रिलिखनादनन्तरं नृपतिना तद्विलोक्य

१- C D चौलुक्यचक्रवर्ती. २ C D लिखेत्, ३ A नृपः D नृपेण.

संचयोपि विनश्यति ॥ १ ॥

इति पुरो लिखिते स सचिवोऽभयं याचित्वा  
स्वलिखितं विज्ञापयामास ॥ तदनु पण्डितानां पं-  
ञ्चशती मम मनोगजं ज्ञानाद्भुशेन वशीकर्तुममात्रं  
महामात्यसन्निभा यथायाचितं प्राप्तं लभते ॥  
तथाहि ॥ कङ्कणोत्कीर्णमार्याचष्टयमेतत् ॥

इदमन्तरमुपकृतये प्रकृतिचलायावदस्ति संपदियम्।  
विपदि नियतोदितायां पुनरुपकर्तुं कुतोवसरः ॥१॥  
निजकरानिकरसमृद्ध्या धवलय भुवनानि पार्वणश-  
शाङ्क।

सुचिरं हन्त न सहेते हतविधिरिह सुस्थितं किमपि २  
अयमवसरः सरस्ते सलिलैरुपकर्तुमर्थिनामनिशम्।  
इदमपि सुलभमम्भो भवति पुरा जलधराभ्युदये ३  
कतिपयदिवसस्थायी पूरो दूरोन्नतोपि चण्डरथः ४  
तटिनीतटद्रुमपातिनिपातकमेकं चिरस्थायि ॥२॥  
किंच ॥

१ C D स्वं जेष्मकं ज्ञापयामास. २ C D इयं पण्डितानां.

३ C D भक्तिमात्रं D भद्भुशेन वशीकुरुतां. ४ C D उदयायां.

५ D दूरोन्नतिश्च भाविता ने. (D किंच श्लोकद्वयं कुण्डजोत्कीर्णम् ॥.

तथा-

यदि नास्तमिते सूर्ये न दत्तं धनमर्थिनाम् ।

तद्धनं नैवं जानामि प्रातः कस्य भविष्यति ॥ ५ ॥

इति स्वरुतं कण्ठाभरणीकृतं श्लोकमिष्टमन्त्र-  
वज्रपन्मन्त्रिन्, प्रेतप्रायेण भवता कथं विप्रलम्ब्यः।  
अथान्यस्मिन्नवसरे राजा राजपाटिकायां संचरन्  
सारितोरमुपागतः। तन्नीरमुल्लङ्घ्यागच्छन्तं दारिद्र्यो-  
पद्रुतं काष्ठभारवाहकं कमपि विप्रं प्राह ।

कियन्मात्रं जलं विप्र

विप्र०

जानुद्वयं नराधिप ।

इति तेनोक्ते राजा०

कथं तेयमवस्था ते

इति नृपेणोक्तः ॥ विप्र०

न सर्वत्र भवादृशाः ॥ १ ॥

इति तद्वाक्यान्ते यत्पारितोषिकं नृपतिरस्मै  
अदापयत्तन्मन्त्री धर्मवाहिकायां श्लोकवद्धं लिलेख।

तद्यथा ॥

लक्षंरपुनर्लक्षं मत्ताश्च दश दन्तिनः ।

प्राप्तादर्थमपि प्राप्तमर्थिभ्यः किं न दीयते ।

इच्छानुष्ठपो विभवः कदा कस्य भविष्यति ॥ १ ॥

१ A B पदमल. २ D इमानि सुभाषितानीद. ३ D विप्रजम्भः

दत्तं देवेन तुष्टेन जानुदघ्नप्रभापणात् ॥ १ ॥

अथान्यदा निशि निशीथिसमयेऽ कस्माद्वि-  
गतनिद्रो राजा राजानं गगनमण्डले नवोदितमा-  
लोक्य स्वस्तारस्वतान्भोयिप्रोन्मीलद्वेलनिभामिदं  
काव्यार्द्धमाहं ।

यदेतच्चन्द्रान्तर्जलदलवलीलां प्रकुरुते  
तदाचष्टे लोकः शशक इति नो मां प्रति तथा ।  
इति राज्ञा भूयोऽ निगद्यमाने कश्चिच्चौरो नृपसौ-  
धे खात्रपातपूर्वं कोशभुवने प्रविश्य प्रतिभाभरं  
निपेद्दुमक्षमः ॥

अहं त्विन्दुं मन्ये त्वदरिविरहाक्रान्ततरुणी-  
कंटाक्षोल्कापातव्रणशतकलङ्काङ्किततनुम् ॥ १ ॥

इति तत्पठनान्तरं चोरमङ्गरक्षकैः कारागारे  
निवेशयामास । ततोऽहर्मुखे सभामुपनीताय तस्मै  
चौराय यत्पारितोषकं राज्ञा प्रसादीकृतं तद्धर्मव-  
हिकानियुक्तो नियोग्येवं काव्यमलिखत् ।

अमुष्मै चौराय प्रतिनिहितमृत्युप्रतिभिये  
प्रभुः प्रीतः प्रादादुपरितनपादद्वयकृतेः ।

सुवर्णानां कोटीर्दश दशनकोटिस्तगिरी-

न्करीन्द्रानप्यष्टौ मदमुदितगुञ्जन्मधुलिहः ॥ १ ॥

॥ अथ कदाचित्तस्यां वाच्यमानायां स्वमेव  
स्थूललक्षं मन्यमानो दर्पभूताभिभूत इव  
तत्कृतं यन्न केनापि तद्वत्तं यन्न के नचित् ।  
तत्साधितमसाध्यं यत्तेन चेतो न दूयते ॥ १ ॥

इति स्वं मुहुर्मुहुः श्लाघ्यमानः केनापि पुरा-  
तनमन्त्रिणा तद्गर्वस्वर्वचिकीर्षया श्रीविक्रमार्कधर्म-  
वहिका नृपायोपनिन्ये । तस्या उपरितनविभागे  
प्रथमतः प्रथमं काव्यमेतत् ॥

अष्टौ हाटककोटयस्त्रिनवतिर्मुक्ताफलानां तुलाः

पञ्चाशन्मदगन्धमत्तमधुपक्रोधोदुराः सिन्धुराः ।

अश्वानामयुतं प्रपञ्चचतुरं वाराङ्गनानां शतं

दण्डेपाण्डुनृपेण ढौकितमिदं वैतालिकस्यार्पितम् १

वक्राम्भोजे सरस्वत्यधिवसति सदा शोण एवाधरस्ते

बाहुः काकुत्स्थवीर्यस्मृतिकरणपटुर्दक्षिणस्ते समुद्रः ।

वाहिन्यः पार्श्वमेताः क्षणमपि भवतो नैव मुञ्चन्त्य-

भीक्ष्णं

१ C दर्पाभिभूतः २ D तादृष्योपचयप्रपाञ्चनदशां.

३ B D वैतालिकस्य [ वैतालभट्टाय विक्रमपण्डितोपेत्यर्पित-

स्वच्छेऽन्तर्मानसेऽस्मिन्कथमवनिपते तेऽम्बुपाना-  
भिलाषः ॥१॥

अस्य काव्यस्य पारितोषिकदानमष्टौ हाटकमिदं  
काव्यं ज्ञेयम् ॥

इति तत्काव्यार्थमवगम्य तदौदार्यविनिर्जितगर्व-  
सर्वस्वस्तां वह्निकामर्चयित्वा यथास्थानमस्थापयत् ।  
प्रतीहारैण विज्ञप्तः स्वामिन्देव दर्शनोत्सुकं सरस्व-  
तीकुटुम्बं द्वारमध्यास्ते । क्षिप्रं प्रवेशयेति राजादे-  
शावन्तुप्रथमं प्रविष्टं तत् । प्रेष्यः प्राह ॥

वापो विद्वान् वापपुत्रोऽपि विद्वान्  
आई विडपी आईधुआपि विडपी ।  
फाणी चेटी सापि विडपी वराकी  
राजन्मन्ये विज्जपुअं कुटुम्बम् ॥ १

इति तस्य प्रहसनप्रायेण वचसा नृपतिरीषद्विह-  
स्य तज्ज्येष्ठपुरुषाय समस्थापदमाह ॥  
असारात्सारमुद्धरेत् ॥

\*[वापः पिता । देवशेषकाण्डे । आई माना । पुत्रा मुना । दशो०  
विशांसमूहं)

१ B यप्पो. २ A C D विडपी. ३ A मित्री. C वित्री.

D विडुसी. ४ B मित्र D मित्र.



दानं वित्तादृतं वाचः कीर्तिधर्मौ तथायुपः ।

परोपकरणं कायादसारात्सारमुद्धरेत् ॥ १

अथ नृपस्तत्पुत्राय । हिमालयो नाम नगाधि-  
राजः । चकार मेनाविरहातुराङ्गीति नृपतिवाक्या-  
नन्तरम् ॥

तव प्रेतापज्वलनाज्जगाल

हिमालयो नाम नगाधिराजः ।

चकार मेना विरहातुराङ्गी

प्रवालशय्यांशरणं शरीरम् ॥ १ ॥

इति समस्यायां पूरितायां ज्येष्ठस्य पत्नीं प्रति राजा ॥

कवणु पियावउ खीरु । इति समस्यापदे राज्ञाऽर्पिते ।

\*जइ यह रावणु जाईयउ दहमुहइकुशरीरु ।

जणाणि वियम्भी चिन्तवइ कवणुपियावउ खीरु १

सेत्थं पूरयामास ॥ अथ राज्ञः, कण्ठ विलु-

ल्लइं काउ । इति समस्यापदं ।

[काण वि विरहकरालिइं पंडउडावियउ वराउ।

१ D प्रवालशय्याशरणं शरीरं

\* (यदा च रावणो तातो दशमुखैकशरीरः । तदा जननी विवृण्वि-  
णी कम्पती सतीत्यर्थः चिन्तयति रुग्णे मुखाय शीरं पापपापि १)

१ A जेइ B तद

सहि अञ्चभूउं दिट्ठं मइं कण्ठि विलुल्लइ काउ ॥१॥

स इत्थं पूरयामास । सुतां विस्मृत्य राज्ञा तानि  
सर्वाणि सत्कृत्य विसृष्टानि ॥

अथ राजा सर्वावसरे चन्द्रशालाभुवि परिभ्रम-  
न्विधृतातपत्रो द्वाःस्थेन विज्ञातसुतावृतान्तो नृप-  
उच्यतामिति तां प्रति प्राह ॥ अथ सा, ॥

राजन्भोज कुलप्रदीप निखिलक्षमापालचूडामणे  
युक्तं संचरणं तवात्र भुवने छत्रेण रात्रावपि ।  
मा भूत्वद्ददनावलोकनवशाद्बीडाविलक्षः शशी  
मा भूच्चेयमरुन्धती भगवती दुःशीलताभाजनम् ॥१॥

इति तद्वाक्यानन्तरं तत्सौन्दर्यापहृतचित्तस्ता-  
मुवाह्य भोगिनीं चकार । अथान्यदा यमलपत्रेषु  
सत्स्वपि सन्धिदूषणोत्पत्तये श्रीभोजराजो गूर्जरदेश-  
विज्ञतां जिज्ञासुः सान्धिविग्रहिककरे कृत्वेमां गा-  
धां भीमं प्रति प्राहिणोत् ॥

\* कथमपि विग्रहकरालितया कञ्चनान्तरितयेत्यर्थः पतिवर्द्धापि-  
तो वराकः । हे सपि अत्यद्भुतं दृष्टं मया यतः कण्ठे विलुल्लानि  
कस्य । पतिं विना कस्यावज्जम्भनं करिष्ये इति तथा न प्रथमं वि-  
चरितमिति नार्थः ॥ १ ॥ ]

१ C D भञ्जित्.

२ [ अन्योन्यमेवं गतिन्यायेति अयमारः ]

\*हेलानिदालियगइंदकुम्भपयाडियपयावपसरस्त ।

सिंहस्त मएण समं न विग्गहो नेय सन्धाणं १

इति तदुत्तररूपां गाथां याच्यमानो भीमः सर्व-  
पामपिमहाकवीनां गाथाबन्धान्विविधान्फलगुवलि-  
तांश्चिन्तयन् ।

\*अन्धयसुयाण कालो पुहवी भीमो यं निम्मिओ<sup>२</sup>  
विहिणा ।

जेण सयंपि न गणियं का गणनां तुज्झ इकस्त<sup>३</sup>

इति गोविन्दाचार्यविरचितां तां चेतश्चमत्कारि-  
णीं गाथां तस्य प्रधानस्य करे प्रस्थाप्य सन्धिदूष-  
णमपाहरत् ॥ कस्मिन्नप्यवसरे प्रतिहारनिवेदितः  
कोपि पुरुषः सभां प्रविश्य श्रीभोजं प्रति ॥

अम्वा तुष्यति न मया न स्नुपया सापि नान्मया  
न मया ।

अहमपि न तया न तया वद राजन्कस्य दोषोयम् १

\* ( हेलानिदालियगइन्दकुम्भप्रकटिप्रतापप्रसरस्त । सिंहस्य  
मृगेण सयं न विग्रहो नेय सन्धानं ॥ १ ॥ )

\* ( अन्धरुमुतानां कालः पृथिव्यां जीमश्च निर्मेतो विधिना ।  
तेन शतमपि न गणितं का गणना नैरुभय ॥ १ ॥ )

॥ १ भीमो पुहवी २ ॥ निम्मिउ ३ ॥ गणना ४ ॥ पकस्त

इति तदाक्यानन्तरं तदाजन्मदारिद्र्यद्रोहि पारितोषिकं दापयामास ॥ अथ कस्यामपि निशि हिमसमये वीरचर्याया नृपतिः परिभ्रमन्कस्यापि देवकुलस्य पुरः कमपि पुरुषं ॥

शीतेनोद्धुपितस्य मापफलवञ्चिन्तार्णवे मज्जतः शान्तोग्निः स्फुटिताधरस्य धमतः क्षुत्क्षामकुक्षेर्ममा निद्रा काप्यवमानितेव दयिता संत्यज्य दूरं गता सत्पात्रप्रतिपादितेव कमला न क्षीयते शर्वरी ॥ १

इति पठन्तं । श्रुत्वा निशान्तमतिवाह्य तं प्रातराहूय पप्रच्छ । कथंभवता निशाशोपेऽत्यन्तशीतोपद्रवः सोढः । सत्पात्रप्रतिपादितेति संकेतपूर्वं समादिष्टं । स्वामिन्मया घनत्रिवेलीवलेन शीतमतिवाह्यते स इति विज्ञपयन्, का तव त्रिवेलीति

१ D अथ तन्नगरनिवासी कोपि द्विजः केवजीनशमानवृत्तिः कस्मिन्नापि पर्वणि स्नानध्याकुले सरुजेपि नगरलोके अजगन्निद्रया रिक्तनाम्नपात्र एवागत इति ब्राह्मण्या निर्भर्त्स्यमानः संज्ञानरुजहेतां, प्रति प्रदत्तप्रहार भारद्गुर्यैः संवम्प रात्रमांदिरे नीयमानो राज्ञ पृष्ठः सन्नाह । अग्न्या तुप्यतीति श्लोकं पपाठ । तदर्थं पण्डितेष्वनवगुह्यमानेषु राज्ञ समनीयया तदभिप्राय समुपाजम्भ्य तस्मै जह्मये दापिते सति श्लोकार्थं कजहमूत्रं तदापि दाग्निमूत्रं नृपो व्याचरन् ॥ २ D वृद्धपितृभ्यः ३ अनुया.

भूयोभिहित इदमपाठीत् ।

रात्रौ जानुर्दिवा भानुः कृशानुः सन्ध्ययोर्द्वयोः ।

राजन् शतिं मया नीतं जानुभानुकृशानुभिः १

स इत्थं वदन् राज्ञा लक्षत्रयदानेन परितोषितः ।

धारयित्वा त्वया मानमहो त्यागाध्वनाधुना ।

मोचिता वलिकर्णाद्याः सञ्चेतो गुप्तिवेश्मनः १

इति सारस्वतोद्धारपूरपरे तत्पारितोषिकदानाक्ष-  
मेण राज्ञा सोपरोधं निवारितः । अन्यस्मिन्नवसरे

राजा राजपाटिकाया गजारूढः पुरान्तरा संचरन्क-  
मपि रोरं<sup>१</sup> भूमिपतितकणांश्चिन्वन्तमवलोक्य ।

\*[नियतयूरपूरणमभि य असमत्था किंपि तेहिजा-  
एहिं ।

इति तेनार्द्धकविना पूर्वाद्धे<sup>२</sup> प्रोक्ते ।

•[सुसमत्था वि हु न परोवयारिणो तेहि वि नहि  
किंपि<sup>३</sup> ॥ १ ॥

इति तद्वचनान्ते ॥

\* (निजोदयपूरणे येऽसमर्था, तेजतिरपि किं ।

\* ( सुसमर्था अपि निश्चयेन ये परोपकारिणो न तेजतिरपि किं  
नाहि किमपि ॥ ?

[१ कागगान्

२ दग्धि]

३ D न किंपि.

\*परपत्थणापवत्तं मा जणणि जणेसु एरिसं पुत्तं ।  
इति तद्वाक्यादनु ।

\*मा पुहविं मा धरिज्जसु पत्थणभङ्गो कओ जेहिं२  
स इति वदन्कस्त्वमिति राज्ञाभिहितो नगरप्र-  
धानैर्भवद्विविधविद्वद्घटायामपरया प्रवेशमलभमा-  
नोऽनेनैव प्रपञ्चेन स्वामिदर्शनचिकीरयं राजशेखर-  
\*इति ज्ञापितः ।

तदुचितमहादानैः प्रसादीकृते ।

भेकैः कोटरशायिभिर्मृतमिव क्षमान्तर्गतं कच्छपैः  
पाठिनैः पृथुपङ्कपीठलुठनाद्यस्मिन्मुहुर्मूर्छितम् ।  
तस्मिन्नेव सरस्यकालजलदेनोन्नम्य तच्चेष्टितं  
येनाकुम्भनिमग्नवन्यकरिणां यूथैः पयः पीयते॥१॥

\* ( परप्राग्भाप्रवृत्तमौदृशं पुत्रं हे जनानि मा जनय ।

\* ( हे मातः हे पृथिविपैः प्रार्थनाभङ्गः कृतस्वादशान्भुक्पात्र्या  
धारय ॥ २)

१ A मा पुहवि

\* १ D इति प्रापिणे विप्राय हस्तिनीं ददौ

पुनः स विप्रः

निर्वाणा न कुटी न घाप्रिशकटी नापि द्वितीया पटी

वृत्तिर्नारजटी न बुन्दिजपुटी जूमी च पृष्ठा कटी ।

तुष्टिर्नरूपटी प्रिया न उधुटी नेनाप्यहं संकटी

श्रीमद्भोज तत्र प्रसादकटी भदन्ता ममापत्तटी ॥ २ ॥-

इत्यकालजलदराजशेखरोक्तिः । कस्मिन्नपि  
संवत्सरे वृष्ट्यभावात्कणतृणानामप्राप्त्या स्थान-  
पुरुषैर्भोजागमं ज्ञापितः श्रीभीमश्चितां प्रपन्नो डा-  
मरनामानं सन्धिविग्रहिकमादिशत् । यत्किमपि  
दण्डं दत्वाऽस्मिन्वर्षे श्रीभोज इहागच्छन्निवारणीयः।  
स इति तदादेशात्तत्र गतोऽत्यन्तविरूपवान्पराचि-  
त्तज्ञः श्रीभोजेनेत्यभिदधे ।

यौष्माकाधिपसन्धिविग्रहपदे दूताः कियन्तो वद  
मादृक्षां बहवोपि मालवपते ते सन्ति तत्र त्रिधा।  
प्रेष्यन्ते<sup>१</sup>ऽधममध्यमोत्तमगुणप्रेक्षानुरूपक्रमा-  
त्तेनान्तःस्मितमुत्तरं विदधता धाराधिपो रञ्जितः॥१

- इति श्रुत्वा तेनैकादशसहस्राणि दत्तानि ॥

अथ राजशेखरनामा कविः संभार्यां महाकाव्यप्रसादे सुप्तः पठति  
पोतानेतान्नय गुणवाते श्रीष्मकाखावसानं  
यावन्नायच्छमय रुदतो येन केनाशनेन ।

पश्चादम्भोधरसपरीषाकयासाद्य तुम्बी

कुष्माण्डी च प्रभवति यदा के वयं जूजुज के ॥ १

प्रसन्नेन राज्ञा सर्वस्वदानात्तौषिणेन कविनोक्तं भेकैरिति ॥

१ D) अथैकदा डापरनामा आपरकालीयो द्वितः श्रीवीजराज्ये  
गतो राज्ञोपहासपूर्व २ द्विज तगादृश. ३ प्रेक्षन्ते

४ C D रञ्जित. ॥ १ ॥ श्रीभोजराजा गूर्जरोपरि कृतप्रस्थानो-

\*इति तद्वचनचातुर्यचमत्कृतो राजा गूर्जरदेशं  
प्रति प्रयाणपटहदानं चक्रे। प्रयाणावसरे वन्द्योक्तं ।  
चौलःक्रोडं पयोधेर्विशति निवसते रन्ध्रमन्ध्रो गिरीन्द्रे  
कर्णाटः पट्टबन्धं न भजति भजते गूर्जरो निर्झराणि ।  
चेदिल्लीयतेऽस्यैः क्षितिपतिसुभटः कन्यकुञ्जोत्र  
कुञ्जो

भोज त्वत्तन्त्रमात्रप्रसरभयभरव्याकुलो राजलोकः१  
कोणे कौङ्कुणकः कपाटनिकटे लाटः कलिङ्गोङ्गणे-  
त्वं रे कोशल नूतनो मम पिताप्पत्रोपितः स्याण्डिले।

- वाह्यावासे रुतस्त्रानो भेटितः सनूराज्ञोचे डामराख्यः। जीवडी-  
पाको नापितोऽय कन्ये किं करोति । तेनोक्तं । अन्धेषा राज्ञां  
शिरोमुण्डितमेकस्य शिरो जलनिम्नमास्ते पश्चान्मुण्डयिष्यती-  
ति भणिने राज्ञा चमत्कृतेन राजनुवने राजविडम्बननाटके चित्रे  
डामरस्वामी कर्णाटराजश्चाटूनि कुर्वन् दर्शितः । इतेनोक्तं ।

जोत्रराज मम स्वामी यादे कर्णाटनूपतैः२।

कराकटो३ न पश्यामि कथं मुञ्जशिरः करे ॥ १

इति वाक्येन स्मृतपूर्वैः गूर्जरदेशं गत्स्वित्यत्र कर्णाटोपरि प्रयाणं  
रुतगान् । नृपाधे डामरस्योक्तिः ।

मत्स्यं त्व भोज मार्तण्ड पूर्वां दिशि राजते ।

मूरोरि जयुनामेति पश्चिमाशारलम्बने ॥ १ ॥

१ A B चौडः २ B D नृपतिः ३ कचाक्रष्टं.



इत्थं यस्य विवर्द्धितो निशि मिथः प्रत्यर्थिनां संस्तर-  
स्थानन्यासभुवा विरोधकलहः कारानिकेतक्षितौ २

प्रयाणकपटहृदापनादनु समस्तराजविडम्बना-  
टकेऽभिधीयमाने । सकोपः कोपि भूपः कारागारा-  
न्तरास्थितं सुस्थितं तैलिपं भूपमुत्थापयंस्तेनोचे ।  
अहमिहान्वयवासी कथमागन्तुकभवद्वचंसा निजं  
पदमुज्जामीति विहसन्नृपो डामरं प्रति नाटकरसा-  
वतारं प्रशंसंस्तेनाभिदधे । देवातिशयिन्यपि रसा-  
वतारे धिग्भटस्य कथानायकवृत्तान्तानभिज्ञताम् ।  
यतः श्रीतैलिपदेवराजः शूलिकाग्रोतमुञ्जराजशि-  
रसा प्रतीयत इति सभासमक्षं तेनोक्ते तन्निर्भ-  
त्सनसंपन्नमन्युरनन्यसामग्र्या तदैव तिलङ्गदेशं प्र-  
ति प्रयाणमकरोत् । अथ तैलिपदेवस्यातिवल-  
मायान्तमाकर्ण्य व्याकुलं श्रीभोजं डामरः स-  
मायातः कल्पितराजादेशदर्शनपूर्वं भोगपुरे श्री-  
भीमं समायातं विज्ञपयामास । तथा तद्वार्त्तया  
क्षते क्षारनिक्षेपसदृक्षया विलक्षीक्रियमाणः श्रीभो-  
जराजो डामरमभ्यधात् । अस्मिन्वर्षे त्वया स्व-  
स्वामी कथंचनेहागच्छन्निवार्य इति भूयो भूयः  
सदैव्यं भागमाणे नृपे प्रस्तावयिन्नुपाद्वस्तिनीत

हितं हस्तिनमुपायने उपादाय पत्तने श्रीभीमं प-  
रितोपयामास । कस्मिंश्चिद्धर्मशास्त्राकर्णनक्षणेऽर्जु-  
नस्य राधावेधमाकर्ण्य किमभ्यासस्य दुष्करमिति  
विमृशन्सतताभ्यासवशाद्विश्वविदितं राधावेधं वि-  
धाय नगरे हृद्दशोभां कारयंस्तैलिकशूचिकाभ्यामव-  
ज्ञया निराकृतोत्सवाभ्यां श्रीभोजभूपो व्यज्ञप्यतातै-  
लिकेन चन्द्रशालास्थितेन भूमिस्थितसंकीर्णवदने,  
मृन्मयपात्रे तैलधाराधिरोपणात्, सूचिकेन च भूमि-  
स्थितेनोर्द्ध्वीकृततन्तुमुखे आकाशात्पतन्त्याः शू-  
च्या विवरं नियोज्य निजाभ्यासकौशलं निवेद्य  
नृपं प्रति चेच्छक्तिरस्ति ततः प्रभुरप्येवं करो-  
त्वित्यभिधाय राज्ञो गर्वं स्वर्वं चक्राते ॥

भोजराज मया ज्ञातं राधावेधस्य कारणम् ।

धाराया विपरीतं हि सहते न भवानिति ॥ १ ॥

विद्वद्भिरिति श्लाघ्यमानो नवनगरनिवेशं क-  
र्तुकामः पटहे वाद्यमाने धाराभिधया पणस्त्रिया-  
ग्निवेतालनाच्चा पत्या सह लङ्कां गत्वा तं नग-  
रनिवेशमालोक्य पुनः समागतया मन्नाम नगरे  
दातव्यमित्यभिधाय तत्प्रतिच्छन्दपटं समर्प्य सा  
धारां नगरीं निवेशयामास । कस्मिन्नप्यहनि स-

८० प्रबन्धचिन्तामणिःसर्ग. २

वृषः सान्ध्यसर्वावसरानन्तरं निजनगरान्तः परि-  
धमन् ॥

“एऊ जन्मु नग्गुहं गिउ भडासिरिखग्गु न भग्गु ।  
तिक्खां तुरियां न माणियां गोरी गलि न लग्गु॥१

‡ इति केनापि दिगम्बरेण पठ्यमानमाकर्ण्य  
प्रातस्तमाकार्यं रात्रियठितवृत्तान्तसंकेतवशेन श-  
क्तिं पृष्ठः सन्

देव दीपोत्सवे जाते प्रवृत्ते दन्तिनां मदे।

एकच्छत्रं करोन्येव सगौडं दक्षिणापथम् ॥ २

इति स्वपौरुषभाविः कुर्वन्तेनानीपदेऽभिषिक्तः।  
सिन्धुदेशविजयप्रावृत्ते श्रीभीमे स दिगम्बरः समस्त-  
सामन्तैः समं समेत्य श्रीमदणहिल्लपुरं भङ्गं कृत्वा  
धवलशृङ्गटिकाद्वारे कपर्दिकान्वापयित्वा जयपत्रं  
जग्राह । तदादि कुलचन्द्रेण मुपितमिति सर्वत्र लि-  
तौ ख्यातिरासीत् । स जयपत्रमादाय मालवम-  
ण्डले गतः श्रीभोजाय तं वृत्तान्तं विज्ञपयन्नुक्तो

• एवउत्तम्य गतं नप्रोह यटश्रील्लङ्गे न भयः तीक्ष्णः खोम्हा-  
हाभूजिकादिशयोपकरणानि च नानुभूतानि देसी० यो  
मौलीगने स्त्रीरुण्डे न वयः ॥ १ ॥ !

१) भाउ जन्मु निगण्ड १ नगड [ आगतं १-१ यडापु. निर्भूतं ]

भवतेङ्गालवापः कथं न कारितोऽत्रत्यमुद्रया-  
हितं गूर्जरदेशे प्रयास्यतीति<sup>१</sup> श्रीसरस्वतीकण्ठाभ-  
रणेन श्रीभोजेनेत्यभिदधे ॥ कदाचिच्चन्द्रातपे  
उपविष्टः श्रीभोजः संनिहिते कुलचन्द्रे पूर्णचन्द्र-  
मण्डलमवलोकमान इदमपाठीत् ॥

येषां वल्लभया सह क्षणमिव क्षिप्रं क्षया क्षीयते  
तेषां शीतकरः शशी विरहिणामुल्केव संतापकृत् ॥  
इत्यर्द्धं कविना तेनोक्ते कुलचन्द्रः प्राह ।

अस्माकं तु न वल्लभा न विरहस्तेनोभयभ्रंशिना-  
मिन्दू राजति दर्पणाकृतिरसौ नोष्णो न वा शीतलः<sup>१</sup>  
इति तदुक्तेरनन्तरमेवैकां वराङ्गनां प्रसादीचकार ॥

अथ डामरनामा सन्धिविग्रहिको मालवमण्ड-

१ ० नयनलभरीया मगडा गयणि धदङ्कर मेहु ।

दृथन्तरे जरे आविसिद नउ जाणीसिद नेहु ॥

[ नयनलभरीया मार्गा गगने गर्जति मेघः ।

अत्रान्तरे यद्यागमिष्यसि ततो ज्ञापने छेदः ॥ ]

एषां भवि (धर्म)जभया सह राजा नन्निजपुत्रीस्वरूपं दृष्टं प्रानरा-  
कार्यं गूर्जरदेशोपरि सेनाधिपत्यं ददौ तदा तेनोक्तं । देव दीपेति ॥ ततो  
गूर्जरदेशः समग्रोपि तेन विनाशितः । श्रीवत्तनचतुःपथे कपर्दिका  
वाणितास्तस्यागनस्य राजोक्तं । न ऊनं रम्यं । भव प्रभृति माजय-  
देशदण्डः श्रीगूर्जरे वास्यतीति ॥ रूपदिका माजयरुदेशीयनाणकम् ॥

लादायातः श्रीभोजस्य सभां वर्णयन्महान्तमायु-  
 कं जनयति । तत्र गतश्च श्रीभीमस्यामात्रां रूपपात्र-  
 तां वर्णयंस्तद्विद्वक्षातरलितः श्रीभोजस्तमिहान-  
 य तत्र मां नयेति वेत्यभ्यर्च्यमानः । सभादर्शनो-  
 त्कण्ठितेन भीमेन तथैवोच्यमानश्च कस्मिन्नपि व-  
 र्णे उपायविन्महदुपायनमादाय विप्रवेपधारिणं  
 ताम्बूलकरण्डकवाहिनं श्रीभीमं स गृहीत्वा सदसि  
 गतः प्रणमन्, श्रीभोजेन श्रीभीमानयनवृत्तान्तं व्या-  
 हृतः स विज्ञपयांचक्रे । स्वतन्त्राः स्वामिनोऽभि-  
 मतं कार्यं केन बलात्कार्यन्ते, इति सर्वेष्वप्येके दा-  
 सा देवेन नावधीरणीया इत्यभिधाय, श्रीभीमस्य  
 वयोवर्णाकृतीनां सादृश्यं पृच्छञ्श्रीभोजस्तान्सभा-  
 सद्गो लोकानवलोकयन्त्यगीधरं लक्ष्मीकृत्य डामरेणे-  
 त्यभिदधे । स्वामिन्

इमाकृतिरयं वर्ण इदं रूपमिदं वयः ।

अन्तरं चास्य भूपस्य काचचिन्तामणेरेव ॥ १ ॥

इति तेन विज्ञते चतुरचक्रवर्ती श्रीभोजस्तत्सा-  
 मुद्रिकाविलोकनान्निश्चलदृग्तादृशं नृपं विमृश्योपा-  
 यनवस्तून्पुनस्तुं स सन्धिविग्रहिकस्तं प्राहिणोत् ।

तेषु वस्तुपूषनीयमानेषु तद्गुणवर्णनवार्तान्तरव्याक्षे-  
पेण च भूयसि कालविलम्बे संवृत्ते स्थगीवाहको  
ऽद्यापि कियच्चिरं विलम्बत इति राज्ञा समादिष्टः स  
तं भीममिति विज्ञपयामास । राजा तदा तदनुप-  
दिकानि सैन्यानि प्रगुणयन् डामरेणाभिदधे । द्वाद-  
श २ योजनानां प्रान्ते प्रावहणिका हया घटि-  
कायोजनगामिन्यः करभ्योनया समग्रसामग्र्या  
श्रीभीमो भुवमाक्रमन्कथं भवता गृह्यते इति विज्ञ-  
प्तस्तेन पाणी धर्षयित्वा चिरं तस्थे । अथ श्रीभोजः  
श्रीमाघपण्डितविद्वत्तां पुण्यवत्तां च सततमाकर्ण्य  
तदर्शानोत्सुकतया राजादेशैः सततं प्रेप्यमाणैः श्री-  
मालनगराद्धिमसमये समानीय सवहुमानं भोज-  
नादिभिः सकृत्त्य तदनु राजोचितान्विनोदान्दर्शय-  
न्, रात्रावारात्रिकावसरानन्तरं संनिहिते स्वसंनिभे  
पल्यङ्गे माघपण्डितं नियोज्य तस्मै स्वशीतरक्षा-  
मुपनीय प्रियालापांश्चिरं कुर्याणः सुखं सुखेन सु-  
प्याप । प्रातर्माङ्गल्यतूर्यनिर्घोषैर्विनिद्रं नृपं स्वस्थान-  
गमनाय माघपण्डित आष्टयान् । विस्मयापन्नहृ-  
दयेन राज्ञा दिने भोजनाच्छादनादिसुखं पृष्टः स क-

दत्तसदन्नवार्त्ताभिरलं शीतिभारेणं श्रान्तं विज्ञपय-  
 न्निवद्यमानेन राज्ञा कथं कथञ्चिदनुज्ञातः पुरोपवनं  
 यावद्भुजानुगम्यमानः माघपण्डितेन स्वागमनप्र-  
 सादेन संभावनीयोऽहमिति विज्ञातो नृपानुज्ञातः  
 स्वं पदं भेजे । तदनु कतिपयादिनैः श्रीभोजस्तदि-  
 भवभोगसामग्रीदिदृक्षया श्रीश्रीमालनगरं प्राप्तः ।  
 माघपण्डितेन प्रत्पुद्गमादियथोचितभक्त्याऽऽवर्जितः  
 ससैन्यस्तन्मन्दुरायां मभौ । स्वयं तु माघपण्डित-  
 स्य सौधमध्यास्य संचारकभुवं काञ्चनवद्दामवलोक्य  
 स्नानादनु देवतावसरोर्व्या मणिमरकतकुट्टि-  
 मशैवलवह्नरीयुग्जलभ्रान्त्या धौताम्बरीयं संवृण्व-  
 न् सौवस्तिकेन ज्ञापितवृत्तान्तस्तदैव तदेवतार्चान-  
 न्तरं निवृत्ते मन्त्रावसरेऽशनसमयसमागतां रसव-  
 तीमास्वादमान आकालिकैरदेशजैर्व्यञ्जनैः फला-  
 दिभिश्चित्रीयमानमानसः संस्कृतपयःशालिशालिनीं  
 रसवतीमाकण्ठमुपभुज्य भोजनान्ते चन्द्रशालाम-  
 धिरुह्याश्रुतादृष्टपूर्वकाव्यकथाप्रबन्धप्रेक्ष्यादीनि प्रे-  
 क्षमाणः शिशिरसमयेपि संजाताकस्मिकग्रीष्मभ्रा-  
 न्त्या संवीतसितस्वच्छवसनस्तालवृन्तकैरनुचैर-

वीज्यमानोऽमन्दचन्दनालेपनेपथ्यः सुखनिद्रया  
 तां क्षणदां क्षणमिवातिवाह्य प्रत्यूषे शङ्खनिस्वना-  
 द्विगतनिद्रो हिमसमये ग्रीष्मावतारव्यतिकरो  
 माघपण्डितेन ज्ञापितः प्रतिसमयं सविस्मयः क-  
 ति दिनान्यवस्थाय स्वदेशगमनायाष्टच्छन् स्वयं  
 करिष्यमाणनव्यभोजस्वामिप्रसादप्रदत्तपुण्यो<sup>१</sup> मा-  
 लवमण्डलं प्रति प्रतस्ये। तथा निजजन्मदिने जन-  
 केन नैमित्तिकाज्जातके कार्यमाणे पूर्वमुदितोदित-  
 समृद्धिर्भूत्वा प्रान्ते गलितविभवः किञ्चिच्चरणयो-  
 राविर्भूतश्वयथुविकारः पञ्चत्वमाप्स्यतीति । नि-  
 मित्तविदा निवेदितां विभवसंभारेण तां ग्रहगतिं  
 निराचिकीर्पुणा माघपिता संवत्सरशतप्रमाणे म-  
 नुजायुपि पट्टिंशत्सहस्राणि दिनानि भविष्यन्तीति  
 विमृश्य नाणकपरिपूर्णास्तावत्संख्यान् हारकान्  
 कारितनव्यकोशेषु निवेश्य तदधिकां परां भूतिं श-  
 तशः समर्प्य प्रदत्तमाघनाम्ने सुताय कुलोचितां  
 शिक्षां वितीर्य कृतकृत्यमानिना तेन विपेदे । तद-  
 नन्तरमुत्तराशापतिरिव प्राज्यसाम्राज्यो विद्वज्जने-  
 भ्यः श्रियं तदिच्छया यच्छन्नमानैर्दानैरर्थिसार्थं



८६ . . . प्रपञ्चचिन्तामणिःसर्ग. २

कृतार्थयस्तैर्भोगविधिभिः स्वममानुपावतारमिव द-  
र्शयन् विरचितशिशुपालवधाभिधानमहाकाव्यच-  
मत्कृतविद्वज्जनः स प्रान्ते पुण्यक्षयात्क्षीणवित्तो वि-  
पत्तिपाते स्वविषये स्यातुमप्रभूष्णः सकलत्रो मा-  
लवमण्डले गत्वा धारायां कृतावासः पुस्तकग्रहणका-  
र्पणपूर्वकं श्रीभोजात्किञ्चदपि द्रव्यमानेयमिति तत्र  
पत्नीं प्रस्थाप्य यावत्तदाशया माघपण्डितश्चिरं त-  
स्थौ । तावत्तथावस्थां श्रीभोजस्तत्पत्नीं विलोक्य-  
ससंभ्रमाशलाकान्यासेन तत्पुस्तकमुन्मुद्य काव्य-  
मद्राक्षीत् ॥

कुमुदवतमपश्चि श्रीमदभोजखण्डं  
त्यजति मदमुलूकः प्रीतिमांश्चक्रवाकः ।  
उदयमहिमरदिमर्याति शीतांशुरस्तं  
हतविधिललितानां ही विचित्रो विपाकः ॥ १ ॥

अथ काव्यार्थमवगम्य का कथा ग्रन्थस्य केव-  
लमस्यैव काव्यस्य विश्वम्भरामूल्यमल्यं समयो-  
चितस्वानुच्छिष्टस्य हीशब्दस्य पारितोषिके क्षिति-  
पतिर्लक्षद्रव्यं-वित्तीयं तां विससर्ज । सापि ततः सं-  
चरन्ती विदितमाघपण्डितपत्नी कैश्चिद्भिरार्थिभिर्याच्य-  
माना तत्पारितोषिकं तेभ्यः समस्तमपि वित्तीयं

यथावस्थिता गृहमुपेयुषी तद्वृत्तान्तं विज्ञापनापूर्वं  
किञ्चिच्चरणस्फुरच्छोफाय पत्ये निवेदयामास । अ-  
थ त्वमेव मे शरीरिणी कीर्त्तिरिति श्लाघमान-  
स्तदा स्वगृहमागतं कमपि भिक्षुं वीक्ष्य भुवने  
तदुचितं किमपि देयमपश्यन् संजातनिर्वेद इदम-  
वादीत् ॥

अर्था न सन्ति न च मुञ्चति मां दुराशा  
दानद्वि सङ्कुचति दुर्ललितः करो मे ।

याश्चा च लाघवकरी स्ववधे च पापं  
प्राणाः स्वयं व्रजत किं परिदेवितेन ॥ १ ॥  
दारिद्र्यानलसंतापः शान्तः संतोषचारिणा ।  
दीनाशाभङ्गजन्मा तु केनायमुपशाम्यतु ॥ २ ॥  
व्रजत व्रजत प्राणा अर्थिनि व्यर्थतां गते ।  
पश्चादपि हि गन्तव्यं क्व सार्यः पुनरीदृशः ॥ १ ॥  
न भिक्षा दुर्भिक्षे पतति दुरवस्थाः कथमृणं  
लभन्ते कर्माणि क्षितिपरिवृढान्कारयति कः ।  
अदत्त्वापि ग्रासं ग्रहपतिरसावस्तमयते  
क्व यामः किं कुर्मो गृहिणि गहनो जीवितविधिः २  
क्षुत्क्षामः पथिको मदीयभवनं पृच्छन्कुतोप्यागतः

८८ प्रबन्धचिन्तामणिःसर्ग. २

तत्किं गेहिनि किञ्चिदस्ति यदयं भुङ्क्ते वुभुक्षातुरः ।  
वाचास्तीत्यभिधाय नास्ति च पुनः प्रोक्तं विनैवाक्षरैः  
स्थूलस्थूलविलोललोचनजलैर्वाष्पाभ्रसां बिन्दुभिः  
॥ ३ ॥

इति तद्वाक्यान्त एव स माघपण्डितः पञ्चत्व-  
मवाप । प्रातस्तं वृत्तान्तमवगम्य श्रीभोजेन  
श्रीमालेषु सजातिषु धनवत्सु सत्सु तस्मिन्पुरु-  
परत्ने विनष्टे क्षुधाबाधिते सति भिन्नमाल इति  
तज्ज्ञातं\* नाम निर्ममे ॥

पुरा समृद्धिविशालायां विशालायां पुरि मध्यदेश-  
जन्मा काश्यपगोत्रः सर्वदेवनामा द्विजो निवसन्  
जैनदर्शनसंसर्गात्प्रायः प्रशान्तमिथ्यात्वो धनपाल-  
शोभनपुत्रद्वयेनान्वितः कदाचिदागताञ्श्रीवर्द्धमान-  
सूरीन्गुणानुरागान्निजोपाश्रये निवास्य निर्द्वन्द्वभक्त्या  
परितोपितान्सर्वज्ञपुत्रानिति धिया तिरोहितं नि-  
जपूर्वजनिधिं पृच्छंस्तैर्वचनच्छलेनार्दविभागं या-  
चितः संकेतनिवेदनाल्लब्धनिधिस्तदर्थं यच्छंस्तैः  
पुत्रद्वयादर्थं याचितो ज्यायसा धनपालेन मिथ्या-

१ B C गउद्वाप्य. २ क सार्थः पुनरुद्दिष्ट इति वाक्यान्ते ३ इति  
ज्ञानान्तकालेर्नाम

\* तेन कर्मणा प्रसिद्धं

त्वान्धमतिना जैनमार्गनिन्दापरेण निषिद्धः क-  
नीयासि शोभने कृपापरः स्वप्रतिज्ञाभङ्गपातकं ती-  
र्थेषु क्षालयितुमिच्छुः प्रतितीर्थं प्रतस्थे । अथ पितुः  
भक्तेन शोभननाम्ना लघुपुत्रेण तं तदाग्रहान्निपि-  
ध्य पितुः प्रतिज्ञां प्रतिपालयितुमुपात्तव्रतः स्वयं  
तान्गुरून्नुससार । अभ्यस्तसमस्तविद्यास्थानेन ध-  
नपालेन श्रीभोजप्रसादसंप्राप्तसमस्तपण्डितप्रकृष्ट-  
प्रतिष्ठेन निजसहोदरामर्पभावाद्वादशाब्दीं यावत्स्व-  
देशनिषिद्धजैनदर्शनप्रवेशेन तद्देशोपासकैरत्यर्थम-  
भ्यर्थनया गुरुपुरुषेषु हूयमानेषु सकलसिद्धान्तपा-  
रावारपारदृश्या स शोभननामा तपोधनो गुरूनाष्ट-  
च्छय तत्र प्रयातो धारायां प्रविशन् पण्डितधनपा-  
लेन राजपाटिकायां व्रजता तं सहोदरमित्यनुपल-  
क्ष्य सोपहासं गर्दभदन्त भदन्त नमस्ते इति प्रोक्ते  
कपिवृषणास्य वयस्य सुखं ते इति शोभनमुने-  
र्वचसान्तश्चमल्लुतो मया नर्मणापि नमस्ते इत्युक्ते-  
ऽनेन तु वयस्य सुखं ते इत्युच्चरता वचनचातुर्या-  
न्निर्जितोस्मीति । तत्कस्यातिथयो यूयमिति धनपा-  
लस्यालपैर्भवत एवातिथयो वयमिति शोभनमुने-

१० प्रबन्धचिन्तामणिः सर्ग. २

र्वाचमाकर्ण्य वटुना सह निजसौधे प्रस्थाप्य तत्रैव  
स्थापितः । स्वयं सौधे समागत्य धनपालः प्रिया-  
लापैः सपरिकरमपि तं भोजनाय निमन्त्रयंस्तैः प्रा-  
सुकाहारसेवापरैर्निपिद्धः । वलादोपहेतुं पृच्छन्  
भजेन्माधुकरीं वृत्तिं मुनिर्ल्लेच्छकुलादपि ।

एकान्नं नैव भुञ्जीत बृहस्यतिसमादपि ॥ १ ॥

तथाच । जैनसमये दशवैकालिके ॥

\*महुकारसमा बुद्धा जे भवन्ति अणिस्तिया ।

नाणापिण्डरया दन्ता तेण बुच्चन्ति साहुणो ॥ १

इति स्वसमयपरसमयाभ्यां निपिद्धं कल्पितं-  
माहारं परिहरन्तः शुद्धाशनभोजिनो वयमिति तच्च-  
रित्रचित्रितमनाः सतुष्णीकमुत्थाय सौधमाप।म-  
ज्जनारम्भे गोचरचर्यया समागतं तन्मुनिद्वन्द्वमव-  
लोक्य सिद्धेऽन्नपाके तद्वाह्यण्योपढौकिते दग्धिमुनि-  
भ्यां व्यतीतिकियदिनमेददिति पृच्छ्यमाने, धनपालः  
किमत्र पृतराः सन्तीति सौपहासमभिदधानो, व्य-

१ मधुकरसमा भ्रमरवृत्तयः, बुद्धा ये भगवि, अनिश्रिता  
मिश्रादोषरहिताः, नाणापिण्डरता दान्ताः तेन हेतुना साध्या  
उच्यन्ते ॥

१ तिनोक्तजीवितागहितागम्भेननतारः २ स्वपि मान्य  
विमुद्रित निष्ठादि ।

तीतदिनद्वयमेदिति ब्राह्मण्या निर्णयि प्रोक्तं ताभ्यां  
पूतराः सन्तीत्यत्रेत्यभिहिते स्नानासनात्तद्वर्शनार्थ-  
मुत्थाय तत्रागतः सन्, स्थालेधिरोपितदधिसंनिधौ  
यावद्यावकपुम्भेऽधिरूढैस्तद्वर्णजन्तुभिर्दधिपिण्ड इव  
पाण्डुरतामालोक्य जिनधर्मे जीवदयाप्राधान्यं त-  
त्रापि जीवोत्पत्तिज्ञानवैदग्ध्यं ॥ यतः॥

\*मुग्गमासाइपमुहं<sup>१</sup> विदिलं कच्चम्मि<sup>२</sup> गोरसे पडइ ।  
ता तसजीवुप्पत्ती भणन्ति दहिणं तिदिणुव्वरिणं<sup>३</sup> १

तज्जिनशासने एवेति निश्चित्य शोभनमुनेः  
शोभनबोधात्सम्यक्प्रतिपत्तिपुरःसरं सम्यक्तं भे-  
जे । कर्मप्रकृत्यादिजैनविचारग्रन्थेषु प्रकृत्या प्रा-  
ज्ञः परंप्रावीण्यमुद्रहन्, प्रातः प्रातर्जिनार्चावसरप्रान्ते  
कतिपयपुरस्वाभी कायव्ययैरपि दुर्ग्रहो  
मतिवितरता मोहेनाहो मयानुसृतः पुरा ।  
त्रिभुवनपतिर्बुद्धचाराध्योऽधुना स्वपदप्रदः ।  
प्रभुरधिगतस्तत्प्राचीनो दुनोति दिनव्ययः ॥ १ ॥

[ \* मुद्गमापादिप्रमुखं द्विदलं अपक्वे गोरसे पतति तदा त्रसजी-  
वोत्पत्तिं भणन्ति दधि त्रिदिनोदरिते च ]

१ सावत्तरुकार्पासतूजवर्णिकापामित्यर्थः २ ॐ वज्रिई,

३ खदग्धि ४ त्रितिदिण्डरि ५ प्रतिप्रातः

\*सर्व्वत्थं अत्थि धम्मो जा मुणियं जिन न सासणं  
 ४५ <sup>शर्करा</sup> कणगाउराण कणगुव्वं <sup>तुम्ह</sup> ससियपयमलम्भमाणानां १

देशाधीशो ग्राममेकं ददाति

ग्रामाधीशः क्षेत्रमेकं ददाति ।

क्षेत्राधीशः शिम्बिकाः संप्रदत्ते

सौर्वस्तुष्टः संपदं स्वां ददाति ॥ १ ॥

इत्यादीनि वाक्यानि पठन्त धनपालः

कदाचिन्नृपेण सह मृगयां नीतो धनपालोऽभिहित-

किं कारणं नु धनपाल<sup>१</sup> मृगा यदेते

व्योमोत्पतन्ति विलिखन्ति भुवं वराहाः ।

देव त्वदस्त्रचकिताः श्रयितुं स्वजाति-

मेके मृगाङ्गमृगमादिवराहमन्ये ॥ १ ॥

राज्ञा वाणेन मृगे विद्धे सति तद्वर्णनाय विलोकि-

तमुखो धनपालः प्राह ।

\* सर्वत्र धर्मोस्ति यावत् ज्ञातं हे जिन न शासनं तव । कनका-  
 तुराणां कनकमिव स्वसितपदमलम्भयानां ॥ यथा धनूररसमन्ताः  
 सर्वत्र कनकं पीतवर्णं पश्यन्ति यतः स्वस्य धवलपदं शुद्धपदं न  
 प्राप्ता विपरीतं पश्यन्तीत्यर्थः । यद्वा श्वसितपदं विश्वासयोग्यं स्थानं  
 यामुणियं माभुरसंधमिति वा (घ) ]

१ C सद्यत्थ २ कणगं च. ३ A सेनिकां B शाकमानं

४ सर्वत्रः ५ B C कणिकाज.

यूपं कृत्वा पशून्हत्वा कृत्वा रुधिरकर्ममम् ।

यद्येवं गम्यते स्वर्गे नरके केन गम्यते ॥ २ ॥

सत्यं यूपं तपो ह्यग्निः कर्माणि समिधो<sup>१</sup> मम ।

अहिंसामाहुतिं दद्यादेवं यज्ञः सतां मतः<sup>२</sup> ॥ ३ ॥

इत्यादि शुकसंवादोदितानि वचांसि नरेन्द्रस्य  
पुरतः पठन् हिंसाशास्त्रोपदेशिनो हिंसकप्रकृती-  
न्ब्राह्मणरूपेण राक्षसांस्ताञ्ज्ञापयन् नृपमहर्द्धर्माभि-  
मुखं चकार ॥ अथ कस्मिन्नप्यवसरे नरेश्वरः स-  
रस्वतीकण्ठाभरणप्रासादे व्रजन्सदा सर्वज्ञशासनप्र-  
शंसापरं पण्डितं धनपालमालपत् । सर्वज्ञस्तावत्क-  
दाचिदासीत्तद्दर्शने साम्प्रतं कश्चिज्ज्ञानातिशयोस्ती-  
त्यभिहिते, अर्हत्कृतेऽर्हच्चूडामणिग्रन्थे<sup>४</sup> विश्वत्रयस्य-  
त्रिकालवस्तुविषयस्वरूपपरिज्ञानमद्यापि विद्यत इ-  
ति तेनोक्ते, त्रिद्वारमण्डपे स्थितः कस्मिन्द्वारेऽ-  
स्माकं निर्गम इति शास्त्रकलङ्कारोपणोद्यते नृपे वृ-  
द्धिमात्रा त्रयोदशीति पाठं सत्यापयता भूर्जपत्रे नृ-  
पप्रश्ननिर्णयमालिख्य मृण्मयगोलके निधाय च

१ C प्राणा समग्ने २ एष यज्ञः सनातन ३ श्रुतिसत्ता ४ ०

४ D अर्हन्नश्रीचूडामणिर्गमनी (५) निर्णयन्तु बुद्धिपात्रगम्य  
इति चोक्तोक्ति, नरः जानेऽधुना सर्वसिद्धा त्रयोदशानि उपो निर्दिष्ट ।



छगिकाधरस्य तं समर्प्य देव पादोवधार्यतामिति  
नृपं प्राह । नृपस्तद्वृद्धिसंकटे निपतितं स्वं मन्यमा-  
न एतद्वारत्रयस्य मध्यात्किमपि निर्णीतं भविष्य-  
तीति विमृश्य सूतभृद्भिर्मण्डपपद्मशिलातलमप-  
नीय तन्मार्गेण निर्गत्प तं गोलकं भित्वा तेष्वक्षरे-  
षु तमेव निर्गमनिर्णयं वाचयंस्तत्कौतुकोत्तालचि-  
त्तः श्रीजिनशासनमेव प्रशशंस ।

तथाहि ॥

द्वाभ्यां यन्न हरिस्त्रिभिर्न च हरः स्रष्टा न चैवाष्टभि-  
र्यन्न द्वादशभिर्गुहो न दशकद्वन्द्वेन लङ्कापतिः ।

यन्नेन्द्रो दशभिः शतैर्न जनता नेत्रैरसंख्यैरपि  
तत्प्रज्ञानयनेन पश्यति बुधश्चैकेन वस्तु स्फुटम् ॥१॥

अथ धनपालः ऋषभपञ्चाशिकास्तुतिं निर्माय,  
सरस्वतीकण्ठाभरणप्रासादे स्वनिर्मितप्रशस्तिपट्टि-  
कां राज्ञे कदाचिद्दर्शयामास तत्र ।

अभ्युद्धता वसुमती दलितं रिपूरः  
क्रोडीकृता बलवता बलिराज्यलक्ष्मीः ।

एकत्र जन्मनि कृतं तदनेन यूना  
जन्मत्रये यदकरोत्पुरुषः पुराणः ॥ १ ॥

काव्यमिदं निर्वर्ण्य पारितोषिके तस्याः पट्टि-  
कायाः काञ्चनकलशं ददौ नृपः। तस्मात्प्रासादादप-  
सरंस्तदीयद्वारत्यक्तके<sup>१</sup> रत्या सह हस्ततालदानपरं  
स्मरं मूर्त्तिमन्तमालोक्य नृपेण हासहेतुं पट्टः पण्डि-  
तः प्राह ।

स एव भुवनत्रयप्रथितसंयमः शंकरो

विभर्त्ति वपुषाधुना विरहकातरः कामिनीम् ।

अनेन किल निर्जिता वयमिति प्रियायाः करं  
करेण परिताडयन् जयति जातहासः स्मरः ॥ १

\*अन्नदिणे सिवभवणे दुवारदेशे नि ए वि भङ्गिगणं ।

किं दुब्बलो पलोइअ निवपुटो भणइ धणपालो २

दिग्वासा यदि तत्किमस्य धनुषा तच्चेत्कृतं भस्मना  
भस्माथास्य किमङ्गना यदि च सा कामं पुनर्दोष्टि  
किम् ।

इत्यन्योन्यविरुद्धचेष्टितमहो पश्यन्निजस्वामिनो

भृङ्गी सान्द्रशिरापिनद्धपरुषं<sup>३</sup> धत्तेऽस्थिशेषं वपुः १

\*पाणिग्रहे पुलकितं वपुरैशं भूतिभूषितं जयति ।

\* अर्ण्यदेन शिवभवने द्वारदेशे निजेपि जृङ्गिगणं । ( वीक्ष्य )

किं दुर्बलः प्रलोक्ष्यते एवं नृपपृष्ठो भणति धनपालः ॥ ३ ॥

१ प्रवेशविशेषः. (२ C D हास्य.) ३ घननाडीनिबद्धकार्कश्यं.

४ गोवर्द्धनसप्तशत्यामिदम्.

अङ्कुरित इव मनोभूर्यस्मिन्मस्मावशेषोपि ॥ ३

अमेध्यमश्राति विवेकशून्या  
स्वनन्दनं कामयतेऽतिसक्ता ।

खुराग्रशृङ्गैर्विनिहन्ति जन्तून्  
गौर्वन्द्यते केन गुणेन राजन् ॥ ४ ॥

पयःप्रदानसामर्थ्याद्वन्द्या चेन्महिषी न किम् ।  
विशेषो दृश्यते नास्या महिषीतो मनागपि ॥ ५

इत्यादिभिः प्रसिद्धसिद्धसारस्वतोद्गारैर्नृपं रञ्ज-  
यन् यावदास्ते तावत्कोपि सांयात्रिको द्वाःस्थनिवे-  
दितः सभां प्रविश्य नृपं नत्वा मदनपट्टिकायां<sup>१</sup> प्र-  
शस्तिकाव्यानि दर्शयामास । नृपेण तल्लाभस्यान-  
के पृष्ठे स एवमवादीत् । नीरधावकस्मादेव मम  
वाहने स्खलिते निर्व्यामकैः शोध्यमाने समुद्रे तन्म-  
ग्रं<sup>२</sup> शिवायतनमालोक्य परितः परिस्फुरज्जलमप्य-  
न्तः सलिलविकलमवलोक्य कस्यामपि भित्तौ व-  
र्णान्निर्वर्ण्य च तज्जिज्ञासया मदनपट्टिकां<sup>३</sup> तत्र प्र-  
स्थाप्य तत्कान्ताक्षरमयीं<sup>४</sup> पट्टिकेयमिति नृपति-  
निशम्य तदुपरि मृन्मयीं पट्टिकां नियोज्य तत्र

१ मेणरट्टीति लोकोक्तौ.

२ १) तन्निमग्नं, ३ मदनमयपट्टिकायां ४ तत्संकेतादरमयी,

१८ प्रबन्धचिन्तामणिः सर्ग. २

पतितान्वर्णान्पण्डितैर्वाचयामास ॥

आवाल्याधिगमान्मयैव गमितः कोटिं परामुन्नते-  
रस्मत्संकथयैव पार्थिवसुतः सम्प्रत्यसौ लज्जते ।

इत्थं खिन्न इवात्मजेन यशसा दत्तावलम्बोन्मुधे-  
र्यातस्तीरितपोवनानि तपसे वृद्धो<sup>२</sup> गुणानां गणः १

देवे दिग्विजयोद्यते धतधनुःप्रत्यर्थिसीमन्तिनी-  
वैधव्यव्रतदायिनि प्रतिदिशं क्रुद्धे पारिभ्राम्यति ।

आस्तामन्यनितस्त्रिनी रतिरपि<sup>३</sup> त्रासान्न पाप्यैं करे  
भर्तुर्दत्तुमदान्मदान्धमधुर्षानीलीनिचोलं<sup>४</sup> धनुः २

चिन्तागम्भीरकूपादनवरत्तचलद्भूरिशोकारघट्ट-  
व्याकृष्टं निःश्वसन्त्यः पृथुनयनघटीयन्तमुक्ताशु-

धारम् ।

नासावंशप्रणालीविपमपथपतद्वाध्यशानीयमेता<sup>५</sup>

देव त्वद्वैरिनार्यः स्तनकलशयुगेनाऽविरामं<sup>६</sup> वहन्ति १,

इति संपूर्णेषु काव्येषु वाच्यमानेषु ॥

अयि खलु विपमः पुराकृतानां

भवति हि जन्तुषु कर्मणां विपाकः ।

अस्य काव्यस्योत्तरार्द्धं छिन्नपादिभिः<sup>७</sup> परःशतै-

\* भ्रमरीश्यामि क्षाप्रच्छदपटमिन् यस्य तत्पुष्पं

१ A B विगतेतान् (२ वृद्धिं प्राप्तो जगत्तश्च) ३ D रतिगति.

४ मृदु ५ एतन् ६ अविरामं ७ छिन्नपदसंज्ञादनशीलैः

रपि पण्डितैः परिपूर्यमाणमपि विसंचदतीति

राज्ञा धनपालपण्डितः पृष्टः ।

हरशिरसि शिरांसि यानि रेजु-

र्हरिहरितानि लुठन्ति गृध्रपादैः ॥ १ ॥

इदमेवोत्तरार्द्धं संवदतीति नृपेणोक्ते सति स पण्डितः प्रोवाच । यदि गुम्फार्थाभ्यां श्रीरामेश्वरप्रशस्तिभित्तादिदं न भवति तदतः परमाजीवितान्तं कवित्वस्य संन्यास एवेति तत्प्रतिश्रवसमकालमेव यानपात्रे निर्यामकान्निक्षेप्यावगाह्यमाने नीरधौ पङ्क्तिर्मासैस्तं प्रासादमासाद्य पुनर्मदनपट्टिकायां न्यस्तायामिदमेवोत्तरार्द्धमागतमालोक्य तस्मै तदुचितं पारितोषिकं प्रसादीचकार ॥ इति खण्डप्रशस्तेर्यथाश्रुतानि बहूनि काव्यानि मन्तव्यानि ॥

कदाचिद्राज्ञा सेवाश्लथतां पृष्टः, स्वं<sup>१</sup> पण्डितस्तिलकमञ्जरीगुम्फवैयर्थ्यं जगौ । शिशिरयामिन्याश्वरमयामे निर्विनोदत्वात्तां प्रथमादर्शप्रतिमानीय पण्डितेन व्याख्यायमानां तिलकमञ्जरीकथां वाचयंस्तद्रसनिपातभीरुः पुस्तकस्याधः कञ्चोलकयुतसुवर्णस्थालस्थापनापूर्वं तां समाप्य तच्चित्रकविताचि-

त्रीयमाणचिंतो नृपः पण्डितं प्राह । मामत्र कथा-  
नायकं कुर्वन् विनतायाः पदेऽवन्तीमारोपयन् श-  
क्रावतारतीर्थस्य पदे महाकालमाकलयन् यद्याच-  
से तत्तुभ्यं ददामीत्यभिदधाने नृपे स्वद्योतप्रद्योत-  
नयोः सर्पपकनकाचलयोः काचकाञ्चनयोः धत्तूरक-  
ल्पपादपयोरिव तेषां महदन्तरमित्युच्चरन्

\*दोमुहय निरक्षर लोहमद्वय<sup>१</sup> नाराय तुज्ज किं<sup>२</sup>  
भणिमो ।

गुञ्जाहि समं कणयं तोलन्तु न गउसि पायालं १  
इत्याक्रोशपरे तस्मिन्जाज्वल्यमानेग्नौ श्रीभोजे  
तां मूलप्रतिमिन्धनीचकार। अथ स द्विधा निर्वेदभा-  
ग् द्विधाऽवाङ्मुखो निजसौधपश्चाद्भागे जीर्णमञ्चा-  
धिरूढो निःश्वसन् भृशं सुष्वाप । वालपण्डितया  
तत्सुतया सभक्तिकमुत्थाप्य स्नानपानभोजननि-  
र्मापणानन्तरं तिलकमञ्जरी प्रथमादर्शलेखदर्शना-  
त्संस्मृत्य ग्रन्थस्यार्द्धं लेखयांचक्रे तदुत्तरार्द्धं नूत-  
नीकृत्य ग्रन्थः समर्थितः ॥

\* १ द्विमुखक निरक्षर लोचमय नाराचतुल्य इति भणामः गु-  
ञ्जाभिः समं कणकं तोलयन् न गतोसि पाताले ।

१.१ लोहमयी २ C कित्तिव. ३ C D प्रथमादर्शलेखनान्

अन्यदा भोजसभायां काव्यमिदमुक्तं तेन ।  
 धाराधीश धरामहीशगणने कौतूहलीयानयं  
 वेधांस्त्वद्गणनां चकार खटिकाखण्डेन रेखां दिवि ।  
 सैवेयं त्रिदशापगा समभवत्त्वत्तुल्यभूमिधवा—  
 भावात्तत्त्यजति स्म सोयमवनीपीठे तुपाराचलः १  
 अपरपण्डितैरस्मिन्काव्ये उपहसिते धनपालेनोक्तम्  
 शैलैर्वन्धयति स्म वानरहृतैर्वाल्मीकिरम्भोनिधिं  
 व्यासः पार्थशरैस्तथापि न तयोरत्युक्तिरुद्भाव्यते ।  
 वस्तु प्रस्तुतमेव किञ्चन वयं ब्रूमस्तथाप्युच्चकै-  
 र्लोकोयं हसति प्रसारितमुखस्तुभ्यं प्रतिष्ठे नमः ॥

एकदा राजन्महाभारती कथा श्रूयतामित्युक्ते प-  
 ण्डितं प्रति परमार्हतेन तेन प्रत्युक्तं  
 कानीनस्य मुनेः स्ववान्धववधूवैधव्यविध्वंसिनो  
 नेतारः किल पञ्च गोलकसुताः कुण्डाः\* स्वयं पा-  
 ण्डवाः ।

तेमी पञ्च समानजातय इति ख्यातास्तदुत्कीर्त्तनं  
 पुण्यं स्वस्त्ययनं भवेद्यदि नृणां पापस्य कान्या  
 गतिः ॥ २ ॥

शोभनमुनेश्चतुर्विंशतिका स्तुतिः प्रतीतैव ॥

(• अमृते जारजः कुण्डो मृते भर्त्तरि गोतकः)

१ B D तु शोजनचतु. २ धनपालस्य धनपालपञ्चाशिकाविद्यते.

१०२ प्रबन्धाचिन्तामणिः सर्ग. २

अधुना किमपि प्रबन्धादि क्रियमाणमास्ते नृपेणेत्युक्ते  
धनपालः प्राह ।

आरनालंगलदाहशङ्कया

मन्मुखादपगता सरस्वती ।

तेन वैरिकमलाकचग्रह—

व्यग्रहस्त न कवित्वमस्ति मे ॥ १ ॥

वचनं धनपालस्य चन्दनं मलयस्य च ।

सरतं हृदि विन्यस्य कोभूत्राम न निर्वृतः ॥ १ ॥

अन्यदा सर्वाण्यपि दर्शनानि एकत्राहूय मुक्ति-  
मार्गे पृष्ठे ते स्वदर्शनपक्षपातं ब्रूवाणाः सत्यमा-  
र्गजिज्ञासयैकीक्रियमाणाः पाण्मासीमवधीकृत्य श्री-  
शारदाराधनतत्पराः । कस्या अपि निशः शेषे जा-  
गर्षीति व्याहृतिपूर्वमुत्थाप्य सा नृपं ॥

श्रोतव्यः सौगतो धर्मः कर्त्तव्यः पुनरार्हतः ।

वैदिको व्यवहर्त्तव्यो धातव्यः परमः शिवः ॥ १ ॥

अथवा धातव्यं पदमक्षयं । श्लोकममुं राज्ञे द-  
र्शनेभ्यश्च समादिश्य श्रीभारती तिरोदधे ।

अहिंसालक्षणो धर्मो मान्यादेवी च भारती<sup>१</sup> ।

१ भारताय काञ्चिकमुष्णोदकं वा उपदेशकं वा

२ C निशा. १ C D व्याहृतः ४ श्रुत्या. ५ G D सरस्वती.



ध्यानेन मुक्तिमाप्नोति सर्वदर्शनिनां मतम् ॥ २ ॥  
इति श्लोकयुग्मं निर्माय नृपाय निरपायनिर्णयं  
प्राहुः ॥

अथ तन्नगरनिवासिनी शीताभिधाना रन्धनी  
कमपि विदेशवासिनं कार्पटिकं सूर्यपर्वाणि जलाश्र-  
ये कङ्कुणीतैलमास्वाद गृहमुपेत्य पाकप्राशनमु-  
पादाय तद्वमनाद्विपन्नमालोक्य सद्रव्यमित्युत्पद्य-  
मानकलङ्कशङ्काकुलतया पञ्चत्वाय तद्वमनमेवै-  
वुभुजे । तस्मिन्स्थिरे प्रादुर्भूतप्रातिभवैभवा विद्या-  
त्रयीं रघुवात्स्यायनकामशास्त्रचाणाक्यनीतिशा-  
स्त्रमीपत्समभ्यस्य च नवयौवनया विजयाभिधानया  
विदुष्या स्वसुतया सार्द्धं श्रीभोजस्य सदः शृङ्गार-  
यन्ती श्रीभोजं प्रति प्राह ॥

शौर्यं शत्रुकुलक्षयावधि यशो ब्रह्माण्डभाण्डावधि-  
स्त्यागस्तर्कुर्कवाञ्छितावधिरियं क्षोणी समुद्रावधिः ।  
श्रद्धा पर्वतपुत्रिकापतिपदद्वन्द्वप्रमाणावधिः

१४ D मुक्तिमार्गं स्यादेवं २ D युग्मश्लोकमुक्त्वा देवी तिगोषत्त  
३ उपनीय. ४ कार्पटिकं पाकाय तस्या गृहेऽन्नं कारयित्वा निशि  
घृतकुपिकव्यायेन काङ्कुणीतैलं परिवोषितं तं विपन्नं विजोक्ष्य ५ तद-  
शनमेव. ६ C D प्रभूत. ७ त्रयीर्मापन ८ लोकोत्तैः त्रागडो ९ इति.

१०४ प्रबन्धचिन्तामणिःसर्ग. २

श्रीमद्भोजमहीपतेर्निरवधिः श्रेष्ठो गुणानां गणः ॥१॥  
अथ विनोदाप्रियेण राज्ञा कुचवर्णनाय नियुक्ता  
विजया प्राह ॥

उन्नाहश्चिबुकावधिर्भुजलतामूलावधिः संभवो  
विस्तारो हृदयावधिः कमलिनीसूत्रावधिः संहतिः॥  
वर्णः स्वर्णकथावधिः कठिनता वज्राकरक्ष्मावधि-  
स्तन्वङ्ग्याः स्तनमण्डले यदपरं लावण्यमस्तावधि१  
इति तद्वर्णनात्तेनार्द्धकविना राज्ञा ॥

किं वर्ण्यते कुचद्वन्द्वमस्याः कमलचक्षुषः ।  
तयोक्तम्

सप्तद्वीपकरग्राही भवान् यत्र करप्रदः ॥ २  
राज्ञा.

प्रहतमुरजमन्द्रध्वानवद्भिः पयोदैः  
कथमलिकुलनीलैः सैव दिग् संप्ररुद्धा ।  
तयोक्तम्

प्रथमविरहखेदम्लायिनी यत्र वाला  
वसति नयनवान्तैरश्रुभिर्धौतवक्त्रा ॥ ३ ॥  
राज्ञा.

१ अनुयुक्ता २ A B कषावधिः ३ D कुचमण्डले किमपरं  
४ G D तद्वर्णनाकर्णनात्

सुरताय नमस्तस्मै जगदानन्ददायिने ।

इति प्रोक्ते ॥

आनुपाङ्गि फलं यस्य भोजराज भवाद्दृशाः ॥ १ ॥

इति विजययोक्ते राजा सत्तपमधोमुखं<sup>१</sup> तस्थौ  
ततो राजा तां भोगिनीं चक्रे

अन्यदा तया जालान्तरे, चन्द्रकरस्पर्शोऽपाठि ।

अलं कलङ्कुशृङ्गार करस्पर्शनलीलया ।

चन्द्र चण्डीशनिर्माल्यमसि न स्पर्शमर्हसि ॥ १ ॥

इत्यत्र बहु वक्तव्यं परंपरया तत्तु ज्ञातव्यम् ॥

इति शितांपण्डिताप्रबन्धः ॥

॥ अथ मयूरबाणाभिधानौ भावुकशालकौ प-  
ण्डितौ निजविद्वत्तया मिथ. स्पर्द्धमानौ नृपतदसि-  
लव्यप्रतिष्ठावभूतां । कदाचिद्वाणपण्डितो जाँमिमि-  
लनाथ तद्रूढं गतो निशि द्वारप्रसुप्तो भावुकैन्नानु-  
नीयमानां जामिं निशम्य तत्र दत्तावधान इत्यशृ-  
णोत् ॥

गतेप्राया रात्रिः कृततनुशशी शीर्यत इव

प्रदीपोयं निद्रावशमुपगतो घूर्णित इव ।

प्रणामान्तो मानस्त्यजसि न तथापि मुधमर्हो

इति भूयो भूयस्तेन त्रिपदीमुदीर्यमाणामाकर्ण्य ।  
कुचप्रत्यासत्या हृदयमपि ते चण्डि कठिनम् । १

इति भ्रातृमुखाचूर्णं पदमाकर्ण्य क्रुद्धा सा सत्र-  
पा च कुष्टी भवेति तं भ्रातरं शशाप । इति पति-  
व्रताव्रतप्रभावात्तदात्वप्रभृतिरोगोभूतः । प्रातः शी-  
तरक्षापिहिततनुर्नृपसभायातो मयूरेण मयूरेणेव  
कोमलगिरा वरकोडीति तं प्राकृतशब्दे प्रोक्ते चतुर-  
चक्रवर्ती नृपो वाणं सविस्मयं प्रेक्ष्यमाणस्तेन प्र-  
स्तावान्तरे देवताराधनोपायश्चेतस्यवतारयांचक्र-  
वाणस्तु सापत्रैपस्ततः उत्थाय नरगसीमानि स्तम्भ-  
मारोप्य खदिराङ्गारपूर्णमधःकुण्डं विधाय स्तम्भा-  
ग्रवर्त्तिनि सिक्के<sup>१</sup> स्वयमाधिरूढः सूर्यस्तुतौ प्रति-  
काव्यप्रान्ते सिक्ककपदं ह्युरिकिया छिन्दन् पञ्चभिः  
काव्यैस्तेन पञ्चसु पदेषु छिन्नेषु सिक्काग्रै विलग्नः  
षष्ठेन काव्येन प्रत्यक्षीकृतभानुस्तत्प्रसादात्सद्यः  
संजातजात्यकाञ्चनकार्यः । अन्यस्मिन्नहनि स सुव-  
र्णचन्दनावलिप्लाङ्गः संवीतसितदिव्यवसनः समाज-  
गाम । तद्वपुःपाटवं पश्यता नृपेण सूर्यवरप्रसादं म-

१ C D तदास्त्रे प्रसूतप्रभूतरोगः २ B वरकोडी D वकोडी ३ ततः

४ C चिन्तयांचक्रे ५ सत्रपाः ६ शिष्यके ७ कापकान्तिः

यूरे विज्ञपयति वाणो वाणिभया गिरा तं मर्म-  
णि विव्याध । यदि देवताराधनं<sup>१</sup> सुकरं तदा त्व-  
मपि किमपीदृक् चित्रमाविःकुरु । इत्यभिहिते ते-  
न मयूरेण तं प्रति प्रतिवचः संदधे । निरामयस्य  
किमायुर्वेदाविदां तथापि तव वचः सत्यापयितुं नि-  
जपादौ च पाणी छुर्या विदार्य त्वया पष्ठे काव्ये सू-  
र्यः परितोपितोऽहं तु पूर्वस्य काव्यस्य पष्ठेऽक्षरे भ-  
वानीं परितोपयामीति प्रतिश्रुत्य सुखासनमासीन-  
श्चण्डिकाप्रासादपश्चाद्भागे निविष्टो माभ्राङ्गीर्विभ्रम-  
मिति पष्ठेक्षरे प्रत्यक्षीकृतचण्डिकांप्रासादात्प्रत्यग्रप्र-  
थमानवपुःपल्लवः स्वसन्मुखं च तत्प्रासादमालो-  
क्याभिमुखागतैर्नृपतिप्रमुखराजलोकैः कृतजयज-  
यारवो महता महेन पुरं प्राविक्षत् । एतस्मिन्नव-  
सरे मिथ्यादृशां शासने विजयिनि सम्यग्दर्शनद्वे-  
पिभिः कैश्चित्प्रधानपुरुषैर्नृपोऽभिदधे । यदि जैनमते  
कश्चिदीदृग्प्रभावविर्भावः प्रभवति तदा सिताम्बराः  
स्वदेशे स्थाप्यन्ते नो चेन्निर्वास्यन्ते इति तद्वचनान-  
न्तरं श्रीमानतुङ्गाचार्यास्तत्राकार्यं निजदेवतातिशयं  
क्रमपि दर्शयन्तु इति राज्ञा भणितं । ते प्राहुः ।

मुक्तानामस्मद्देवतानामत्र कोऽतिशयः संभवति त-  
थापि तत्किंकराणां सुराणां प्रभावाविर्भावः कोपि  
विश्वचमत्कारकारी दर्शयत इत्यभिधाय चतुश्चत्वा-  
रिंशतो निगडैर्निजमङ्गं नियमितं कारयित्वा तन्नग-  
रवर्त्तिनः श्रीयुगादिदेवस्य प्रासादपाश्चात्यभागे स्थि-  
तो मन्त्रगर्भं भक्तामरेति नवं स्तवं कुर्वन्प्रतिकां-  
व्यं भग्नैकैकनिगडः गृह्णन्त्यासंख्यैः काव्यैः पर्याप्त-  
स्तवोऽभिसुखीकृतप्रासादः शासनं प्रभावयामास ॥  
इति श्रीमानतुङ्गाचार्यप्रबन्धः ॥

॥ अथ कदापि राजा स्वदेशपण्डितानां पाण्डि-  
त्यं श्लाघमानो गूर्जरदेशमविदग्धतया निन्दन् स्था-  
नपुरुषेणाभिदधे । अस्मद्देशीयावालगोपालस्यापि  
भवदीयपण्डिताग्रणीः कोपि तुलां नारोहतीति ।  
ततः ज्ञापितवृत्तान्तः श्रीभीमः कदापि गोवेषधा-

१ C D ततश्चत्वारिंशत् २ C देशीयवाजगोपालयोः

३ विज्ञप्ते नृपस्तं वृथा भाविणं चिकीर्षुः आकारसंवृत्या  
कियन्तमपि कालं विलम्बमानः स्थानपुरुषेण तद्वृत्तान्तं ज्ञापितः  
श्रीभीमः स्वदेशसीमान्तनगरे विदग्धा. काश्चित्पण्डित्यः कांश्चन  
गोवेषधारिणः पाण्डितांश्च मुक्तवान् । अन्यदा श्रीभोजदौवारिकेण,  
तत्रागत्य कश्चिद्विधो गोपः प्रतापदेवीनाम्नीं पण्डित्यं स गृहीत्वा  
विदग्धले कसुवासारा धारामारादवाप्य तां क्वापि सज्जनारुते विमुच्य  
प्रत्युपमुखे भूषाय गोपे निवेदिने श्रीभोजेन किमपि वदेत्पादिष्टः

रिणं पण्डितं पणस्त्रियं च तत्र प्रहितवान् । तत्र  
प्रत्यूषे नृपसमीपे नीतो गोपालः श्रीभोजेन कि-  
मपि निवेदयेत्यादिष्टः

\* भोय ए हु गलिं कण्ठुलउ भण केहउं पडिहाइ ।  
उर लच्छिहि<sup>१</sup> मुह सरसति सीम निवद्धि काइं

सरस्वतीकण्ठाभरणगोप इत्याह ततो राजा  
तदुक्तिर्विस्मितः । सभायामलंकृतायां नेपथ्यधा-  
रिणीं पणस्त्रियं पुरो विलोक्य तां प्रति 'इह किं'  
इत्याकस्मिकं वचः श्रीभोजः समादिक्षत् । अथ  
स्वजातिपक्षपातादिव सरस्वत्याः प्रसादपात्रं शेमु-  
पीनिधिः सा सुमुखीशिरोमणी प्रतिभेव गम्भीरमपि  
तद्वचनतत्त्वमवगम्ये, पृच्छन्तीति नृपं प्रति वचः  
प्रथितवतीत्युचिततद्वचनविकसितास्येन<sup>२</sup> भोजेन  
लक्षत्रये दाप्यमानेऽज्ञाततत्त्वतया<sup>३</sup> त्रिरुक्तोपिकोशा-  
धिपो यदा न ददाति तदा तं प्रकाशमाह । देश-

\* हे भोज एतत्कण्ठाभरणं वद कीदृशं प्रतिजाति ।

उरसि लक्ष्मीमुखे सरस्वती स्थिता तयोः सीमा निवद्धा

किम् ॥

१ A भोज एव हु कण्ठलउ २ स्तंभलउ कंचुत्र. ३ ल-

च्छिहि ४ काइं C उरि लच्छिहि मुहि B सीम विहजी कीइ

५ C तद्वचोवगम्य ६ वचसा D ७ विकसितवदनाम्भोजेन

सात्म्यात्प्रकृतिकर्षण्यनैपुण्याच्च लक्षत्रयमस्यै दा-  
प्यते । औदार्यात्तु साम्राज्यमपि दीयमानमल्यतरमे-  
व स्यादित्यादिष्टे समस्तसमाजलोकैः प्रेर्यमाणः स  
तयोर्वचनयोरन्वयं पृष्ट इत्यभिदधे । कर्णान्तवि-  
श्रान्तमपाङ्गाञ्जनरेखायुगं युगपदस्या निरूप्य मयेह  
किमित्यभिहितं । अनया तु द्विवचनस्य बहुवचन-  
मिति प्राकृतलक्षणात्पृच्छन्तीति कर्णाभ्यर्णेञ्जनरेपा-  
मिपात् । यो भवद्भ्यां श्रुतपूर्वः स एवायं श्रीभोज  
इति निर्णेतुं दृशौ गते इत्युत्तरं प्रतिपादितं तदियं  
प्रत्यक्षरूपा भारती तदस्याः पारितोषिके लक्षत्रयं  
कियदिति ततो लक्षत्रयस्य त्रिव्याहारान्नवलक्षास्त-  
स्यै दापयामास ॥ अथावाल्यादेव स नृपो ।

मस्तकस्थायिनं मृत्युं यदि पश्येदयं जनः ।

आहारोपि न रोचेत किमुताकार्यकारिता ॥ १ ॥

इति विज्ञाततत्त्वो धर्मेऽप्रमत्तभूत् । कदाचि-  
न्निद्राभङ्गानन्तरं कश्चिद्विपश्चित्समेत्य वेगवति तुरगे  
ऽधिरूढस्त्वां प्रति प्रेतपतिरुपैतीत्यनुसारेण धर्मक-  
र्मणि सज्जीभावितव्यमिति वचनाधिकारिणे पण्डि-

१ B गत इत्याशङ्क्योत्तरं दत्तवती प्रज्ञावदातवाक्यतीर्णामपि  
पण्डितानां योर्थोऽविषयस्तं सहसैवोद्विगन्ती २० अकृत्य.



ताय प्रत्यहमुचितदानं ददानः कदापि पराह्णे स-  
भासिंहासने उपविष्टः । स्थगिकावित्तसमर्पितवीट-  
कात्प्रागेव मुखे पत्रं क्षिप्त्वाभ्यवहरन् व्यवहारवे-  
दिभिस्तत्कारणं पृष्ट इत्यवदत् । कृतान्तदन्तान्तरव-  
र्त्तिनां मनुष्याणां यदत्तं यच्च भुक्तं तदेवात्मीयं पर-  
स्व तु संशयः तथाच ॥

उत्थायोत्थाय बोधव्यं किमद्य सुकृतं कृतम् ।  
आयुषः खण्डमादाय रविरस्तं प्रयास्यति ॥ १ ॥  
लोकः पृच्छति मे वार्त्ता शरीरे कुशलं तव ।  
कुतः कुशलमस्माकमायुर्याति दिने दिने ॥ २ ॥  
श्वः कार्यमद्य कुर्वीत पूर्वाह्णे चापराह्निकम् ।  
मृत्युर्न हि परीक्षेत कृतं वास्य न वा कृतम् ॥ ३ ॥  
मृतो मृत्युर्जरा जीर्णा विपन्नाः किं विपत्तयः ।  
व्याधयो बाधिताः किं तु हृष्यन्ति यदमी जनाः ४  
इत्यनित्यताश्लोकचतुष्कप्रबन्धः ॥

अथान्यदा श्रीभोजः श्रीभीमभूपतेः पार्थाद्वैत-  
मुखेन वस्तुचतुष्टयमयाचिष्ट । एकं वस्तु इहास्ति

१ A पत्रं मुषयीटिरूपाभ्यवहरन् व्यवहारवेदिभिर्गुरुत इति  
श्लोकचतुष्टयं त्रयाद

२ C पूर्वाह्णे चापराह्निकम् ३ व्याधिताः ४ मायान्ति

११२ प्रवन्धचिन्तामणिः सर्ग. २

परत्र नास्ति १ द्वितीयं परत्रास्ति अत्र नास्ति २  
तृतीयमुभयत्रास्ति ३ चतुर्थमुभयत्रापि नास्ति ४  
इति विदुषां संदिग्धेऽर्थे पठहे वाद्यमाने गणिकाव-  
चनाद्वेश्यातपस्विदानेश्वरद्यूतकाररूपं वस्तुचतुष्टयं  
प्रहितंभिति वस्तुचतुष्टयप्रवन्धः ॥

अन्यदा भोजनृपो वीरचर्यया परिभ्रमन्निशि क  
याचिदपि दरिद्रं वध्वा ।

\*माणसडां दसदसदसा सुणियई लोयपसिद्ध ।

महं कन्त ह इक्कज दसा अवरि नवोरहिं लिद्धं॥१

इति पठ्यमानमाकर्ण्य तस्या दुरथावस्थया सं-  
जातकृपो नृपः प्रातस्तत्पतिं सदस्यानीय तस्याः  
किमप्यायतिहितं विमृश्य वीजपूरकद्वये प्रत्येकल-  
क्ष्यमूल्यं रत्नं तदुपकारायान्तर्विधाय तस्मै प्रसा-  
दीकृतवान् । तेनापि तं वृत्तान्तमजानता मूल्येन  
पत्रशाकापणे विक्रीतं तेनाप्युपायनाय तन्मातु-

\* मनुष्या दशदशवर्षेषु गतेषु दशावन्तो भिन्नाभिन्नावस्थावन्तो ल-  
क्ष्यन्ते इति लोकप्रसिद्धम् । मम स्वामिनस्तु एकैव दशा या मिह  
एषा तदनन्तरमुत्कृष्टा दशा कदापि न लब्धा सदैव दारिद्र्याभित्यर्थः ।  
D १ प्रहीयतां २ दुर्विदः ३ B माणसडां ४ D हवइ ५ C माण  
सडां दसदं देगेहि निम्मावेयादं ६ मुञ्ज ७ नवोर्गिहिं हरियादं ते  
वोरहिं

लिङ्गद्वयं कस्यापि समर्पितं तेन श्रीभोजस्यैव स-  
मर्पितं<sup>१</sup> ॥

\*वेलामहल्लकल्लोलपल्लितं<sup>२</sup> जइ वि गिरिनई पत्तं ।  
अणुसरइ मग्गलग्गं पुणोवि रयणायरे रयणं ॥ ३  
इत्यनुभवाद्भाग्यं नृपस्तथ्यमेव मेने  
यतः

प्रीणिताशेषविश्वासु वर्षास्वपि पयोऽलवम् ।  
नाप्नुयाच्चातको नूनमलभ्यं लभ्यते कुतः ॥ १ ॥  
इति बीजपूरकप्रबन्धः ॥

अथान्यदा कस्यामपि निशि नृप एको न भ-  
व्य इति प्रच्छन्नं क्रीडाशुकं पाठयित्वा प्रातस्त्वया  
वाक्यमिदमुच्चारणीयमिति शिक्षितवान् । अथ ते-  
न तथाभिधीयमाने नृपेण पृष्टाः पण्डिता निर्णयम-  
जानन्तः पाण्मासीमवधिं याचितवन्तः । ततस्तन्मु-  
ख्यो वररुचिस्तन्निर्णयाय देशान्तरं परिभ्रमन्केना-  
पि पशुपालेनाहमेवासुं निर्णयं भवत्स्वामिने निवे-  
दयिष्यामि । परमसुं श्वानं वृद्धतया नोद्धोढुं वत्सल-

\* समुद्रवेनामहाकल्लोलैः पर्यस्तलुण्ठित सप्त पशुपि गिरिन-  
दीप्राप्तं पुनरपि मार्गज्ञं रत्नं रत्नाकरमनुसरतीत्यन्योक्तपात्रबुद्धम् ॥

१ D उपडोकिनम् २ A पाल्लयं C D पिल्लियं.

तया न मोक्तुं च शक्नोमीति तेनोक्ते तं श्वानं नि-  
जस्कन्धे समारोप्य पशुपालं सह नीत्वा नृपसभामु-  
पागतस्तमुत्तरकारिणं निवेदयामास । अथ स पशु-  
पालो नृपेण तदेव वचनं पृष्टः । अस्मिन् जीवलो-  
के राजन् लोभ एवैको न भव्यः । राज्ञा कथमिति  
भूयोपि पृष्टः । यद्वाह्मणः श्वानं स्कन्धदेशेनास्पृ-  
श्यमपि वहति तल्लोभस्यैव विजृम्भितमतो लोभ ए-  
व न भव्यः ॥ अथान्यदा मित्रमात्रसहायो नृपति-  
र्निशि परिभ्रमन्पिपासाकुलतया पणरमणीगृहं ग-  
त्वा मित्रमुखेन जलं याचितवान् । ततोऽतुच्छवा-  
त्सल्याच्छम्भल्या कालविलम्बनेनेक्षुरसपूर्णः करकः  
सखेदमुपानीयत । मित्रेण खेदकारणे पृष्टे, एक-  
स्यामिक्षुलतायां<sup>१</sup> पुरा रसः संपूर्णः सवाहटिको घट  
आसीत् साम्प्रतं तु प्रजासु विरुद्धमानसाय चिर-  
कालेन केवला वाहटिकैव भूतेति खेदकारणं नृप-  
स्तदाकर्ण्य केनापि वणिजा शिवायतने महति ना-  
टके कार्यमाणे तल्लुण्ठनचित्तमात्मानं विमृश्य तदे-

१ ० शूनेन भिद्यमानाया रस, परिपूर्ण, सवाहटिको घट आ-  
सीत् २ लुण्ठन

य तथ्यमेवेति<sup>१</sup> ततो व्यावृत्य स्वस्थानमासाद्य  
निद्रां सिपेवे । अपरेद्युः प्रजासु संजातरूपो नृपः  
पणाङ्गनागृहं गतः । तदाच तथाद्य प्रजासु वत्सलो  
नृपतिरिति प्रचुरेश्वरससंकेतादिति व्याहरन्त्या  
राजा तोषितः ॥

इतीश्वरसप्रबन्धः ॥

अथ धारानगर्याः शाखानगरे प्रासादस्थिताया  
गोत्रदेव्या नमश्चिकीर्षया नित्यमागच्छन् कदापि  
तद्भक्तिरञ्जितया देव्या स नृपः साक्षादभ्यधायि  
परवलं संनिहितमागतं ततः शीघ्रं व्रजेति विसृष्टः  
क्षणाद्गूर्जरसैन्यैः स्वं वेष्टितमालोक्य जवाधिकेन  
वाजिना व्रजन् धारानगरगोपुरे प्रविशन्नालूयाको  
लूयाभिधानाभ्यां गूर्जराश्ववाराभ्यां तत्कण्ठे धनुषी

१ ० द०पौ पुनः स वसुधाधवः सौधमभ्यास्य निद्रावसरे  
संजातरूपः प्रजासु । परस्मिन्नहानि पणाङ्गनागृहमुपगतस्तत्का-  
लागतयातयाद्य प्रजासु वत्सलो नृपतिरिति,

२ ० D कदाचिद्वेजाव्यतिक्रमे जाते सति प्रत्यक्षीभूतया देवत-  
या मितपरिच्छदं द्वारप्रदेशमागतमरुस्मान् नृपमालोक्य ससंभ्रमान्नि-  
पेड्यो निजासनमतिचक्राम । नृपः प्रणामपूर्वकं तं वृत्तान्तं पृ-  
च्छन् सन्निहितं परवज्रमागतं विचिन्त्य शीघ्रं व्रजेति विसृष्टो देवत-  
तया हृणात् गूर्जरसैन्येर्वेष्टितं स्वमपश्यत् ।

११६ प्रबन्धचिन्तामणिःसर्गः

प्रक्षिप्य, एतावता व्यापादितोसीति वद्भ्यां त्यक्तः॥

असौ गुणी नमत्वेव भोजः कण्ठमुपेयुषा ।

धनुषा गुणिना यश्चापश्यदश्वान्निपातितः ॥ १ ॥

॥ इत्यश्ववारप्रबन्धः ॥

अथान्यदा स एव राजा राजपाटिकायाः प्रत्यावृत्तः  
पुरगोपुरे सुमुखमुक्तेन तुरगेण प्रविशन् व्याकुलीकृतेषु  
लोकेषु, इतस्ततः पलायमानेषु जनेषु कामपि तक्र-  
विक्रायिणीं जनसंमर्देन मौलिकम्याद्भूतलपातितभग्न-  
भाण्डामपि गोरसे सरित्प्रवाह इव प्रसरति विक-  
सितमुखां तां ग्राह । तवाविपादे किं कारणमिति  
नृपेण पृष्ठे सा ग्राह ।

हत्वा नृपं पतिमवेक्ष्य भुजङ्गदृष्टं  
देशान्तरे विधिशास्त्राणिकास्मि जाता ।

पुत्रं भुजगमधिगम्य चितां प्रविष्टा  
शोचामि गोपगृहिणी कथमद्य तक्रम् ॥ १ ॥

तस्मात्प्रदेशान्महीनदी प्रादुरासेत्ययादिषुः॥<sup>१</sup>

॥ इति गोपगृहिणीप्रबन्धः ॥

अन्यदा प्रीतो भोज उपशिलामेकां लक्ष्मीकृत्य  
धनुर्वेदमनिर्वेदमभ्यसंस्तत्कालदर्शनार्थमागेतन सि-

ताम्बरवेपथारिणा श्रीचन्दनाचार्येण प्रत्युत्पन्नप्रति-  
भाभिरामतयौचित्यमभिदधे ॥

विद्धा विद्धा शिलेयं भवतु परमतः कार्मुकक्रीडितेन  
राजन्यापाणवेधव्यसनरसिकतां मुञ्च देव प्रसीद ।  
क्रीडेयं चेत्प्रवृद्धा कुलशिखरिकुलं केलिलक्षं करोपि  
ध्वस्ताधारा धरित्री नृपतिलक तदा याति पाताल-  
मूलम् ॥ १ ॥

इति तत्कवितातीशयचत्कृतोपि किञ्चिद्विचिन्त्य  
नृपतिरित्युवाच । भवता सर्वशास्त्रपारगतेनापि ध्व-  
स्ता धारेति यत्पदमपाठि ततः कमप्युत्पातं सूचयति  
॥ इतश्च ॥ डाहालदेशीयराज्ञो राज्ञी देमतीनाम्नी म-  
हायोगिनी कदाचिदासन्नप्रसवा सदैव दैवज्ञानिति  
पप्रच्छ । कस्मिन्सुलग्ने जातः सुतः सार्वभौमो भवती-  
ति । अथ तैः सम्यगवगम्योच्चरांशिपु केन्द्रस्थेषु सौ-  
म्यग्रहेषु त्रिपटायगेषु क्रूरेषु चामुकलग्ने जातः सुतः  
सार्वभौमो भवतीत्युक्तं तन्निशम्य निश्चितप्रसवदि-  
नादूर्ध्वं षोडशप्रहरान्यावद्योगयुक्तया गर्भस्तम्भं कृ-  
त्वा नैमित्तिकनिर्णीते लग्ने सुतं कर्णनामानं प्रासू-  
तं । तद्गर्भधारणदोषादष्टमे यामे सा विपन्ना । सुल,

शजातत्वात्पराक्रमाक्रान्तदिग्चक्रः पट्टिंशदधिकेन  
 राज्ञां शतेन सेव्यमानश्चतुर्षु राजविद्यासु परं  
 प्राविण्यमावहन् विद्यापतिप्रमुखैर्महाकविभिः स्तू-  
 यमानः । तद्यथा

मुखे हारावाप्तिर्नयनयुगले कङ्कणभरो  
 नितम्बे पत्रालीं सतिकलमभूत्याणियुगलम् ।  
 अरण्ये श्रीकर्णे त्वदरियुवतीनां विधिवशा-  
 दपूर्वोयं भूयाविधिरहह जातः किमधुना ॥ १ ॥  
 गोपीपीनपयोधराहतमुरः संत्यज्य लक्ष्मीपतेः  
 शङ्के पङ्कजशङ्कुया नयनयोर्विश्राम्यति श्रीस्तवं ।  
 श्रीमत्कर्णनरेन्द्र यत्र चलति भ्रूवल्लरीपल्लवं-  
 स्तत्र त्रुट्यन्ति भीतिभङ्कुरतया दारिद्र्यमुद्रा यतः ॥ १ ॥

इति स्तूयमानः स कर्णनृपः कदाचिद्भूतमुखेन  
 श्रीभोजसुवाचं । भवन्नगर्या भवत्कारिताश्चतुरुत्तरं  
 शतं प्राप्तादाः । एतावन्त एव गीतप्रबन्धाभवदीयाः ।  
 एतावन्ति तव विरुदानि । अतश्चतुरङ्गयुद्धेन द्वन्द्व-  
 युद्धेन वा चतसृषु विद्यासु वादिवत्, त्यागशक्त्या



वा मां निर्जित्य पञ्चोत्तरशतविरुदानां भाजनं भू-  
याः । नो वाहं त्वां विजित्य सप्तत्रिंशताधिकस्य  
राज्ञां शतस्य नाथो भवामीति तद्वचसा 'परिम्लान  
मुखाम्भोजः श्रीभोजः सर्वेष्वपि प्रकारेषु जितका-  
सिनं श्रीकाशिपुराधीशं विमृशन् स्वं विजितं  
मन्यमानस्तानुपरोधपूर्वमभ्यर्थ्यैवमङ्गीकारयामास ।  
मयावन्त्यां श्रीकर्णेन वाणारूपामेकस्मिन्नहनि  
लगे गतापूरपूर्वमारभ्याहंपूर्विकया कार्यमाणयोः  
पञ्चाशद्वत्तप्रमाणयोः प्रासादयोः यस्मिन्प्रासादे  
प्रथमं कलशध्वजारोपो भवति तस्मिन्नुत्सवे परेण  
नरेन्द्रेण त्यक्तच्छत्रचामरेण करेणुमधिरूढ्य समाग-  
न्तव्यमित्यं भोजस्य यथारुच्यङ्गीकारे कर्णगोचरं-  
गते श्रीकर्णस्तेनापि प्रकारेण भोजमधश्चिकीर्षुरेक-  
स्मिन्नेव लगे पृथग् २ प्रारब्धयोरुभयोः प्रासादयोः  
सर्वाभिसारेण निजप्रासादं निर्मापयतोस्तत्र कर्णः  
सूत्रभृतं पप्रच्छ । एकस्मिन्नहन्युदयास्तयोरन्तरे कि-  
यान्कर्मोद्भूयो भवतीति निवेद्यता । अथ तेन चतु-

१ शदस्थनेन त्यागेन च मा निर्निर्जित्यचतुस्तरता

२ दक्षिणप्रागादिर्भावादीपत्परि ३ जपनशीलं ४ ५ कर्मस्थायो  
(तोषाम्प्राप्ता बोद्धीन्ते विनागु क्रोत्रेषु)

दर्शयन्ध्याये तत्र सप्तहस्तप्रमाणा, एकादश प्रसादा  
दिनोदये प्रारभ्य दिनान्ते कलशारोपपर्यन्ताः कारयि-  
त्वा नृपाय दर्शितास्तथा समयसामग्र्या नृपः प्र-  
मुदितचित्तो<sup>१</sup> निजप्रासादकलापबन्धे संजायमाने नि-  
जप्रासादेऽनलसः कलशमधिरोप्य निर्णीते ध्वजा-  
धिरोपलये तथा प्रतिज्ञया श्रीभोजं दूतमुखेन  
निमन्त्रयामास । ततः स्वप्रतिज्ञाभङ्गभीरुर्मालवम-  
ण्डलप्रभुस्तथा प्रयातुमप्रभुश्च श्रीभोजस्तूणीमा-  
सीतू । अथ प्रासादध्वजाधिरोपानन्तरं श्रीकर्ण-  
स्तावद्भिरेव नृपैः समं परिधतः श्रीभोजमभिषेण-  
यितुं तदाच<sup>२</sup> श्रीभोजराज्यार्द्धप्रतिश्रुत्य श्रीमालव-  
कमण्डलपार्ष्णिघाताय श्रीकर्णः श्रीभीममाजूहवत् ।  
अथ ताभ्यां नरेन्द्राभ्यां मन्त्रेणाक्रान्तो व्याल इव  
भोजभूपालो विगलितदर्पविषो बभूव । तदा चाक-  
स्मिके संजाते भोजवपुरपाटवेऽपाह्नियमाणेषु<sup>३</sup> स-  
र्वेष्वपि घाटमार्गेषु निजनियुक्तमानुषैः सर्वथा नि-  
षिध्यमाने परपुरुषप्रवेशे श्रीभीमः कर्णाभ्यर्णव-  
र्त्तिनं निजसन्धिवियहिकं डामरं भोजवृत्तान्तज्ञानाय

१ C चित्तो भोजप्रासादे कलापबन्धे जायमाने २ अभि-  
षेण मन् तस्मिन्नसरे ३ तस्मिन् नृपस्य उपगुपाटवेऽन्ध्यमाने

स्वपुरुषेण पप्रच्छ तेनापि स पुरुषो गाथामध्याप्य  
प्रहितः श्रीभीमसभामुपार्गतः ॥

\*अम्बवफलं सुपक्वं विण्टं सिद्धिलं समुब्भडो पवणो।  
साहा मिल्हणसीलां न याणिमो कज्जपरिणामो<sup>१</sup> ॥१

अनया गाथया श्रीभिमि तथास्थिते श्रीभोजः  
सन्निहितपरलोकपथप्रयाणः कृततदुचितधर्मकृत्यो  
मम पञ्चत्वानन्तरं मत्करौ विमानाद्वहिर्विधेयावि-  
त्यादिश्य दिवं<sup>४</sup> गतः ॥

\*कसु करुरे पुत्र कलत्र धी कसु करुरे करसणवाडी ।  
एकला आइवो एकला जाइवो हाथपग वे झाडी १

इति भोजवाक्यं वेद्यया कथितं लोकानां प्र-  
ति तद्वृत्तान्तविदा कर्णेन दुर्गभङ्गपूर्वं समग्रायां भो-  
जलक्ष्म्यामुपात्तायां श्रीभीमेन डामर आदिष्टो य-

• आम्रफलं सुपक्वं वृन्तं सिद्धिलं समुद्भटं पवनः शाखा म्लान-  
शीला न जानीमः कार्यपरिणामम् ॥ १ ॥

• किं करोमि रे पुत्र कलत्रं किं करोमि कृतकृत्यत्वाद्यौ सकलपारिजनो-  
पकरणादिमित्यर्थः । एकाकी आगम्यते एकाकी गम्यते हस्तपाद द्वय  
वर्षित्वा ( लक्ष्मीने इति भाषा. )

१. B C उद्धतसाहा म. इणसीना. २ परिणामे.

३ कृत्यो यद्व्यस्यानुगार्ति सनदाय नखोरुस्य विनीर्य ।

४C दिग्गुरोषिगन्.

१२२ प्रबन्धचिन्तामणिःसर्ग. २

च्छ्रीकर्णात्वया मत्यरिकलितं' निजं शिरो वोपने-  
तव्यमितिराजादेशविधित्सुर्द्वात्रिंशता पत्तिभिः सह  
गुरुदरे प्रविश्य मध्याह्नकाले प्रसुप्तं श्रीकर्णं  
छान्द्यं जग्राह । अथ तेन राज्ञ एकस्मिन्विभागे नी-  
लकण्ठचिन्तामणिगणाधिपप्रमुखदेवतावसरे नि-  
र्णीते परस्मिन्नुत्तरार्द्धे समस्तराज्यवस्तूनि स्वेच्छयै-  
कमर्द्धमादत्स्वेत्यभिहिते षोडशप्रहरांस्तथा स्थित्वा  
पुनः श्रीभीमराजादेशादेवतावसरमादाय श्रीभीमा-  
योपायनीचकार ॥ अथैतत्प्रबन्धसंग्रहकाव्ययुग्मं  
यथा ॥

पञ्चाशद्वस्तमाने सुरंभवनयुगे तुल्यलग्नक्षणे प्राक्  
प्रारब्धे यस्य शीघ्रं भवति हि कलशारोपणं तत्र  
राज्ञा ।

अन्येन छत्रवालव्यजनविरहितेनाभ्युपेतव्यमेवं  
संवादे भोजराजो व्ययविमुखमतिः कर्णदेवेन  
जिग्धे ॥ १ ॥

भोजे राज्ञि दिवं गतेतिबलिना कर्णेन धारापुरी-  
भङ्गं सूत्रयतोपरुध्य नृपतिर्भीमः सहायीकृतः ।  
तद्भृत्येन च डामरेण जगृहे वन्दीकृतात्कर्णतो

हैमी मण्डपिका गणाधिपयुतः श्रीनीलकण्ठेश्वरः॥ २

अथ श्रीकर्णस्याग्रे इदं काव्यमुक्तं कर्पूरकविना  
मुखे हारावाप्तिरित्यादि । अपशब्दकथनाद्राज्ञा त-  
स्य कवेः किञ्चिन्न प्रदत्तं ।

कुक्षेः कोटर एव कैटिभरिपुर्वत्ते त्रिलोकीमिमा-  
मन्तर्भूरिभरं विभर्ति तमपि प्रीतो भुजङ्गाधिपः ।

श्रीकण्ठस्य स कण्ठसूत्रमभवदेव त्वया तं हृदा  
विभ्राणेन परेषु विक्रमकथा श्रीकर्णं निर्नाशिताः  
श्रीनाचिराजकविनोक्तमेतद्राज्ञा प्रदत्तम् ।

दत्ता कोटी सुवर्णस्य मत्ताश्च दश दन्तिनः ।

दत्तं श्रीकर्णदेवेन नाचिराजकवेर्मदात् ॥ २ ॥

भार्यया हकितेन कर्पूरकविना समागच्छतो नाचि-  
राजकवेरेयं मार्गे इदं काव्यं भणितं । यत्  
कन्ये कासि न वेत्ति मामपि कवे कर्पूर किं भारती  
सत्यं किं विधुरासि वत्स सुपिता केनाम्य दुर्वधसा  
किं नीतिं तव सुअभोजनयनद्वयं कथं वर्त्तसे  
दीर्घायुर्भजतेन्धयाष्टिपदवीं श्रीनाचिराजः कविः १

श्रीनाचिराजकविना संतुष्टेन यद्राज्ञा प्रदत्तं त-  
त्सर्वमपि कर्पूरकवये प्रदत्तं ।

इत्यादि भोजस्य नानाविधाः प्रबन्धा अवशे-

पा यथाश्रुतं मन्तव्याः ॥

देव त्वत्करनीरदे दशादीशि प्रारब्धपुण्योन्नतौ  
चञ्चत्काञ्चनकङ्कणद्युतितडित्स्वर्णामृतं वर्षति ।

वृद्धा कीर्त्तितरङ्गिणी समभवत्प्रीता गुणग्रामभूः

पूर्णं चार्थिसरः शशाम विदुषां दारिद्र्यदावानलः १

त्यागैः कल्पद्रुम इव भुवि त्रासिताशेषदौस्थ्यः

साक्षाद्वाचस्पतिरिव जनान्दृढनानाप्रबन्धः ।

राधावेधेऽर्जुन इव चिरात्तस्य कीर्त्योत्कचित्तै-

राहूतः आगमरनिकरैः स्वर्गयौ भोजराजः ॥ ३ ॥

इति श्रीमेरुतुङ्गाचार्यविरचिते प्रबन्धचिन्ताम-  
णौ श्रीभोजश्रीभीमभूपयोर्नानावदातवर्णनो नाम  
द्वितीयः प्रकाशः ॥

A C D पुस्तकेषु न B प्रान्तभागे लिखितानि काव्यानि यथा ॥

धाराधरस्त्वदासिरेव नरेन्द्र चित्र

वर्षन्ति वैरिवनिता ननलोचनानि ।

कोशेन सन्ततमसंगतिराहवेऽस्य

दारिद्र्यमभ्युदयति प्रतिपार्थिवानाम् ॥ १ ॥

कूर्मः पातालगङ्गापयसि विहरता तत्तटीरूढमुस्ता-

मादत्तामादिपोत्री शिथिलयतु फणामण्डलं कुण्डलीन्द्रः ।

दिङ्मातङ्गा मृणालिकवलनकलनां कुर्वतां पर्वतेन्द्राः

सर्वे स्वैर चरन्तु त्वयि वहति विभो भोज देवी धरित्रीम् ॥ २ ॥

अयं लाजा उच्चैः पाथि वचनमाकर्ण्य गृहिणी  
 शिशोः कर्णौ यास्मात्सुपिहितवती दीनवदना ।  
 मयि क्षीणोपाये यदकृत दृशावश्रुबहुले  
 तदन्तः शल्यं मे त्वमासि पुनरुद्धर्तुमुचितः ॥ ३ ॥  
 आमोदैर्मरुतो मृगाः किसलयोच्छासैस्त्वचा तापसाः  
 पुष्पैः पट्चरणाः फलीः शकुनयो धर्मादिताश्छायया ।  
 स्कन्धैर्गन्धगजास्त्वयैव विहिताः सर्वे कृतार्थास्ततः  
 त्व विश्वोपकृतिक्रमोऽसि भवता भग्रापदोऽन्ये द्रुमाः ॥ ४ ॥  
 हठादाकृष्टानां कतिपयपदानां रचयिता  
 जनः स्पर्द्धालुश्चेदहह कविना वश्यवचसा ।  
 भवेदद्य श्वो वा किमिह बहुना पापिनि कली  
 घटानां निर्मातुस्त्रिभुवनविधातुश्च कलहः ॥ ५ ॥  
 मुक्ताभूषणमिन्दुविम्बमजाने व्याकीर्णतारं नभः  
 स्मारं चापमपेतचापलमभूदिन्दीवरे मुद्रिते ।  
 व्यालीनं कलकठणमन्दराणितं मन्दानिलैः स्पन्दितं  
 निष्पन्दस्तवका च चम्पकलता साभून्न जाने ततः ॥ ६ ॥  
 खिन्नं मण्डलमैन्दवं विलुलितस्त्रग्भारनद्धं तमः  
 मागेव प्रथमानकैतरुशिखालीलायितं सुस्मितम् ।  
 शान्तं कुण्डलताण्डवं कुवलयद्वन्द्वं तिरो भीलितं  
 धितं विद्रुमसत्कृतं नहि ततो जाने किमासीदिति ॥ ७ ॥  
 अहो मे सौभाग्यं मम न भगभूतेश्च भणितिं  
 तुल्यगामारोप्य प्रतिफल्यति तस्यां लघिमन्त्रि ।  
 गिरां देवी सद्यः श्रुतिरलितकल्हारकलिका-  
 मधूमीमाधुर्गं सिषति परिपूर्णं भगवती ॥ ८ ॥  
 लक्ष्मीकीशतडागो रतिभारवृहं दर्पणो दिग्बानां

पुष्पं श्यामालतायास्त्रिभुवनजयिनो मन्मथस्यातपत्रम् ।  
 पिण्डाभूतं हरस्य स्मितममरधुनोपुण्डरीकं मृगाङ्गो  
 ज्यात्स्नापीवृषवापी जयति सितवृषस्तारकागोधनस्य ॥ ९ ॥

महाराज श्रीमन् जगति यशसा ते धवलिते  
 पयःपारावारं परमपुरुषोऽयं मृगयते  
 कपर्दी कैलासं करिवरमभौमं कुलिशभृत्  
 कलानाथं राहुः कमलमवनो हंसमधुना ॥ १० ॥  
 नीरक्षीरं गृहीत्वा निखिलखगतार्तिं याति नालीकजन्मा  
 तक्रं धृत्वा तु सर्वानटाति जलनिर्घोश्रक्रपाणिमुकुन्दः ।  
 सर्वानुत्तुङ्गशैलान् दहति पशुपतिर्भालनेत्रेण पश्यन्  
 व्यासत्वत्कीर्त्तिकान्तौ त्रिजगति नृपते भोजराज क्षितीन्द्र ॥ ११ ॥

विद्वद्राजशिखामणे तुल्यितुं धाता त्वदीयं यशः  
 कैलासं च निरीक्ष्य तत्र लघुतां निक्षिप्तवान् पूर्यते ।  
 उक्षाणं तदुपर्युमासहचरं तन्मूर्द्धि गङ्गाजलं  
 तस्याग्रे फणिपुङ्गवं तदुपरि स्फारं सुधादीधितिम् ॥ १२ ॥  
 स्वर्गाक्षोपाल कुत्र व्रजासि सुरमुने भूतले कामधेनो—  
 र्वत्सस्यानेतुकामस्तृणचयमधुना मुग्धदुग्धं न तस्याः ।  
 श्रुत्वा श्रीभोजराजप्रचुरवितरणं व्रीडशुष्कस्तनी सा  
 व्यथो हि स्यात्प्रयासस्तदपि तदारिभिर्श्रवितं सर्वमूर्व्याम् ॥ १३ ॥  
 अस्य श्रीभोजराजस्य द्वयमेव सुदुर्लभम् ।

शत्रूणां शृङ्खलैर्लोहं ताम्रं शासनपत्रकैः ॥ १४ ॥

निजानपि गजान् भोजं ददानं प्रेक्ष्य पार्वती ।

गजेन्द्रवदनं पुत्रं रक्षत्यद्य पुनः पुनः ॥ १५ ॥

घटो जन्मस्थानं मृगपरिजनो भूर्जवसनं

वने वासः कन्दादिकमशनमेवंविधगुणः ।



अगस्त्यः पाथोषिं यदकृतं करान्भोजकुहरे  
क्रियासिद्धिः सत्त्वे वसति महतां नोपकरणे ॥ १६ ॥

रथस्यैकं चक्रं भुजगयामिताः सप्त तुरगा  
निरालम्बो मार्गश्चरणविकलः सारथिरपि ।  
रविर्यात्येवान्तं प्रतिदिनमपारस्य नभसः

क्रियासिद्धिः ० ॥ १७ ॥

विजेतव्या लङ्का चरणतरणीयो जलनिधि—  
र्विपक्षः पौलस्त्यो रणभुवि सहायाश्च कपयः ।  
तथाप्याजौ रामः सकलमवधीद्राक्षसकुलं  
क्रियासिद्धिः ० ॥ १८ ॥

धनुः पौष्यं मीर्वी मधुकरमयी चञ्चलदृशां  
दृशां कोणो बाणः सुहृदपि जडात्मा हिमकरः ।  
स्वयं चैकोऽनङ्गः सकलभुवनं व्याकुलयति  
क्रियासिद्धिः ० ॥ १९ ॥

अर्द्धं दानववैरिणा गिरिजयाप्यर्द्धं शिवस्याद्वते  
देवैर्यत्नं जगतीतले पुरहराभावे समुन्मीलति ।  
गङ्गासागरमन्वरं शशिकला नागाधिपः क्षमातलं  
सर्वज्ञत्वमधीश्वरत्वमगमत्त्वां मां च भिक्षाटनम् ॥ २० ॥

शुक्तिद्वयपुटे भोज यशोऽब्धौ तव रोदसी ।  
मन्ये तदुद्भवं मुक्ताफलं शीतांशुमण्डलम् ॥ २१ ॥

अभूत्प्राची पिङ्गा रसपातिरिव प्राप्य कनकं  
गतच्छायश्चन्द्रो बुधजन इव ग्राम्यसदासि ।

क्षणात्क्षीणास्तारा नृपत इवानुद्यमपरा  
न राजन्ते दीपा द्रविणरहितानामिव गृहाः ॥ २२ ॥

समुन्नतयनस्तनस्तनवक्रगुम्बितगुम्फित—

## १२८ प्रबन्धचिन्तामणिः सर्ग. २

कणन्मधुरवीणया विबुधलोकलोलभ्रुवा ।  
 त्वर्दायमुपगीयते हराकिरीटकोटिस्फुर- .  
 क्षुपारकरकन्दलीकिरणपूरगौरं यशः ॥ २३ ॥  
 वज्रालक्षोणीपाल त्वदाहितनगरे संचरन्ती किराती  
 कीर्णान्यादाय रत्नान्युरुतरखदिराङ्गारशङ्काकुलाङ्गी ।  
 क्षिप्त्वा श्रीखण्डखण्डं तदुपरि मुकुलीभूतनेत्रा धमन्ती .  
 श्वासामोदानुपातैर्मधुकरानिकरैर्धूमशङ्कां विभर्त्ति ॥ २४ ॥  
 स्नाता तिष्ठति कुन्तलेश्वरमुता वारोङ्गराजस्वमु-  
 र्धूतैरात्रिरियं जिता कमलया देव्या प्रसाद्याधुना ।  
 इत्यन्तःपुरमुन्दरीजनगणे न्यायाधिकं ध्यायता  
 देवेनाप्रतिपत्तिमूढमनसा द्वित्राः स्थिता नाडिकाः ॥ २५ ॥  
 वहति भुवनश्रेणीं शेषः फणाफलकस्थितां  
 कमठपतिना मध्येपृष्ठं सदा स च धार्यते ।  
 तमपि कुरुते क्रोडाधीनं पयोनिधिरादरा-  
 दहह महतां निःसीमानश्ररित्रावेभूतयः ॥ २६ ॥  
 दृष्टे श्रीभोजराजेन्द्रे गलन्ति त्राणि तत्क्षणात् ।  
 शत्रोः शस्त्रं कवेः कष्टं नीवीवन्यो मृगादृशाम् ॥  
 कविषु वादेषु भोगिषु योगिषु  
 द्रविणदेषु सतामुपकारिषु ।  
 धनिषु धान्विषु धर्मपरेषु च  
 क्षितितले नहि भोजसमो नृपः ॥ २७ ॥



## सिद्धराजप्रबन्धः

अथ कदाचिद्गूर्जरदेशे अवग्रहनिगृहीतायां वृष्टौ  
 राजदेयविभागनिर्वाहाक्षमो देशलोकः तन्नियुक्तैर्व्या-  
 पारिभिः<sup>१</sup> शीपत्तने समानीय भीमभूपाय न्यवेद्यता  
 ततः कदाचिदहर्मुखे श्रीमूलराजकुमारस्तत्र च-  
 ङ्क्रममाणो नृपपत्तिभिः सस्यनिदानीभूतसंबन्धे  
 व्याकुलीक्रियमाणं सकललोकमालोक्य पारिपार्थ्वि-  
 केभ्योऽधिगतवृत्तान्तः कृपया किञ्चिदश्रुमिश्रलो-  
 वनो \*वाहवाल्यां तदतुल्यया कलया नृपं परितोष्य  
 रं वृणीष्वेति नृपादेशमासाद्य भाण्डागार एव व-  
 शीयमस्तु इति विज्ञपयामास । राज्ञा किमिति न  
 शचसे इत्युक्तः प्राप्तिप्रमाणाभावादित्युदीरयन्  
 नृशं निर्वन्धपराद्धराधिपात्तेषां कुटुम्बिकानां दानी-  
 मोचनवरं ययाचे । ततो हर्षवाष्पाविललोचनेन  
 राज्ञा तत्तथेति प्रतिपद्य भूयोप्यर्थयेत्यभिहितः ।  
 भुद्राः सन्ति सहस्रशः स्वभरणव्यापारमात्रोद्यताः

१० निगृहीतवर्षेण विशेषकदम्बाहिदेशग्रामकौटुम्बिकेषु राजदेयवि-  
 भागनिर्वाहाक्षमेऽपि तन्नियुक्तैर्व्यापारिभिः सकलोपि स इति वित्तो दे-  
 शलोकः २ वाहवाल्यां A महाल्या. \*अथवालनपरिभ्रामणादिक्रि-  
 याया वा तत्स्थल्यां ३ B अनुकया.

१३० प्रबन्धचिन्तामणिः सर्गः ३

स्वार्थो यस्य परार्थ एव स पुमानेकः सतामग्रणीः।

दुःपूरोदरपूरणाय पिवति श्रोतःपतिं वाडवो

जीमूतस्तु निदाघसंभृत जगत्संतापविच्छिन्नये ॥ १

इति काव्यार्थवलेन निगृहीतप्रभूतलोभस्ततो भूयः

किमप्यभ्यर्थ्यमानोऽपि मानोन्नततया स्वस्थानम-

गमत् । ततश्च कौटुम्बिकलोकैः स्तूयमानस्तृतीयेऽ

हनि स श्रीमूलराजः स्वर्लोकं जगाम । तच्छ्लोका-

म्बुधौ स राजलोको राजा स च पूर्वमोचितलोकश्च

निमग्नश्चिरेण चतुरैर्विविधबोधवलादपठुषोकशङ्कु-

श्चक्रे । अथ द्वितीयवर्षे कर्पुकलोकैर्वपाबलान्निः-

पन्नेषु समस्तसस्येषु व्यतीततद्वर्षयो राजदेयभाग-

विभागे प्रदिश्यमाने राज्ञि चानाददाने सति तैरुत्त-

रसभा मेलिता । तत्र सभ्यानां लक्षणमेवं ॥

न सा सभा यत्र न सन्ति वृद्धा

वृद्धा न ते ये न वदन्ति धर्मम् ।

धर्मः स नो यत्र न चास्ति सत्यं

सत्यं न तद्यत्कृतकानुविद्धम् ॥ १ ॥

१ D मूक्तार्थः. २ प्रार्थयमानो मानोन्नततया स्वसौधमभ्यास्य बन्ध-  
मोचितैस्तैर्लोकैः सदैव तदुपास्यमान स्वसौधगतैश्च स्तूयमानस्तृती-  
येऽहनि तदीयसन्तोषदृशा श्रीमूलराज

इति निर्णयात्सम्यैर्गतवर्षतद्वर्षयोर्दानीं राजा  
 ग्रहितः । ततस्तेन द्रव्येण कोशद्रव्येण च श्रीमू-  
 लराजकुमारश्रेयसे नव्यस्त्रिपुरुषप्रासादः श्रीभीमेन  
 कारितः । अनेन श्रीपत्तने श्रीभीमेश्वरदेवभट्टारि-  
 काभीरुआणीप्रासादौ कारितौ ॥ सं० १०७७ प्रा-  
 रभ्य वर्ष-४२ मास १० दिन ९ राज्यं कृतं ॥ श्री  
 उदयमतिनाम्न्या तद्राज्ञ्या श्रीपत्तने सहस्रलिङ्गस-  
 रोवरादप्यातिशायिनी नव्या वापी कारिता ॥ अथ सं.  
 ११२० चैत्रवदि ७ सोमे हस्तनक्षत्रे मीनलग्ने श्री  
 कर्णदेवस्य राज्याभिषेकः संजातः ॥ इतश्च शुभके-  
 शिनामा कर्णाटिराट् तुरगापहृतोऽष्टव्यां नीतः कु-  
 त्रापि पत्रलवृक्षछायां सेवमानः प्रत्यासन्नदावपाव-  
 के कृतज्ञतया विश्रामोपकारकारिणं तमेव तरुम-  
 जिहासुस्तेनैव सह तस्मिन्दहने प्राणानाहुतीचका-  
 र । ततस्तत्सूनुर्जयकेशिनामा तद्राज्ये सचिवैर-  
 भिषिक्तः क्रमेण तत्सुता मयणल्लदेवी समजनि ।  
 सा च शिवभक्तैः सोमेश्वरनामनि गृहीतमात्र एवे-  
 ति पूर्वभवमस्मार्पित् । यदहं प्राग्भवे ब्राह्मणी द्वा-

१ D दानीं नृपते. पार्श्वद्विहत्वा आपूर्यमाणकोश. २ पूर्व वर्षे.  
 १२ सं० ११२८ B सं० १०८० पूर्व व० ४२ अथ सं. ११२०

दशमासोपवासान्कृत्वा प्रत्येकं द्वादशवस्तूनि तदु-  
 द्यापने दत्त्वा श्रीसोमेश्वरनमस्याकृते प्रस्थिता वा-  
 हुलोडनगरमागता तत्करं दातुमक्षमाग्रतो गन्तुम-  
 लभमाना तन्निर्वेदादहमागामिनि जन्मनि अस्य  
 करस्य मोचयित्री भूयासमिति कृतनिदाना विप-  
 द्यात्र कुले जातेतिपूर्वभवस्मृतिः । अथ वाहुलोड-  
 'करमोचनाय सा गूर्जरेश्वरं प्रवरं वरं कामयमाना  
 तं वृत्तान्तं पित्रे निवेदयामास । अथ जयकोशीरा-  
 जा तं व्यतिकरं ज्ञात्वा तेन श्रीकर्णः स्वप्रधानैःस्व-  
 सुताया मयणल्लदेव्या अङ्गीकारं याच्यते स्म । अथ  
 श्रीकर्णे तस्याः कुरूपताश्रवणादुदासीने<sup>१</sup> सति त-  
 स्मिन्नेव निर्वन्धपरां तां मयणल्लदेवीं पिता स्वयं-  
 रां प्राहिणोत् । अथ श्रीकर्णनृपो गुप्तवृत्त्या स्वय-  
 मेव तां कुत्सितरूपां निरूप्य<sup>२</sup> सर्वथा निरादर एव  
 जातः । ततोऽपि<sup>३</sup> सहचरीभिः सह नृपतिहत्याकृ-  
 ते मयणल्लदेवीं प्राणान्यरिजिहीर्षु मत्वा श्रीकर्ण-  
 जनन्या देयमतिराज्ञ्या तासां विपदं दृष्टुमक्षमया  
 ताभिः सह प्राणसंकल्यश्चक्रे ॥ यतः ॥

१ B श्रीकर्णः प्रधानपुरुषैर्मयणल्लदेव्या. कुरूपता निशम्य मन्दा-  
 दरे राज्ञि. २ D विलोक्य. ३ A दिक्न्याभिरिय मूर्तिमतीभिः

स्वापदि तथा महान्तो न यान्ति खेदं यथा परापत्सु।  
अचला निजोपहातिषु प्रकम्ब्यते भूः परव्यसने ॥ १

इति महोपप्लवसुपस्थितमवगम्य मातृभ-  
क्त्या तां परिणीय श्रीकर्णः पश्चाद्दृष्टिमात्रेणापि न  
संभावयामास ॥ अन्यदा कस्यामप्यधर्मयोपिति  
साभिलाषं नृपं मुञ्जालमन्त्री कञ्चुकिना विज्ञा-  
य तद्वेपधारिणीं कृत्वा मयणलदेवीमृतुस्नातां  
रहसि प्राहिणोत् । तामेव स्त्रियं जानता नृपति-  
ना सप्रेमभुज्यमानायास्तस्या आधानं समजनि ।  
तदा च तया संकेतज्ञापनाय नृपकरान्नामाङ्कितम-  
ङ्गुलीयकं निजाङ्गुल्यां न्यधायि । अथ प्रातस्तदुर्वि-  
लसितात्प्राणपरित्यागोद्यतो नृपतिः स्मार्त्तस्तत्प्रा-  
यश्चित्तं पप्रच्छ । तैस्तत्तताग्रमयपुत्तलिकालिङ्गन-  
मिति<sup>१</sup> निवेदिते प्रायश्चित्ताय तथैव चिकीर्षवे स  
मन्त्री यथावदवदत् ॥ सुलग्ने तस्य जातस्य सूनो-  
र्नृपतिर्जयसिंह इति नाम निर्ममे । स वालस्त्रिवा-  
र्षिकः कुमारैः सवयोभिः सह रममाणः सिंहासन

१० इति न्यायात्तदाग्रहादेवानिच्छुनापि सर्वथा श्रीकर्णेन सा परि-  
णन्ये । तदनन्तरं दृग्मात्रेण सर्वथा ज्ञातसंभावयन् कस्यां

२ उद्यताय नृपतये स्मार्त्तस्तत्तताग्रमयपुत्तलिकालिङ्गनमिति प्रायश्चित्ते.

मलंचक्रे । निमित्तिकैस्तस्मिन्नेवाभ्युदयिके । लगे  
निवेदिते राजा तदैव तस्य सूनो राज्याभिषेकं च-  
कार ॥ सं० ३१५० वर्षे पौषवद ३ शनौ श्रवण-  
नक्षत्रे वृषलग्ने श्रीसिद्धराजस्य पट्टाभिषेकः । स्वयं  
तु, आशापल्लीनिवासिनमाशाभिधानं भिन्नमभिषे-  
णयन् भैरवदेव्याः शकुने जाते तत्रकोछरबाभिधा-  
नदेव्याः प्रासादं च करयित्वा पटलक्षाधिपं भि-  
ल्लं विजित्य तत्र जयन्तीं देवीं प्रासादे स्थापयित्वा  
तथा कर्णेश्वरदेवतायतनं कर्णसागरतडागालं-  
कृतं चकार । कर्णावतीपुरं निवेश्य स्वयं तत्र रा-  
ज्यं चक्रे । श्रीपत्तने तेन राज्ञा श्रीकर्णमेरुः प्रासा-  
दः कारितः ॥ सं० ११२० चैत्रसुदि ७ प्रारभ्य सं०  
११५० पौषवदि २ यावत् वर्ष २९ मास ८ दि-  
न २१ अनेन राज्ञा राज्यं कृतं । अथ दिवं गते  
श्रीकर्णे श्रीमदुदयमतिदेव्या भ्राता मदनपालोऽस-  
मञ्जसवृत्त्याऽवर्त्तत । तेन लीलाभिधानो राजवैद्यो दै-  
वतवरलब्धप्रसादः सकलनागरिकैस्तत्कलाचमत्कृ-  
तचितैः काञ्चनदानपूजयाऽभ्यर्च्यमानः कदाचिन्नि-

१ B D तद्व्यवहाराविरुद्धं विमृशता नृपेण पृष्टेनैभिर्तिकैस्तस्मिन्ने-  
वाभ्युदयिके २ C तत्कलाद्वतद्वयैः



जसौधे समानीतः कृतके<sup>१</sup> शरीरामये नाडीदर्श-  
नाप्तध्यासज्जतां निवेदयन्निदमूचे। तदेव नास्तीति।  
ततस्त्वं मया रोगप्रतीकाराय नाकारितः किं तु प-  
थ्यदानेन बुभुक्षाप्रतीकारार्थमेव । ततो द्वात्रिंशत्स-  
हस्राण्युपनयेत्पुत्का तेन वन्दीकृतस्तत्तथेति<sup>२</sup> निर्मा-  
येत्यभिग्रहमग्रहीत् । यदतः परं प्रतीकारनिमि-  
त्तं नृपतेः सौधमपहाय नान्यत्र गन्तव्यमिति ।  
ततः परमातुराणां प्रश्रवणालोकनान्निदानचिकि-  
त्सितं कुर्वाणः केनापि मायाविना कृतकामयचि-  
कित्सितकौशलं बुभुत्सुना वृषभप्रश्रवणे दर्शिते स-  
म्यक् तदवगम्य शिरोधूननपूर्वकं वृषभः स बहुखाद-  
नेन गोण्डित इत्यस्मै सत्वरमेव तैलनाली दीयतां  
नोचेद्विपत्स्यते इति तच्चित्ते चमत्कारमारोपयामा-  
स । अन्यदा राज्ञा निजग्रीवावाधाप्रतीकारं पृष्टः ।  
पलद्वयप्रमाणमृगमदपङ्कलेपेन शिरोर्त्तिरुपशाम्यती-  
ति व्याहृते तथाकृते ग्रीवा सजीभूता । ततो नृपसु-  
खासनवाहिना पामरेण नरेण शिरोवाधाप्रतीकारं  
पृष्टः । वृद्धकरीरमूलरसेन तन्मृत्तिकासहितेन लेपं

१ समानीय कृत्रिमे २ B D इत्यादिष्टस्तत्तथेति ३ मोहितः  
[ रुग्णः ]

विधेहीत्यभिदधे । ततो राज्ञा किमेतदिति पृष्टे देश-  
कालौ वलं शरीरप्रकृतिं च विमृश्यायुर्वेदविदां चिकि-  
त्साक्रियत इति विज्ञपयति स्म ॥ अन्यदा धूर्तैः कैश्चि-  
देकसंमत्या पृथक् २ युगलीभूय तत्प्रथमयुगलिकया  
विपणिमार्गे किमद्य यूयं वपुष्यपटव इति पृष्टः  
द्वितीययुगलिकया श्रीमुञ्जालस्वामिप्रासादसोपाने  
पृष्टः तृतीययुगलिकया तु राजद्वारे चतुर्थयुगलि-  
कया द्वारतोरणे तथैव ततो भूयो भूयः पृच्छोत्त-  
न्नेन शङ्खदूषणेन तत्कालोत्तन्नमाहेन्द्रज्वरस्त्रयोदश-  
दिने विपेदे स वैद्य इति वैद्यलीलाप्रबन्धः ।

अथ सान्तूमन्त्रिण उपायाद्राजपाटि-  
काव्याजेन श्रीकर्णाङ्गजेनान्यायकारी मदनपालो  
व्यापादितः ॥ अथ कश्चिन्मरुमण्डलवास्तव्यः  
श्रीमालदेश्य उदाभिधानो वणिक् प्रावृट्काले  
प्राज्याज्यक्रयार निशीथे व्रजन् कर्मकरैरेकस्मा-

१ BD) भूयो राज्ञा विप्रलब्धः २ विज्ञप्य गृह गतः ३ विपणिमार्गे  
पृष्टः ३ द्वारतोरणे ४ आकस्मिक वपुःपाटव पृष्टः ५ श्री  
मुञ्जालस्वामिप्रासादे चापठ्यमानः शङ्खाविषदोषेणैव मृत ६ अथ  
सान्तूनामा मन्त्री अन्यायकारिण त मदनपाल कालमिव निवासु  
कदाचित्कर्णाङ्गज गजेधिरोप्य राजपाटिकाव्याजेन तद्गृहे नीत्वा  
पत्तिभिस्त व्यापादयामास

त्केदारादपरास्मिन् जलैः पूर्यमाणे<sup>१</sup> तान्केयूयमि-  
ति<sup>२</sup> पप्रच्छ । तैर्वयममुकस्य कामुका इत्यु-  
क्ते ममापि क्वापि सन्तीति पृच्छन्, तैः कर्णावल्यां  
सन्तीत्यभिहिते स सकुटुम्बस्तत्र गतः वायटीयजि-  
नायतने विधिवद्देवान्नमस्कुर्वन्कयापि लाछिना-  
म्न्या छिम्पिकया श्राविकया साधार्मिकत्वाद्वन्दे । त-  
या भवान् कस्यातिथिरित्युदीरितः, वैदेशिकोहमि-  
ति भवत्या एवातिथिरिति वदन् तया सह नी-  
त्वा कस्यापि वणिजो गृहे कारितान्नपाकेन भोज-  
यित्वा निजतनके क्वापि गृहे निवासितः । कालक्र-  
मेण संपन्नसंपदिष्टिकाचितं गृहं चिकीर्षुः खाताव-  
सरे निरवधिं सेवधिमाधिगम्य तामेव स्त्रियमाहूय  
समर्पयन् तया निषिद्धः । तत्प्रभावेण ततः प्रभृति स  
उदयनमन्वीति नाम्ना पप्रथे । तेन कर्णावल्यामतीता-  
नागतवर्त्तमानचतुर्विंशतिजिनसमलंकृतः श्रीउदन-  
विहारः कारितः । तस्यापरमातृकाश्चत्वारः सुताः वा-

• D यत

रुतप्रयत्नानपि नैव काश्चन स्वयं शयानानपि सेवने परान् ।

द्वयेपि नास्ति द्वितयेपि निश्चिते श्रियं प्रचारो न निचारगोचरः ॥ १

१ B C पोपमाणे २ अगरस्मिन्पूर्यमाणेभ्योभिः ३ यूयमिति.

१३८ प्रबन्धचिन्तामणिः सर्ग. ३

हडदेवआम्बडवोहडसोलार्कनामानोऽभूवन् ।

अथान्यस्मिन्नवसरे सान्तूनाभा महाभात्यः करेणु-  
स्कन्धारूढो राजपाटिकायां ब्रजन् व्यावृत्तः स्वका-  
रितसान्तूवसाहिकायां देवनमश्चिकीर्षया तत्र प्रवि-  
शन् वारवेद्यास्कन्धन्यस्तहस्तं कमपि चैत्यवासि-  
नं सितवसनं ददर्श । ततो गजादवरुह्य कृतोत्तरा-  
सङ्गः पञ्चाङ्गप्रणामेन तं नमश्चकार । तत्र क्षणं  
स्थित्वा भूयस्तं प्रणम्य प्रतस्थे । ततः स लज्जयाऽधो-  
वदनः पातालं प्रविविक्षुरिव तत्काले सर्वमेव परि-  
हृत्य मलयारिश्रीहेमसूरीणां समीपे उपसंपदमा-  
दायं संवेगरससंपूर्णः श्रीशत्रुञ्जये गत्वा द्वादशवर्षा-  
णि तपस्तेपे । किञ्च तेनान्ये समानाः प्रतिबोधिताः  
मुनिश्चिन्तयति ।

रे रे चित्त कथं भ्रातः प्रधावसि पिशाचवत् ।

अभिन्नं पश्य चात्मानं रागत्यागात्सुखी भव ॥ १

संसारमृगतृष्णासु मनो धावसि किं वृथा ।

सुधामयमिदं ब्रह्मसरः किं नावगाहसे ॥ २ ॥

कदाचित्स मन्ती श्रीशत्रुञ्जये देवपादानां नमस्कर-

१ C आत्पडदेवआम्बडदेवनाहडसोलाः D सोलदेवमट. १

२ D गीतमामिव नमश्चक्रे. ३ इति ध्यायन्त मुनिः कायोत्सर्गे तत्पौ ।

णायोपगतो दृष्टपूर्वमिव मुनिं तं प्रणम्य तच्चरित्रवि-  
चित्रितमनास्तं गुरुकुलादि पप्रच्छ । तत्त्वतो भवानेव  
गुरुरिति तेनोक्ते कर्णौ पित्राय पाणिभ्यामेवं मा-  
दिशेत्यज्ञातवृत्त्यैवं विज्ञपयंस्तेन मन्त्रयूचे ॥

जोजेण शुद्धधम्ममि ठाविउ संजएण गिहिणा वा।  
सो चेव तस्स जायइ धम्मगुरू धम्मदाणारु ॥१॥  
इति तस्मै मूलवृत्तान्तं निवेद्य तस्य दृढधर्मतां नि-  
र्ममे ॥

इति मन्त्रिसान्तूढधर्मताप्रबन्धः ॥

अथानन्तरं श्रीमयणल्लदेव्या जातिस्मरणात्पूर्व-  
भववृत्तान्ते श्रीसिद्धराजस्य निवेदिते श्रीमयणल्ल  
देवी श्रीसोमनाथयोग्यां सपादकोटिमूल्यां हेममयीं  
पूजामादाययात्रायां प्रस्थिता। बाहुल्लेडनगरं प्राप्ता  
पञ्चकुलेन कदर्यगानेषु कार्पटिकेषु राजदेयविभा-  
गस्याप्राप्त्यासवाप्यं पश्चान्निर्वृत्यमानेषु मयणल्लदे-  
वी हृदयादर्शसंक्रान्ततद्वाधां स्वयमेव पश्चाद्ब्याधु-  
टन्ती। अन्तरान्तरायभूतेन श्रीसिद्धराजेन विज्ञतास्व-  
मिन्यलममुना संध्रमेण कुतो हेतोः पश्चान्निवर्त्त्यते  
इति राज्ञोक्ते यदेव सर्वथाऽयं करमोक्षो भवति तदैवा-

हं श्रीसोमेश्वरं प्रणमामि अशनं गृह्णामि नान्य-  
 थेति<sup>१</sup> श्रुत्वा राज्ञा पञ्चकुलमाकार्यं तत्पट्टकस्याङ्गे  
 द्वासप्ततिलक्षानुत्पद्यमानान्विमृश्य तं पट्टकं विदा-  
 र्य मातुः श्रेयसे करं मुक्त्वा करे जलचुलकं मुञ्चति  
 स्म । ततः श्रीसोमेश्वरं गत्वा तथा सुवर्णपूजया  
 देवमभ्यर्च्य तुलापुरुषदानादीनि दानानि दत्त्वा  
 संग्रहैकपरः प्राप समुद्रोपि रसातलम् ।

दाता तु जलदः पश्य भुवनोपरि गर्जति ॥ १ ॥

सेनाङ्गपरिवाराद्यं सर्वमेव विनश्यति ।

दानेन जनितानन्दे कीर्तिरेकैव तिष्ठति ॥ २ ॥

दातुर्नार्थिसमो बन्धुभारिमादाय यः परात् ।

लक्ष्मीरूपादविगमं निस्तारयति तं खलु ॥ ३ ॥

अतो महादानैर्मत्सदृशी कापि नाभून्न भवितेति  
 दर्पाध्मातशिरा निर्भरं सुता । तपस्विवेपधारिणा ते-  
 नैव देवेन जगदे । इहैव मदीयदेवकुलमध्ये<sup>२</sup> काचि-  
 त्कार्पटिकनितम्बिनी यात्रायै आयातास्ति तस्याः  
 सुकृतं याचनीयं त्वयेत्यमादिश्य तिरोहिते तस्मिन्-  
 राजपुरुषैरालोक्य समानीता । तस्मिन्पुण्ये याचि-  
 तेऽप्यददाना कथमपि यात्रायां किं व्ययीकृतमिति.

एषा सती सा प्राह । अहं भिक्षावृत्त्या योजनशता-  
न्तरमतिक्रम्य ह्यस्तनदिवसे कृततीर्थोपवासा पा-  
रणकदिने कस्यापि सुकृतिनः पिण्याकमासाद्य त-  
त्खण्डेन श्रीसोमेश्वरमभ्यर्च्य तदंशमतिथये दत्त्वा  
स्वयं पारणकमकार्षं । भवती पुण्यवती यस्याः पि-  
तृभ्रातरौ पतिसुतौ च राजानः । या त्वं बाहुलोडक-  
रं मोचयित्वा सपादकोटिमूल्यया पूजया श्रीसो-  
मेश्वरं पूजितवती सा कथं मदीयपुण्यलब्धेच्छासि<sup>३</sup>  
यदि न कुप्यसि तदा किंचिद्वन्मि । तत्त्वतस्तव  
पुण्यान्मदीयं पुण्यं महीतले महीयः । यतः ॥  
संपत्तौ नियमः शक्तौ सहनं यौवने व्रतम् ।

दारिद्र्ये दानमत्यल्पमपि लाभाय भूयसे ॥ १ ॥

इति युक्तेन वाक्येन तस्या गर्वं निराचकारं ॥

सिद्धराजस्तु समुद्रोपकण्ठवर्ती एकेन चारणेन ॥  
को जाणइ तुह<sup>४</sup> नाह चीत तु हालेई चक्कवइ लउ।  
लंकहले<sup>५</sup> वाहमग्गु निहालई करणउत्तु<sup>६</sup> ॥ १

१. को जानाति तव चित्तं हेनाथ चक्रासित्व लब्ध अतः परं  
लङ्काफलं लब्धुं बाहमार्गं निभालयति किं कर्णपुत्रः ॥ १ ॥

१ C D यात्रायां. २ C कुरुषुपि पुण्ये कथयुञ्जामि. ३ D अग-  
प्यपुण्यमनेयन्ती सा. ४ BCD सा गर्वं निमसर्त्त. C ५ कौ ६ हालंतु.  
७ काले. ८ लह.

इत्यादिस्तूयमानोऽभूत् ॥

एवं तत्र यात्रायां व्यावृत्ते राज्ञि छलान्वेषिणा यशोव-  
र्मणा मालवकभूषेन गूर्जरदेशे उपद्रूयमाणे सान्तू-  
सचिवेन त्वं कथं निवर्त्तसे इति प्रोक्तः स राजाहं ।  
यदि त्वं स्वस्वामिनः सोमेश्वरदेवयात्रायाः पुण्यं  
ददासीत्पुदीरितस्तच्चरणौ प्रक्षाल्य तत्करतले त-  
त्पुण्यदाननिदानं<sup>१</sup> जलचुलुकं निक्षिप्य तं राजानं  
निवर्त्तयामास ततः श्रीसिद्धराजस्तद्वत्तान्तोपगमनेन  
क्रुद्धस्तं मन्त्र्येवमवादीत् । स्वामिन् यन्मया दत्तं तव  
सुकृतं याति ततस्तस्य सुकृतमन्येषामपि पुण्यवतां  
सुकृतं मया भवते प्रदत्तमेव । येन केनाप्युपायेन  
परचक्रं स्वदेशे प्रविशद्रक्षणीयमेवेति वदता तेन  
नृपतिरनुनीतः । ततस्तेनैवामर्पेण मालवमण्डलं प्र-  
तिष्ठासुः साचिवान् शिल्पिनश्च सहस्रलिङ्गधर्मस्थान-  
कर्मस्थायि नियोज्य त्वरितगत्या तस्मिन्निष्पद्यमाने  
नृपतिः प्रयाणकमकरोत् । तत्र स्वजयकारपूर्वकं द्वा-  
दशवार्षिके विग्रहे संजायमानेऽर्घ्यं मया धाराभङ्गा-

१ १) अनिदानं. २ १) क्रुद्धो नृपः पराडमुक्तोऽननि । एतदा  
राजानं. ३ निवारणाय. ४ प्रति गियामुः ५ (धर्मस्थानस्य स्थायी-  
धिकारः) ६ कथाचिद्वारादुर्गभङ्गं कर्तुमत्रभूणुरय.



नन्तरं भोक्तव्यमिति सचिवैः पात्तिभिः परमारराजपु-  
त्रैः पञ्चशतीभिर्विपद्यमानैः राज्ञः प्रातिज्ञां दिना-  
न्तेपि पूरयितुमक्षमैः कथंचित्तस्यां कणिका-  
मयधाराभङ्गेन पूरितायां राज्ञा पश्चाद्व्याघुटितुमि-  
च्छुर्मुञ्जालसचिवं ज्ञापयामास। तेनापि त्रिकचतुष्क-  
चत्वरप्रासादेषु निजपुरुषान्नियोज्य धारादुर्गभङ्गवा-  
र्त्तायां क्रियमाणायां तद्वासिना केनापि पुरुषेण प्र-  
तोल्या यदि परवलं ढौकते तदैव दुर्गभङ्गो नान्य-  
थेति तद्वाचमाकर्ण्य स विज्ञतः सचिवस्तं व्यतिक-  
रं राज्ञे गुप्तविज्ञातिक्रिया निवेदयामास । राज्ञापि  
तद्वृत्तान्तवेदिना तत्र सैन्ये ढौकिते दुर्गमन्तर्दुर्गम-  
विमृश्य<sup>१</sup> यशःपटहनाग्निं बलवदन्तावलेऽधिरूढ-  
सामलनाभ्रारोहकेण पश्चाद्भागेन त्रिपोल्लिकपाटद्व-  
ये आहन्यमाने लोहमयार्गलायां भज्यमानायां व-  
लाधिकतयान्तस्त्रुटिताद्गजात्कर्णाङ्गजमुत्तार्य स्वयं  
यावदवरोहति तावत्स गजः पृथिव्यां पपात । सु-  
भटतया विपद्यं बडसरग्रामे स्वयशोधवल एव  
यशोधवलनामा विनायकरूपेणावततार ॥

१ D दक्षिणप्रतोल्या. २ दुर्गमं दुर्गमन्तर्विमृश्य. ३ A त्रिपोल.

४ C यशोधलो नाम.

सिद्धेस्तनशैलतटीपरिणतिदलितद्वितीयदन्त इव ।  
विभ्राणो रदमेकं गजवदनः सृजतु वः श्रेयः ॥१॥

इति तदीया स्तुतिः ॥ इत्थं दुर्गभङ्गे सूत्रिते सति  
समराधिरूढं यशोवर्माणं पङ्क्तिगुणैरावध्य तत्र  
निजामाज्ञां जगन्मान्यां दापयित्वा यशोवर्मरूपया  
प्रत्यक्षयशःपताकया रोचिष्णुः श्रीपत्तनं प्राप । प्र-  
तिदिनं सर्वदेशनेपाशिर्वाददानायाहूतेषु यथाव-  
सरमाकारिता जैनाचार्याः श्रीहेमचन्द्रमुख्याः श्री-  
सिद्धराजमासाद्य नृपेण दुकूलदानादिभिरावर्जितो-  
स्तैः सर्वैरप्यप्रतिमप्रतिभाभिरामैर्द्विधापि पुस्कृतो  
नृपायेत्याशिपं श्रीहेमचन्द्रः पपाठ ॥

\*भूमिं कामगवि स्वगोमयरसैरासिंच रत्नाकरा  
मुक्तास्वस्तिकमातनुध्वमुडुप त्वं पूर्णकुम्भी<sup>१</sup>भवा  
धत्वा कल्पतरोर्दलानि सरलैर्दिग्धारणास्तोरणा-  
न्याधत्त स्वकैर्विजित्य जगतीं नन्वेति सिद्धाधिपः<sup>१</sup>

अस्मिन्काव्ये निःप्रपञ्चे प्रपश्यमाने तद्वचन-  
चातुरीचमल्लतचेता नृपस्तं प्रशंसन्, कैश्चिदसहि-  
ष्णुभिरस्मच्छास्त्राध्ययनबलादेतेषां विद्वत्तेत्यभिहिते

राज्ञा पृष्टाः श्रीहेमचन्द्राचार्याः । पुरा<sup>१</sup> श्रीजिनेन

१ D कैश्रिदसहिष्णुभिर्न मेने ॥ हेमचन्द्रनामा शिष्यः कदाचि-  
न्नवशुचिताशिरा जलविहरणाय व्रजं गजमयात्सोधभित्तिस्थितो ग-  
वास्येनालिगपुरोहितेन सारिणा पराभूतः<sup>१</sup> गुरवो विज्ञप्तास्तैरुक्तो मि-  
थ्या दुःकृतं देहि । तद्दुःखेन निःसृतोऽन्यगच्छीयदेवचन्द्रपद्माकरा-  
भ्यां सह श्रीकाश्मीरं प्राति । मार्गे नडोलाग्रामे सप्तमोपवासे श्रीसर-  
स्वती मसन्ना जाता निजमूर्तिर्दर्शिता मित्रयोर्निवेदिते । श्लोकसप्तशत्या  
ग्रामो वर्णितः । मित्रद्वयस्य कार्यसिद्धिहेतोः स्तम्भतीर्थे प्रविशन्तः  
केनापि देशान्तरिणाकार्यविद्या<sup>२</sup> समर्पिता । इत्युक्तं च । मम मरणस-  
मये गम शवोपरि त्रिभिर्नाभिमण्डले मन्त्रः स्मरणीयः शब्दो वरं दा-  
स्याति । एवं कृते श्मशाने मन्यरात्रौ शबेनोत्थाप्य वरो दत्तः । श्री-  
हेमचन्द्रेण राजप्रबोधो याचितः । देवचन्द्रेण हस्तसिद्धेराकृष्टिविद्या ।  
पद्माकरेण पाण्डित्य । अत्रान्तरे कृतकृत्यहेमचन्द्रो वलितः । काल-  
भैरवीयमध्ये चण्डिकाप्रासादे विश्रान्तस्तत्र लघुभैरवानन्दः शिष्यपञ्च-  
शतोवृतः समेत्य, रेरे चण्डे चण्डे प्रचण्डे मह्यं मोदकान् देहीति भे-  
णित्वा सुवर्णमयकर्परमग्रे मुक्तं देव्या मोदकैर्भृतं । तेन सर्वेषां तेऽर्पिता ।  
हेमचन्द्रस्यापि हे शिष्य त्वमपि गृहाणेत्युक्तं । तेन तस्यापि करौ स्तम्भयि-  
त्वोक्त । यद्यस्ति सत्त्वं तदा त्वं भक्षयेथाः । एवमुक्ते चरणयोः पतितः ।  
ततः पत्तने आयातं श्रीजयसिंहदेवः सन्मुखमेत्य समानीय हेमचन्द्र  
गजाधिरूढं प्रवेश्य च पुरोहिततिरस्कृतं सूरि, राज्ञा गुरव उपरोध्य  
हेमचन्द्रस्य पदस्थापना कारिता ॥ श्रीहेमचन्द्रसूरयोऽष्टम्यां चतुर्द-  
श्यां च श्रीजयदेवभुवनं प्रयान्ति । पौषधानारे श्रीस्थूलिभद्रचरितवाच-  
यन्तः पुरोहितेन राज्ञोऽग्रे उपहसिताः, महाराज कोयमसत्प्रलापः सर्वर-

(१ सर्वथा नलवताऽत एव तिरस्कृतः) (२ देवाकर्पणविद्या.)

१४६ प्रबन्धचिन्तामणिःसर्गः ३

श्रीमन्महावीरेणेन्द्रस्य पुरतः शैशवे यद्व्याख्यातं  
तज्जैनव्याकरणमधीयामहे वयमिति तद्वाक्यानन्त-  
रमिमां पुराणवार्त्तामपहायास्माकमेव सन्निहितं  
नृपं व्याकरणकर्त्तारं कमपि ब्रूतेति तस्मिन्नुवा-  
क्यादनु ते प्राहुः। यदि श्रीसिद्धराजः सहायीभवति  
तदा कतिपयैरेव दिनैः पञ्चाङ्गमपि नूतनं व्याक-  
रणं रचयामः ॥ अथ नृपेण प्रतिपन्नमिदं निर्वह-  
णीयमित्यभिधाय तद्विसृष्टाः सूरयः स्वं स्थानं य-  
युः । ततो यशोवर्मराज्ञः करं निःप्रतीकारां क्षुरीं

समोजने पूर्वपरिचितवेद्यागृहे कामनिग्रहः । परं किं क्रियते भवद्वल्ल-  
भाः । राज्ञोक्तं । आचार्या अत्र समेप्यन्ति तदा वक्तव्यं परोक्षे न ।  
सूरिपुत्रागतेषु राज्ञोक्तं । किं वाचयन्तो वर्तन्ते यूयं । सूरिभिः समग्र-  
मपि संक्षेपतः स्थूलभद्रचरितं कथितं । आलिगेनोक्तं । महाराज ,  
विश्वामित्रपराशरप्रभृतयो ये चाम्बुपत्राशिनः—

स्तेपि स्त्रीमुखपङ्कजं सुललितं दृष्ट्वैव मोहं गताः ।

आहारं सघृतं पयोदाविषुतं भुजन्ति ये मानवाः—

स्तेषामिन्द्रियनिग्रहः वधमहो दम्भः समालोक्यताम् ॥ १

गुणभिरुक्तं । सिंहो बलीयो द्विरद<sup>१</sup> इत्यादि •

आलिगेनोक्तं । अस्माकमेव शास्त्राणि पठित्वास्माकमेव पतयः संजाताः।

गुरुभिरुक्तं । जैनेन्द्रव्याकरणं किं भवदीयं यत्पुरा

(१ सिंहदयश्चिरकाले श्वानस्तु न तथाऽत एव न मैथुने केवलमा-  
हारः कारणं)

समर्प्य तदग्रासने वयं गजाधिरूढाः पुरमध्ये प्रवेशं करिष्याम इति राज्ञः प्रतिश्रवमाकर्ण्य मुञ्जालमन्त्रिणा प्रधानवृत्तिं मुञ्चता किमिति राज्ञा निर्वन्धपट्टेन

मा स्म सन्धिं विजानन्तु मा स्म जानन्तु विग्रहम् ।  
आख्यातं यदि गृण्वन्ति भूपास्तेनैव पण्डिताः ॥१॥

इति नीतिशास्त्रोपदेशात्स्वबुद्धयैव स्वामिना प्रतिज्ञातोयमर्थः सर्वथायतौ न हित इत्युक्तं । ततो वरमसून्परिहरामि न तु विश्वविदितं प्रतिश्रवमिति नृपेणोक्ते मन्त्री दासमयीं क्षुरिकां पाण्डुवर्णसर्जरसेन पिहितां पृष्ठासनस्यस्य यशोवर्मणः करे समर्प्य तदग्रासनस्थो नृपतिः श्रीसिद्धराजः परमोत्सवेन श्रीमदणहिल्लपुरं प्रविवेश । प्रावेशिकमङ्गलानन्तरं नृपेण स्मारिते व्याकरणवृत्तान्ते बहुभ्यो देशेभ्यस्तद्देदिभिः पण्डितैः सह सर्वाणि व्याकरणानि समानीय श्रीहेमाचार्यैः श्रीसिद्धहेमाभिधानं पञ्चाङ्गमपि व्याकरणं सपादलक्षग्रन्थप्रमाणं संवत्सरेण रचयांचक्रे । राजवाह्यकुम्भिकुम्भे

१ [ पण्डितपक्षे राजपक्षे च प्रामिद्वोर्यः ] २ C विश्रुत प्रतिश्रुत

३ C D क्षुरिका. ४ B C व्याकुलतानन्तर.

तत्पुस्तकमारोप्य सितातपवारणे ध्रियमाणे चाम-  
 रग्राहिणीचामरयुग्मवीज्यमानं नृपमन्दिरमानीय  
 प्राज्यवर्यपूजापूर्वं कोशागारे न्यधीयत । ततो  
 राजाज्ञयान्यानि व्याकरणान्यपहाय तस्मिन्नेव  
 व्याकरणे सर्वत्राधीयमाने केनापि मत्सरिणा  
 भवदन्वयवर्णना विरहितं व्याकरणमित्युक्ते श्री-  
 हेमाचार्यः क्रुद्धं राजानं राजमानुषादवगम्य द्वा-  
 त्रिंशच्छ्लोकान्नूतनान्निर्माय द्वात्रिंशत्सूत्रितपादेषु  
 तान्संवन्धं दधानानेव लेखयित्वा प्रातर्नृपसभा-  
 यां वाच्यमाने व्याकरणे चौलुक्यवंशोपश्लोककेन  
 श्लोकान्वाचयन्नृपं संतोषयामास ॥ यथा ॥

हरिरिव बलिवन्धकरस्त्रिशक्तियुक्तः पिनाकपाणिरिव ।  
 कमलाश्रयश्च विधिरिव जयति श्रीसूलराजनृपः १

इत्यादि३॥ तथा च श्रीसिद्धराजदिग्विजयवर्णने  
 द्वयाश्रयनामा ग्रन्थः कृतः ॥

भ्रातः संवृणु पाणिनि प्रलपितं कातन्तकन्धा वृथा  
 मा कार्षीः कटु शाकटायन वचः क्षुद्रेण चान्द्रेण  
 किम् -

कः कण्ठाभरणादिभिर्विटरयत्यात्मानमन्यैरपि

१) संक्षेपान् २) चौलुक्यवंशोपश्लोकान् द्वात्रिंशत्सूत्रपादान्तेषु द्वात्रिंशत्  
 श्लोकान्वाचय प्रगृहीतो राजा व्याकरणं विस्तारयामास. (३ मूर्तयाते)

श्रूयन्ते यदि तावदर्थमधुराः श्रीहेमचन्द्रोक्तयः ॥१॥  
 अथ श्रीसिद्धराजेन पत्तने यशोवर्मराज्ञस्त्रिपुरुषप्रभृती-  
 न्सर्वानपि राजप्राप्तादान्सहस्रलिङ्गप्रभृतीनि च धर्म-  
 स्थानानि दर्शयित्वा प्रतिवर्षं देवदायपदे कोटिद्रव्य-  
 व्ययं निवेद्यैतत्सुन्दरमसुन्दरं वेति यशोवर्मा पृष्ट इ-  
 त्यवादीत् । अहं ह्यष्टादशलक्षप्रमाणमालवदेशाधिप-  
 स्त्वत्तः पराभवपात्रं कथं भवेयं, परं महाकालदेवस्य  
 दत्तपूर्वत्वादेवद्रव्यं मालवकः । तद्भुञ्जानास्तत्प्रभा-  
 वादुदितास्तामिता वर्त्तामहे । भवदीयान्वयराजानोऽ-  
 प्येतावद्देद्रव्यव्ययनिर्वाहाक्षमो लुप्तसर्वदेवदायपदा-  
 विपदां पदं भविष्यन्ति । अथ सिद्धराजः कदा-  
 पि सिद्धपुरे रुद्रमहाकालप्रासादं कारयितुकामः  
 कमपि स्थपतिं स्वसंनिधौ स्थापयित्वा प्रासाद-  
 प्रारम्भलग्ने तदीयकलासिकां लक्षद्रव्येणोत्तमर्ण-  
 हीतां मोचयामास । तां वंशशलाकामयीमालोक्य  
 किमेतदिति राजा पप्रच्छ । ततो मया प्रभो रौदार्य-  
 परिक्षानिमित्तमेतत्कृतमिति स्थपतिरुक्तवान् । तत-  
 स्तद्रव्यमनिच्छतेऽपि नृपतिनार्पितं । ततः क्रमेण

१ C वदार्पयित्वा. २ देवद्रव्यव्ययमनिर्दहन्तो. ३ मूलनाशं वि-  
 नश्यन्ति. ४ तद्रव्यप्रत्यर्पणापूर्वं.

त्रयोविंशतिहस्तप्रमाणे परिपूर्णं प्रासादेऽश्वपतिगज-  
 पतिनरपतिप्रभृतीनामुत्तमभूपतीनां मूर्त्तौः कारयि-  
 त्वा तत्पुरो योजिताञ्जलिं स्वां मूर्त्तिं निर्माप्य देशभ-  
 ज्ञेऽपि प्रासादस्याभङ्गं याचितवान्। तस्य प्रासादस्य  
 ध्वजारोपप्रस्तावे सर्वेषामपि जैनप्रासादानां पता-  
 कावरोहं कारितवान्। यथा मालवकदेशे महा-  
 कालवैजयन्त्यां सत्यां जैनप्रासादेषु न ध्वजारोप  
 इति। अन्यदा सिद्धराजस्य मालवकमण्डलं प्रति  
 धियासतः केनापि व्यवहारिणा सहस्रलिङ्गकर्म-  
 स्थाये याच्यमाने विभागे तत्सर्वथाऽदत्ते च  
 कृतप्रयाणस्य कतिपयदिनानन्तरं कोशाभावा-  
 त्कर्मस्थायस्य विलम्बमवगम्य तेन व्यवहा-  
 रिणा सुतस्य पार्श्वात्कस्यापि धनाधिपस्य  
 'वध्वास्ताडङ्कुमपहार्य' तद्वण्डपदे द्रव्यलक्षत्रयं द-  
 दत्तं तेन कर्मस्थायः स जात इति वार्त्ता शृण्वतो  
 मालवके वर्षाकालं तस्थुषो राज्ञो वचनगोचरा-  
 तीतः प्रमोदः संजातः। अथ प्रावृषेण्ये घने प्रगल्भ-  
 वृष्ट्या क्षोणीमेकार्णवां कुर्वति वर्द्धापनिकाहेतोः  
 प्रधानपुरुषैः प्रहितः मरुदेशीयपुरुषो नृपतिपुरतः



सविस्तरं वर्षास्वरूपं व्यञ्जयत् । तदा त्वागतेन-  
गूर्जरधूर्त्तेण नरेण सहस्रलिङ्गसरोभृतमिति स्वा-  
मिन् वर्द्धाप्यसे<sup>१</sup> इति तद्वाक्यानन्तरमेव सिक्क-  
पतितमार्जारस्येव मरुवृद्धस्य पश्यतः सर्वाङ्गुलम्  
माभरणं नृपतिर्गूर्जराय ददौ । अथ वर्षान्तरं  
प्रत्यावृत्तः क्षितिपतिः श्रीनगरमहास्थाने दत्तावासे<sup>२</sup>  
नगरप्रासादेषु ध्वजस्यालोके<sup>३</sup> के एते प्रासादा इति  
ब्राह्मणान्पप्रच्छ । तैर्जिनब्रह्मादीनां प्रासादस्वरूपे  
निवेदिते सामर्षो राजा मया गूर्जरमण्डले जैन-  
प्रासादानां पतकासु निपिद्धासु किं भवतामिह नगरे  
पताकावज्जिनायतनमित्यादिशंस्तैर्विज्ञपयांचक्रे ।  
अवधार्यतां श्रीमन्महादेवेन । कृतयुगप्रारम्भे महा-  
स्थानमिदं स्थापयता श्रीऋषभदेवनाथश्रीब्रह्मप्रा-  
सादयोः सुकृतिभिरुद्द्वियमाणयोश्चत्वारो युगा व्य-  
तीताः । अन्यच्च श्रीशत्रुञ्जयमहागिरेर्नगरमिदमुपत्य-  
काभूमिः । यतो नगरपुराणे उक्तं ॥

पञ्चाशदादौ किल मूलभूमे—

दर्शोर्ध्वभूमेरपि विस्तरोऽस्य ।

१ A B C वर्द्धाप्यसे २ B मध्वरचनादृतमर्वावमरस्तत्र

३ C ध्वजमजमालोक्य

१५२ प्रबन्धचिन्तामणिः सर्ग. ३.

उच्चत्वमष्टैव तु योजनानि

मानं वदन्तीह जिनेश्वराद्रेः ॥ १

इति कृतयुगे आदिदेवश्रीऋषभस्तत्सूनुभरत-  
स्तन्नाम्ना भरतखण्डमिदं प्रततिम् ॥

\*नाभेः सुतः स वृषभो मरुदेविसूनु-

र्यो वै चचार समदृग् मुनियोगचयम् ।

तस्यार्हसत्यमृषयः<sup>१</sup> पदमामनन्ति

स्वच्छः प्रशान्तकरणः समदृक् सुधीश्च<sup>२</sup> ॥ १ ॥

\*अष्टमो<sup>३</sup> मरुदेव्यां तु नाभेर्जात उरुक्रमः ।

दर्शयन्वर्त्म धीराणां सर्वाश्रमनमस्कृतम् ॥ ३ ॥

इत्यादिपुराणोक्तान्युदीर्य विशेषप्रत्ययाय श्री-  
वृषभदेवंप्रासादकोशाच्छ्रीभरतभूषणामाङ्कितं प-  
ञ्चचजनवाह्यं कांस्यतालमानीय नृपाय दर्शय-  
न्तो जिनधर्मस्पाद्यत्वं स्थापयामार्सुः । ततः स्वे-

• श्रीभागवतपुराणे स्कन्ध. २ अ. ७ श्लो. १० मुद्रिते असा-  
वृषभ आस सुदेविसूनुः । यत्पारमहस्यमृषयः । इति पाठौ ॥

• तत्रैव स्कन्धः १ अ. ३ श्लो. १३ अष्टमे मरुदेव्यामिति पाठः ।

१० इति. २ A B अथो ३ A B D आर्हितश्च ऋषयः  
४ D सुधीः म. ५ अष्टमे ६ C D कृतः ७ यथावास्थेततदाद्य-  
त्यस्थापनाय श्रीऋषभः ८ D द्विजा जैनधर्मस्याद्यधर्मत्वं स्थापयाचक्रुः

दमेदुरमनसा राज्ञा हायनान्ते जैनप्रासादेषु ध्वजा-  
रोपः कारितः । अथ श्रीपत्तने प्राप्तो नृपः । प्रस्ता-  
वे सरोवरपेदपु वाच्यमानेषु सापराधव्यवहारि-  
सुतदण्डपदाल्लक्षत्रयं कर्मस्थायि व्यवकलितमिति  
श्रुत्वा लक्षत्रयं तस्य गृहे प्रस्थापयामास । ततः स  
व्यवहारी, उपायनपाणिर्नृपोपान्तमुपेत्य किमेत-  
दिति विज्ञपयन् राज्ञादिष्टः । यः कोटिध्वजो व्य-  
वहारी स कथं ताडङ्गचौरस्त्वयाऽस्य धर्मस्थानस्य  
धर्मविभागः प्रार्थितोपि यन्न लब्धस्ततः प्रपञ्चचतु-  
रेण मृगमुखव्याघ्रेणान्तःशेठेन प्रत्यक्षसरलेन त्व-  
येदं कर्म निर्मितम् ॥ यतः

परोक्षे कार्यहन्तारं प्रत्यक्षे प्रियवादिनम् ।

वर्जयेत्तादृशं मित्रं विपकुम्भं पयोमुखम् ॥ १ ॥

मुखं पद्मदलाकारं वाचश्चन्दनशीतलाः ।

हृदयं कर्तरीभूतमेतद्धूर्तस्य लक्षणम् ॥ २ ॥

यस्यान्तर्गिरिशार्ङ्गदीपिकाः प्रतिविम्बिताः ।

शोभन्ते निशि पातालव्यालमौलिमणिश्रियैः ॥ ३ ॥

( १ आयव्ययावशिष्टाह्वेषु ) ३ C D सरोवरकर्मस्थायत्रपेदपु  
( ३ कार्यस्थाने कारस्ताना मापायाम्. ४ श्मशान ५ मणानां श्रीरिवश्री-  
र्यास्ताताः निशातुल्ये राज्ये शोभन्ते न तु दिवस्तुल्ये मद्राज्ये इति भावः )

१५४ प्रबन्धचिन्तामणिः सर्गः ३

इत्यादि वाक्यैर्भृशं खण्डितः

एकदा श्रीसिद्धेन रामचन्द्रः पृष्टो । ग्रीष्मे दि-  
वसाः कथं गुरुतराः । रामचन्द्रः ग्राह ।

देव श्रीगिरिदुर्गमल्ल भवतो दिग्जैत्रयातोत्सवै  
धावद्वीरतुरङ्गवल्गनखुरक्षुण्णक्षमामण्डली ।

वातोद्धूतरजोमिलत्सुरसरित्संजातपङ्कस्थली-  
दूर्वाचुम्बनचञ्चुरा रविहयास्तेनैव वृद्धं दिनम् ॥१॥

लब्धलक्षा विपक्षेषु विलक्षास्त्वयि मार्गणाः ।

तथापि तव सिद्धेन्द्र दातेत्युत्कन्धरं यशः ॥ २ ॥

अथ कदाचिद्राज्ञा ग्रथिलाचार्या जयमङ्गलसू-  
रयः पुरवर्णनं पृष्ट्वा ऊचुः ॥

एतस्यास्य पुरस्य पौरवनिताचातुर्यतानिर्जिता  
मन्ये हन्त सरस्वती जडतया नीरं वहन्ती स्थिता ।

कीर्तिस्तम्भमिपोच्चदण्डरुचिरामुत्सृज्य बाहोर्बला-  
त्तन्त्रीकां गुरुसिद्धभूपतिसरस्तुम्बां निजां कच्छ-

पीम् ॥ १ ॥

अन्यच्च

महालयो महायात्रा महास्थानं महासरः ।

यत्कृतं सिद्धराजेन धरिण्यां तत्करोतु कः ॥ १ ॥

॥ अथ श्रीपालकविना सहस्रलिङ्गसरोवरस्य

रचितायां प्रशस्तिपट्टिकायामुत्कीर्णायाम् ।

तत्स्थकाव्यमिदम् ।

न मानसे मायति मानसं<sup>१</sup> मे

पम्पा न संपादयति प्रमोदम् ।

अच्छोदकाच्छोदकैर्मत्र सारं

विराजते कीर्तितसिद्धि भर्तुः ॥ १ ॥

तत्प्रशस्तिशोधनाय सर्वदर्शनेष्वाहूयमानेषु श्री-  
हेमचन्द्राचार्यैः सर्वविद्वज्जनानुमते प्रशस्तिकाव्ये  
भवता वैदग्ध्यं किमपि न प्रकाशयमित्युक्ता पण्डित-  
रामचन्द्रोनुशिष्यस्तत्र ग्रहितः । ततः सर्वविद्वद्भिः  
शोध्यमानायां प्रशस्तौ नृपोपरोधाञ्ज्जीपालकवेद-  
द्वयदाक्षिण्याच्च सर्वेषु काव्येषु मन्यमानेषु ॥

कोशेनापि युतं दलैरुपचितं नोच्छेत्तुमेतत्क्षमं  
स्वस्यापि<sup>२</sup> स्फुटकण्टव्यतिकरं पुंस्त्वं च धत्ते नाहि ।  
एकोप्येव करोति कोशरहितो निष्कण्टकं भूतलं  
मत्तैवं कमला विहाय कमलं यस्यासिमाशिश्चिद्यत्<sup>३</sup>

विशेषणास्मिन्काव्ये प्रशस्यमाने श्रीसिद्धराजे-

(१) मानसमरो मनसि न हर्षं करोति २ अच्छोदकनामरात्मरगो नि-  
र्ममोदक) ३ B अनुशिष्यः (४ अतिपशे नमयते वा मन्त्रैः पञ्चैश्च)

न पृष्टः श्रीरामचन्द्रश्चिन्त्यमेतदित्यवादीत् अथ  
तैरेव सर्वैरनुयुक्तः, एतस्मिन्काव्ये सैन्यवाचको द-  
लशब्दः कमलशब्दस्य नित्यत्क्लीवत्वमिति दूषणद्वयं  
चिन्त्यं। ततः सर्वानपि पण्डितानुपरोध्य दलशब्दो  
राजसैन्यार्थे प्रमाणीकारितः कमलशब्दस्य तु लि-  
ङ्गानुशासनसिद्धं नित्यत्क्लीवत्वं केन निर्णीयतं  
इति पुंस्त्वं च धत्ते न वेत्यक्षरभेदः कारितस्तदा  
श्रीसिद्धराजस्य संजातदृष्टिदोषेण पं०रामचन्द्रस्य  
वसतौ प्रविशत एव लोचनमेकं स्फुटितम् ॥

अथ कदाचित् ॥

आयुक्तः प्राणदो लोके वियुक्तो मुनिवल्लभः ।

संयुक्तः सर्वधानिष्टः केवली<sup>३</sup> स्त्रीषु वल्लभः ॥ १

इति डाहलदेशीयनरपतियमलपत्रान्ते लिखि-  
तश्लोकव्याख्यानावसरे तूष्णींस्थितेषु पण्डिते<sup>४</sup>-

१ A B D प्रमाणीकृतः २ A निर्णीयते ३ A C श्रमणामियः।

प्रयुक्तः सर्वविद्विष्टः केवलः D ४ सन्धियिग्रहिकैरानीतयमलपत्रेषु  
श्लोकमेवं लिखितं निशम्य किमेतदिति पृष्टास्ते प्राहुः । तवैकैकप्रधा-  
ना भूयांसो विद्वांसस्तत्पार्श्वद्विर्वाधोऽयं श्लोको व्याख्येय इति तद्वा-  
चमाकर्ण्य सर्वैरपि विद्वद्भिरज्ञाततदर्थैर्विमृशद्भिर्नृपेण पृष्टा हेमाचार्या  
हारशब्दमव्याहार्यं व्याचक्षुः

पु श्रीहेमचन्द्राचार्यै राज्ञा पृष्टैर्हारशब्दमध्याहार्य  
व्याख्यातः । अन्यदा सपादलक्षक्षितिपतिना ।

\*पडली ताव न अणुहरइ गोरीमुहकमलस्स ।

इति समस्या दोधकार्दं प्रहिते तैः कविभिर-  
पूर्यमाणे ।

\*अदिठी किमु उम्मीयइ पडिपयलीं चन्दस्स ॥१॥

इति श्रीहेमचन्द्रनामा मुनीन्द्रस्तां पूरयामास ॥

अन्यदा श्रीसिद्धराजो नवघणाभिधानमाभीरराण-  
कं निगृहीतुकामः पुरैकादशवारं निजसैन्यैः पराजिते  
सति श्रीवर्द्धमानादिपु पुरेषु प्राकारं<sup>१</sup> निर्माप्य स्वय-  
मेव प्रयाणकमकरोत् । तद्भागिनेयदत्ते संकेते सति  
वप्रपरावर्त्तकालेयं द्रव्यव्यापादित एव करणीयो नव-  
घनो न पुनरस्त्रादिभिरिति परिग्रहदत्तान्तरस्थः सः  
विशालाच्छालाद्बहिरारुण्य द्रव्यवासणैरेवं ताडयि-

(१ आहारः विहारः सहारः हारः)

• प्रतिपच्चन्द्रज्योत्स्ना तावन्नानुसरति गौरीमुखकमलं ॥

• अदृष्टा किमून्मोयते प्रतिप्रतिपच्चन्द्रज्योत्स्ना चन्द्रस्य, ॥१॥

(प्रथमरूपाऽदर्शनादेव प्रतिप्रच्छब्देन द्वितीया लक्ष्यते)

१. A B ओलीतावनु अहरइ अदिठी किमन्नियइ D किमन्नोयइ  
ताडिपयली पडिपडली. १ प्राकारप्रकारं निरूप्य. ४ A तद्भागिनेयेन

५. A B इति याचिते राज्ञा जयार्तिहृदेवेन स शान्तात् (१ भाण्डैरेव)

त्वा व्यापादितेः । अयं द्रव्यव्यापादित एव कृत  
इति वचनविज्ञापनात् परिग्रहो<sup>१</sup> बोधितः ।

अथ तद्राज्ञ्याः शोकपतिताया वाक्यानि ॥

\*सइरू नही स राणई कुलाईउ नकुलाई इ ।

सइ सउ पङ्गारिहिं प्राणकइ वइसानरि होमीई ॥१॥

\*राणा सवे वाणिया जेसलु वइउ सेठि ।

काहूं वणिजडु माण्डीयउ अम्मीणां गढेहेठि ॥२॥

\*तइ गडूआ गिरनार काहूं मणि मत्सरु धरिउ ।

मारीतां पङ्गार एकासिहरु न ढालिउं ॥३॥

\* हे सख्यः नायं स राणकः न च कुलानि किं तु नकुलान्येव  
सत्यः सर्वाः खेङ्गेरो नहि किंतु अङ्गारस्तत्र वैश्वानरे प्राणान् आहुती-  
कुर्मः १ ।

\* राणकाः सर्वे वाणिजः यथा जेसलाख्यो महान् श्रेष्ठी अहो  
कथं वाणाज्यं मण्डितं अस्माकं दुर्गाधः अस्मदर्थे भाण्डवाज्यमारब्धं किं  
स्वामिनेत्युत्प्रेक्षा २ ।

\* हे गिरिनार हे रैवतक यूय गुरवः कथं तदा, यदा मनास म-  
त्सरं धरन्तः एवं न चेत्तर्हि मृतेषु खेङ्गारे एकशिखरमपि नाधो  
ढौकितं मृते स्वामिन्पुत्रताशिरस्त्वं न शोभेत इत्युपालम्भः ॥ ३ ॥

१ B तं व्यापादयामास २ C इति वचनबलात्तद्वाग्निनेयपरिग्रहः  
३ सयरू नहि स राण ४ न कुलाई न कुलाई ५ सई सउ पगारिहिं  
पाण किनवइसारि होमिया ६ अम्मीणां.



\*जेसल मोडि मवाह वलिवलि विरूपं भावीयइ ।  
नइ जिम नवा प्रवाह नदधणं विणु आवइ नहिः  
\*वाढी तो वढवाणं वीसारतां न वीसरइ ।  
सोनासमा पराण भोगावह तइं भोगवीइ ॥ ५

इत्यादीनि बहूनि वाक्यानि यथावसरं मन्तव्या-  
नि ॥ ततो महं० जाम्बवान्वयस्य सज्जनदण्डाधिपतेः  
श्रीसिद्धराजेन योग्यतया सुराष्ट्रविषये व्यापारो नि-  
युक्तः । तेन स्वामिनमविज्ञाप्य वर्षत्रयोद्गाहितेन  
श्रीमदुज्जयन्ते श्रीनेमीश्वरस्य काष्ठमयं प्रासादम-  
पनीय नूतनः शैलमयः प्रासादः कारितः । चतुर्थे  
वर्षे सामन्तचतुष्टयं प्रस्थाप्य सज्जनदण्डाधिपतिं  
श्रीपत्तने समानीय राज्ञा वर्षत्रयोद्गाहितद्रव्यं याचि-

• जेसलारूपं यच्छैलारूपं वा मम मया मुक्तं वा देशस्थानं पुनः  
पूर्नविरूपं भाव्यते । पक्षे यः शैलं मर्दयित्वाप्यागतः प्रवाहो यत्र सा  
नदी नयनं नवीनमेव पक्षे राजानं विना नवीना पूर्णशोभावहा नास्ति  
किं तु विरूपा यथा ॥ ४ ॥ !

• नृश्रितोपि वर्द्धितोऽत एव तव नामे वर्द्धमानमाम इति सत्यं  
एतद्विस्मारितमपि न विस्मरिष्यति कथं तदेवाह यतः सुवर्णरात्रयः  
प्राणाः भोगावर्त्तनेनैव मुक्ताः ततस्तत्रापि सत्यं नाम ॥ ५ ॥ !

१ C वरुण २ नयण विण आवि नही ३ B वाढी तरउं वढमाण  
४ मूना ५ C भोगावह पइं भोगिध्या ६ D मयनदण्ड. ७ सुराष्ट्रा.

तः । तद्देशव्यवहारिणां पार्श्वात्तावद्रूपमुपदौक्यो-  
जयन्तप्रासादजीर्णोद्धारपुण्यमुद्गाहितद्रव्यं वा द्वयो-  
रेकमवधारयतु देवः । इति तेनोक्ते श्रीसिद्धराज-  
स्तद्बुद्धिकौशल्यचमत्कृतस्तीर्थोद्धारपुण्यमेवोररी-  
चकार । स पुनस्तस्य देशस्याधिकारमाधिगम्य  
शत्रुंजयोज्जयन्ततीर्थयोर्द्वादशयोजनयोर्वावदुकूलम-  
यं<sup>१</sup> महाध्वजं ददौ ॥

इति रैवतकोद्धारप्रबन्धः ॥

अथ भूयः सोमेश्वरयात्रायाः प्रत्यावृत्तः श्री-  
सिद्धाधिपो रैवतोपत्यकायां दत्तावासस्तदैवस्त-  
त्कीर्त्तनं दिदृक्षुः मत्सरोत्सेकपरौर्द्विजन्माभिः सजला-  
धारलिङ्गाकारोयं गिरिरित्पत्र पादस्पर्शं नार्हतीति  
कृतकवचनैर्निपिद्धस्तत्र पूजां प्रस्थाप्य स्वयं शत्रुं-  
जयमहातीर्थसन्निधौ स्कन्धावारं न्यधात् । तत्र पू-  
र्वोक्तैर्जातिपिशुनैः कृपाणिकापाणिभिरकृपैस्तीर्थमार्गे  
निरुद्धे सति श्रीसिद्धाधिपो रजनीमुखे कृतकार्प-  
टिकवेद्यैः स्कन्धनिहितविहङ्गिकोभयपक्षन्यस्तग-  
ङ्गेदिकस्तन्मध्येभूत्वाऽपरिज्ञातस्वरूप एव गिरिमधि-

१ A B द्वादशयोजनायामं २ स्वं ३ D प्राकृतवेदः ४ उभ-  
यतो बद्धशिक्य. पर्याहार्यो भारो यत्र गर्गरिकादौ । विहङ्गिवेत्युच्यते

रुह्य गङ्गोदकेन श्रीयुगादिवेवं स्तपयन् पर्वतस-  
मीपवर्त्तिग्रामद्वादशकशासनं श्रीदेवार्चायै वि-  
श्राणयामास । तीर्थदर्शनाच्चोन्मुद्रितलोचन इवा-  
मृताभिषिक्त इव जातः । अत्र पर्वते सह्यकीवनसरि-  
त्पूरसंकुले इहैव विन्ध्यं करिष्यामीत्यवन्ध्यप्रतिज्ञो,  
हस्तियूथनिष्यत्तये विहस्तमनसं मनोरथेनापि तीर्थ-  
विध्वंसपातकिनं धिग्मामिति श्रीदेवपादानां पुरतो  
राजलोकविदितं स्वं निनिन्द । सानन्दो गिरेरवत-  
तार ॥ अथ श्रीदेवसूरिचरितं व्याख्यास्यामः ॥

तस्मिन्नवसरे कुमुदचन्द्रनाम्ना दिगम्बरस्तेषु दे-  
शेषु चतुरशीतिवादैर्वादिनो निर्जित्य कर्णाटदेशाद्गु-  
र्जरदेशं जेतुकामः कर्णावतीं प्राप । तत्र भट्टारकश्री-  
देवसूरीणां चातुर्मासके स्थितानां श्रीअरिष्टनेमिग्रा-  
सादे धर्मशास्त्रव्याख्याक्षणे वचनचातुरीमनुच्छिष्टा-  
माकर्ण्य तत्पण्डितैस्तद्बृत्तान्ते निवेदिते कुमुदच-  
न्द्रस्तेषामुपाश्रये सत्पण्डितमुदकं प्रक्षेपितवान् । अथ  
तैर्महर्षिभिः पण्डितैः खण्डनतर्कादिप्रमाणप्रवीणै-  
स्तस्मिन्नर्थेऽनाकर्णिततयाऽवज्ञाते सति श्रीदेवा-

१ C विन्ध्यवनं रचयिष्यामीति. २ (व्याकुलचित्तं ३ शान्त्याचा-  
र्यकृतोत्तराध्ययनवृत्तौ]

चार्यजामिं तपोधनां चेटकैराधिष्ठितां विधाय नृ-  
त्यजलानयनादिभिर्विविधाभिर्विडम्बनाभिर्विडम्ब्य  
तेषु चेटकेषुपट्टेषु तान् भृशं पराभवान्निर्भर्त्स-  
नपरानपचार्य<sup>१</sup> श्रीदेवसूरिभिरुक्तं वादविद्याविनो-  
दाय भवता पत्तने गन्तव्यं । तत्र राजस-  
भायां भवता सह वादं करिष्याम इत्यादिष्टे  
स कृतकृत्यमनाः स आशावासनः श्रीपत्तन-  
परिसरं प्राप्तः । श्रीसिद्धराजेन मातामहगुरुरिति  
प्रत्युद्गमादिना सत्कृतस्तत्रावासान्दत्वा तस्थौ -  
श्रीसिद्धराजेन वादनिष्णाततां पृष्टाः श्रीहेमाचार्या-  
श्चतस्तपु विद्यासु परं प्रावीण्यं विभ्राणं जैनमुनि-  
गजयूथाधिपं सिताम्बरशासनवज्रप्राकारं नृपस-  
भाशृङ्गारहारं कर्णावतीस्थितं श्रीदेवाचार्यं वाद-  
विद्याविदं वादीभकण्ठीरवं प्राहुः । अथ राजा तदा-  
ब्रह्मनाय प्रेषितविज्ञप्तिकायां श्रीसंघलेखेन सममा-  
गतायां श्रीदेवसूरयः पत्तनं प्राप्य नृपोपरोधाद्वाग्दे-  
वीमाराधयामासुः । तथा तु वादिवेतालीयश्री-  
शान्तिसूरिविरचितोत्तराध्ययनवृहद्वृत्तौ दिगम्बर-  
वादस्थले चतुरशीतिविकल्पजालोपन्यासे भवद्भिः

प्रतन्यमाने दिग्वाससो मुखे मुद्रापयिष्यन्तीत्या-  
देशानन्तरं गुप्तवृत्त्या कुमुदचन्द्रसन्निधौ पण्डितान्प्र-  
स्थाप्य कस्मिन् शास्त्रे विशेषकौशलमिति ज्ञापिते ।  
देवादेशाय किं करोमि सहसा लङ्कामिहैवानये  
जम्बूद्वीपमितो नयेयमथवा वारांनिधिं शोपये ।  
हेलोत्पाटिततुङ्गपर्वतशिरोयावत्रिनेत्राचल<sup>३\*</sup>—

क्षेपक्षोभविबर्द्धमानसलिलं वध्नामि वा वारिधिम्<sup>१</sup>  
इति तदुक्तिश्रवणात्सिद्धान्तकुशलतां तस्या-  
ल्पीयसीमवगम्य जितं मन्यमानाभ्यां श्रीदेवचार्य-  
श्रीहिमचन्द्राभ्यां प्रमुदितं । अथ देवसूरिप्रभो रत्न-  
प्रभाभिधानः प्रथमशिष्यः क्षपामुखे गुप्तवेपथया  
कुमुदचन्द्रस्य गुरुदरे गतः । तेन कस्त्वमित्यभि-  
हिते अहं देवः । देवः कः । अहं । अहं कः । त्वं ।  
त्वं कः । श्वा । श्वा कः । त्वं ॥ कः अहं देव इति  
तयोरुक्तिप्रत्युक्तिवन्धे चक्रभ्रमं भ्रमति, आत्मानं  
देवं दिगम्बरं श्वानं च संस्थाप्य यथागतं जगाम ॥  
तेन चक्रदोषप्रादुष्करणेन विपादनिपादस्तंपर्कात् ।  
हंहो श्वेतपटाः किमेव विकटाटोपोक्तिसंटाङ्कितैः

१ D देवाज्ञापय. २ C अथानये किं ३ विन्ध्यमन्दरहिमस्वर्णात्रिकूट-  
चल. \* [ त्रिनेत्रस्य शिवस्याचलो हिमवान् ] ४ D वारांनिधिं

१६४ प्रबन्धचिन्तामणिः सर्गः ३

संसारावटकोटरेऽतिविकटे मुग्धो जनः पात्यते ।  
तत्त्वातत्त्वविचारणासु यदि वो हेवाकलेशस्तदा  
सत्यं कौमुदचन्द्रमाङ्घ्रियुगलं<sup>१</sup> रात्रिदिवं ध्यायत ॥ १ ॥

इमां तदुचितां कवितां निर्माप्य समादाय कु-  
मुदचन्द्रः श्रीदेवसूरीन्प्रति प्राहिणोत् ।

तदनु तच्चरणपरमाणुर्बुद्धिवैभवावगणितचाणाक्यः  
पण्डितमाणिक्यः ।

कः कण्ठीरवकण्ठकेसरसटाभारं स्पृशत्यङ्घ्रिणा ।

कः कुन्तेन शितेन नेत्रकुहरे कण्डूयनं काङ्क्षति ।

कः सन्नहति पद्मेश्वरशिरोरत्नावतंसीश्रये

यः श्वेताम्बरशासनस्य कुरुते वन्द्यस्य निन्दामि-

माम् ॥ १ ॥

अथ रत्नाकरपण्डितः ॥

\*नग्नैर्निरुद्धा युवतीजनस्य

यन्मुक्तिरत्र प्रकटं हि तत्त्वम् ।

तत्किं वृथा कर्कशतर्ककेलौ

तवाभिलाषोयमनर्थमूलः ॥ २ ॥

१ (यथा केनापि स्वयं नग्नैर्निरुद्धायै तरुण्यै कर्कश  
क्रीडाभिलाषः क्रियते सत्यं सोऽनर्थमूल इति समासोक्तयलद्वारः  
अभ्यासलेशः) २D अंङ्गि.

इति कुमुदचन्द्रं प्रति सोपहासं प्राहिणोत् ॥  
अथ श्रीमयणल्लदेवी कुमुदचन्द्रपक्षिपातिनी , अ-  
भ्यासवर्त्तिनः सभ्यास्तज्जयाय नित्यमुपरोधयन्तीति  
श्रुत्वा श्रीहिमचन्द्रचार्येण वादस्थले दिगम्बराः स्त्री-  
कृतं सुकृतमप्रमाणीकरिष्यन्ति सिताम्बरास्तं स्था-  
पयिष्यन्तीति तेषामेव पार्श्वात्तद्वृत्तान्ते निवेदिते  
राज्ञी व्यवहाराद्वहिर्मुखे दिगम्बरे पक्षपातमुज्झां  
चकार। अथ भाषोत्तरलेखनाय सुखासनसमासीनः  
कुमुदचन्द्रः पण्डितरत्नप्रभश्चरणचारेणाऽक्षपटले<sup>१</sup>  
समागतौ । तदधिकृतैः ॥

केवलिद्वुडं न भुञ्जइ चीवरसहिअस्स नत्थि-  
निव्वाणं

इत्थी हूया न सिज्झइ ई मयमेयं कुमुदचन्द्रस्स१  
कुमुदचन्द्र इति भाषां लेखयामास । अथ । सिता-  
म्बराणामुत्तरम् ॥

• केवली भूतो न भुञ्जति वस्त्रसाहितस्य नास्ति मोक्षः ।

स्त्री भूता न सिद्धयति मतमेतत्कुमुदचन्द्रस्य ॥ १

१ ० लेखनाय सुखासनसमासीनः कुमुदचन्द्रः पण्डितरत्नप्रभश्च-  
रणचारेण अक्षिपटले सभागती तदधिकृतैः । केवलीत्यादि ०

१६६ प्रबन्धचिन्तामणिःसर्गः ३

केवलं हूयविभुञ्जइ चीवरसहिअस्सअत्थि निव्वाणं  
इत्थी हूयावि सिज्झइ मयमेयं देवसूरीणं॥१॥

इति भाषोत्तरलेखनानन्तरं निष्णीतवादस्थल-  
वासरे श्रीसिद्धराजे समाजमागतवति , पट्टदर्श-  
नप्रमाणवेदिषु सभ्येषु समुपस्थितेषु कुमुदचन्द्र-  
वादी पुरो वाद्यमानजंघीडिण्डिमो ध्रियमाणसि-  
तातपत्रः सुखासनसमासीनः पुरो वंशाग्रलम्बमा-  
नपत्रावलम्बः सिद्धराजसभायां नृपप्रसादीकृतसिं-  
हासने निपताद । प्रभुश्रीदेवसूरयश्च श्रीहेमचन्द्र-  
मुनीन्द्रसहिताः सभासिंहासनमेकमेवालंचक्रुः ।  
अथ कुमुदचन्द्रवादी स्वयं ज्यायान् किंचिद्-  
व्यतिक्रान्तशैशवं श्रीहेमचन्द्रं प्रति पीतं तक्रं  
भवतेत्यभिहिते श्रीहेमचन्द्रस्तं प्रति जरातरलित-  
मते किमेवमसमञ्जसं ब्रूयेत्येतं तक्रं पीता  
हरिद्रेति वाक्येनायःकृतः । युवयोः को वादीति पृ-  
च्छन्, श्रीदेवसूरिभिस्तन्निराकरणायायं भवतः प्रति-  
वादीत्यभिहिते कुमुदचन्द्रः प्राह । मम वृद्धस्यानेन

\* केवली भूतोपि भुञ्जति बह्वसहितस्याप्यास्ति निवार्ण ।

स्त्री भूतापि सिद्ध्यति मतमेतदेवमूरीणां ॥ १

१ D तात्तेरस्करणाय



शिशुना सह को वाद इति तदुक्तिमाकर्ण्यहमेव  
ज्यायान् भवानेव शिशुः योद्यापि कटीदवरकमपि  
नादत्से निवसनं च । इत्थं राज्ञा तयोर्वितण्डायां  
निपिद्धायामित्थं पणवन्धो मिथः समजनि परा-  
जितैः श्वेताम्बरैर्दिगम्बरत्वमङ्गीकार्यं । दिगम्बरैस्तु  
देशत्याग इति निर्णीते पणवन्धादनु स्वदेशकल-  
ङ्कभीरुभिर्देवाचार्यैः सर्वानुवादपरिहारपरैर्देशानु-  
वादपरायणैः कुमुदचन्द्रं प्रति प्रथमं भवान्कक्षीकरो-  
तु पक्षमित्यभिहिते ॥

खद्योतद्युतिमातनोति सविता जीर्णोर्णुनाभालय-  
च्छायांमाश्रयते शशी मशकतामायान्ति यत्राद्रयः ।  
इत्थं वर्णयतो नभस्तव यशो जातं स्मृतेर्गोचरं  
तत्तस्मिन्भ्रमरायते नरपते वाचस्ततो मुद्रिताः ॥१॥

इति नृपं प्रत्याशिपं ददौ । वाचस्ततो मुद्रिता  
इति तदीयापशब्देन सभ्यास्तं स्वहस्तवन्धनमिति  
विमृशन्तो मुमुदिरे ॥ अथ देवाचार्याः ॥

\* नारीणां विदधाति निर्वृतिपदं श्वेताम्बरप्रोल्लस-

१ AC दोरक निवसन २ BC उर्णनाभालयछाया ३ C यस्मिन्

न नारीणां स्त्रीणां जिनशासनपक्षे । अरीणां शत्रूणां नेति राज्यपक्षे  
निर्वृतिं मुख मोक्ष च । नयपथो नीतिमार्गस्तस्य विस्ताररचनास्थान ।

१६८ प्रबन्धचिन्तामणिः सर्ग. ३

स्कीर्तिस्फातिमनोहरं नयपथप्रस्तारभङ्गीगृहम् ।  
यस्मिन्के वलिनो न निर्जितपरोत्सेकाः सदा दान्तिनो  
राज्यं तज्जिनशासनं च भवतेश्चौलुक्य जीयाच्चि-  
रम् ॥ १ ॥

नृपं प्रतीमामाशिपं ददौ॥ अथ वादी कुमुदचन्द्रः  
केवलिभुक्तिस्त्रीनिर्वाणचीरनिराकरणपक्षोपन्यासं  
पारापतविहङ्गमसदृशया स्वालितगिरा<sup>१</sup> प्रारभ-  
माणः सभ्यैरन्तर्विहसद्भिः प्रत्यक्षप्रशंसापरैः पुर-  
स्क्रियमाणः<sup>२</sup> कियदुपन्यासप्रान्ते उच्यतामित्युक्तो  
देवाचार्यः प्रलयकालोन्मीलितप्रचण्डपवनक्षुभि-  
ताम्भोधिनिचितवीचीसमीचीभिर्वाग्भिर्वृहदुत्तराध्य-  
यनवृत्तेश्चतुरशीतिविकल्पजालोपन्यासे प्रक्रान्ते भा-  
स्वहंप्रतिभाप्रसरपरिम्लानायमानकुमुदः कुमुदचन्द्रः  
संभ्रमभ्रान्तचेतास्तद्वचनान्यवधारयितुमक्षमो भूय-

अन्यत्र नैगमादिसप्तनयानां० विनिर्जितः परेषां शत्रूणां च उत्सेक  
ऊन्नत्यमहंकारश्च येः । के पुरुषाः प्रशस्तबलवन्तो न अपि तु सर्वे  
दान्तिनो गजा अन्यत्र केवलिनः केवलज्ञानवन्तो नादन्तीति नो कि  
त्वदान्ति भुञ्जन्त्येव सदा छद्मस्थसाधुवादित्यर्थः ॥ १

१ A C विनिर्जित. , २ A B भवतोः ३ C उपमया स स्व-  
लितस्वालितगिरा ४ B पुरस्क्रियमाणैः (१ तरङ्गोज्ज्वलाभिः)  
६ A उपन्यासप्रक्रमे भ्रश्यत्.

स्तमेवोपन्यासं समभ्यर्थितवान् । सिद्धराजसभ्येषु  
निषेधपरेष्वपि । अप्रमेयप्रमेयलहरीभिस्तं प्रमाणा-  
म्भोधौ मज्जयितुं प्रारब्धे पाडशे दिने आकस्मिके देवा  
चार्यस्य कण्ठावग्रहे मान्तिकैः श्रीयशोभद्रसूरिभिरेतु-  
त्यकुरुकुल्लादेवीप्रसादलब्धवरैस्तत्कण्ठपीठात्क्षणा-  
त्क्षपणककृतकार्मणानुभावात्केशचण्डुकः पातयांच-  
क्रे । तच्चित्रनिरीक्षणाच्चतुरैः श्रीयशोभद्रसूरिभिः श्ला-  
घ्यमानः कुमुदचन्द्रश्चामन्दं निन्द्यमानः प्रमोदविषा-  
दौ दधाते । अथ श्रीदेवसूरिभिरुपन्यासोपक्रमे कोटा-  
कोटिरिति शब्दे प्रोच्यमाने तच्छब्दव्युत्पत्तिं कुमु-  
दचन्द्रे पृच्छति कण्ठपीठे लुठिताष्टव्याकरणः प-  
ण्डितः काकलः टापटीपसूत्रनिष्यन्नं शाकटायन-  
व्याकरणोदितं कोटाकोटिः कोटीकोटिः कोटिको-  
टिरिति सिद्धं शब्दत्रयनिर्णयं प्राह ॥ अथ प्रथमं-  
मेव वाचस्ततो मुद्रिता इति स्वयं पठितामिति  
स्वयमपशब्दप्रभावात्तदा तु प्रादुर्भूतमुखमुद्रः श्रीदे-  
वाचार्येण निर्जितोहमिति स्वयमुच्चरन् श्रीसिद्धरा-  
जेन पराजितव्यवहारादऽपद्वारेणापसार्यमाणः सं-  
भवत्पराभवाविर्भावादुद्विस्फोटं<sup>१</sup> प्राप्य विषेदे ॥

१० वीरसूरिभिश्च. २ कर्मुकानुभावाद्वाहि. केशकण्डुकः ३ उज्ज्वलस्फोट

अनन्तरं तु श्रीसिद्धराजः प्रमोदमेदुरमनाः दे-  
वाचार्यप्रभावप्रभावनाचिकीर्तुर्द्धि धारितासितातपत्र-  
चतुष्टयः प्रकीर्णकप्रकरवीज्यमानः स्वयं दत्तहस्ताव-  
लम्बः पूर्यमाणेषु यमलशङ्खेषु रोषःकुक्षिभरिविभ्रमं  
विभ्रति निःस्वाननिस्वनैः स्फूर्जद्वर्यतूर्यपूर्यमाणदि-  
गन्तराले थाहडनांघ्रोपासकेन लक्षत्रयप्रमितद्रव्य-  
व्ययकृतार्थकृतार्थसार्थं वाविचक्रवार्तिनः पादाव-  
धार्यतामिति स्तुतिव्रातैरमन्दानन्दकन्दकन्दलनका-  
रिणि मङ्गलेमुहुर्मुहुरुच्यमाने श्रीदेवाचार्यान्थाहडेन  
तेनैव कारितप्रासादे श्रीमन्महावीरनमस्करणपूर्वं  
वसतौ प्रावेशयत्। तत्पारितोषके नृपतिः सूरिभ्योऽ  
निच्छन्नोपि छालाप्रभृति ग्रामद्वादशकं ददौ ॥ तदु-  
पश्लोकेन श्लोका एवं ॥

वंस्त्रप्रतिष्ठाचार्याय नमः श्रीदेवसूरये ।

यत्प्रसादमिवाख्याति सुखप्रश्नेषु दर्शनम् ॥ १ ॥

इति श्रीप्रद्युम्नाचार्यः ॥

यदि नाम कुमुदचद्रं नाजेप्यदेवसूरिरहिमरुचिः ।

कटिपरिधानमथास्यत्कतमः श्वेताम्बरो जगति ॥१॥

१ C प्रभावना चिकीर्षुः २ D पूर्यमाणेषु दिगन्तरालेषु ३ D ऊर्ज-  
तूर्य. ४ A थाहड. ५ A B थाहडेन ६ A D प्रावेशयन् ७ दर्शनः

इति हेमाचार्यः ॥

भेजेऽवकीर्णितां\*नम्रः कीर्तिकन्थामुपार्जयन्<sup>१</sup> ।

तां देवसूरिराच्छिद्य तं निग्रन्थं<sup>२</sup> पुनर्व्यधात् ॥१॥

इति श्रीउदयप्रभदेवः ॥

\*वादविद्यावतोऽद्यापि लेखशालामनुज्झतां

देवसूरिप्रभोः साम्यं कथं स्यादेवसूरिणा ॥ १ ॥

इति श्रीमुनिदेवाचार्यः ॥

नम्रो यत्प्रतिभाधर्मात्कीर्तियोगपटं त्यजन् ।

ह्रियेवात्याजि भारत्या देवसूरिर्मुदेऽस्तु वः ॥ १ ॥

सत्रागारमशेषकेवलभृतां भुक्तिं तथा स्थापय-

न्नारीणामपि मोक्षतीर्थमभवत्तद्युक्तियुक्तोत्तरैः ।

यः श्वेताम्बरशासनस्य विजिते नम्रे प्रतिष्ठागुरु-

स्तद्देवाद्गुरुतोऽप्यऽमेयमहिमा श्रीदेवसूरिप्रभुः<sup>३</sup> ॥२॥

\*[क्षतग्रततां, अवकीर्णी क्षतग्रत इत्यमरः]

• मुनिदेवसूरिभूते शान्तिनाथचरित्रे श्लोकबद्धेऽप्ययं श्लोकः १२ ।

देवसूरिणा नृहस्पतिना लेखनशालास्थितेनाद्यापीति विरोधः परिहारस्तु  
लेखना देवानां शाला स्थानं स्वर्गमिति शाला स्थाने सभायां चेतिविश्वः

१ A कण्टामुर्पाज्य यः २ C D निर्ग्रन्थं ३ A B विदः ४ B अ-  
मुधता ५ A धर्मात् ६ C स्वर्गात्तान् गुरुतो D लम्पप्रतिष्ठागुरु-  
श्रीदेवाद्गुरुतः ७ श्रीदेवसूरिः प्रभुः ८ श्रीदेवसूरिप्रभोः

१७२ प्रबन्धचिन्तामणिः सर्ग. ३

इति मेरुतुङ्गसूरिणां द्वयामिति देवसूरीणां प्रबन्धः॥

॥ अथ श्रीपत्तनवास्तव्य उच्छिन्नवंशकः आभ-  
वनामा वणिक्पुत्रः<sup>१</sup> कांस्यकारकहृष्टे घर्षरकघर्षणं  
कुर्वस्तत्र पञ्च विशोपकानर्जयित्वा दिनव्ययं कु-  
र्वाणो द्विसन्ध्यमपि श्रीहेमसूरीणां चरणमूले प्र-  
तिक्रमन्<sup>३</sup> प्रकृतिचतुरतयाऽधीतागस्त्यबौद्धमतादि-  
रत्नपरीक्षायन्थो रत्नपरीक्षकाणां सान्निध्यात्परीक्षा-  
दक्षः कदाचिच्छ्रीहेमचन्द्रसन्निधौ धनाभावात्तरिग्रह-  
प्रमाणनियमान्संकुचितान् गृह्णन् सामुद्रिकवेदिभिः  
प्रभुभिरायतौ तद्भाग्यवैभवप्रसरं विमृशद्भिस्तस्य  
लक्षत्रयद्रम्माणां परिग्रहमानं कारयद्भिः सह संतुष्ट-  
तया व्यवहरन्, कस्मिन्नप्यवसरे क्वापि ग्रामे यिया-  
सुरन्तरालेऽजाव्रजं व्रजन्तमालोक्यैकस्या अजायाः  
कण्ठे पापणखण्डे रत्नपरीक्षकतया रत्नजातीयं परी-  
क्ष्य तल्लोभात्तां मूल्येन क्रीत्वा मणिकारपार्श्वात्तमुत्ते-  
जितं निर्माप्य सिद्धराजमुकुटघटनाग्रस्तावे लक्ष्यमू-  
ल्यद्रव्येण तं नृपायैव ददौ॥ तेन नीवीधनेन मञ्जिष्ठा-  
स्थानकानि<sup>४</sup> कदाचिदागतानि क्रीत्वा तद्विक्रयावसरे

(१ श्रीमालजातीयः २ (ख) पञ्च लोष्टिगानीति पाठः तत्समय-  
योग्यनाणकविशेषान्) ३ B D प्रतिक्रामन् [४ मञ्जिष्ठागोणी.]

सांयात्रिकैर्जलचोरभयात्तदन्तर्निहिताः काञ्चनक-  
म्बिकाः पश्यन् सर्वेभ्यः स्थानकेभ्यस्ताः संज-  
ग्राह । तदनन्तरं सर्वनगरमुख्यः श्रीसिद्धराज-  
मान्यो जिनशासनप्रभावकः श्रावकः प्रतिदिनं  
प्रतिवर्षं यदृच्छया जैनमुनिभ्योऽन्नवस्त्रादि ददानो  
गुप्तवृत्त्या नव्यानि धर्मस्थानानि जीर्णानि च  
प्रशस्तिरहितानि स्वदेशेषु विदेशेषु च समुद्धार॥  
वल्लीछन्नद्रुम इव मत्स्नाच्छादितसमस्तबीजमिव ।  
प्रायः प्रच्छन्नकृतं सुकृतं शतशाखतामेति ॥ १ ॥  
इति साह<sup>१</sup> आभडप्रबन्धः ॥

अथान्यस्मिन्नवसरे श्रीसिद्धराजः संसारसागरं  
तिर्तीर्षुः प्रत्येकं सर्वदेशेषु सर्वदर्शनेषु देवतत्त्वध-  
र्मतत्त्वपात्रतत्त्व जिज्ञासया पृच्छमानेषु निजस्तुति-  
परनिन्दापरेषु सन्देहदोलाधिरुढमानसः श्रीहेमा-  
चार्यमाकार्यं विचार्यकार्यं पप्रच्छ । आचार्यैस्तु  
चतुर्दशविद्यास्थानरहस्यं विमृश्येति पौराणिकनि-  
र्णयो वक्तुमारम्भे । यत्पुरा कश्चिद्व्यवहारी पूर्वं  
परिणीतां पत्नीं परित्यज्य संग्रहणीताल्लुप्तसर्वस्वः  
सदैव पूर्वपत्न्या पतिवशीकरणाय तद्देविभ्यः का-

१७४ प्रबन्धचिन्तामणिःसर्ग. ३

र्मणककर्मणि पृच्छयमाने कश्चिद्वैडदेशीयो रश्मि-  
नियन्त्रितं तत्र पतिं करोमीत्युक्त्वा किञ्चिदाचिन्त्य-  
वीर्यं भेषजमुपानीय भोजनान्तर्देयमिति भाषमाणः  
स गतः । कियदिनान्ते समागते क्षयाहनि तस्मिन्-  
स्तथा कृते स प्रत्यक्षवृषभतां प्राप । स च तत्प्रती-  
कारमनवबुध्यमाना विश्वविश्वाक्रोशान्सहमाना  
निजं दुश्चारितं शोचन्ती कदाचिन्मध्यंदिने । दिने-  
श्वरकठोरतरकरनिकरप्रसरतप्यमानापि शाडल-  
भूमिषु तं पतिं वृषभरूपं चारयन्ती कस्यापि तरो-  
र्मूले विश्रान्ता निर्भरं विलपन्ती, आलापं नभस्य-  
कस्माच्छुश्राव । तदा तत्रागतो विमानाधिरूढः  
पशुपतिर्भवान्यातदुःखकारणं पृष्ठो यथावस्थितं नि-  
वेद्य तस्यैव तरोस्छायायां पुंस्त्वनिबन्धनमौषधं त-  
न्निर्वन्धादादिश्य तिरोदधे । सा तदनु तदीयां छायां  
रेखाङ्कितां निर्माय तन्मध्यवर्त्तिन ऊपधाङ्कुरानुच्छेद्य  
वृषभवदने क्षिपन्ती तेनाप्यज्ञातस्वरूपेणौपधाङ्कु-  
रेण वदनन्यस्तेन स वृषभो मानुष्यतां प्राप । यथा  
तदज्ञातस्वरूपोपि भेषजाङ्कुरः समीहितकार्यसिद्धिं  
चकार तथा कलियुगे मोहात्तदपि तिरोहितं पात्र-



परिज्ञानं सभक्तिकं सर्वदर्शनाराधनेनाऽविदितस्वरूपमपि मुक्तिप्रदं भवतीति निर्णयः । इति हेमचन्द्राचार्यैः । सर्वदर्शनसन्मानेन निवेदिते सति श्रीसिद्धराजः सर्वधर्मापराधनां चकार ॥

इति सर्वदर्शनमान्यताप्रबन्धः ॥

॥अथान्यदा निशि कर्णमेरुप्रासादे नृपतिर्नाटकं विलोक्यन् केनापि चणकविक्रयकारिणा वणिग्मात्रेण स्कन्धेन स्कन्धन्यस्तहस्तेन तल्लीलायितेन चित्रयिमाणमानसः स भूयो भूयस्तदीयमानं सकर्पूरवीटकं परितोपिते गृह्णन् नाटकविसर्जनावसरेनुचरैस्तद्वेहादिसम्यगवगम्य सौधमासाद्य सुष्वाप । प्रत्यूषे भूपः कृतप्राभातिककृत्यः सर्वावसरेऽलंकृतसभामण्डपस्तं चणकविक्रयकारिणं विपणिनमाकार्य निशि स्कन्धन्यस्तहस्तभारेण ग्रीवा बाधते इत्यभिहिते तत्कालोत्तन्नमतिर्विज्ञपयामास । देव आसमुद्रान्तभूभारे स्कन्धाधिरुढे यदि स्वामिनः न बाधते स्कन्धस्तदा तृणमात्रस्य निर्जिवस्य मम पण्याजीवस्य, भारेण स्वामिनः कां स्कन्धबाधेति तदीयौचित्यविज्ञपनेन प्रमोदावान् नृपः पारितोपिकं ददौ ॥

इति चणकविक्रयिवणिजः प्रबन्धः ॥

अथान्यास्यां निशि नृपः कर्णमेरुप्रासादात्प्रेक्षणं  
प्रेक्ष्य प्रत्यावृत्तः कस्यापि व्यवहारिणो हर्म्ये बहू-  
न्दीपानालोक्य किमेतदिति पृष्ठः स लक्षदीपांस्ता-  
न्विज्ञपयामास । असौ धन्य इति ।

स्वसौधमध्यमध्यास्य व्यतीतक्षणदाक्षणः

स धन्यमानी तं सदः समानीयेत्यादिदेशः ।  
एतेषां सदा प्रदीपानां प्रज्वालनेन भवतः सदा प्रदी-  
पनं तद्भवदीयवित्तस्य कियन्तो लक्षा इत्यभिहितः  
स विद्यमानांश्चतुरशीतिलक्षान्निवेदयामास । तदनु-  
कम्पाकम्पमानमानसः स्वकोशात्पोडशलक्षान्प्र-  
सादीकृत्य तत्सौधे कोटिध्वजमध्यारोपयामास ॥  
इति पोडशलक्षप्रबन्धः ॥

अथान्यस्मिन्नवसरे राज्ञा कदाचिद्वालाकदेशे  
दुर्गभूमौ सिंहपुरमिति ब्राह्मणानामग्रहारः स्थापि-  
तस्तच्छाशने पडुत्तरशतं ग्रामाः । अथ श्रीसिद्धराजः  
कदाचित्सिंहनादैर्भित्तैर्विप्रेर्देशमध्यनिवासं याचि-  
तः साभ्रमतीतीरवर्तिनमाशाम्बिंलीग्रामं तेभ्यो  
ददौ । तेषां च सिंहपुराद्धान्यान्यादाय गच्छता-

भागच्छतां च दानमोक्षं चकार । अथ राज्ञा सिद्ध-  
राजेन मालवकं प्रति कृतप्रयाणेन वाराहीग्रामपरि-  
सरमाश्रित्य तदीयान् पट्टकिलानाहूय तच्चातुर्यप-  
रीक्षाकृते निजां प्रधानां राजवाहनसेजवालीं स्थप-  
निकार्थं समर्पयत । अथ नृपतौ पुरतः प्रयाते तैः स-  
र्वैरपि संभूय तदङ्गानि प्रत्येकं विदार्य यथावाञ्छितं  
स्वस्वसौधे निदधिरे । अथ यदा प्रत्यावृत्तो नृपस्तां  
स्थापनिकां तेभ्यो याचमानस्तद्वौकितभिन्नानि  
तदङ्गानि पश्यन् सविस्मयं किमेतदित्यादिशंसै-  
र्विज्ञपयांचक्रे । स्वामिन्नेकः कोप्यऽस्य वस्तुनो गो-  
पनविधौ न प्रभूष्णुर्मलिम्लुचादिभ्यः कदाचिदपाये  
संजायमाने सति कः प्रभोरुत्तरकर्तेति विमृश्यैतद-  
स्माभिर्व्यवसितं तदा राजा सविस्मयस्मेरमनास्ते-  
षां ब्रूच इति विरुदं ददौ ॥

इति वाराहीयान्नृचप्रबन्धः ।

१ D दाण. २ C पाट्टे. (३ यानविशेष ४ तस्मिन्निशेषार्थ  
रोगान् देस इति भाषाया) C स्थापनैर्कार्यं (न्यामार्थं ता) ५ A सम-  
र्पिता. ६ C यथोचित ७ D स्थापनिका (न्याम भाषण इति  
भाषाया) ८ D मस्मिन्नुपानगर्दना इदानीदपाये

अथ<sup>१</sup> कदाचिच्छ्रीजयसिंहदेवो नृपतिर्मालवकं  
 विजित्य प्रत्यावृत्तः । उज्झाग्रामे निवेशितस्कन्धा-  
 वारस्तैर्यामीणैः प्रतिपन्नमातुलै<sup>२</sup> दुग्धपरिपूर्णप्रवाहा-  
 दिभिरुचितैः परितोष्यमाणस्तस्यामेव निशि गु-  
 ष्ठवृत्त्या तदुःखसुखजिज्ञासुः कस्यापि ग्रामीणस्य  
 गृहे गतः । गोदोहादिव्याकुलतायामपि तेन क-  
 स्त्वमिति पृष्टः, श्रीसोमेश्वरस्य कार्पटिकोहं महारा-  
 ष्ट्रदेशवास्तव्य इति तस्मै न्यवेदयत् । तेन च नृपतेः  
 पार्श्वे महाराष्ट्रदेशस्य तन्महाराजस्य च गुण-  
 दोषवृत्तान्ते पृच्छमाने स नृपतेस्तस्य पण्णवति-  
 राजगुणान्प्रशंसंस्तत्पार्श्वे गूर्जराधीश्वरगुणदोषान्पृ-  
 च्छन्नाः श्रीसिद्धराजस्य प्रजापालनपाण्डित्यं सेवके-  
 ष्वतुल्यवात्सल्यत्वं चेत्यादीन्गुणान्वर्णयंस्तेन रु-  
 त्रिमदोषे उत्पाद्यमाने सोऽस्माकं मन्दभाग्यतया  
 नृपतेरपुत्रतालक्षण एव दोष इत्यश्रूणि मुञ्चन्-  
 पतिं निःकैतववृत्त्या परितोषयामास । अथ प्रभात-

१) अथ कदाचित्सिद्धराजः सिंहर्मातौर्वैप्रैर्देशमध्यनिवासं याचितः सा-  
 भ्रमतीतीरं तेभ्यो ददौ तेषां च सिंहपुराद्वान्यान्यादाय गच्छतां दाण-  
 मोक्षं चकार ॥ २ C वृण्डा D अज्जा, ३ A मातुलैः ४A B आवा-  
 हादिभिः

काले संभूय सर्वेऽपि मिलिता नृपदर्शनेत्कीण्ठ-  
ताः सौधमध्यास्य प्रभोः प्रणामानन्तरं तदतुल्य-  
पत्यङ्के निविष्टाः, आसनदाननियोगिभिः प्रदत्तेपि  
पृथगासने तत्सौकुमार्यं करस्यर्शनेन विचिन्त्य वय-  
मिह सुखसुखेन निषण्णास्तिष्ठाम इति नृपे स्मि-  
तमुखाम्भोजे तस्थुः ॥

इति उज्झावास्तव्यग्रामीणानां प्रबन्धः॥

अथ कदाचिज्झालौजातीयमाङ्गनामा क्षत्रियः  
श्रीसिद्धराजसेवार्थं सभां गच्छन् प्रत्यहं पारौचीद्वयं  
भूमौ निहत्योपविशति। उद्धरन्द्वयमुत्तिष्ठति तस्य च  
भोजने घृतपरिपूर्णः कुतुपं एक एव व्यये याति-  
तस्य तु घृताभ्यक्तदाढिकानिर्माजने घृतपाडेशांशो  
ऽवशिष्यते । कदाचिद्वपुरपाटवे पथ्यावसरे पञ्च-  
मानकप्रमितयवागूपथ्यग्रान्ते आयुर्वेदविदाऽमृतो-  
दकमर्द्धाहारे किमिति न पीतमुत्पुपालव्यः । यतः॥  
पिवेदुटसहस्रं तु यावन्नाभ्युदितो रविः ।  
उदिते तु सहस्रांशौ बिन्दुरेको घटायते ॥ १

१ C बुण्डा. २ D गान्ध. ३ पापाणभदकः शत्रुनिरोधः पगर्द  
भागाया ४ C उत्तिष्ठस्तद्वयमुद्धरति A B D ५ कुम्भः ६ A B  
व्याध्यासरे ७ C अस्तामृतः ८ अस्त याते ९ C D बिन्दुर्बिन्दुगतायां

रजन्याः पाश्चात्यघटिकाचतुष्टये सूर्यस्यानुदया-  
वधि यत्तयः पीयते जलयोगः क्रियते तद्वज्रोदकं  
तदमृतोदकं सूर्योदये समुप्तन्ने निरन्त्रैः प्रातर्यदुदकं  
पीयते तद्विषं ततः बिन्दुरेको घटशतायते । भोजनार्द्धे  
यज्जलं पीयते तदमृतं भोजनान्ते तत्कालपीतं पयः  
छत्रं छत्रोदकमिति भण्यते । तेन प्रोक्तं पुनः, पूर्व-  
भुक्तमर्द्धाहारं परिकल्प्य संप्रति पयः पीत्वा पुनरर्द्धा-  
हारं करिष्यामीत्पुपक्रममाणस्तेनैव वैद्येन निषिद्धः ।  
नृपतिना निरायुधकारणं पृष्टः, समयोचितं मे प्र-  
हरणमिति विज्ञपयन्नऽन्यदा मज्जनावसरे हस्तिप-  
प्रेर्यमाणं हस्तिनमालोक्य सन्निहितश्वानेन गुण्डा-  
दण्डे निहत्य मर्मस्थाननिपीडितस्य गजस्य पुच्छभा-  
गं स गृह्णन् तदीयातुलेन बलेनान्तस्त्रुटितस्य कर-  
टिन उत्तारिते हस्तिपके<sup>१</sup> भूपतितः सोऽसुभिर्व्ययु-  
ज्यत । स तु गूर्जरदेशभूपाले पलायिते समायात-  
म्लेछान्समरे स्वेच्छयोच्छेदयन् यत्र दिवं प्राप्तस्तत्र  
श्रीपत्तने माङ्गस्थण्डिलमिति प्रसिद्धिः ॥

॥ इति माङ्गशालाप्रबन्धः ॥

१ A C छत्र छत्रोदक २ C ततोसौ ३ A पूर्वान्न. (४ कुकुरस्तु  
शुनि श्वान इति वाचस्यति) १ C उत्तारिते भूपती D उत्तारिते नृपतौ.

अन्यदा म्लेच्छप्रधानेषु<sup>१</sup> समायतेषु मध्येदेशागता-  
 न्वेपकारकानाहूय रहस्यं किञ्चिदादिश्यं विससर्ज  
 नृपः॥ अथापरस्मिन्तायाह्वे च समागते<sup>२</sup> प्रलयकाल  
 प्रचण्डपवनप्रादुर्भावे नृपः सुधर्मसंधर्माणमास्था-  
 नीमास्थाय यावदवलोकते तावदन्तरिक्षादवतरन्तं  
 मस्तकन्यस्तकाञ्चनेष्टिकायुगेन काञ्चनशोभां वि-  
 भ्राणं पलादयुगलमालोक्य भयभ्रान्ते समाजलो-  
 के नृपचरणपीठे तदुपायनं विमुच्य भूपीठलुठना-  
 त्पूर्वं प्रणिपत्येति विज्ञपयामास । यद्य देवार्च-  
 नावसरे लङ्कानगर्या महाराजाधिराजः श्रीविभी-  
 णो राजस्थापनाचार्यस्य रवुकुलतिलकस्य श्रीराम-  
 श्याभिरामगुणग्रामाभिरामस्य स्मरन् ज्ञानमयेन  
 चक्षुषा संप्रति चालुक्यकुलतिलकं श्रीसिद्धराजा-  
 वतारेऽवतीर्णी स्वयं स्वीयं स्वामिनमवधार्योत्कण्ठो-  
 त्कटायमानं मानसोऽहं तत्र प्रणामकरणायागच्छा-  
 मीति किंचा प्रभुर्मामत्रागमनेनानुगृहीष्यतीति वि-  
 ज्ञपयन्नौ प्रहितवान् । तन्निर्णयं श्रीमुखेन समा-

१ A म्लेच्छेशेषः. २ B आहूय D रहः स किञ्चिदाहूय

३ B C D अमरे (३ इन्द्रमन्त्रः) ४ D अरुणोत्कण्ठावतमानः

५ A B C नमः

१८२ प्रबन्धचिन्तामणिः सर्गः ३

दिशतु देवः । ताभ्यामित्यभिहिते नृपतिः किञ्चि-  
दन्तर्विचिन्त्य स तावेवं समादिशत् । यद्वयमेव प्रफु-  
ल्लायल्लकलहरीप्रेर्यमाणाः स्वसमये स्वयमेव विभी-  
षणमिलनाय समेष्याम इत्युदीर्य निजकण्ठगृ-  
ह्णारिणमेकावलीहारं प्रतिप्राभृतं प्रसादीकृतं । प्रभु-  
णाहमयमपि प्रेष्यप्रेषणावसरे न विस्मरणीय इति  
विशेषविज्ञप्तिं विधायान्तारिक्षमार्गेण तद्राक्षसद्वन्द्वं  
तिरोधत्ते । तदैव ते म्लेच्छप्रधानपुरुषा भयभ्रान्ताः  
स्वपौरुषमुत्सृज्य नृपपुरत आहूता भक्तिभारभा-  
सुराणि वचांसि ब्रूवाणास्तद्राजाय समुचितमुपा-  
यनमुपनीय श्रीसिद्धराजेन व्यसृज्यत<sup>१</sup> ॥  
इति म्लेच्छागमनिषेधप्रबन्धः ॥

अथानन्तरं कोछापुर्नगरराजस्य सभायां बन्दिनः  
श्रीसिद्धराजस्य कीर्तिं वितन्वन्तः, तदा तथ्यं सिद्ध-  
राजं वयं मन्यामहे यदा प्रत्यक्षमप्यस्माकं कमपि  
चमत्कारं सिद्धराजो दर्शयतीत्येतद्ब्रूवाणेन तेन राज्ञा  
ते पराकृतास्तत्स्वरूपं नृपतेर्विज्ञपयामासुः । अथ  
स्वामिनि सभायां निभालयति तत्तत्त्ववेदिना के-

१ सत्यमेवमादिदेश २ [उत्कण्ठातिशयाश्रयं] ३ A B आपृच्छता-  
मयसरे प्रभुणाहमन्यभिन्नापि. ४ B व्यजृम्भन्त. ५ A कौछाकपुर.



नापि नियोगिनाञ्जलिबन्धपूर्वकं निजाभिप्राये प्रादुः-  
 क्रियमाणे राज्ञा स रहसि तत्कारणं पृष्टो नृपतेरा-  
 शयं विज्ञपयन् द्रव्यलक्षत्रयसाध्योऽयमर्थ इति वा-  
 क्यविशेषमाह । तदैव दैवज्ञनिर्दिष्टे मुहूर्त्ते स नृ-  
 पाल्लक्षत्रयमुपलभ्य वणिगाकारो भूत्वा सर्व-  
 भाण्डानि संगृह्य सिद्धशङ्केव रत्नखचितं सुवर्णपा-  
 दुकायुगलमतुलं योगदण्डं च मणिमयकुण्डलयुगलं  
 च । तद्विधयोगपिशुनं योगपट्टं च चण्डांगुरोचिश्च-  
 न्द्रातपं सह नीत्वा पथानमुल्लङ्घ्य कतिपयैरहोभि-  
 स्तत्पुरे दत्तावासः । आसन्नायां दीपोत्सवनिशि तन्न-  
 गरराज्ञोऽवरोधे महालक्ष्मीदेव्याः पूजार्थं तत्प्रासाद-  
 मुपेयुषि स कृतकसिद्धरूपस्तेन वेपेणालंकृतः, के-  
 नापि सदभ्यस्तोततनेन बर्बरेणानुगम्यमानो दे-  
 व्याः पीठेऽकस्मात्प्रादुरासीत् । देव्या रत्नमय-  
 सुवर्णकर्पूरमयीं सपर्यां विरचयंस्तदवरोधाय तद्वि-  
 धानि वीटकानि ददानः श्रीसिद्धराजनामाङ्कितं  
 सिद्धवेपं पूजाव्याजात्तत्र नियोज्यात्पतनवशाद् बर-  
 स्कन्धमाधिरुह्य यथागतमगात् । निशावसाने सम-  
 येऽवरोधैस्तं विरोधि नृपवृत्तान्तं ज्ञापितः सन् भयभ्रा-  
 न्तो नृपः स्वप्रधानपुरुषैस्तत्प्राभृतं सिद्धाधिपतये

१८४ प्रबन्धचिन्तामणिः सर्ग. ३

प्राहिणोत् । अथ तेन नियोगिना भाण्डादिक्रयविक्रयं संक्षिप्य । ममागमनावधि नैतेषां प्रधानानां दर्शनं देयमिति वेगवता पुरुषेण विज्ञपयामास । तदनु झगिति कतिपयैर्दिनैस्तत्र समुपेतः । तत्स्वरूपं विज्ञातो नृपतिस्तेषां प्रधानानां तदुचितामावर्जनां चकार॥

इति कोल्लापुरराजप्रबन्धः ॥

श्रीसिद्धराजेन मालवमण्डलाद्यशोवर्मा नृपतिर्निबध्नानतिः । अवसरे क्रियमाणेन सीलनाभिधानकौतुकिना “बेडायां समुद्रो मग्न इति” तत्पृष्ठगायनेनापशब्दं ब्रूये इति तर्जितो बेडासमानायां गूर्जरधरित्र्यां मालवकसमुद्रो मग्न इति विरोधालङ्कारमर्थापत्त्या परिहरन्प्रभोर्हेममयीं जिह्वां प्राप ॥ इति कौतुकीसीलणप्रबन्धः ॥

कदाचित्सिद्धराजस्य वाग्मी कश्चित्सान्धिविग्रहिको जयचन्द्रनाम्ना काशीपुरीश्वरेण श्रीमदणहिलपुरस्य प्रासादप्रपानिपानादिस्वरूपाणि पृच्छतेति दूषणमुक्तः । यत्सहस्रालिङ्गसरोवरवारि शिवनिर्माल्यं तदऽऽदृशतया तत्तवका अतो लोकद्वयविरोधिनस्तत्रत्यलोकः कथमुदितोदितप्रभावः स्यादिति ।

सिद्धाधिपेन सहस्रलिङ्गसरः कारयताऽनुचितमि-  
दमाचरितमिति तस्य नृपतेर्वचसान्तः कुपितः स  
नृपं पप्रच्छ । अस्यां वाणारस्यां कुतस्त्यं पयः पी-  
यते? नृपेण त्रिपथगाजलमित्पभिहिते किं नाम सु-  
रसरिन्नीरं शिवनिर्माल्यं न यतः शिवोत्तमाङ्गमेव  
गङ्गानिवासभूमिः॥

इति जयचन्द्रराजेन गूर्जरप्रधानस्योक्तिप्रबन्धः॥

कस्मिन्नप्यवसरे कर्णाटविषयादागतेन सान्धिवि-  
ग्रहिकेण श्रीमयणल्लदेव्या पितुर्जयकेशिराजस्य कु-  
शलोदन्ते पृष्टेश्चुमिश्रलोचनेनेति सा विज्ञपयामासे।  
स्वामिनि सुगृहीतनामां जयकेशिमहीन्द्रोऽशनाव-  
सरे पञ्जरात्कीडाशुकमाकारयन्, तेन मार्जार इत्यु-  
च्चरिते नृपः परितो विलोक्य निजभोजनान्धोऽधो  
भागवर्त्तिनमोतुमपश्यन् यदि तव विडालेन वि-  
नाशः स्यात्तदाहं त्वया सहगमनं करवाणीति प्र-  
तिज्ञाति स यावत्पञ्जरादुद्धीय तस्मिन्काञ्चनभाजने  
निपीदति तावदकस्मात्तेन वृकदंशेन तं विनाशि-  
तमालोक्य परित्यक्ताशनकवलः । उक्तियुक्तिवेदि-

(१ प्रभाते यन्नाथ स्मर्तुं योग्यमस्ति स )

२ C D निजभोजनभाजनापोभागवर्त्तिन

स्मिन्वृत्तान्ते तत्कर्मणः प्रशंसां विफलीकर्तुं स्वप्रशं-  
साकारिणः प्रेष्यस्यापरस्मिन्नहन्यऽनिवेदितं तत्त्वस्य  
प्रसादलेखमार्पयत् । यदस्मै वण्ठाय तुरङ्गमशतस्य  
सामन्तता देयेत्यालिख्यं तं महामात्यश्रीसान्तू-  
पार्थ्वे प्राहिणोत् । अथ स यावच्चन्द्रशालाया नि-  
श्रेण्यामवरोहति तावत्प्रस्वलितपदः पृथिव्यां  
पतदीपदङ्गभङ्गमङ्गीकृतवान् । तत्पृष्ठानुगामिना-  
ऽपरेण वण्ठेन किमेतदिति पृष्ठे तेन स्वस्वरूपे  
निवेदिते स मञ्चकन्यस्तो गृहं गत्वा तमपरस्मै  
समर्पितवान् । तत्प्रमाणेन महामात्यस्तस्मै शत-  
तुरङ्गमसामन्ततां ददौ । अथ तयोर्यथावद्वृत्तान्तेऽव-  
धारिते नृपतिः कर्मैव बलीय इति तत्प्रभृति मेने  
यथा ॥

\* नैवाकृतिः फलति नैव कुलं न शीलं  
विद्या न चापि मनुजेषु कृता न सेवा ।  
पुण्यानि पूर्वतपसा किल संचितानि

\* बल्लभदेवकृतमुभाषितावल्यांशो. ३१०० भदन्त अश्वघोषस्य ॥

विद्या सहस्रगुणिता न च वाग्विशुद्धिः।

कर्माणि पूर्वशुभसंघयसाचितानीति पाठभेदः

१ C आलेख्य २ A प्रसादलेखं ३ A D तपोपि न च यत्कृतापि  
सेवा ४ B D भाग्यानि

काले फलन्ति पुरुषस्य यथैव वृक्षाः ॥ १ ॥

इति वण्ठकर्मप्राधान्यप्रबन्धः ॥

‘सो जयत कूडच्छरडो’ तिहुयणमज्झम्मिं जेसल-  
नरिन्दो ।

छित्तूण रायवंतं<sup>३</sup> इक्कं छत्तं कयं जेण ॥ १ ॥

मात्रयाप्यधिकं किञ्चिन्न सहन्ते जिगीषवः ।

इतीव त्वं धरानाथ धारानाथमपाकृथाः ॥ २ ॥

मानं मुञ्च सरस्वति त्रिपथगे सौभाग्यभङ्गीस्त्वज-  
रे कालिन्दि तवाफला कुटिलता रेवे रयस्त्यज्यताम् ।

श्रीसिद्धेशकृपाणि<sup>१</sup>पाटितरिपुस्कन्धोच्छलच्छोणित-  
स्रोतोजातनदीनवीनवनितारक्तोम्बुधिर्वर्त्तते ॥ ३ ॥

श्रीमज्जैत्रमृगारिदेवनृपते सत्यं प्रयाणोत्सवे

पानीयाशयशोषणैः करटतो<sup>२</sup> वीरव्रणांकाङ्क्षया ।

स्वीयस्वीयपतेर्विनाशसमयं संचिन्त्य चिन्तातुरा

मत्सी रोदिति मक्षिका च हसति ध्यायन्ति वा-  
मं स्त्रियः ॥ ४ ॥

\* स जयतु कूटोच्छेदकः त्रिभुवनमध्ये जयसिंहनरेन्द्रः । छित्त्वा  
राजवश एक छत्र कृतं येन एकच्छत्र राज्य कृतमित्यर्थः ॥ १ ॥

१) नरडो. २) B मज्झम्मि. ३) D रायवन्ते. [ ४) मङ्गी. रचना ]

१) C कृपाण. (६) गन्धहास्तिगण्डस्थलात्) ७) B वीरव्रत. (८) वामाङ्ग-  
स्फुरण) B वामध्रुव

१८६ प्रबन्धाचिन्तामणिः सर्ग. ३

ना राजवर्गेण निपिध्यमानोपि ॥

राज्यं यातु श्रियो यान्तु यान्तु प्राणा अपि क्षणात्  
या मया स्वयमेवोक्ता वाचा मा यातु शाश्वती॥१॥  
इतीष्टदैवतमिव तामेव गिरं जपंस्तेनैव शुकेन  
सह दारुनिचितां चितां विवेश ।

इति वाक्याकर्णनाच्छोकाम्भोधिमग्रां श्रीमय-  
णल्लदेवीं विशेषधर्मोपदेशहस्तावलम्बनेन विद्वज्जनः  
समभ्युद्धार । अथ सा पितुः श्रेयसे श्रीसोमेश्व-  
रपत्तने यात्रां गता सती त्रिवेदिनं<sup>३</sup> कमपि ब्राह्मण-  
माकार्यं तदञ्जलौ जलन्यासावसरे यदि भवत्पा-  
पातकं लासि तदा ददामि<sup>१</sup> नान्यथेति तद्वचनविशे-  
षपरितोषभाक् गजाश्वकेश्वनादिभिर्युतं<sup>४</sup> पापघट-  
माददौ । स च तत्सर्वं विप्रेभ्यो ददानः किमिति दे-  
व्याष्टः प्राह । प्राक्तनपुण्यादस्मिन् जन्मनि नृप-  
प्रिया नृपतिजननी भूत्वा लोकोत्तरैरेभिर्दानैः सुरुतै-  
र्भावी भवोपि श्रेयस्कर इति विमृश्य भवत्रयपात-  
कं मया जगृहे । भवत्या पापघटदाने उपक्रान्ते  
कश्चिदधमद्विजोपि पापघटं नीत्वा स्वं भवतीं च

१ A B याच्यया २ C देवता. ३ A त्रिवेदीवेदिन ४ B C ददामि  
तदाददासि ५ D दानैर्युत.

भ्वाम्भोधौ मज्जयिष्यतीति मया तु संन्यस्तसम-  
स्तवित्तेन वित्तेमेतदादाय पुनर्ददता लब्धादृष्टगुणं  
पुण्यं लब्धमिति । श्रेयः स जगृहे ॥

॥ इति पापघटस्य प्रबन्धः ॥

॥ अथ कदाचिन्मालवकमण्डलं विगृह्य स्वदे-  
शनिवेशं प्रति चलितः श्रीसिद्धाधिपोऽन्तरालेऽप्र-  
तिमल्लैर्भिन्नै रूढमध्वानमवधार्य तस्मिन्वृत्तान्ते-  
ज्ञाते सति मन्त्री सान्तूनामा प्रतिग्रामं प्रतिनगरं  
घोटकमुद्राह्य प्रतिवृषं पर्याणानि विन्यस्य मे-  
लितातिदलवलेन भिहान्वित्रास्य श्रीसिद्धराजं  
सुखेन समानीतवान् ॥

इति सान्तूमन्त्रिप्रबन्धो बुद्धिवैभवप्रबन्धोवा ॥

अथ कस्यांचिन्निशि द्वावकुण्ठावेव वण्ठौ श्री-  
सिद्धराजस्य चरणसंवाहनं व्याप्तौ तं निद्रामुद्रित-  
लोचनं विचिन्त्य तदाद्यो निग्रहानुग्रहसमर्थ श्री-  
सिद्धराजं सेवकजनकल्पवृक्षं सर्वराजगुणनिलयं प्र-  
शशंस । अपरस्त्वस्यापि भूपतेः प्राज्यराज्यप्रदं प्रा-  
क्तनं कर्मैव श्लाघितवानेवमाकर्णितेन तेन राज्ञा त-

( १ भक्षणातिमात्रं. २ पल्याणानि.) ३ C कलस्तद्वलेन

४ D सवाहना. (पादमर्दनव्यापारे सति)

११० प्रबन्धचिन्तामणिः सर्गः ३

सपादलक्षः सह भूरिलक्षै<sup>१</sup>—

रानाकभूपाय नताय दत्तः ।

दृष्टे<sup>२</sup> यशोवर्मणि भालवोपि<sup>३</sup>

त्वया न सेहे द्विपि सिद्धराज ॥ ५

इत्याद्या बहुशः स्तुतयः प्रबन्धाश्च तदीयाः॥

संवत् ११५० वर्षे उपविष्टो जयसिंहदेवस्तथानेन  
राज्ञा वर्ष ४९ राज्यं कृतं ॥

[ छः ]

इति मेरुतुङ्गाचार्यकृते प्रबन्धचिन्तामणौ श्रीकर्ण-  
श्रीसिद्धराजयोर्विविधचरित्रनानावदातवर्णनो नाम  
तृतीयः प्रकाशः ॥

— ० —

१ १) तूरि. (२) मालव लक्ष्मीलेश इति श्लेषः)

३ इत्याद्या बहवस्तदीया. स्तुतयः प्रबन्धाश्च ॥

१ Δ सवत् ११५० पूर्वं श्रीसिद्धराजश्रीजयसिंहदेवेन वर्षाणि  
५९ राज्यं कृतं ॥



## कुमारपालप्रबन्धः

अथ परमार्हतश्रीकुमारपालप्रबन्धः प्रारभ्यते ॥

॥ श्रीमदणाहिलपुरपत्तने वृहति श्रीभीमदेवे  
साम्राज्यं पालयति श्रीभीमेश्वरस्य पुरे चउलादे-  
वीनाम्नी पण्याङ्गना पत्तने प्रसिद्धं गुणपात्रं रूप-  
पात्रं च कुलयोपितोप्यतिशायिनी प्राज्यमर्यादां  
नृपतिर्विमृश्य तस्यास्तद्वृत्तपरीक्षानिमित्तं सपादल-  
क्ष्यमूल्यां क्षुरिकां निजानुचरैस्तस्यै ग्रहणके दापयामा-  
स । औत्सुक्यात्तस्यामेव निशि बहिरावासे प्रस्था-  
नलग्नमसाधयत् । नृपो वर्षद्वयं यावन्मालवकम-  
ण्डले विग्रहाग्रहात्तस्थौ । सा चउलादेवी तद्वि-  
त्तग्रहणकप्रामाण्येन तद्वर्षद्वयं परिहृतसर्वपुरुषाशी-  
ललीलयैव तस्थौ । निस्सीमपराक्रमो भीमः कृती  
स्वस्थानमागतो जनपरंपरया तस्यास्तां प्रवृत्तिम-  
वगम्य तामन्तःपुरे न्यधात् । तदङ्गजो हरिपाल-  
स्तत्सुतस्त्रिभुवनपालस्तत्पुत्रः कुमारपालदेवः ।  
स तु विदितधर्मोऽपि कृपापरः परनारीसहोदरश्च-  
स तु सामुद्रिकवेदिभिर्भवदनन्तरमयं नृपो भवि-

१ C चउलादेवीनामा २ C चातीव तस्याः ३ D विग्र-  
हाय ४ B सा तु बउला ५ A तृतीयवर्षे ६ हरिपालदेवः

प्यतीति सिद्धनृपो विज्ञप्तस्तस्मिन्हीनजातावित्य-  
 सहिष्णुस्तय विनाशावसरमन्वेययामास सततं ।  
 स कुमारपालस्तं वृत्तान्तमीषद्विज्ञाय तस्मान्नृपतेः  
 शङ्कुमानमानसः तापसवेपेण निर्मितनानाविधदे-  
 शान्तरभ्रमणः कियन्त्यपि वर्षाण्यतिवाह्य पुनः पत्त-  
 नमागतः । कापि मठे<sup>१</sup> तस्यौ । अथ श्रीकर्णदेवस्य  
 श्राद्धावसरे श्रद्धालुतया निमन्त्रितेषु सर्वेष्वपि  
 तपस्विषु श्रीसिद्धराजः प्रत्येकं तेषां तपस्विनां  
 स्वयं पादौ प्रक्षालयन् कुमारपालनाम्नस्तपस्विनः  
 कमलकोमलौ चरणौ करतलेन संस्पृश्य तदूर्ध्वरे-  
 खादिभिर्लक्षणै राज्याहोयमिति निश्चलया दृशा-  
 पश्यत् । तदिद्वितैस्तं विरुद्धं विबुध्यमानस्तदैव-  
 वेपपरावर्त्तेन काकनाशं नष्टः । आलिङ्गनाम्नः कु-  
 लालस्यालये मत्पात्राणां पाके<sup>२</sup> रच्यमाने तदन्त-  
 निर्धाय तदानुपदिकेभ्यो रक्षितः स क्रमात्ततः  
 संचरन् तद्विलोकनाकुलितेन राजलोकेन त्रासितः  
 सन्निहितां दुर्गमां दुर्गभूमिमवलोक्य कापि क्षेत्रे  
 क्षेत्ररक्षकैः क्रियमाणछिन्नकण्टकिशाखिशखानिचये

समुपचीयमाने तं तदन्तर्निधाय तेषु स्वस्थानमा-  
 गतेषु पदिकेन पदे तत्रानीते सर्वथा तत्तासंभाव-  
 नया कुन्ताग्रेण भिद्यमानेपि तस्मिन्स्तमनासाद्य  
 व्यावृत्ते राजसैन्ये द्वितीयेऽहनि क्षेत्राधिकृतैस्ततः  
 स्थानादुद्धृतः पुरतः कापि प्रातरान्तर्ब्रजन् कापि  
 तरुच्छाये विश्रान्तः सन् विलान्मूपकं मुखेन रू-  
 प्यनाणकमाकर्षन्तं निभृतया दृशा विलोक्य  
 यावदेकविंशसंख्यानि दृष्ट्वा पुनस्तेभ्य एकं गृही-  
 त्वा विलं प्रविष्टे पाश्चात्यानि तु सर्वाणि स गृही-  
 त्वा यावन्निभृतीभवति तावत्स तान्यनवलोक्य  
 तदर्या विपेदे । स तच्छोकव्याकुलितमानसश्चिरं प-  
 रितप्य पुरतो ब्रजन् , कयापीभ्यवध्वा श्वशुरगृहा-  
 दिपटुगृहं ब्रजन्त्या, पथि पाथेयाभावाद्दिनत्रयं क्षु-  
 त्क्षामकुक्षिभ्रातृवात्सल्यात्कूपरपरिमलशालिशालि-  
 करम्बेण सुहितीचक्रे । तदनु स विविधानि देशान्त-  
 राणि परिभ्रमन्स्तन्मतीर्थे महं० श्रीउदयनपार्श्वे श-  
 म्बलं याचितुमागतः । तं पौपथशालायामगितमाकर्-  
 ण्य तत्रागते तस्मिन्नुदयनेन पृष्टः श्रीहेमचन्द्राचार्यः

[ १ दूरशून्याञ्चरि २ दधियुक्तसक्तुना ३ सुतप्तः कृतः

४ पाथेयं द्रव्यादि ५ जैनीयव्रतनियमविशेषाचरणस्थानं प्रास्त्रिं ]

प्राह । लोकोत्तराणि तदङ्गलक्षणानि वीक्ष्य सार्व-  
भौमोऽयं नृपतिर्भावीत्यादिशत् । आजन्म दरिद्रो-  
पद्रवतया तां वाचं संदिग्धतया मन्यमानेन तेन  
क्षत्रिये नासंभाव्यमेतदिति विज्ञप्ते, सं. ११९९ वर्षे  
कार्तिकवदि २ रवौ हस्तनक्षत्रे यदि भवतः पट्टाभि-  
पेको न भवति तदाऽतः परं निमित्तावलोकसंन्यास  
इति पत्रकमालिख्यैकं मन्त्रिणेऽपरं तस्मै समारो-  
पयत् । अथ स क्षत्रियस्तत्कलाकौशलचमत्कृतमा-  
नसः यद्यदः सत्यं तदा भवानेव नृपतिः, अहं तु त्व-  
ञ्चरणरेणुः स कुमारपाल इति प्रतिश्रवं श्रावयन्  
“किं नो नरकान्तराज्यलिप्सया” भवतु कृतज्ञेन भवता  
वाक्यमिदमप्यऽविस्मरता जिनं शासनभक्तेन सतत-  
मेव भाव्यमिति तदनुशास्तिं शिरःशेखरीकृत्याष्ट-  
ल्यं च मन्त्रिणा सह गृहं प्राप्तः । स्नानपानाशना-  
दिभिः सत्कृतः यथायाचितं पाथेयं समर्प्य प्रस्था-  
पितो मालवकदेशं गतः । कुड्मेश्वरप्रासादे प्रशस्ति-  
पट्टिकायां ॥

पुत्रे<sup>१</sup> वाससहस्ते<sup>२</sup> सयम्भि वरिसाण नवनवइअहिए।  
होही कुमरनरिन्दो तुह विक्रमराय सारित्थो ॥१॥

इमां गाथामालोक्य विस्मयापन्नमानसो गूर्जर-  
नाथं सिद्धाधिपं परलोकगतमवगम्य ततः प्रत्यावृत्तो  
विलीनशम्बलोऽस्मिन्नगरे कस्यापि विषणिनो विष-  
णादशनान्तरं पलायमानः श्रीमदणहिल्लपुरमुपेत्य  
निशिकान्दविकापणे धनाभावाद्भुक्ततदशनो भगिनी-  
पते राजश्रीकान्हडदेवस्य सदनमासाद्य राजमन्दिरा-  
दागतेन तेन पुरस्कृत्यान्तर्नीतः सद्भोजनाविभिः  
सुहितीभूतः सुप्वाप । प्रातस्तेन भावुकेन स्वसैन्यं  
सन्नह्यनृपसौधमानीयाऽभिषेकपरिक्षानिमित्तं प्रथम-  
मेकः कुमारः पट्टे निवेशितः । तमुत्तरीयाञ्चलेनाप्य-  
नावृण्वन्तमालोक्य तदपरोनिवेशितस्तं योजितक-  
रसंपुटं वीक्ष्य तस्मिन्नप्यप्रमाणीकृते श्रीकान्हडदेवा-  
नुज्ञातः कुमारपालः संवृतवसनः उद्धर्व पवनं गृह्णन्  
सिंहासने उपविश्य रुपाणं पाणिना कम्पयन् पु-  
रोधसा कृतमङ्गलः पञ्चाशद्वर्षदेवः सनिस्वानान्य-  
निस्वनं श्रीमता कान्हडदेवेन पञ्चाङ्गचुम्बितभूतलं

- १ A तमेव यन्दीचकार सत्त्वागुलमाक्रन्दन्मिलितनगरलोकैर्द्वे  
योरपि निधनं निश्चित्य मम कृतकमूर्च्छा भवानपनयतु इत्याभिहितस्ते ।  
मतिवैभवेन प्रत्युज्जीवितं मन्यस्तत्तथा कृत्वा तस्मादपायात्पलायमानः  
२ B व्यपतोपायः ३ राजगुलश्री. ४ अञ्चलमप्यनावृण्वान्.

नमोऽकारि । स प्रौढतया देशान्तरपरिभ्रमणनैपुण्ये-  
 न राज्यशास्तिं स्वयं कुर्वन् राजवृद्धानामरोचमा-  
 नस्तैः संभूय व्यापादयितुं व्यवसितः । सान्धकार-  
 गोपुरेषु न्यस्तेषु घातुकेषु प्राक्तनशुभकर्मणा प्रेरि-  
 तेन केनाप्याप्तेन ज्ञापितवृत्तान्तस्तं प्रवेशं विहा-  
 य द्वारान्तरेण वप्रं प्रविश्य तानि प्रधानान्यन्तक-  
 पुरीं प्राहिणोत् । स भावुकमण्डलेश्वरः शालकसं-  
 बन्धाद्राज्यस्थापनार्चयत्वाच्च राज्ञो दुरवस्थामर्मा-  
 णि जल्पति । पश्चाद्राज्ञोक्तं हे भावुक राजपटिकार्या  
 सर्वावसरे च प्राक्तनदुरवस्थामर्मनर्म<sup>१</sup> न भाषणीयं  
 त्वयाऽतः परमेवं विधं सभासमक्षं नो वाच्यं वि-  
 जने तु यदृच्छया वाच्यमिति राज्ञोपरुद्धः । उत्कट-  
 तयाऽवज्ञावशाच्च रे अनात्मज्ञ इदानीमेव पादौ  
 त्यजसीति भाषमाणो मर्तुकामः ऊपधमिव तद्वचः  
 पथ्यमपि न जग्राह । नृपस्तदाकारसंवरणेनाऽपन्ह-  
 वं विधायाऽपरस्मिन्दिवसे नृपसंकेतितैर्मल्लैस्तद-  
 ङ्गभङ्गं कृत्वा नेत्रयुगं समुद्धृत्य ततस्तं तदावासे  
 प्रस्थापयामास ॥

आदौ मयैवायमदीपि नूनं

न तद्वहेन्मामवहेलितोपि ।

इति भ्रमादङ्गुलिपर्वणापि

स्पृशेत्<sup>१</sup> नो दीप इवावनीपः ॥१॥

इति विमृशद्भिः समन्ततः सामन्तैर्भयभ्रान्त-  
चित्तैस्ततः प्रभृति स नृपतिः प्रतिपदं सिपेवे । तेन  
राज्ञा पूर्वोपकारकर्तुः श्रीमदुदयनस्याङ्गजः श्रीवा-  
ग्भटदेवनामा महामात्यश्चक्रे । आलिङ्गनामा ज्या-  
यान्प्रधानः । महं० उदयनदेवस्य पुत्रो वाहडनामा  
कुमारः श्रीसिद्धराजस्य प्रतिपन्नपुत्रः श्रीकुमारपाल-  
देवस्यावज्ञामेव मन्यमानः<sup>२</sup> सपादलक्ष्मीभूपतेः  
पत्तिभावं बभार । तेन श्रीकुमारपालभूपालेन सह  
विग्रहं चिकीर्षुणा तत्रत्यं सकलमपि सामन्तलोकं  
लञ्छोपचारदानैः<sup>३</sup> स्वायत्तीकृत्य दुर्वारस्कन्धावारो-  
पेतं सपादलक्षक्षोणीपतिं सहादाय देशसीमान्त-  
मागतः । अथ चौलुक्यचक्रवर्ती अभ्यमित्रीणतया  
स्कन्धावारसमीपे निजं चमूसमूहं निवेशयामास ।  
निर्णीते समरचासरे निष्कण्टके क्रियमाणे सीम-  
नि सज्जीक्रियमाणायां चतुरङ्गसेनायां चउलिङ्गना-  
मा पट्टहस्तिनो हस्तिपकः कस्मिन्नप्यागति नृपेणा-

क्रुश्यमाणः क्रोधादङ्कुशं तत्याज । अथ सामलना-  
 माऽमात्रगुणपात्रं महामात्रं पुष्कलवसुदानपूर्वकं  
 तत्पदे नियोजितः सन् राज्ञा स्वकलहपञ्चानन-  
 नामानमनेकपं प्रक्षरितं कृत्वा तदुपरि नृपासनं नि-  
 वेद्य तत्र पट्त्रिंशदायुधानि नियोजयन्सकलकला-  
 कलापसंदूर्णः कलापके चरणौ नियोज्य स्वयमारूढ-  
 वान् तदासनस्थश्चौलुक्यभूपालोपि संग्रामाधिकृत-  
 पुरुषैरुत्थापनिकां कार्यमाणेषु बाहडकुमारभेदा-  
 दाज्ञाभङ्गकारिषु, इति सैन्यविप्लवमाकलय्य तं नि-  
 पादिनमादिदेश पुरो गन्तुं, सन्मुखसेनायां सपाद-  
 लक्षक्षितिपतिमतङ्गजं छत्रचामरसंकेतादुपलक्ष्य  
 विघटिते कटकवन्धे मयैवैकाकिना योद्धव्यमिति  
 निर्णय्य तेनाधारेण स्वसिन्धुरं तत्सन्निधौ ने-  
 तुमादिशन्नपि तमपि तथाऽकुर्वाणं विलोक्य त्वम-  
 पि विघटितोत्तिर्यादिशंस्तेन विज्ञपयांचक्रे ।  
 स्वामिन्कलहपञ्चाननो हस्ती सामलनामा हस्ति-  
 पकश्च द्वयं युगान्तेपि न विघटते<sup>१</sup> परं परस्मिन्कु-  
 म्भिकुम्भे बाहडनामाकुमारस्तारध्वनिराधिरूढोस्ति  
 यस्य हक्या हस्तिनोपि भज्यन्ते इत्युक्तोत्तरीया-



अल्युगलेन सिन्धुरश्रवणौ पिधार्यं स निजं गजं प्र-  
तिगजेन संघट्टयामास । अथ बाहडः पूर्वमात्मसा-  
त्कृतं चडलिनामानमारोहकं जानन् कृपाणपाणि-  
निजगजात्कलहपञ्चाननकुम्भे पदं ददानः श्रीकुमा-  
रपालविनाशाशया, तेन नियन्ता पश्चात्कृते गजे-  
स भूमौ पतितस्तलवर्गीयपदातिभिरधारि । तदनु  
चौलुक्यभूपतिना श्रीमदानाकनामा सपादलक्षनृपः  
शस्त्रसज्जो भवेत्पभिहितस्तन्मुखकमलं प्रति औ-  
चित्पाच्छिलमुखं व्यापारयन् प्रधानक्षत्रियोसीति  
सोपहासश्लाघया तं वञ्चयित्वा नाराचेन निर्भिद्य  
कुम्भीन्द्रकुम्भे पातयित्वा जितं जितमिति ब्रुवाणः  
स्वयं पीतं भ्रमयांचकारेति सर्वेषां सामन्तानां सर्वा-  
नपि तुरङ्गमान् स नृपतिराक्रम्य जयाह ॥

इति बाहडकुमारप्रबन्धः ॥

तदनु चौलुक्यराजेन कृतज्ञचक्रवर्तिना आलिङ्ग-  
कुलालाय सप्तशतीग्राममिता विचित्रीचित्रकूटप-  
ट्टिका ददे । ते तु निजान्वयेन लज्जमानाः अद्यापि  
सगरौ इत्युच्यन्ते । यैः छिन्नकण्टकान्तरे प्रक्षिप्य  
क्षितिपो रक्षितस्तेऽक्षरक्षपदे प्रतिष्ठिताः ॥

अथ सोलाकनामां गन्धर्वोऽवसरे, गीतकलया  
 परितोपिताद्राज्ञः षोडशाधिकं द्रुमाणां शतं प्राप्य  
 तेन सुखभक्षिकां विसाध्य बालकांस्तर्पयन् राज्ञा  
 कुपितेन निर्वासितः । ततो<sup>१</sup> विदेशं गतस्तत्रत्य-  
 भूपतेर्गीतकलया रञ्जितात्प्रसादप्राप्तं गजयुगलमा-  
 नायोपायनीकुर्वन् चौलुक्यभूपालेन संमानितः ।  
 कदाचित्कोपि वैदेशिकगन्धर्वो मुपितोस्मि मुपि-  
 तोस्मीति तारं बुम्बारवं कुर्वाणः, केन मुपितोसीति  
 राज्ञाभिहितो मम गीतकलया समीपागतेन, मया  
 कौतुकाद्गलन्यस्तकनकशृङ्खलेन<sup>२</sup> मृगेण त्रस्पतामृगे-  
 न्द्रेणेति विज्ञपयामास । स तदनु भूपतिना समादिष्टः  
 सोलाभिधानो गन्धर्वराडऽटवीमटन् स्फीतगीतारु-  
 ष्टिविद्यया कनकशृङ्खलाङ्कितगलं मृगं नगरान्तः स-  
 मानीय तस्य भूपतेर्दर्शयामास । अथ तत्कलाकौ-  
 शलचमत्कृतमानसः प्रभुः श्रीहेमाचार्यो गीत  
 कलाया अवधिं पप्रच्छ । स शुष्कदारुणः पल्लवप्ररोह  
 मवधिं विज्ञप्तवान् । तर्हि तत्कौतुकं ददर्शयेत्यादिष्टः

१ C तस्य चौलुक्यराज्ञः पट्टाभर्षणेनन्तरं स सोलाकनामा

२C स करेणुमारुह्य वि० ३ B सामीप्यमुपेयुषा वीतुमार्थितगलशृङ्ख-

लेन ४५ D गलसेव्यत्कनकशृङ्ख-

अर्बुदाद्विरोर्वरहकनामानं वृक्षमाक्षेपादानाय्य त-  
च्छुष्कशाखायाः काष्ठं राजाङ्गणे कुमारमृत्तिकया  
कृत्वा लवाले निवेद्य निजया नवगीतकलया सद्यः  
प्रोह्य सत्पल्लवं तं निवेदयन् सनृपतीन् भट्टारकश्रीः  
हेमचन्द्रसूरीन् परितोपयामास ।

इति अच्छङ्गैकारसोलाकप्रबन्धः ॥

अथ कदाचित्सर्वावसरे स्थितचौलुक्यचक्रवर्ती  
कौङ्कुणदेशीयमल्लिकार्जुनाभिधानस्य राज्ञो मागधेन  
राजापितामह इति विरुदमभिधीयमानमाकर्ण्य तद-  
सहिष्णुतया सभां निभालयन् नृपचित्तविदा मन्त्रिणा  
ऽम्बडेन योजितकरसंपुटं दर्शयता चमत्कृतः, सभा-  
विसर्जनानन्तरमञ्जलिवन्धस्य कारणं पृच्छन्नेवमूचे ।  
यदस्यां सभायां स कोपि सुभटो विद्यते यं  
प्रस्थाप्य मिथ्याभिमानिनं चतुरङ्गनृपवन्नृपाभासं  
मल्लिकार्जुनं विनाशयाम इत्याशयविदा मया  
त्वदादेशक्षमेण चाञ्जलिवन्धश्चक्रे इति विज्ञातिस-  
मनन्तरमेव तं नृपं प्रति प्रयाणाय दलमेकीकृत्य  
पश्चाद्गङ्गाप्रसादं दत्त्वा समस्तसामन्तैः तमं विसर्ज-  
य । स चानवच्छिन्नैः प्रयाणैः कुङ्कुणदेशमधिगम्य

दुर्वारवारिपूरां कलविणिनाम्नीं सरितमुत्तरन् पर-  
 स्मिन्कूले आवासेषु दीयमानेषु तं संग्रामसज्जं वि-  
 मृश्य स मल्लिकार्जुननृपतिः प्रहरंस्तत्सैन्यं त्रास-  
 यामास । अथ तेन पराजितः स सेनापतिः कृष्ण-  
 वदनः कृष्णवसनः कृष्णञ्जत्रालंकृतमौलिः कृष्णगु-  
 रूदरे निवसन्, चौलुक्यभूभुजा विलोक्य कस्यासौ  
 सेनानिवेश इत्यादिष्टे कुङ्कुणात्प्रत्यावृत्तस्य पराजि-  
 ताम्बडसेनापतेः सेनानिवेशोयामिति विज्ञप्ते तस्य  
 त्रपया चमत्कृतचित्तः प्रसन्नया दृशा संभावयंस्तद-  
 परैर्वलवद्भिः सामन्तैः समं मल्लिकार्जुनं जेतुं पुनः  
 प्रहितः । स तु कौङ्कुणदेशं प्राप्य तां नदीमास्ताद्य प-  
 द्यावन्धे विरचिते तेनैव पथां सैन्यमुत्तार्य सावधान-  
 वृत्त्याऽसमसमरारम्भे हस्तिस्कन्धाधिरूढं वीरवृत्त्या  
 मल्लिकार्जुनमेव निश्चलीकुर्वन् स आम्बडः सुभटो  
 दन्तमुशलसोपानेन कुम्भिकुम्भस्थलमधिरूढ्य मा-  
 द्यदुद्दामरणरसः प्रथमं प्रहर , इष्टदैवतं स्मरेत्युच्च-  
 रन् धारालकरालकरवालप्रहारान्मल्लिकार्जुनं पृ-  
 थ्वीतले पातयन् सामन्तेषु तन्नगरलुण्ठनव्यापृतेषु  
 केसरिकिशोरः करिणामिव लील्यैव जघान ।

तन्मस्तकं स्वर्णेन वेष्टयित्वा तस्मिन्देशे चौलुक्य-  
चक्रवर्तिन आज्ञा दापयन् श्रीमदऽणहिल्लपुरं प्राप्य  
सभानिषण्णेषु द्वासप्ततिसामन्तेषु स्वामिनः श्री-  
कुमारपालनृपतेश्वरणौ कौङ्कुणदेशीयनृपमल्लिका-  
र्जुनशिरसा समं ववन्दे ।

शृङ्गारकोडीसाडी १ माणिकउ पछेडउ २ पापंखड  
हारु ३ संयोगसिद्धिसिप्रा ४ तथा हेमकुम्भा ३ २स्तथा  
मौक्तिकानां सेडउ ६ चतुर्दन्तहस्ति १ पात्राणि १२०  
कोडीभूसाद्ध १४ द्रव्यस्य दण्डः

श्रीआम्बडेनैतैर्वस्तुभिः सह तच्छिरःकमलेन  
पुपूजे राजा । तदवदातप्रीतेन राज्ञा श्रीमुखेन श्री-  
मदाम्बडामिधानमहामण्डलेश्वरस्य राजपितामह  
इति विरुदं ददे ॥ इति आम्बडप्रबन्धः ॥ (ख०)

अथ कदाचिदणहिल्लपुरे श्रीहिमचन्द्रसूरयो दत्त-  
व्रतायाः पाहिणिनाम्न्याः स्वमातुः परलोकावसरे  
कोटिनमस्कारपुण्ये दत्ते व्यापत्तेरनु तत्संस्कारमहो-  
त्सवे क्रियमाणे त्रिपुरुषधर्मस्थानसंनिधौ तत्तप-  
स्विभिः सहजमात्सर्याद्विमानभङ्गापमाने सूत्रि-  
ते तदुत्तरक्रियां निर्माय तेनैव मन्युना मालवक-

संस्थितस्य कुमारपालनृपतेः स्कन्धावारमलंचक्रुः ।

\*आपण पइ प्रभु होइअं' कइ प्रभु कीजइं हाथि।  
कज्ज करिवाँ माणुसह वीजउ मागु न आत्थि ॥१

इति वचनं तथ्यं<sup>१</sup> विमृशतः श्रीमदुदयनमन्त्रि-  
णा नृपतेर्निवेदितागमनाः कृतज्ञमौलिमणितया प-  
रोपरोधात्सौधमानाः । तद्राज्यप्राप्तिनिमित्तज्ञानं  
स्मारयन्नृपः भवद्भिः सदैव देवतार्चनावसरेऽभ्युपे-  
तव्यमित्युपरोधयन्,

भुञ्जीमहि वयं<sup>२</sup> भैक्ष्यं जीर्णं वासो वसीमहि ।

शयीमहि महीष्टे कुर्वीमहि किमीश्वरैः ॥ १

इति सूरिभिरभिहिते नृपः ।

एकं मित्रं भूपतिर्वा यतिर्वा

एका भार्या सुन्दरी वा दरी वा ।

एकं शास्त्रं वेदमध्यात्मकं वा

एको देवः केशवो वा जिनो वा ॥१

इति महाकविप्रणीतत्वात्सरलोकसमारचनाय भ-

\* स्वयं प्रभुः समर्थो भवेत् यदि कमपि प्रभुं क्रियते हस्ते

मनुष्याणां कार्यं कर्तुमन्यो मार्गो नास्तीति हेमचन्द्रवाक्यम्

१ C D पइहोइय २ C काजकरे वा मणुसह ३ A मागत आथि.

४ C वचस्तत्त्वं ५ A वरं [६ B C D अन्यनि त्रिचरणानि मान्यत्र]

वाद्भिः सह मैत्र्यमभिलषामीति व्याहरन्, अथाप्र-  
तिपिद्धमनुमतमिति तस्य महर्षेः परीक्षितचित्तवृत्तिः  
श्रीमुखेन स नृपः स्खलनाकारिणां वेत्तिणां सर्वसम-  
यकं ददौ । अथ तत्र गतायाते संजायमाने सूरैर्गु-  
णग्रामस्तवं कुर्वत्युर्वीपतौ पुरोधा विराधादामिगः  
प्राह ।

विश्वामित्रपराशरप्रभृतयो येऽन्येऽन्धुपत्राशिन-  
स्तेपि स्त्रीमुखपङ्कजं सुललितं दृष्ट्वैव मोहं गताः ।  
आहारं सघृतं पयोदधियुतं भुञ्जन्ति ये मानवा-  
स्तेपामिन्द्रियनिग्रहः कथमहो दम्भः समालोक्य-  
ताम् ॥ १ ॥

इति तद्वचनान्तरं हेमचन्द्रः ।  
सिंहो बली द्विरदशूकरमांसभोजी  
संवत्सरेण रतमेति किलैकवेलम् ।  
पारापतः खरशिलाकणभोजनोऽपि  
कामी भवत्यनुदिनं वद कोऽत्र हेतुः ॥ १

तन्मुखमुद्राकारिणि प्रत्युत्तरेऽभिहिते सति, नृप-  
प्रत्यक्षं केनापि मत्सरिणैते तिताम्बराः सूर्यमपि न  
मन्यन्ते' इत्यभिहिते

अधाम<sup>१</sup> धामधामार्कं वयमेव हृदि स्थितम् ॥

यस्यास्तव्यसने ज्ञाते<sup>२</sup> त्यजामो भोजनं यतः ॥ १॥

इति प्रामाण्यनैपुण्याद्वयमेव सूर्यभक्ताः नैते “त-  
न्मुखवाधे ज्ञाते” कदाचिद्देवतावसरक्षणे सौधमागते  
मोहान्धकारधिकारचन्द्रे श्रीहेमचन्द्रे यशश्चन्द्रगणिना  
रजोहरणेनासनपदं प्रमार्ज्य काम्बले तत्र निहिते,  
अज्ञाततत्त्वतया किमेतदिति नृपेण पृष्ठः प्राह ।  
कदाचिदिह कोपि जन्तुर्भवति तदावाधापरिहाराया-  
ऽसौ प्रयत्नो, यदा प्रत्यक्षतया जन्तुर्निरीक्ष्यते तदैवे-  
दं युज्यते नापरथा वृथाप्रयासहेतुत्वादिति युक्ति-  
युक्तां नृपोक्तिमाकर्ण्य तैः सूरिभिरभिदधे । गजतुर-  
गाद्या चमूः किं प्रतिनृपतिरिषावुपस्थिते क्रियते उत  
पूर्वमेव यथायं राजव्यवहारस्तथा धर्मव्यवहारोपीति  
तद्गुणरञ्जितहृदा पूर्वप्रतिपन्ने राज्ये दीयमाने सर्व-  
शास्त्रविरोधहेतुत्वात् । यदाह ॥

राजप्रतिग्रहदग्धानां ब्राह्मणानां युधिष्ठिर ।

दग्धानामिव वीजानां पुनर्जन्म न विद्यते ॥ १

इदं पुराणोक्तं । तथाच जैनागमः ॥



\* सात्ते ही गिहिमत्ते य<sup>१</sup> रायपिण्डे किमिच्छए ।

इति तत्संवाधाच्चमत्कृतचित्तः श्रीपत्तनं प्राप ।  
भूपोऽन्यदा मुनिं पप्रच्छ कयापि युक्त्याऽस्माक-  
मपि यशःप्रसरः कल्पान्तस्थायी भवतीति तदीयां  
गिरं श्रुत्वा विक्रमार्क इव विश्वस्पानृण्यकरणात् ,  
यद्वा सोमेश्वरस्य काष्ठमयं प्रासादं वारिधिशीकर-  
निकरैरासन्नाम्नःशीर्णप्रायं युगान्तस्थायिकीर्तये  
समुद्धरेति चन्द्रातपनिभया श्रीहेमचन्द्रगिरोहसन्मु-  
दम्मोधिर्नृपस्तमेव महर्षिं पितरं गुरुं दैवतं मन्य-  
मानो विजानाति । निरन्तरं द्विजाननिन्दंस्ततः प्रा-  
सादोद्वाराय तदैव दैवज्ञनिवेदितसुलग्नस्तत्र पञ्च-  
कुलं प्रस्थाप्य प्रासादप्रारम्भमचीकरत् । अन्यदा श्री-  
हेमचन्द्रस्य लोकोत्तरैर्गुणैः परिहृतदहयो नृपो मन्त्रि-  
श्रीउदयनमिति पप्रच्छ । एतादृशं पुरुषरत्नं समस्तवं-  
शावतंसं देशे च समस्तगुणाकरे नगरे च कस्मि-  
न्समुत्पन्नमिति नृपादेशादनु स मन्त्री जन्मप्रभृति  
तच्चरित्रं पवित्रमित्यमाह । अर्द्धाष्टमनामनि देशे  
धुन्धुकनगरे श्रीमन्मोढवंशे चादिगनामा व्यवहारी

\* शक्ते हि गृहिमात्रे रायपिण्डं किमर्थमिच्छति मुनिरिति

१ A B मुनिगिहिमित्येव २ C अन्त

सतीजनमतालिका जिनशासनदेवीव तत्सधर्मचारिणी शरीरिणीव श्रीः पाहिणीनाम्री चामुण्डागोनशयोराद्याक्षरेणाङ्कितनामा तयोः पुत्रश्चाङ्गदेवोभूत् । स चाष्टवर्षदेशयः श्रीदेवचन्द्राचार्येषु श्रीपत्तनातीर्थयात्राप्रस्थितेषु धुन्धुके श्रीमोढवसहिकायां देवनमस्करणाय प्राप्तेषु सिंहासनस्थिततदीयनिपद्याया उपरि सवयोभिः समं रममाणः शिशुभिः सहसानिपसाद् तदङ्गप्रत्यङ्गानां जगद्विलक्षणानि लक्षणानि प्रेक्ष्य । अयं यदि क्षत्रियकुले जातस्तदा सार्वभौमचक्रवर्ती यदि वणिक्कुले जातस्तदा महामात्यश्चेद्दर्शनं प्रातिपद्यते तदा युगप्रधान इव कलिकालेपि कृतयुगमवतारयति स आचार्य इति विचार्य तन्नगरव्यवहारीभिः समं तल्लिप्सया चाविगौकः प्राप्य तस्मिंश्चाविगे ग्रामान्तरभाजि तत्पत्न्या विवेकिन्या स्वागतादिभिः परितोपिताः श्रीमन्तस्त्वत्पुत्रं याचितुमिहागता इति व्याहरन्तोऽथसा हर्षाश्रूणि मुञ्चती स्वं रत्नगर्भं मन्यमाना श्रीसंघस्तीर्थकृतां मान्यः स मत्सूनुं याचते इति हर्षास्पदेऽपि विषादः, एतस्य पिता नितान्तमिथ्यादृष्टिः ।

तादृशोपि सम्प्रति ग्रामे नास्ति। अथ तैर्व्यवहारि-  
भिस्त्वया दीयतामित्युक्ते स्वदोषोत्तारणाय 'मं-  
त्रा दाक्षिण्यादमात्रगुणपात्रं पुत्रस्तेभ्यो गुरुभ्यो  
ददे । तदनन्तरं तथा श्रीदेवचन्द्रसूरिरिति तदीय-  
मभिधानमवोधि । तैर्गुरुभिः स शिशुः शिष्यो भ-  
विष्यतीति पृष्ठः, उमित्युच्चरन् प्रतिनिवृत्तैस्तैः समं  
कर्णवित्यामाजगाम । उदयनमन्त्रिगृहे तत्सुतैः  
समं बालधारकैः पाल्यमानो यावदास्ते तावता  
ग्रामान्तरादागतश्चाविगस्तं वृत्तान्तं परिज्ञाय पुत्र-  
दर्शनावधिसंन्यस्तसमस्ताहारस्तेषां गुरूणां नाम  
मत्वा कर्णवर्तिं प्राप । तद्वसतौ समागत्य कुपितः  
पितेपत्तान्प्रणनामा गुरुभिः सुतानुसारेणोपलक्ष्य वि-  
चक्षणतया विविधाभिरावर्जनाभिरावर्जितः, तत्रानी-  
तेनोदयनमन्त्रिणा धर्मबन्धुबुद्ध्या निजमन्दिरे नी-  
त्वा ज्यायःसहोदरभक्त्या भोजयांचक्रे । तदनु चा-  
ङ्गदेवसुतं तदुत्सङ्गे निवेश्य पञ्चागप्रसादसहितं दु-  
कूलत्रयं प्रत्यक्षं लक्षत्रयं चोपनीय सभक्तिक्रमाव-  
र्जितः । तं प्रति चाविगः प्राह । क्षत्रियस्य मूल्ये  
अशीत्यधिकसहस्रं तुरगस्य मूल्ये पञ्चाशदधिकानि  
सप्तदशशतानि अकिंचित्करस्यापि वणिजो मूल्ये

नवनवतिकलभाः एतावता नवनवतिलक्षाः । त्वं  
तु लक्षत्रयं समर्पयन्नौदार्यछद्मना कार्पण्यं प्रादुः-  
कुर्ये । मत्सुतस्तावदनर्घ्यो भवदीया च भक्तिरनर्घ्य-  
तमा तस्य मूल्ये सा भक्तिरस्तु शिवनिर्माल्यमि-  
वास्पृश्यो मे द्रव्यसंचयः । इत्थं चाविगे सुतस्य  
स्वरूपमभिदधाने प्रमोदपूरितचित्तः स मन्त्री अकु-  
ण्ठोत्कण्ठतया तं परिरभ्य साधु साध्विति वदन्  
श्रीमानुदयनः प्राह । मम पुत्रतया समर्पितो यो-  
गिमर्कट इव सर्वेषां जनानां नमस्कारं कुर्वन्  
केवलमपमानपात्रं भविता, गुरुणां दत्तस्तु गुरुपदं  
प्राप्य बालेन्दुरिव त्रिभुवननमस्करणीयोजायतेऽतो  
यथोचितं विचार्य व्याहरेत्यादिष्टः । स भवद्विचार  
एव प्रमाणमिति वदन् गुरुपार्थ्वं नीतः सुतं गुरु-  
भ्योऽदीदपत् । तदनु सुतस्य प्रव्रज्याकरणोत्सव-  
श्चाविगेन चक्रे । अथ कुम्भयोनिरेवाप्रतिमप्रतिभा-  
भिरामतया समस्तदाडमयाम्भोधिमुष्टिंथयोऽभ्यस्त-  
समस्तविद्यास्थानो हेमचन्द्र इति गुरुदत्तनाम्ना प्र-  
तीतः । सकलसिद्धान्तोपनिषन्निपण्णधीः पट्त्रिंशता  
सूरिगुणैरलंकृततनुर्गुरुभिः सूरिपदेऽभिषिक्तः ॥ इति  
मन्त्रिणोदयनेनोदितां हेमाचार्यजन्मप्रवृत्तिमाकर्ण्य

नृपो मुमुदेतरां । अथ श्रीसोमनाथदेवस्य प्रासादा-  
रम्भे शिखरशिलानिवेशे संजाते सति पञ्चकुलप्र-  
हितवर्द्धापनिकाविज्ञप्तिकां नृपः श्रीहेमचन्द्रस्य गु-  
रोर्दर्शयन्, अयं प्रासादप्रारम्भः कथं निष्पत्यूहं प्र-  
माणभूमिमधिरोढेति पृथ्वीपरिवृढेनानुयुक्तः श्रीमा-  
न्किञ्चिदुचितं विचिन्त्य गुरुरुचिवान् । यदस्य  
धर्मकार्यस्यान्तरायपरिहाराय ध्वजारोपं यावदजि-  
ह्वब्रह्मसेवा, अथवा मद्यमांसनियमो द्वयोरेकतरं  
किमप्यङ्गीकरोतु नृप इत्यभिहिते तद्वचनमाक-  
र्ण्य मद्यमांसनियममभिलपन्, श्रीनीलकण्ठोपरि  
विमुच्योदकं तं चाभिग्रहं जग्राह । संवत्सरद्वयेन त-  
स्मिन्प्रासादे कलशध्वजाधिरोपं यावन्निवृत्ते तं  
नियमं मुमुक्षुर्गुरुनऽनुज्ञापयंस्तैरूचे । यद्यनेन नि-  
जकीर्त्तनेन सार्द्धमर्द्धचन्द्रचूडं प्रेक्षितुमर्हसि, त-  
द्यात्राप्यन्ते नियममोचनावसर इत्यभिधायोत्थिते  
श्रीहेमचन्द्रमुनन्दिने पट्त्रिंशद्गुणैरुन्मीलन्नीलीराग-  
रक्तहृदयस्तमेकमेव संसदि प्रशशंस तः । निर्निमित्त-  
वैरिपरिजनस्तत्तेजःपुञ्जमसाहिष्णुः

उज्ज्वलगुणमभ्युदितं क्षुद्रो द्रष्टुं न कथमपि क्षमते ।  
दग्ध्या तनुमपि शलभो दीपं दीपार्चिपं हरति ॥१

इति न्यायात्पट्टिमांसादनदोषमप्यङ्गीकृत्य त-  
दपवादानेवादीत् । यदयममन्दछन्दानुवृत्तिपरः से-  
वाधर्मकुशलः केवलं प्रभोरभिमतमेव भाषते यद्येवं-  
तदा प्रातरूपेतः श्रीसोमेश्वरयात्रार्थमत्यर्थमभ्यर्थ्येत  
। राज्ञा तथाकृते सूरयः प्रोचुः । यद्बुभुक्षितस्य किं  
निमन्त्रणायह उत्कण्ठितस्य किं केकारवश्रावणमि-  
ति लोकरूढेस्तपस्विनामधिकृततीर्थाधिकाराणां को  
नाम नृपतेरत्र निर्बन्धः । इत्थं गुरोरङ्गीकारे किं भ-  
वद्योग्यं सुखासनप्रभृति वाहनादि च लभ्यतामि-  
तीरिते वयं चरणचारेणैव संचरन्तः पुण्यमुपाल-  
मामहे परं वयमिदानीमाष्टछद्य मितैर्मितैः प्रयाणकैः  
श्रीशत्रुंजयोज्जयन्तादिमहातीर्थानि नमस्कृत्य  
भवतां श्रीपत्तनप्रवेशे मिलिष्याम इत्युदीर्य तत्त-  
थैव कृतवन्तः । नृपतेः समग्रसामग्र्या कतिपयैः  
प्रयाणकैः श्रीपत्तनं प्रातस्य श्रीहेमचन्द्रमुनीन्द्र-  
मिलनादतिप्रमुदितस्य सन्मुखागतेन गण्ड०  
श्रीवृहस्पतिनानुगम्यमानस्य भहोत्सवेन पुरं  
प्रविश्य श्रीसोमेश्वरप्रासादसोपानेष्वाक्रान्तेषु भू-  
पीठलुण्ठनादरादनन्तरं चिरतरातुल्यायल्लकानुमा-

नेन गाढमुपगूढसोमेश्वरालिङ्गस्य, एते जिनादपरं न  
नमस्कुर्वन्तीति मिथ्यादृग्वचसा, भ्रान्तचित्तस्य श्री-  
हेमचन्द्रं प्रति एवंविधा गरिविरासीत् । यदि  
युज्यते तवैतैरुपहारैर्मनोहारिभिः श्रीसोमेश्वरमर्च-  
यन्तु भवन्तः । तत्तथेति प्रतिपद्य क्षितिपकोशादा-  
गतेन कमनीयेनोद्गमनीयेनालंकृततनुर्नृपतिनि-  
र्देशाच्छ्रीवृहस्पतिना दत्तहस्तावलम्बः प्रासाद-  
देहलीमधिरुह्य किञ्चिद्विचिन्त्य प्रकाशं । अस्मि-  
न्यासादे कैलासनिवासी महादेवः साक्षादस्तीति  
रोमाञ्चकञ्चुकितां तनुं विभ्राणो द्विगुणीक्रियता-  
मुपहार इत्यादिश्य शिवपुराणोक्तदीक्षाविधिना-  
वहाननावगुण्ठनमुद्रामन्त्रन्यासविसर्जनोपचारदि-  
भिः पञ्चोपचारविधिभिः शिवमभ्यर्च्य तदन्ते  
यत्र तत्र समये यथा तथा  
योसि सोस्यभिधया यया तया ।  
वर्तदोषकुलुपः स चेद्भवा-  
नेक एव भगवन्नमोस्तु ते ॥ १ ॥  
भवबीजाङ्कुरजनना रागाद्याः क्षयमुपागता यस्य ।  
ब्रह्मा वा विष्णुर्वा महेश्वरो वा नमस्तस्मै ॥ २ ॥  
इत्यादिस्तुतिभिः सकलराजलोकान्विते राज्ञि

सविस्मयमवलोकमाने दण्डप्रणामपूर्वं स्तुत्वा श्री-  
हेमाचार्य उपरते सति स नृपः श्रीवृहस्पतिना  
ज्ञापितपूजाविधिः समधिकवासनया शिवार्चनान्तरं  
धर्मशिलायां तुलापुरुषगजदानादीनि महादानानि  
दत्त्वा कर्पूरारात्रिकमुत्तार्य समग्रं राजवर्गमपसार्य  
तद्गर्भगृहान्तः प्रविश्य, न महादेवसमो देवः न  
मम तुल्यो नृपतिः न भवत्सदृक्षो महर्षिरिति  
भाग्यवैभववशादत्र सिद्धे त्रिकसंयोगे बहुदर्शन-  
प्रमाणप्रतिष्ठासंदिग्धे देवतत्त्वे मुक्तिपदं दैवतम-  
स्मिंस्तीर्थे तप्यगिरा निवेदयेत्प्रभिहितः श्रीहेमा-  
चार्यः किञ्चिद्विया निध्याय नृपं प्राह । अलं पु-  
राणदर्शनोक्तिभिः श्रीसोमेश्वरमेव तव प्रत्यक्षी-  
करोमि, यथा तन्मुखेन मुक्तिमार्गमवैपीति त-  
द्वाक्यात्किमेतदिति जायटीतीति विस्मयापन्न-  
मानसे नृपे निश्चितमत्र तिरोहितमस्त्येव दैवत-  
मावांगुरुक्तयुक्त्या निश्चलावाराधकौ तदित्थं ह्रन्वसि-  
द्धौ सुकरं दैवतप्रादुःकरणं, मया प्राणिधानं क्रियते भ-  
वता कृष्णागुरुत्क्षेपश्च कार्यस्तदा स परिहार्यो यं य-  
दा न्यक्षः प्रत्यक्षीभूय निषेधयति देवं । अधोभाम्याम-  
पि तथा क्रियमाणे धूमधूम्यान्धकारिते गर्भगृहे नि-



वर्णेषु नक्षत्रमालादीपकेषु आकस्मिके प्रकाशे द्वाद-  
शात्ममहसीव प्रसरति, नृपो नयने संभ्रमादुन्मृज्य  
यावदालोकते तावज्जलाधारोपरि जात्यजाम्बूनद-  
द्युतिं चर्मचक्षुषां दुरालोकमप्रतिमरूपमसंभाव्य-  
स्वरूपं तपस्विनमद्राक्षीत् । तं पदाङ्गप्रभृति त-  
ज्जटावधि करतलेन संस्पृश्य निश्चितदेवतावतारः  
पचाङ्गचुम्बितावनितलं प्रणिपत्य भक्त्या भूमनिति  
विज्ञपयामास । जंगदीश भवदर्शनात्कृतार्थे दृशौ  
आदेशप्रसादात्कृतार्थं श्रवणयुगलमिति विज्ञप्य  
तूष्णीं स्थिते मोहनिशादिनमुखात्तन्मुखादिति  
दिव्या गिराविरासीत् । राजन्नयं महर्षिः सर्वदेव-  
तावतारः । अजिह्मपरब्रह्मावलोककरतलकलित-  
मुक्ताफलवत्कालत्रयविज्ञातस्वरूपः । एतदुपदिष्ट-  
एवासंदिग्धो मुक्तिमार्ग इत्यादिश्य तिरोभूते भू-  
तपतावुन्मनीभावं भजति भूपतौ, रेचितप्राणायाम-  
पवनः श्लथीकृतासनबन्धः श्रीहेमचन्द्रो याज्ञनामिति  
वाचमुवाच । तावदिष्टदेवतसंकेतात्स्यक्तराज्याभिमा-  
नो “जीवप आदावधार्यतामिति” व्याहृतिपरे गुरौ  
विनयनन्नमौलिर्यत्कृत्यमादिशेति व्याजहार । अथ

तत्रैव नृपतेर्यावज्जीवं पिशितप्रेसन्नानियेमं दत्त्वा  
 ततः प्रत्यावृत्तौ गुरुक्षमापती श्रीमदणाहिह्रपुरं प्रा-  
 पतुः । श्रीजिनवदननिर्गमपावनीभिः शुद्धसिद्धान्त-  
 गीर्भिः प्रतिबुद्धो नृपः परमार्हतविरुद्धं भेजे । तद-  
 भ्यर्थितः प्रभुः त्रिपट्टिशालाकायुरूपचरितं विंशति-  
 वीतरागस्तुतिभिरुपेतं पवित्रं योगशास्त्रं रचयाच-  
 कार । प्रभोरादेशाञ्चाज्ञाकारिष्वष्टादशदेशेषु चतुर्द-  
 शवत्सरप्रमितां सर्वभूतेषु मारिं निवारितवान् ।  
 तेषु तेषु च देशेषु चत्वारिंशदधिकानि चतुर्दशश-  
 तानि विहाराणां कारयामास । सम्यक्कमूलानि  
 द्वादशतान्यङ्गीकुर्वन्नऽदत्तादानपरिहाररूपे तृतीयव्रते  
 व्याख्यायमाने रुदतीवित्तदोषान् पापैकनिबन्धनान्  
 ज्ञापितो नृपस्तदधिकृतं पञ्चकुलमाकार्यं हासत-  
 तिलक्षप्रमाणं तदीयपट्टकं विपाट्य मुमोच । त-  
 स्मिन्मुक्ते ॥

न येन्मुक्तं पूर्वं रघुनहुपनाभागभरत-

प्रभृत्युर्वीनाथैः कृतयुगकृतोत्पत्तिभिरपि ।

विमुञ्चन्कारुण्यात्तदपि रुदतीवित्तमधुना

कुमारदत्तापाल त्यमसि महतां मस्तमकमणिः ॥१॥

(१. मायमादेरगोर्निवेश २ णः समायाः शपिभ्या अन्यः शान्तेः पाहिः)

इति विद्वद्भिः स्तूयमाने

अपुत्राणां धनं गृह्णन्पुत्रो भवति पार्थिवः ।

त्वं तु संतोषतो मुञ्चन्सत्यं राजपितामहः ॥ १ ॥

इति प्रभुरपि नृपतिमनुमोदयांचक्रे ॥ अथ  
सुरापूदेशीयं सुंदरनामानं विग्रहीतुं श्रीमदुद-  
यनमन्त्रिणं दलनायकीकृत्य समस्तकटकबन्धेन स-  
मं । प्रस्थापयामास सोपि श्रीवर्द्धमानपुरं प्राप्य  
श्रीयुगादिदेवपादान्निनंसुः पुरः प्रयाणकाय स-  
मस्तमण्डलेश्वरान्नभ्यर्च्य स्वयं विमलगिरिमा-  
गतः विशुद्धश्रद्धया श्रीदेवपादानां पूजादि वि-  
धाय यावत्पुरतो विधिवच्चैत्यवन्दनां विभ्रत्ते ताव-  
न्नक्षत्रमालाया दीपवर्तिं देदीप्यमानामादाय मूपकः  
काष्ठमयप्रासादविले प्राविशत् । देवाङ्गरक्षैस्त्याजि-  
तंस्तदनु स मन्त्री समाधिभङ्गात्काष्ठमयदेवप्रासाद-  
विध्वंसभयार्जिणोद्धारं चिकीर्षुः श्रीदेवपादानां पु-  
रत एकभक्तादीनभिग्रहान्जग्राह । तदनु कृतप्रया-  
णः स्कन्धवारमुपेत्य तेन प्रत्यर्थिना समं समरे  
जायमाने परैः पराजिते नृपवले श्रीमदुदयनः स-  
मुत्तस्थौ । तदा तत्प्रहारजर्जरितदेह आवासं नीत्ते

सकरुणं क्रन्दन् स्वजनैस्तत्कारणं पृष्टः सन्निहिते  
 मृत्यौ श्रीशत्रुञ्जयशकुनिकाविहारयोर्जीर्णोद्धारवा-  
 ञ्छया देवक्रुणं पृष्टिलभं मन्त्री प्राह । अथ तैर्भव-  
 न्नन्दनौ वाग्भटान्नभटनामानौ गृहीताभिग्रहौ ती-  
 र्थद्वयमुद्धारिष्यत इत्यर्थे वयं प्रतिभुवः इति तद-  
 ङ्गीकारात्पुलकिताङ्गः धन्यमन्यः अन्त्याराधनकृते  
 स मन्त्री कमपि चारित्रिणमन्वेपयामास । तस्मिन्न-  
 नुपलभ्यमाने कमपि वण्ठं तद्वेपमानीय निवेदिते  
 मन्त्री तदङ्गी ललाटे परिस्पृशन् तत्समक्षं दशधारा-  
 धनां विधाय श्रीमानुदयनः परलोकं प्राप । वण्ठस्तु  
 चन्दनतरोरिव तद्वासनापरिमलेन क्षुद्रद्रुमवद्वानितो  
 ऽनशनप्रतिपत्तिपूर्वकं रैवतके जीवितान्तं चकार ।  
 अथाणहिल्लपुरं प्राप्तैस्तैः स्वजनैस्तं वृत्तान्तं ज्ञापि-  
 तौ वाग्भटान्नभटौ तानेवाभिग्रहान्गृहीत्वा जीर्णो-  
 द्धारमारभाते । वर्षद्वयेन श्रीशत्रुञ्जये प्रासादे नि-  
 प्यन्ने उपेत्यागतमानुषेण वर्द्धापनिकायां वाच्यमा-  
 नायां पुनरागतेन द्वितीयपुरुषेण प्रासादः स्फुटित  
 इत्यूचे । ततस्तत्रपुत्रायां गिरं निशम्य श्रीकुमा-  
 रपालभूपालमाष्टच्छय महं० कपदिनि श्रीकरणमुद्रां

नियोज्य तुरंगमाणां चतुर्भिः सहस्रैः सह श्रीशत्रु-  
जयोपत्यकां प्राप्य स्वनाम्ना वाग्भटपुरनगरं निवे-  
शयामास । सध्रमप्रासादे पवनः प्रविष्टो न निर्या-  
तीति स्फुटनहेतुं शिल्पिभिर्निर्णीयोक्तं भ्रमहीने च  
प्रासादेऽनिरवद्यतां विमृश्याऽन्वयाभावे धर्मसंतां-  
नमेवास्तु ॥ पूर्वोद्धारकारिणां श्रीभरतादीनां पङ्क्तौ  
नामास्तु, इति तेन मन्त्रिणा दीर्घदर्शिन्या बुद्ध्या  
विभाव्य भ्रमभित्योरन्तरालं शिलाभिर्निचितं वि-  
धाय वर्षत्रयेण निष्पन्नप्रासादे कलशदण्डप्रतिष्ठायां  
श्रीपत्तनसंघं निमन्त्रणापूर्वमिहानीय महता महेन  
सं० १२११ वर्षे ध्वजारोपं मन्त्री कारयामास ।  
स शैलमयविम्बस्य मम्माणीयस्वनीसक्तपरिकरमा-  
नीय निवेशितवान् । श्रीवाग्भटपुरे नृपतिर्पितुर्ना-  
म्ना त्रिभुवनपालविहारे श्रीपार्श्वनाथं स्थापितवान् ।  
तीर्थपूजाकृते च चतुर्विंशत्यारामान्नगरे परितो  
वप्रं देवलोकस्य ग्रासवासोदि दत्त्वा चैतत्सर्वं का-  
रयामास । अस्य तीर्थोद्धारस्य व्वये

१ A बाहड. २ C निरन्वयतां च (३ भ्रमहीन विहारं कारयितुः  
सत्तानाभाव इति शिल्पशास्त्रोक्तत्वात्) ४ AB स० ११६९ ॥ ५ B  
C श्रीवासादि.

२२० प्रबन्धचिन्तामणिःसग. ४

पष्टिलक्षयुता ६० कोटी व्ययिता यत्र मन्दिरे ।

स श्रीवाग्भटदेवोत्र वर्ण्यते विबुधैः कथम् ॥

इति श्रीशत्रुंजयोद्धारप्रबन्धः

॥ अथ विश्वैकसुभटेन श्रीआम्रकभटेन पितुः श्रे-  
यसे भृगुपुरे श्रीशकुनिकविहारप्रासादप्रारम्भे खन्य-  
माने गर्त्तापूरे नर्मदासान्निध्यादकस्मान्मिलितायां  
भूमौ वाधितेषु कर्मकरेषु कृपापरवशतयात्मानमेवा-  
मन्दं निन्दन्सकलत्रपुत्रस्तत्र झम्पामदात् ॥ तत्साह-

१ Δ सप्तपष्टि.

[२ वर्षैरुद्गार्कसरयैः स्वजनकवचसा विक्रमार्कत्प्रयातै-  
र्यतैनाः सिद्धशैले जिनपतिभुवनं वाग्भट प्रोद्धद्वार ॥

इति चा. कु. च. स. ७)

३ C छदित

• तत्सबन्धश्चायम् ॥

तस्मिन् कृते काचिददृश्यरूपा

देवी जगादामृदुनादमेवम् ।

नारीनृरूप मिथुन यदीह

निहसि तत्कार्यमिदं भवेत्ते ॥ ८

निषीय ता वाचमवाच्यरूपां

दध्यौ हृदी सच्चिवाधिराजः ।

मिथ्यादृशो देवजनगाभान्

धिगीदृशान् दुष्टननान् मुरान् हा ॥ ९

नुहोमि गीगान् जिनधर्मविज्ञो

जातिंशयात्तस्मिन्प्रत्यूहे निराकृते । शिलान्यासपूर्व

ऽमीषां वचोभिः किमु निर्दयानाम् ।

विमानिताश्चैत्यममी विधातुं

दास्यन्ति मह्यमिह नो हि मह्यम् ॥ १०

हत्वात्मानं तादिह निखिलात्रिर्जरांस्तोषयित्वा

कार्यं सिद्धिं द्रुततरमिदं प्रापयाम्येष धर्म्यम् ।

नूनं प्राणागमनमनसोऽमी गमिष्यन्ति काला—

त्तस्मादेभिः स्थिरमतिचलैः पुण्यमत्रार्जयामि ॥ ११

गते तस्मिन् यममुखसमे सानुकम्प्यः स क्षम्पां

नि कम्पान्तः सरयसमदाद्भार्यया सार्द्धमुच्चैः ।

हाहाकारं खरतरगिरा चक्रिरे तत्र लोकाः

प्रान्त प्राप्ते सति नरवरे को न दुःखी भवेद्धा ॥ १२

समुद्यते साधु परार्थमेव—

मित्रे गते तत्र तदास्तदेशम् ।

सच्चक्रमाक्रन्दपर रुरोद

तमोविलिप्तेव बभूव पृथ्वी ॥ १३

अथान्तारिक्षान्तरिता तमाह

सा व्यन्तरी सत्वगुणेन तुष्टा ।

वरं वृणु प्राणवधेऽवधेहि

मा साहसं विस्मयकारि विश्वे ॥ १४

भवत्परीक्षार्थमकारि सर्व—

मेतन्मया मायितयात्र कर्म ।

त्वमेव देवासुरमानवाना

सत्त्वेन मन्त्रिन् विसनोपि चित्रम् ॥ १५

एव वदन्ती च मुद ददाना

समस्तप्रासादे निष्पन्नेः कलशदण्डप्रतिष्ठावसरे न-  
 गरसंघान्निमन्त्रणपूर्वं, तत्रानीय यथोचितमज्ञानव-  
 खाभरणादिसन्मानैः सन्मान्य सामन्तेषु यथागतं  
 प्रहितेषु, आसन्ने लग्ने संजायमाने भट्टारकश्रीहे-  
 मचन्द्रसूरिपुरस्सरं सनृपतिं श्रीमदणहिल्लपुरसंघं  
 तत्रानीयातुच्छवात्सल्यादिभिर्भूषणादिदानैः संतर्प्य  
 ध्वजाधिरोपाय संचरन्नऽर्थिभिः स्वयं स्वं मन्दिरं मु-  
 पितं कारयित्वा श्रीसुव्रतप्रासादे ध्वजं महाध्व-  
 जोपेतमध्यारोप्य हर्षोत्कर्षात्तत्रानालस्यं लास्यं  
 विधाय तदन्ते भूपतिनाऽभ्यर्थित आरात्रिकं गृह्णन्  
 तुरङ्गं द्वारभट्टाय दत्त्वा राज्ञा स्वयं कृततिलकाव-  
 सरे द्वासप्तत्या सामन्तैश्चामरपुष्पवर्षादिभिः कृ-  
 तसाहाय्यस्तदाभ्यागताय वन्दिने कृतकङ्कणवितरणो  
 बाहुभ्यां धृत्वा बलात्कारेण नृपेणावतार्यमाणा-  
 रात्रिकमङ्गलप्रदीपः श्रीसुव्रतस्य च गुरोश्चरणौ प्रण-  
 म्य साधर्मिकवन्दनापूर्वं नृपतिं स त्वारात्रिकहेतुं

देवी तदा तं विदधेऽक्षताङ्गम् ।

स्यात्साहस यस्य नरस्य शस्य

तस्यात्र सेवा स्नयन्ति देवाः ॥ १६

इत्यादि चारित्रमुन्दरगाणि कृतं कुमारपात्रचरित्रमप्तमसर्गोद्बोध्यम् ॥

(१ मुष्ट २ गृहान)



पप्रच्छ । यथा द्यूतकारो द्यूतरसातिरेकाच्छिरःप्र-  
भृतीन् पदार्थान् पणीकुरुते तथा भवानप्पतः परम-  
र्थितस्त्वागरसातिरेकाच्छिरोपितेभ्यो ददासीति नृ-  
पेणादिष्टे भवलोकोत्तरचरित्रेणापहृतहृदया विस्मृता-  
जन्ममनुष्यस्तुतिनियमाः श्रीहैमाचार्याः ।

किं कृतेन न यत्र त्वं यत्र त्वं किमसौ, कलिः ।  
कलौ चेद्भवतो जन्म कलिरस्तु कृतेन किम् ॥ १ ॥  
इत्यमात्रभटमनुमोद्य गुरुक्षमापती यथागतं ज-  
ग्मतुः ॥ अथ तत्रागतानां प्रभूणां श्रीमदाम्रभटस्या-  
कस्मिकदेवीदोषात्पर्यन्तदशामागतस्यापृच्छनविज्ञ-  
प्तिकायामुपागतायां सत्यां तत्कालमेव तस्य महा-  
त्सनः प्राप्तादशिखरे नृत्यतो मिथ्यादृशां देवीनां  
दोषः संजात इत्यवधार्य प्रदोषकाले यशश्चन्द्रतपो-  
धनेन समं स्वेचरगत्योपलभ्य निमेषमात्रादलंकृत-  
भृगुपुरपरिसरभुवः प्रभवः सैन्यवीमनुनेतुंकृतकायो-  
त्सर्गास्तया जिह्वाकर्पणादवगणनास्पदं दीयमानां  
उदूर्खलैः शालितन्दुलान्प्रक्षिप्य यशश्चन्द्रगणिना प्र-  
दीयमानेषु मुशलप्रहारेषु प्राक्प्राप्तादकम्पो द्वितीये

१ C अर्थिप्रत्यर्थितयाग २ B मूर्देर निधातु स्वा जिह्वा बाहि-  
रकरोतु, ३ C उदूर्खरे

प्रहारे देवीमूर्तिरेव स्वस्थानादुपेत्य वज्रपाणिप्रहा-  
रेभ्यो रक्ष रक्षेत्युच्चरन्ती प्रभोश्चरणयोर्निपपात । इ-  
त्थमनवद्यविद्यावलात्तन्मूलानां मिथ्यादृग्व्यन्तराणां  
दोषं निगृह्य श्रीसुव्रतप्रासादमाजग्मुः ।

संसारार्णवसेतवः शिवपथप्रस्थानदीपाङ्कुरा  
विश्वालम्बनयष्टयः परमतव्यामोहकेतूद्वमाः ।

किं वास्माकमनोमतङ्गजदृढालनैकलीलाजुप-  
स्त्रायन्तां नखरद्मयश्चरणयोः श्रीसुव्रतस्वामिनः १  
इति स्तुतिभिः श्रीमुनिसुव्रतमुपास्य श्रीमदाम्रभ-  
टमुल्लासस्तानेन पटूकृत्य यथागतमागुः । श्रीमदुद-  
यनचैत्ये शकुनिकाविहारे घटीगृहे राज्ञः कौक्कु-  
णनृपतेः कलशत्रयं स्थानत्रये न्यास्यते ॥

॥ इति श्रीराजपितामहाम्रभटप्रबन्धः ॥

(१ रोगमुक्तस्तानेन ) २ C उल्लास्य निरोगं कृत्वा ३ एवमार्हत-  
शिरोमणेः प्रभोर्महिमा श्रीमद् ४ कलशत्रितयं ५ A एवं शकुनिका-  
विहारोद्दारे कोटिद्वयं व्ययितम्

• (क) - सिरिपुत्ते नयरे चन्दगुत्तो राया तस्स चन्दलेहाभारिआ  
नीसे सत्तहुं पुत्ताणं उव्वारि सुदंसणा नाम धूआ जाआ । सउणभिवेतुमं  
वाणेण पहया... गुरूणं वयणं मुच्चा... चेइयस्स उद्धारं कारेइ ॥  
सिरिसुव्वयसामिसिद्धिगणाणन्तरं इकारसोहिं लरकेहिं चुलसीइ स-  
हस्सोहिं चउसयसत्तरोहिं वासाणं अइएहिं विक्रमाइच्चसंवच्छरो पयट्ठो ।

॥ अथान्यस्मिन्नऽवसरे कुमारपालनामा नृपः  
पाण्डित्यलिप्तया कप्रदिमन्त्रिणोऽनुमतेन भोजना-  
नन्तरं क्षणं केनापि विदुषा वाच्यमाने कामन्दकीय-  
नीतिशास्त्रे ॥

जीवन्तसुव्ययसामिअदिक्खाएपुण एगारसलक्खोहि अट्ठावीसूणपञ्चणवइ-  
सहस्सोहि वासाणं विक्रमो भावी एसा सउलिआविहारस्स उप्पत्ती ।  
लोइअतित्थाणि अणेगाणि भरुअत्थे वदन्ति । कमेण उदयपुत्तेण  
वाहडेण सिञ्जुजपासाय उद्धारकारिए । तदणुएण अम्बडेण पिउणो  
पुण्णत्थं सउलिआविहारस्स उद्धारो कारिए । मिच्छदिट्ठी सिन्धवदे-  
वीए अम्बडस्स पासायसिहरे नच्चन्तस्स उवस्सग्गो कउं सोउ निवारिउ  
विज्जावलेण सिरिहेमचन्द्रसूरिोह अस्सावबोहतित्थस्स एस कप्पो ॥  
इत्यश्वावबोधकल्पे. मा. प. २७ [ श्रीपुण्ये नगरे चन्द्रगुप्तो रा-  
जा तस्यचन्द्रलेखा भार्या तस्याः सप्तानां पुत्राणां उपरि सुदंसणा नाम  
सुता जाता । शकुनीभवे त्वं वाणेन निहता । नवकारप्रभावेण राज-  
सुता जातेत्यादि गुरुणां वचनं श्रुत्वा । चैत्यस्योद्धारं करितं । तन्ना-  
म्ना शकुनिकाविहारः ॥ श्रीमुव्रतस्वामिसिद्धिगमनानन्तरं एकादशल-  
क्षैश्चतुरशीतिसहस्रैश्चतुःशतैः सप्तदशोत्तरैः वर्षाणां व्यतिक्रान्तैः वि-  
क्रमसंवत्सरः प्रवर्तितः । जीवतः मुव्रतस्वामिनो दिक्षाया आरभ्य ए-  
कादशलक्षैः अष्टाविशत्यूनपञ्चनवतिसहस्रैः वर्षाणां विक्रमो, भावी  
एषा शकुनिकाविहारस्योत्पत्तिः । लौकिकतीर्थाणि अनेकानि भृगुक-  
च्छे वर्त्तन्ते ॥ क्रमेण उदयपुत्रेण वाग्भटेन शत्रुञ्जयपार्श्वनाथोद्धारः  
कारितः । मिथ्यादृष्टिसैन्धवीदेव्या आम्रभटस्य प्रासादशिखरे नृत्यतः  
उपसर्गः कृतः, स निवारितः । विद्यावलेन श्रीहेमचन्द्रसूरिभिः । अ-  
श्वावबोधतीर्थस्यैषः कल्पः ॥)

२२६ प्रबन्धचिन्तामणिःसर्गः ४

पर्जन्य इव भूतानामाधारः पृथिवीपतिः ।

विकलेपि हि पर्जन्ये जीव्यते न तु भूपतौ ॥ १

वाक्यमिदमाकर्ण्य नृपतेर्मेघ ऊपम्या इति कुमार-  
पालेनाभिहिते सर्वेष्वपि सामाजिकेषु न्युञ्जनानि  
कुर्वाणेषु तदा कपर्दिमन्त्रिणमवाङ्मुखं वीक्ष्य, एका-  
न्ते नृपपृष्ठ एवमवादीत्। ऊपम्याशब्दे स्वामिना स्व-  
यमुच्चरिते सर्वव्याकरणेष्वेतत्प्रयोगापेतेषु छन्दोनु-  
वर्त्तिभिर्न्युञ्जनानि क्रियमाणे मम द्वेधाऽवाङ्मुख-  
त्वमुचितं । तथा वरमराजकं विश्वं न तु मूर्खो रा-  
जेति प्रतीपभूपालमण्डलेष्वपकीर्त्तिः प्रसरति । अ-  
तोऽस्मिन्नर्थे उपमेयं ऊपम्यं उपमेत्याद्याः श-  
ब्दाः शुद्धाः । तद्वचनानन्तरं राजा शब्दव्युत्पत्ति-  
हेतवे कस्याप्युपाध्यायस्य समीपे, मातृकापाठात्प्र-  
भृति शास्त्राण्यारभ्यैकेन वर्षेण वृत्तिकाव्यत्रयमधीतं  
विचारचतुर्मुखविरुद्धमर्जितम् ॥

॥ इति विचारचतुर्मुखश्रीकुमारपालाध्ययनप्रबन्धः॥  
कस्मिन्नप्यऽवसरे विश्वेश्वरनामा कविर्वाराणस्याः  
श्रीपत्तनमुपागतैः श्रीहेमसूरीणां संसदि प्राप्तः ।

(१ सर्ग १ श्लो. १३) २ CD अप्रयोगे एतस्मिन् ३ C वृ-  
त्तिकाव्यानां. ४ तर्थातिनेत्रिभमण्डनमूरकृतं कुमारपालचरित्रं द्रष्टव्यम्

तत्र कुमारपालनृपतौ विद्यमाने सः ।

पातु वो हेमगोपालः कम्बलं दण्डमुद्रहन् ।

इति भणित्वा विलम्बमानो नृपेण सकोपं  
निरैक्ष्यत ।

पट्दर्शनपशुग्रामं चारयन्जैनगोचरे ॥ १

इत्युत्तरार्द्धपरितोषितसमाजलोकः । श्रीरामचन्द्रा-  
दीनां समस्यां समर्पयामास ।

व्यापिद्धा नयने मुखं च रुदती स्वे गर्हिते कन्यका  
नैतस्याः प्रसृतिद्वयेन सरले शक्ये पिधातुं दृशौ ।  
सर्वत्रापि च लक्ष्यते मुखशशिज्योत्स्नावितानैरिय-  
मित्यं मध्यगतासखीभिरभितो दृग्मीलनाकेलिपु ॥ १

व्यापिद्धा । इति श्रीकपर्दिना महामात्येन पूरि-  
तायां समस्यायां पञ्चात्कविः पञ्चाशत्सहस्रमूल्यं  
निजं ग्रैवेयकं श्रीकपर्दिनः कण्ठे श्रीभारत्याः पदमि-  
त्युच्चरन्निवेशयामास । अथ तद्वैदग्ध्यचमत्कृतेन नृ-  
पतिना स्वसंनिधौ स्थाप्यमानः ।

कथाशेषः कर्णोऽजनि जनकृशा काशिनगरी

सहर्षं हेपन्ते हरिहरिति हम्मीरहरयः ।

सरस्वत्याश्लेषप्रवणलवणोदप्रणयिनि ।

प्रभासस्य क्षेत्रे मम हृदयमुत्कण्ठितमदः ॥ १

इत्युत्काष्टछद्यमानो नृपसत्कृतः स यथास्थानमगा-  
त् । कदाचिदेव श्रीकुमारपालविहारे नृपाहूताः प्र-  
भवः श्रीकपर्दिना दत्तहस्तावलम्बा यावत्सोपान-  
मारोहन्ति तावन्नर्त्तक्याः कञ्चुके गुणमाकृष्यमाणं  
विलोक्य श्रीकपर्दी ।

\*सोहग्गीउ सहिकञ्चुयउ जुत्त उत्ताणु करेइ ।

एवमुत्का यावद्विलम्बते ।

\*पुट्टिहिं पच्छइ तरुणीयणु जसु गुणग्रहणु करेइ ॥ १

इति श्रीप्रभुपादैरुत्तरार्द्धमपूरि ॥ कदाचित्प्र-  
हृष्टपूये श्रीकपर्दिमन्त्री प्रणामानन्तरं हस्ते किमेतदिति  
पृष्ठः स प्राकृतभाषया हरड इति विज्ञपयामास । प्र-  
भुभिरुक्तं किमद्यापि आहतप्रतिभतया, तद्वचनच्छ-  
लमाकलय्य कपर्दिनोक्त इदानीं न कुतोन्त्याप्याद्यो-  
भूत् । मात्राधिकश्च । हर्षाश्रुपरिपूर्णदृशः प्रभवः  
श्रीरामचन्द्रप्रभृतिपण्डितानां पुरस्तात्तच्चातुरीं प्रश-  
शंसुः । तैरज्ञाततत्त्वैः किमिति पृष्ठो हरड इति

\* सौभाग्यतः सखिकञ्चुको युक्तोत्तानं करोति ।

\* पृष्ठः पश्चात् ( नितम्बैः ) तरुणीजनो यस्मात् गुणग्रहणं ( र-  
ज्जुग्रहण ) करोति ॥ १ ।

शब्दच्छलेन हकारो रडइ । किमद्यापीत्यभिहित-  
मात्रेण वचस्तत्त्वविदाऽनेनेदानीमुक्तं । यतः पुरा  
मातृकाशास्त्रे हकारः प्रान्ते पठ्यते अत एव हरड-  
इ साम्प्रतं त्वऽस्मिन्नामनि प्रथमतया मात्राधिकश्च

॥ इति हरडइ प्रबन्धः ॥

॥ कदाचित् केनापि पण्डितेनोर्वशी-  
शब्दे शकारस्तालव्यो दन्त्यो वेतिष्टेष्टे याव-  
त्प्रभवः किञ्चित्समादिशन्ति तावत्, उरून् अश्नु-  
ते उर्वशीति पत्रकं लखित्वा श्रीकपर्दिना प्र-  
भोरुत्सङ्गे मुक्तं । तत्प्राप्ताण्यात्तालव्यशकारनिर्णय-  
स्तदग्रे प्रभुभिरभिहितः । इत्युर्वशीशब्दप्रबन्धः ॥  
अथान्यदा सपादलक्ष्मीराजस्य कश्चित्सान्धिविग्रहि-  
कः श्रीकुमारपालनृपतेः सभायामुपेतो राज्ञा भव-  
त्स्वामिनः कुशलमिति ष्टष्टः । स मिथ्याभिमानी  
पण्डितमानी च विश्वं लातीति विश्वलस्तस्य च को  
विजयसन्देहः । राज्ञा प्रेरितेन श्रीमता कपर्दिना  
मन्त्रिणा । श्वलश्वल आशुगतौ । इति धातोर्विरि-  
व श्वलति नश्यतीति विश्वलः । इत्येवं प्रधाने-  
न तन्नामदूषणं विज्ञप्त, इति स राजा विग्रहरा-

ज इतिनामं वभार । अपरस्मिन्वर्षे स एव  
 प्रधानः पुरुषः श्रीकुमारपालनृपतेः पुरो विग्रहरा-  
 जनाम विज्ञपयन् मन्त्रिणा श्रीकपर्दिना विग्रो वि-  
 गतनासिक एवं हराजौ रुद्रनारायणौ कृतौ, इति  
 व्याख्यातं । तदित्यवगम्य तदनन्तरं स नृपः कपर्दि-  
 ना नामखण्डनभीरुः कविवान्धव इति नामवभा-  
 र ॥ अथान्यदा श्रीकुमारपालनृपपुरतः श्रीयोग-  
 शास्त्रव्याख्याने संजायमाने पञ्चदशकर्मादानेषु वा-  
 च्यमानेषु

दन्तकेशनखास्थित्वकरोम्णां ग्रहणमाकरे ॥

इति प्रभुकृतमूलपाठे पं० उदयचन्द्रः रोम्णां ग्र-  
 हणामिति भूयो भूयो वाचयन् प्रभुभिलिपिभेदं  
 पृष्ठे स प्राणितूर्याङ्गानामिति व्याकरणसूत्रेण प्राण्य-  
 ङ्गानां सिद्धमेकत्वमिति लक्षणविशेषं स विज्ञपयन्  
 प्रभुभिः श्लाघितो राज्ञान्यैश्च ॥

इति पं० उदयचन्द्रप्रबन्धः ॥

अथ कदाचित्स राजर्षिर्वृतपूरभोजनं कुर्वन् किञ्चि-  
 द्विचिन्त्य कृतसर्वाहारपरिहार इति प्रभुं प्रपच्छ । यद-  
 स्माकं घृतपूराहारो युज्यते नवेति प्रभुभिरभिदधे ।



वणिग्ब्राह्मणयोर्युज्यते कृताभक्ष्यनियमस्य क्षत्रि-  
यस्य तु न तेन पिशिताहारस्यानुस्मरणं भवती-  
त्यमेवेति पृथ्वीपतिरभिधाय पूर्वभक्षितस्याभक्ष्य-  
स्य प्रायश्चित्तं याचितवान् । द्वात्रिंशद्विज्ञानसंख्य-  
या द्वात्रिंशद्विहारान्कारयेति । राज्ञा तथाकृते,  
प्रभुदत्ते लग्ने वटपद्रकान्निजप्रासादे मूलनाथ-  
प्रतिष्ठां कारयितुं श्रीपत्तनमुपेयुषि कान्हनान्नि व्यं-  
वहारिणि तन्नगरमुख्ये प्रासादे तद्विम्बं मुक्त्वा  
यावदुपहारान्गृहीत्वा स पुनरुपैति तावन्नृपतेरङ्गर-  
क्षकैर्निरुद्धे द्वारि अन्तः प्रवेशमलभमानः कियति  
काले व्यतिक्रान्ते उत्थितैर्द्वारपालकैर्व्यतीति प्रति-  
ष्ठाकाले स तत्र प्रविश्य प्रभोः पादमूले लगित्वा  
सोपालम्भं रुरोद । प्रभुभिरन्यथा दुरपनेयं तस्य दुःख-  
मिति विमृश्य रङ्गमण्डपाद्वहिर्भूत्वा नक्षत्रचारेण स्वं  
लग्नमुदितं व्योम्नि विलोक्य घटिकासंवन्धेन नैमित्ति-  
केन यस्मिँल्लग्ने विम्बानि प्रतिष्ठापितानि तेषां व-  
र्षत्रयमायुः सम्प्रतितने लग्ने तु प्रतिष्ठितमिदं चि-  
रायुरिति प्रभुभिरादिष्टं । स तदैव प्रतिष्ठामकारयत्त-

१ A B अञ्जान्तसख्यया एकरिमन्निडवन्धे २ A प्रतिष्ठोत्सरे

३ D कूटयदिका.

२३२ प्रबन्धचिन्तामणिः सर्गः ४

त्प्रभूक्तं तथैव जज्ञे ॥

इत्यभक्ष्याभक्षणप्रायश्चित्तप्रबन्धः ॥

मयापहृते धने पुरा कश्चिन्मूपको मृतस्तत्प्रायश्चित्ते  
राज्ञा याचिते तच्छ्लेयसे प्रभुभिस्तन्नामाङ्कितो वि-  
हारः कारितः । तथाच कयापि व्यवहारिवध्वाऽ  
ज्ञातज्ञातिनामग्रामसंबन्धया पथि दिनत्रयं बुभुक्षि-  
तो नृपतिः शालिकरम्भेन सुहितीकृतस्तत्कृतज्ञत-  
या तत्पुण्याभिवृद्धये करम्भविहारं श्रीपत्तनेऽकारयत्  
॥ तथा यूकाविहारश्चैवं । सपादलक्षदेशे कश्चिदवि-  
वेकी धनी केशसंमार्जनावसरे प्रियार्पितां यूकां  
करतले संगृह्य पीडाकारिणीं तां तर्जयंश्चिरेण मृ-  
दित्वा व्यापदयामास । संनिहितेनामारिकारिपञ्च-  
कुलेन स श्रीमदणहिल्लपुरे समानीय नृपाय निवे-  
दितः । तदनु प्रभूणामादेशात्तदण्डपदे तस्य सर्व-  
स्वेन तत्रैव यूकाविहारः कारितः ॥

इति यूकाविहारप्रबन्धः ॥

अथ स्तम्भतीर्थे सामान्ये सालिगवसहिकाप्रासादे  
यत्र प्रभूणां दीक्षाक्षणो बभूव रत्नविम्बालंकृतस्तत्र  
निरुपमो जीर्णोद्धारः कारितः ॥

इति प्रभदीक्षावसहिकाया उद्धारप्रबन्धः ॥

अथ श्रीसोमेश्वरपत्तने कुमारविहारप्रासादे बृहस्पति-  
नामा गण्डः कामप्येवमिति कुर्वाणः प्रभोरप्रसादाद्भ-  
ष्टप्रतिष्ठः श्रीमदणहिल्लपुरं प्राप्य पोढावश्यके प्रौढिं  
प्राप्य प्रभून् सिपेवे । कदाचिच्चातुर्मासिकपारणके  
प्रभूणां पादयोर्द्वादशावर्त्तवन्दनादनु ।

चतुर्मासी यावत्तव पदयुगं नाथ निकषा  
कपायप्रध्वंसाद्विकृतिपरिहारव्रतामिदम् ।

इदानीमुद्भिद्यन्निजचरणानिलोत्थितकले-

र्जलक्लेशैरन्नैर्मुनितिलकवृत्तिर्भवतु मे ॥ १

इति विज्ञपयंस्तत्कालागतेन राज्ञा प्रसन्नान्प्रभून्वि-  
मृश्य स पुनरेव तत्पददानपात्रीकृतः ॥

इति बृहस्पतिगण्डस्य पुनः पददानप्रबन्धः ॥

अन्यदा सर्वावसरस्थितेन राज्ञालिङ्गनामा वृद्धः  
प्रधानपुरुष इत्यष्ट्युच्यत । यदहं श्रीसिद्धनृपते-  
र्हीनः समानोऽधिको वा । तेन चाऽञ्जलप्रार्थ-  
नापूर्वं श्रीसिद्धनृपतेः पण्यवैतिर्गुणा द्वौ दोषौ ।  
स्वाभिनस्तु द्वौ गुणौ तत्संख्या एव दोषा इति

१ C कामपि राति २ भासी यान्त् A चातुर्मासीमासीत्.

३ C D कौ (उद्यन्निजचारित्रेण निर्वाशितः कलियेन सः)

४ अष्टनाति;

२३४ प्रबन्धचिन्तामणिः सर्गः ४

तद्वाक्यादनु दोषमये आत्मनि विरागं दधानो या-  
वच्छ्रुरिकां चक्षुषि क्षिपति तावदाशयविदा तेनेति  
व्यज्ञापि श्रीसिद्धनृपतेः पणवतिगुणाः संग्रामाऽसु-  
भटतास्त्रीलम्पटतादोषाभ्यां तिरोहिताः । कार्पण्या-  
दयो भवदोषाः समरशूरतापरनारीसहोदरतागुणा-  
भ्यामपन्हुता इति तद्वचसा स पृथ्वीनाथः स्वस्था-  
वस्थस्तस्यौ ॥

इत्यालिङ्गप्रबन्धः ॥

अथ पुरा श्रीसिद्धराजराज्ये पाण्डित्ये स्पर्धमानो  
वामराशिनामा विप्रः प्रभूणां प्रतिष्ठानिष्ठामस-  
हिष्णुः ।

यूकालक्ष्मतावलीवलवल्लोलोल्लसत्कम्बलो  
दन्तानां मलमण्डलीपरिचयाद्गुण्ठरुद्धाननः ।

नाशावंशविरोधनाद्रिणिगिणैत्पादप्रतिष्ठास्थितिः

सोऽयं हेमडसेवडः पिलपिलत्खलिः समागच्छति । १

इति तदीयममन्दं निन्दास्पदं वचनमाकर्ण्यन्तर्भू-  
तामर्पवत्तर्जनापरं वचः प्रभुभिरभिहितं पण्डित वि-  
शेषणं पूर्वमिति भवता किं नाधीतमतोऽतः परं से-  
वडहेमड इत्यभिधेयमिति, सेवकैः कुन्तपश्चाद्भागेना-

हेत्य मुक्तः। श्रीकुमारपालनृपते राज्येऽशस्त्रो वध इति  
तद्वृत्तिछेदः कारितः । स ततः परं कणभिक्षया प्रा-  
णाधारं कुर्वाणः प्रभूणां पौषधशालायाः पुरतः स्थि-  
तः । आनादिभूपतितपस्विभिस्धीयमानयोगशास्त्र-  
माकर्ण्यऽऽशठतयेदमपाठीत् ।

आतङ्ककारणमकारणदारुणानां  
वक्त्रेषु गालिगरलं निरगालि येषाम् ।

तेषां जटाधरफटाधरमण्डलानां  
श्रीयोगशास्त्रवचनमृतमुज्जिहीते ॥ १

इति तद्वचसाऽमृतधारासारेण निर्वाणपूर्वोपतापा-  
स्तस्मै द्विगुणां वृत्तिं प्रसादीकृतवन्तः ॥

इति वामराशिप्रबन्धः ॥

अथ कदाचिच्चारणौ द्वौ सुराष्ट्रमण्डलनिलयौ दूहा-  
विद्यया स्पर्धमानौ श्रीहेमाचार्येण यो व्याख्यायते  
सोऽपरस्य हीनोपक्षयं ददातीति प्रतिज्ञाय श्रीमद-  
णहिल्लपुरं प्रापतुः तदैकेन प्रभुसमागतेन ।

\* लच्छिवाणिमुहकाणि एयइ भागी मुह भरंडं ।  
हेमसूरिअच्छाणि जे ईसरते ते पण्डिया ॥ १

१ C वक्त्रेण २ पयइ ३ B भरंड ४ सूरिआ छाणि.

\* लक्ष्मीवाणीप्रमुखाणि एतैः भाग्यैः मुखं भूतं सर्वाणि भाग्यानि हे-

इत्युत्काभ्यर्णं स्थिते तस्मिन् श्रीकुमारपालविहारे  
आरात्रिकावसरानन्तरं प्रणामपरो नृपः प्रभुणा द-  
त्तपृष्ठिहस्तः क्षणं यावत्तिष्ठति । अत्रान्तरे प्रविश्य  
द्वितीयश्चारणः ॥

‘हेम तुहाला कर भरउं जांह अञ्चभूरिदि ।  
जेवं पह हिठा मुहा तांह उपहरी सिद्धि ॥ १  
इत्यनुच्छिद्येन तद्वचसान्तश्चमकृतो नृपतिरेतदेव  
भूयोभूयः पाठयामास । ततस्त्रिःकृत्वः पठिते<sup>१</sup> किं  
पठिते लक्षं दास्यसीति विज्ञप्तस्तस्मै त्रिलक्षं

मसूरेमुखे तिष्ठन्तीत्यर्थः यतः ये हेमसूरेऽक्षिणी यत्र ईषद्वते ते पाण्डि-  
ताः हेमसूरिनेत्रे रत्या याव इषत् मेक्षेते ते पुरुषाः शीघ्रं पाण्डिता भव-  
न्तीत्यर्थः ॥

यद्वा । पाठान्तरे लक्ष्मीश्चिन्तयति यतयो वाणिमुखकाः वाणीं  
मुखे धारयन्ति ‘मुह मरउं’ सपत्नीहेतोः मया मर्त्तव्यं एवं ज्ञात्वा हेम-  
सूरेः मच्छब्दं भग्ना नष्टा अत एव ये ईश्वरास्ते पाण्डिताः न तु पाण्डिता  
लक्ष्मीवन्त इति ॥ १ !

• हे हेमचन्द्र तव करः भूतः संगतः यत्र आश्चर्यभूतद्विः युक्तं त-  
त् एव प्रभुपदाधोमुक्ताः । कुमारपालवत् प्रभुपदं अधोमुखेन यद्वन्ते  
इत्यर्थः तत्र सिद्धयः उपद्विष्यन्ते ॥ २ ॥ !

१ C D निह अञ्चभूरिदि । २ जे चं पह हिठा मुहा तांह उ-  
पहरी सिद्धी ३ त्रिःपठिते.

दापयामास ।

इति सौराष्ट्रचारणयोः प्रबन्धः ॥

कदाचिच्छ्रीकुमारपालनृपतिः श्रीसंधाधिपतीभूय  
तीर्थयात्रां चिकीर्षुर्महता महेन श्रीदेवालयप्रस्थाने  
संजाते सति देशान्तरायातयुगलिकया त्वां प्रति डा-  
हलदेशीयकर्णनृपतिरुपैतीति विज्ञप्तः स्वेदविन्दुति-  
लकितललाटं दधानो मन्त्रिवाग्भटेन साकं साध्वस-  
ध्वस्तसंधाधिपत्यमनोरथः प्रभुपादान्ते स्वं निनि-  
न्द । अथ तस्मिन्नृपतेः समुपस्थिते महाभये किं-  
चिदवधार्य द्वादशे यामे भवतो निवृत्तिर्भविष्यती-  
त्यादिश्य विसृष्टो नृपः किंकर्तव्यतामूढो यावदा-  
स्ते तावन्निर्णीतवेलायां समागतयुगलिकया श्रीक-  
र्णो दिवं गत इति विज्ञप्तो नृपेण ताम्बूलमुत्सृज्य  
कथामिति पृष्ठौ तावूचतुः । कुम्भिकुम्भस्थः श्रीकर्णः  
प्रयाणं निशि कुर्वन्निद्रामुद्रितलोचनः कण्ठपीठप्रण-  
यिना सुवर्णशृङ्खलेन प्रविष्टन्यग्रोधपादपेनोद्भ्रम्वितः  
पञ्चतामश्चितवान् । तस्य संस्कारानन्तरमावां प्र-  
चलिताविति ताभ्यां विज्ञप्ते तत्कालं पौषधवेश्मनि  
समागतो नृपः प्रशंसापरः कथं कथमित्यपवार्य  
द्वास्तपतिमहासामन्तैः समं समस्तसंधेन च प्रभुणा

द्विधोपदिश्यमानवर्त्मा धुन्धुक्नगरे प्राप्तः प्रभूणां  
जन्मगृहभूमौ स्वयं कारितसप्तदशहस्तप्रमाणशो-  
लिकाविहारे प्रभावानां विधित्सुर्जातिपिशुनानां  
द्विजातिनामुपसर्गमुदितं वीक्ष्य तान्विपयताडि-  
तान्कुर्वन् श्रीशत्रुंजयतीर्थमाराधयन् । दुस्खक्खुं  
कम्मक्खुं इति प्रणिधानदण्डकमुच्चरन् देवस्य पा-  
श्वे विविधप्रार्थनावसरे ।

"इकह फुल्लह माटि देअइ सामी सिद्धिसुहु ।

तिणिसिउं केही साटी भोलिम जिणवरह ॥ १ ॥

इति चारणमुच्चरन्तं निशम्य नवरुत्वः पठितेन न-  
वसहस्रांस्तस्मै नृपो ददौ । तदनन्तरमुज्जयन्तसंनिधौ  
गते तस्मिन्नऽकस्मादेव पर्वतकम्पे संजायमाने श्री-  
हेमचन्द्राचार्या नृपं प्राहुः । इयं छत्रशीला युगपदुपेत-  
योर्द्वयोः पुण्यवतोरुपरि निपतिष्यतीति वृद्धपरंपरया,  
तदावां पुण्यवन्तौ यदियं गीरसत्या सत्या भवति त-  
दालोकापवादः, नृपतिरेव देवं नमस्कारोतु न वयमि-  
त्पुक्ते नृपतिनोपरुध्य प्रभव एव संघेनसह प्रहिताः

• एरुप्यार्थं एकेन मत्त्याऽर्पितपुण्येणेत्यर्थः । स्वामी सिद्धिमुक्त  
यदाति तत्रैश्वर्या तेनैव प्रहारेण हे निनवर किमर्थं भगवन्मुग्धः इति  
भावनाश्रेणितमुच्छसितस्य नान्यम् ॥ १ ॥

१० D देअ सिद्धि मुहु केही साटि कटि रेभोलिम २ सउं



स्वयं छत्रशिलांमार्गं परिहृत्य परस्मिन्जीर्ण-  
प्राकारपक्षे नव्यपद्याकरणाय श्रीवाग्भटदेव आ-  
दिष्टः पद्यायाः पक्षद्वये व्ययीकृतास्त्रिपष्टिलक्षाः ।  
इति तीर्थयात्राप्रबन्धः ॥

कदाचित्पृथिव्यामानृण्याय नृपतिना स्वर्ण-  
सिद्धये श्रीहेमचन्द्राणामुपदेशात्तद्गुरवः श्रीसंघनृप-  
तिविज्ञप्तिकाभ्यामाकारितास्तीव्रव्रतपरायणा मह-  
त्संघकार्यं विमृश्य विधिविहारक्रमेण पथि केनाप्य-  
लक्ष्यमाणा निजामेव पौपथशालामागताः राजा तु  
प्रत्युद्गमादिसामग्रीं कुर्वन् प्रभुज्ञापितस्तत्राययौ ।  
अथ गुरौ नृपतिप्रमुखैः समस्तश्रावकयुतैः प्रभुभि-  
र्द्वादशावर्त्तवन्दनावन्दिते वन्दनान्ते तौ श्रुततदुपदे-  
शानन्तरं गुरुभिःपृष्ठे संघकार्यं सभां विसृज्य जव-  
निकान्तरितौ श्रीहेमचन्द्रनृपती तत्पादयोर्निपत्य  
सुवर्णसिद्धेर्याचनां चक्राते । मम बाल्ये वर्त्तमानस्य  
ताम्रखण्डं काष्ठभारवाहिकातो याचितःवह्नीरसेना-  
भ्यक्तोयुष्मदोदशाद्वह्निसंयोगात्सुवर्णविभूव । त-  
स्या वह्नेर्नामसंकेतादिरादिश्यतामिति ॥ श्रीहेमा-  
चार्ये उक्तवति कोपाटोपात् श्रीहेमचन्द्रं दूरतः प्र-

क्षिप्य न योग्योसीति । अग्रे मुद्गरसप्रायदत्तविद्या-  
या त्वमजीर्णभाक् कथमिमां विद्यां मोदकप्रायां त-  
व मन्दाग्नेर्ददामीति तं निषिध्य नृपं प्रति एतद्भा-  
ग्यं भवतो नास्ति येन जगदानृण्यकारिणी हेम-  
निष्यत्तिविद्या तव सिद्ध्यति । अपि च मारिनि-  
वारणजिनमीण्डतट्ट्वीकरणादिभिः पुण्यैः सि-  
द्धे लोकद्वये किमधिकमभिलपसीत्पादिश्य तथैव  
विहारक्रमं कृतवन्तः । एकदा पृष्टः राज्ञा पूर्वभव  
स्वरूपं । तत्सर्वं कथितं प्रभुभिरिति । अथ कस्मिन्न-  
प्यवसरे सपादलक्षं प्रति सज्जीकृते सैन्ये श्रीवाग्भ-  
टस्यानुजन्मा वाहडनामा मन्त्री दानशौण्डतया  
दूषितोपि भृशमनुशिष्य भूपतिना सेनापतिश्चक्रे ।  
तेन प्रयाणद्वितयानन्तरमस्तोकमार्थिलोकं मिलित-  
मालोक्य कोशाधिपाल्लक्षद्रव्ये याचिते नृपादेशात्त-  
स्मिन्नददाने अथ तं कशाप्रहारेणाहत्य सेनापतिस्तं  
कटकान्निरवासयत् । स्वयं तु यदृच्छया दानैः प्राणि-  
तार्थिलोकश्चतुर्दशशतसंख्यासु करभीष्वारोपितैर्द्विगु-  
णैः सुभटैः समं चरन्मितैः प्रयाणैर्वन्धेरानगरे प्रका-  
रं वेष्टयामास । अथ तस्यां । निशि सप्तशतीकन्यानां  
विवाहः प्रारब्धोस्तीति नगरलोकान्मत्वा तद्विवा-

हार्थं तथैव निशि स्थित्वा प्रातः प्राकारपरावर्त्त च-  
कार। तत्राधिगतं स्वर्णकोटीसप्तकं तथैकादशसहस्रा-  
णि बडवानामिति संपत्तिगर्भितां विज्ञाप्तिकां वेगवत्त-  
रैश्वरैर्नृपं प्रति प्राहिणोत्। स्वयं तत्र देशे श्रीकुमार-  
पालनृपतेराज्ञां दापयित्वाऽधिकारिणो नियोज्य  
व्याघुटितः । श्रीपत्तनं प्रविश्य राजसौधमधिगम्य  
नृपं प्रणनोम । नृपस्तदुचितालापावसरे तद्गुणर-  
ञ्जितोप्येवमवादीत् । तव स्थूललक्ष्यतैव महद्वृषणां  
(वाहानीकयोः साधनादौ साधीयान् नेदीयान्प्रयोग-  
निष्पत्तिरक्षामन्तो नोचेच्चक्षुर्दोषेणोर्द्ध्व एव विदीर्यसे)  
यं व्ययं भवान्कुरुते<sup>१</sup> तादृशं कर्तुमप्यहं न प्रभूष्णुः।  
स इति श्रुतनृपादेशान्नृपं प्रति “तथ्यमेव तदादिष्टं  
देवेन” एवंविधं व्ययं कर्तुं प्रभुर्न प्रभवति । यतः  
स्वामी परंपरयां न नृपतेः सुतः । अहं तु नृपपुत्रो  
ऽतो मयैव द्रव्यव्ययः साधीयान्क्रियते। तेनेति वि-  
ज्ञप्ते नृपतिस्तोषं करोतु रोषं वा निकपः निकपाका-  
श्चनश्रियमासादयतीत्यनर्घ्यतां लभमानो \*नृपतिवि

(B C TE पाङ्क्तिद्वय नास्ति) १ C कर्तुं क्षमते २A रोषं वा निकपा.

\* यतोहं स्वामिन्बलेन व्ययं करोमि । स्वामी तु कस्य बलेनातो  
मयैव द्रव्यव्ययः साधीयान् क्रियते इति वदन् प्रमुदितेन राज्ञा स-

सृष्टः स्वं पदं प्रपदे ॥

इति राजंयरद्ववाहडप्रबन्धः ॥

अर्थं तस्य कर्नीयान्ध्राता सोलाकनामा मण्डली-  
कः सत्रागारविरुदं वभार । अथ कदाचिदानाकना-  
मा मातृष्वस्त्रीयस्तत्सेवागुणतुष्टेन राज्ञा दत्तसा-  
मन्तपदोपि तथैव सेवमानः । कदापि मध्यंदिनावसरे  
चन्द्रशालापल्यङ्कस्थितस्य नृपतेः पुरो निविष्टः  
सहसा कमपि प्रेण्यं तत्र प्राप्तं प्रेक्ष्य कोयमिति  
ष्टष्टे नृपतिना श्रीमदानाकः स्वं कर्मकरमुपल-  
क्ष्य तत्संकेतान्निकेतनान्निर्गत्य सकौशलं षष्ठः पु-  
त्रजन्मवर्द्धापनिकां प्रार्थयामास । उमिति तथा वा-  
र्त्तया तु दिनकरप्रभयेव विकसितवदनारविन्दं तं  
विसृज्य स्वं पदमुपेतः । राजा किमेतदिति षष्ठ-  
स्तेन स्वामिनः पुत्रोत्पत्तिरिति विज्ञप्ते, वसुधाधवः  
स्वगतं किंचिदवधार्य तं प्रति प्रकाशं प्राह । यज्ज-  
न्म निवेदायितुमयं कर्मकरो वेत्रिभिरस्वलित ए-  
वायमाप तावता पुण्योपचयेनायं गूर्जरदेशे नृपो.

त्कृतो राजसदस्यनर्था लभमानो राजघरद्वविरुद लब्ध्वा । इति जि-  
नमण्डनोपाध्यायकृतकुमारपालप्रबन्धे प. १४

भावी परमस्मिन्पुर धवलगृहे च न । यतोऽतः  
स्थानादुत्थांपितस्य तवाग्रे सुतोत्पत्तिर्निवेदिता । त-  
तो हेतोर्नास्मिन्नगरेश्वरत्वंमिति विचारचतुर्मुखेन  
श्रीकुमारपालदेवेन निर्णीतम् ॥

इति लवणप्रसादप्रबन्धः ॥

आज्ञावर्तिषु मण्डलेषु विपुलेष्वष्टादशस्वादरा-  
दब्दान्येव चतुर्दश प्रसृमरां मारिं निवार्यौजसा ।  
कीर्तिस्तम्भनिभांश्चतुर्दशशतीसंख्यान्विहारांस्तथा  
कृत्वा निर्मितवान्कुमारनृपतिर्जनो निजैर्नोव्ययम् १

अथ प्रभोः कदाचित्कच्छराजलक्षराजमातुर्महा-  
सत्याः शापाच्छ्रीमूलराजान्वयानां लूतारोगः संक्रा-  
मतीति स व्याधिः कुमारपाले बाधामधात् । संव-  
न्धात्तु गृहिधर्मप्रतिपत्त्यवसरे प्रभोरुद्वणितराज्यभारे  
श्रीकुमारपाले तच्छिद्रेण तान्प्रविश्य लूताव्याधिर्वा-  
धामधात् । तद्दुःखदुःखिते सराजलोके राज्ञि प्रणि-

• कर्णाटे १ गूर्जरे २ लाटे ३ सौराष्ट्रे ४ कच्छ ५ सैन्धवे ६ ।

उच्चायां ७ चैव भम्भेयां ८ मारवे ९ मालवे १० तथा ॥ १

कौड्गणे च ११ महाराष्ट्रे १२ कीरे १३ जान्गवरे १४ पुनः ।

सपादलक्षे १५ मेवाडे १६ दीपा १७ भीराख्ययोरपि १८ ॥ २

काशिगाजण्यादिचतुर्दशदेशेषु ॥ इतिपूर्वोक्तस्य पत्रे ५७

१० तस्मिन्नगरे नरेश्वरत्वं २ राजन्याना

धानान्निजमायुः सवलं वीक्ष्याऽष्टाङ्गयोगाभ्यासेन  
 प्रभवस्तं लीलयोन्मूलितवन्तः ॥ कदापि रुदली-  
 पत्राधिरूढं कसपि योगिनमालोक्य विस्मिताय  
 नृपतये आसनवन्धेन चतुरङ्गुलमूलभूमित्यागाद्वह्म-  
 रन्ध्रेण निर्यत्तेजःपुञ्जं प्रभवो दर्शयामासुः ॥ 'अथ  
 चतुरङ्गीतिवर्षप्रमाणायुःपर्यन्ते निजमवसानदिनम-  
 वधार्यान्त्याराधनक्रियायामनशनपूर्वप्रारब्धायां त-

\* तदातनावाधितमूर्तिरुच्चैः पप्रच्छ सूरिं गदशान्तिहेतुम् ।  
 आयुर्धनं श्रीकुमरस्य वीक्ष्य ते दक्षमुख्या अवदन्विमृश्य ॥  
 निवेश्यतेऽन्यो यदि कोपि राज्ये हित्वा मयस्त्वां तमयं प्रयाति ॥  
 उवाच चातुर्यनिधिर्नरेशो निहन्म्यहं किं निननीवितार्थं ।  
 वराकमन्यं परमार्थविद्वः । गिरः सुधासारसमा निपीय ।  
 दयाकिरस्ता अवदद्यतीशः । निविश्य राज्ये स्वयमेव दु सं ।  
 तत्ते हरिष्यामि नरेश्वराहं । अवोचदुच्चैश्चकितो नरेशः ।  
 को देववृक्षं पिचुमन्दहेतोश्चिन्तामणिं काचकृते निहन्ति ।  
 रोगं निहन्तुं मम शक्तिरास्ति स्वाङ्गान्तरं योगबलेन राजन् ।  
 ततः कुमारो महता महेन न्यवीणिशत्सूरिवरं स्वराज्ये ।  
 हित्वा कुमारं परिमुक्तं ताम्रं तूतामयः सूरिशरीरमाप ।  
 रोगं हन्तुं निश्चलाङ्गः स योगी प्राणायामं पूरकास्थं रितेने ।  
 ऊर्ध्वं नीते, सूर्यविम्बे समन्ताच्चन्द्रस्तापाद्द्रागु गुभाभिर्विपं ।  
 छिष्टं ताभिः सर्वरोगापहाभिर्गंगादङ्गं चन्द्रमामीदमुप्य ।

इति चारित्र्यगुणद्वाराणिकृतकुमारपाञ्चरित्रस्य दशमोऽङ्कः प्र-  
 मथं प. ३३

दतितरलिताय नृपतये यण्मासीशोपमायुरास्ते संत-  
 त्यभावाद्विद्यमान एव निजामुत्तरक्रियां कुर्या इ-  
 त्यनुशिष्य दशमद्वारेण प्राणोत्क्रान्तिमकार्षुः । त-  
 दनन्तरं प्रभोः संस्कारादनु तद्भस्म पवित्रमिति  
 राज्ञा तिलकव्याजेन नमश्चक्रे । ततः समस्तसाम-  
 न्तैस्तदनु नगरलोकैस्तत्रत्यमृत्स्नायां गृह्यमाणायां  
 तत्र हेमखण्ड इत्यद्यापि प्रसिद्धिः ॥ अथ राजा  
 वाष्पाविललोचनः प्रभुशोकाविष्टवमनाः सचिवै-  
 र्विज्ञप्त इदमवादीत् । स्वपुण्यार्जितोत्तमतमलोका-  
 न् प्रभून् शोचामि किं तु निजमेव सप्ताङ्गराज्यं  
 सर्वथा परिहार्यं राजपिण्डदोषदूषितं, यन्मदीयमुद-  
 कमपि जगद्गुरोरङ्गे न लग्नं तदेव शोचामीति प्रभु-  
 गुणानां स्मारं स्मारं सुचिरं विलप्य प्रभूदिते दिने  
 तदुपदिष्टविधिना समाधिमरणेन नृपः स्वलोक-  
 मलंचकार ॥ सं० ११९९ वर्षाद्वर्ष ३१ श्रीकुमार-  
 पालदेवेन राज्यं कृतं ॥ सं० १२३० वर्षेऽजयदे-  
 वोऽभिषिक्तः । अस्मिन्पूर्वप्रासादान् विध्वंसयति  
 सीलनामा कौतुकी नृपपुरः प्रारब्धेऽवसरे कृतक-  
 कामपटुतां मायया निर्माय तत्र स्वकल्पितं देवकु-  
 लपञ्चकं पुत्रेभ्यः समर्प्य समानन्तरं भक्त्यतिशये-

२४६ प्रवन्धचिन्तामणिः सर्गः ४

नाराधनीयमित्यनुशिक्षयान्त्यावस्थायां यावदास्ते  
तावत्तेन लघुपुत्रेण तत्तूर्णं चूर्णितमाकर्ण्य रे श्री  
मदजयदेवेनापि पितुः परलोकान्तरं तद्धर्मस्थाना-  
नि विध्वंसितानि त्वं त्वद्यापि मयि विद्यमानेपि  
चूर्णयन्नधमतमोसीति तदालापेन सत्रपस्तस्माद-  
समञ्जसाद्विरराम । तदनु श्रीअजयदेवेन श्रीकप-  
र्दिमन्ती महामात्यपदं दातुमत्यर्थमभ्यर्थितः प्रातः  
शकुनान्यवलोक्य तदनुमत्या प्रभोरादेशमाचरि-  
ष्यामीत्यभिधाय शकुनगृहं गतस्ततः सप्तविधं  
दुर्गादेव्याः शकुनं याचितमवाप्य तच्छकुनं पुष्पाक्ष-  
तादिभिर्भ्यर्च्य कृतकृत्यं मन्यमानः पुरगोपुरान्तः  
प्राप्तो नदन्तं वृषभमीशानदिग्भागे विलोक्याति-  
शयस्मेरमनाः स्वं निवासमासाद्य भोजनानन्तरं  
मरुवृद्धेन यामिकेन शकुनस्वरूपं पृष्टः श्रीकपर्दी  
तदग्रे तत्स्वरूपमादिश्य तांस्तुष्टाव । ततो मरुवृद्धः  
नद्युत्तारेऽध्ववैपम्ये तथा संनिहिते भये ।

नारीकार्ये रणे व्याधौ विपरीता प्रशस्यते ॥ १

इति प्रामाण्याद्भवानासन्नव्यसनतया मतिभ्रंशा-  
त्प्रतिकूलमप्यनुकूलं मनुते । यस्त्वया वृषभः शुभः



परिकल्पितः सोपि भवद्व्यापत्त्या शिवस्याभ्युदयं  
पश्यंस्तद्वदाहात उक्षां जगर्जेति तदुक्तिमवमन्यमाने  
तस्मिन्नाष्टच्छय तदर्थानिऽवगाढं गते, स नृपतिना  
प्रसादीकृतां मुद्रामासाद्य महता महेन समधिगत-  
निजसौधे विश्रम्य निशि नृपतिना विधृतः समा-  
नप्रतिष्ठैरभिभवितुमारब्धः ॥

\*जो करिवराण कुम्भे पायं दाऊण मुत्तिए दलइ ।  
सो सहो विहिवसउं जन्वूयपरिपिछणं सहइ ॥ १  
इत्यादि विमृशन्कटाहिकायां प्रक्षेपकाले ।  
अर्थिभ्यः कनकस्य दीपकपिशा विश्राणिताः कोटयो  
वादेषु प्रतिवादिनां विनिहिताः शास्त्रार्थगर्भा गिरः ।  
उत्खातप्रतिरोपितैर्नृपतिभिः शारैरिव क्रीडितं  
कर्त्तव्यं कृतमर्थिता यदि विधेस्तत्रापि सज्जा वयम् ।  
स सुधीरित्यन्त्यकाव्यमधीयंस्तथैव व्यापादयांचक्रे  
इति श्रीकपर्दिप्रबन्धः ॥

अथ श्रीप्रबन्धशतकर्त्ता रामचन्द्रस्तु तेन भूपापस-  
देन तप्तताम्रपट्टिकायां निवेश्यमानः ।

१ तद्वाहनोक्षत्वात् २ तीर्थानि ३ मरुद्वेदः

•यः करिवराणा कुम्भे पाद दत्त्वा मौक्तिकानि दलति।

स सहो विधिवशाज्जन्मरूपोरपीडन सहते ॥ १

२४८ प्रबन्धचिन्तामणिः सर्गः ४

\*महिषीढह सचराचरह जिण सिरि दिङ्गा पाय ।  
तसु अत्थमणु दिणसरहं होउत होइ चिराय ॥१  
इत्युदीर्य दशनायेण रसनां छिन्दन् विपन्न एव  
व्यापादयांचक्रे ॥

इति रामचन्द्रप्रबन्धः॥

अथ राजपितामहः श्रीमानाश्रभटस्तत्तेजोऽसहिष्णु-  
भिः सामन्तैस्तैः समं तदालब्धावसरैः प्रणामं का-  
रयन्निराक्षित एवमवादीत् । देवबुद्ध्या श्रीवीत-  
रागस्य गुरुबुद्ध्या श्रीहेमचन्द्र्यैः स्वामिबुद्ध्या कु-  
मारपालस्यैव मे नमस्कारोऽस्मिन् जन्मनीति जैन-  
धर्मवासितसप्तधातुना तेनेत्यभिहिते रुष्टो राजा  
युद्धसज्जो भवेति तन्निरमाकर्ण्य श्रीजैनध्वं सम-  
भ्यर्च्योऽनशनं प्रपद्याङ्गीकृतसंग्रामदीक्षो निजसौ-  
धाद्राज्ञः परिग्रहं निजभटवातेन तुपनिकरमिव  
विकरन् घटिकाग्रहे प्राप्तस्तेषां मलीमसानां संग-  
जनितं कश्मलं धारातीर्थे प्रक्षाल्य तत्कौतुकालो-  
कनागताभिरप्सरोभिरहंपूर्विकया त्रियमाणो देवभू-

\*महीपीठे सचराचरे येन श्रीः दत्ता प्रायः ।

तस्यास्तमन दिनेश्वरस्य भवितव्य भवत्येव चिराय ॥ १

१ A जिणिसिरिदिङ्गा. २ C D दिणसरसु ३ होइतु होदु४

A B निराउ

यं जगाम ॥

वरं भट्टैर्भाव्यं वरमपि च खिङ्गैर्द्वनकृते

वरं वेदयाचार्यैर्वरमपि महाकूटनिपुणैः ।

दिवं याते दैवादुदयनसुते दानजलधौ

न विद्वद्भिर्भाव्यं कथमपि बुधैर्भूमिवलये ॥ १

त्रिभिर्वपैस्त्रिभिर्मासैस्त्रिभिः पक्षैस्त्रिभिर्विनैः ।

अत्युग्रपुण्यपापानामिहैव फलमश्नुते ॥ १

इति प्रमाणोक्तप्रामाण्यात्स कुपतिर्वयजलदेवनाम्ना

प्रतीहारेण क्षुरिकया हतो धर्मस्थानपातकी कृमिभि-

र्भक्ष्यमाणः प्रत्यहं नरकमनुभूय परोक्षतां प्रपेदे ॥

सं० १२३० पूर्ववर्षादऽजयदेवेन वर्ष ३ राज्यं

कृतं ॥ सं० १२३३ पूर्ववर्षाद्वर्ष २ वाल्मूलरा-

जेन राज्यं कृतमस्य मात्रा नाइकिदेव्या परमार्द्धि-

भूपसुतयोत्संगे शिशुं निधाय गाडरारघटनाम-

नि घाटे संग्रामं कुर्वत्या म्लेच्छराजा तत्सत्त्वा-

दकालागतजलदपटलसाहाय्येन विजिग्ये ॥

सं० १२३५ पूर्ववर्षाद्वर्ष ६३ श्रीभीमदेवेन-

राज्यं कृतमस्मिन् राज्ञि राज्यं कुर्वाणे श्रीतोहडना-

मा मालवभूपतिर्गूर्जरदेशविध्वंसनाय सीमान्तमा-

गतस्तत्प्रधानेन संमुखं गत्वेत्यवादि ।

२५० प्रबन्धचिन्तामणिः सर्ग. ४

प्रतापो राजमातर्त्तण्ड पूर्वस्यामेव राजते ।  
स एव विलयं याति पश्चिमाशावलम्बिनः ॥ १  
इति विरुद्धां तद्भिरमाकर्ण्य स पश्चान्निवृत्ते । तदनु  
तत्पुत्रेण श्रीमदर्जुनदेवनाम्ना गूर्जरदेशभङ्गोप्यका-  
रि । श्रीमद्गीमदेवराज्यचिन्ताकारी व्याघ्रपल्लीसंके-  
तप्रसिद्धः श्रीमदानाकनन्दनः श्रीलवणसाहप्रसाद-  
श्चिरं राज्यं चकार । तत्सुतः साम्राज्यभारधवलः  
श्रीवीरधवलस्तन्माता मदनराज्ञी देवराजनाम्नो भ-  
गिनीपतेः पट्टकिलस्थ भगिन्यां विपन्नायां तस्य  
बहुतरमनिर्वहमाणमापद्द्वारं निशम्य तन्निर्वहणाय  
लवणप्रसादाभिधपतिमाष्टच्छय शिशुना वीरधवले-  
न समं तत्र गता सती तेन स्पृहणीयगुणाकृतिरिति  
गृहिणीचक्रे । श्रीलवणस्तद्भृतान्तं सम्यगवगम्य  
तं व्यापादयितुं निशि तद्गृहे प्रविष्टो निभृतीभूय  
स यावदवसरं निरीक्ष्यते, तावत्स भोजनायोप-  
विशन् वीरधवलं विना नाश्रामीति भूयो भूयो  
व्याहृत्य निर्वन्धात्समानीयैकस्मिन्नेव स्थालेऽभ्र-  
ऽकस्मादपि तं शरीरिणं कृतान्तमिव स्वान्तकमा-  
लोक्य श्यामलास्यो मा भैषीरिति तेनोचे । यदहं  
त्वामेव हन्तुमागतः परमस्मिन्मत्तन्दने वीरधवले

वात्सल्यं साक्षाच्चक्षुषा निरीक्ष्य तदाग्रहान्निवृत्तो-  
 स्मृत्युक्ता तेन सत्कृतो यथागतं जगाम । वीरध-  
 वलस्यापरमातृकाः राष्ट्रकूटान्वयाः साङ्गणचामुण्ड-  
 राजादयो वीरजनत्वेन भुवनतलप्रतीताः । अथ स  
 वीरधवलक्षत्रिय उन्मीलितकिञ्चित्तनस्तस्माद्दृ-  
 त्तान्तात्त्विकमाणस्तद्रूपं त्यक्त्वा निजमेव जनकं सि-  
 पेवे । सत्त्वौदार्यगाम्भीर्यस्यैर्धनयविनयौचित्य-  
 दयादानदाक्षिण्यादिगुणशाली शालीनतया कण्ट-  
 कग्रस्तां कामपि भुवमाक्रम्य पित्रापि कियत्कृतज-  
 नपदप्रसादो द्विजन्मना चाहडनाम्ना सचिवेन चि-  
 न्त्यमानराज्यभारः प्राग्वाटवंशमुक्तामणिना पुरा  
 श्रीमत्यत्तनवास्तव्येन तत्कालं तत्रायाततेजःपा-  
 लमन्त्रिणा सह सौहार्दमुत्पेदे । मन्त्रिणस्तु जन्म-  
 वार्त्ता चैवं । कदाचिच्छ्रीमत्यत्तने भट्टारकश्रीहरिभ-  
 द्रसूरिभिव्याख्यानावसरे कुमारदेव्यभिधाना काचि-  
 द्विधवातीव रूपवती मुहुर्मुहुर्निरीक्ष्यमाण्य तत्र  
 स्थितस्याशराजमन्त्रिणश्चित्तमाचकर्ष । तद्विसर्ज-  
 नानन्तरं मन्त्रिणानुयुक्ता गुरव इष्टदेवतादेशादमु-  
 ष्याः कुक्षौ सूर्याचन्द्रमसोर्भाविनमवतारं पश्या-

मः, तत्सामुद्रिकानि भूयो विलोकितवन्त इति  
 प्रभोर्विज्ञाततत्त्वः स तामपहृत्य निजां प्रेयसीं कृ-  
 तवान् । क्रमात्तस्या उदरेऽवतीर्णौ तावेव ज्योति-  
 ष्केन्द्राविव वस्तुपालतेजःपालाभिधानौ सचिवा-  
 वभूतां । अथान्यदा श्रीवीरधवलदेवेन निजव्यापा-  
 रभारायाभ्यर्च्यमानः प्राक् स्वसौधे तं सपत्निकं  
 भोजयित्वा “नुपमा राजपत्न्यै श्रीजयतलदेव्यै निजं  
 कर्पूरमयताडङ्गयुग्मं कर्पूरमयो मुक्ताभिः सुवर्णमय-  
 मण्यन्तरिताभिर्निष्यन्नमेकावलीहारं सा प्राभृती-  
 चकार” मन्त्रिणः प्राभृतमुपढौकितं निषिध्य  
 निजं व्यापारं समर्पयत् । यत्तवेदानीं वर्त्तमानं वित्तं  
 तत्ते कुपितोपि प्रतीतिपूर्वं पुनरेवाददामीति,  
 अक्षरपात्रान्तरसंबन्धपूर्वकं श्रीतेजःपालाय व्यापा-  
 रसंबन्धिनं पञ्चाङ्गप्रसादं ददौ ।

अकरात्कुरुते कोशमवधादेशरक्षणम् ।

देशवृद्धिमयुद्धाच्च स मन्त्री बुद्धिमांश्च सः ॥ १

निखिलनीतिशास्त्रोपनिषन्निषण्णधीः स्वस्वामिनं  
 वर्द्धयन् भानूदये कालपूजया विधिवञ्छ्रीजिनमर्चि-

त्वा गुरूणां वन्दनकर्पूरपूजानन्तरं द्वादशावर्तव-  
न्दनदानादनु यथावसरप्रत्याख्यानपूर्वमपूर्वमेकैकं  
श्लोकं गुरोरध्येति मन्त्रावसरानन्तरं सद्यस्करसवती-  
पाकभोजनानन्तरं, मूञ्जालनामा महोपासकस्तद-  
ङ्गलेखकोऽवसरे रहसि पप्रच्छ । स्वामिनाहर्मुखे  
शीतान्नमाहार्यते किं वा सद्यस्कमिति पृच्छन्तं,  
ग्रामेयं द्वेधा त्रेधाऽवधीर्य कदाचित्क्रोधान्मन्त्रिणा,  
पशुपाल इत्याक्षितः । स, धृतधैर्यः । उभयोः क-  
श्चिदेकतरः स्यादित्यभिहिते तद्वचश्चातुरीचमत्कृ-  
तचित्तोऽनधिगतभवदुपदेशध्वनिरहं, तद्विज्ञ यथा-  
स्थितं विज्ञप्यतामित्यादिष्टः स, वाग्मी प्रोवाच ।  
यां रसवतीमतीवि रसप्लुतां सद्यस्कां प्रभुरभ्यवहरति-  
तां प्रागुपुण्यरूपां जन्मान्तरिततयात्यन्तशीतलां म-  
न्यते । किं चेदं मया गुरोः संदेशवचनमाविःकृतं  
तत्त्वं तु त एवावधारयन्तीति तत्र पादाववधार्यतां,  
तेनेति विज्ञप्तः श्रीतेजःपालनामा मन्त्री कुलगुरु-  
भट्टारकश्रीविजयसेनसूरीणामभ्यर्णमागतो गृहिधर्म-  
पप्रच्छ । तैरुपासकदशाभिधसप्तमाङ्गाजिनोदितेदेव  
पूजावश्यकयतिदानादिके गृहिधर्मे समुपदिष्टे, ततः

२५४ प्रबन्धचिन्तामणिः सर्गः ४

प्रभृति स देवतार्चनविशेषजैनमुनिदानाद्यं धर्म-  
कृत्यमारब्धवान् । वर्षत्रयदेवतावसराय पदेन पृथक्-  
कृतेन षट्त्रिंशत्सहस्रप्रमाणेन द्रव्येण बाउलाग्रामे  
श्रीनेमिनाथप्रासादः समजनि ॥ अथ सं० १२७७  
वर्षे सरस्वतीकण्ठाभरणलघुभोजराजमहाकविमहा-  
मात्यश्रीवस्तुपालेन महायात्रा प्रारम्भे । गुरूपदिष्टे  
लघ्ने तत्कृत्यसंघाधिपत्याभिषेकेण श्रीदेवालयप्रस्था-  
ने उपक्रम्यमाणे दक्षिणपथे दुर्गादेव्याः स्वरमाक-  
र्ष्य स्वयं तद्विदा शाकुनिकेन किञ्चिच्चिन्तयति । मरु-  
वृद्ध शकुनं भारितं विधेहीत्यभिदधानः शकुनाच्छ-  
ब्दो बलीयानिति विचार्य पुरादिहारावासेषु श्री-  
देवालयं संस्थाप्य शकुनव्यतिकरं पृष्टो मार्गवैष-  
म्ये शकुनानां वैपरीत्यं श्लाघ्यते । राज्यविकल-  
तायां तीर्थमार्गाणां वैषम्यं तथा यत्र सा दुर्गा  
दृष्टिपथं गता तत्र कमपि दक्षं पुरुषं प्रस्थाप्य स  
प्रदेशो दर्श्यतां । तथारुते स पुरुष इति विज्ञप-  
यामास । यत्तस्मिन् वरण्डशब्दे नवीक्रियमाणे सा  
त्रयोदशेष्वरेषु निषण्णा देव्यभूत् । अथ स मरुवृद्धो  
देवी भवतः सार्द्धत्रयोदशसंख्या यात्रा अभिहि-  
तवती । अन्त्यार्द्धयात्राहेतुं भूयः पृष्ठे स आह । इ-



हातुलमङ्गलावसरे तद्वक्तुं न युक्तं समये सर्वं निवे-  
दयिष्यामीति वाक्यानन्तरं श्रीसंघेन समं मन्त्री  
पुरतः प्रयाणमकरोत् । सर्वसंवाहनानामर्द्धपञ्चम-  
सहस्राणि । एकविंशतिशतानि श्वेताम्बराणां संध-  
तद्रक्षाधिकारे सहस्रं तुरङ्गमाणां सप्तशती रक्तकरभी-  
णां संधरक्षाधिकारिणश्चत्वारो महासामन्ताः । इत्थं  
समग्रसामग्र्या मार्गमतिक्रम्य श्रीपादलिप्तपुरे स्वयं  
कारिते श्रीमहावीरचैत्यालंकृतस्य श्रीललितसरसः  
परिसरे आवासान्दापयामास । तत्र तीर्थाराधना  
विधिवद्विधाय मूलप्रासादे काञ्चनकलशं प्रौढजि-  
नयुगलं श्रीमोढेरपुरावतारे श्रीमन्महावीरचैत्या-  
राधकमूर्त्तिः, देवकुलिकामण्डपश्रेणेरुभयतश्चतुष्पिका-  
द्वयपङ्क्तिः, शकुनिकाविहारे सत्यपुरावतारे चैत्यपुरतो  
रजतमूल्यं तोरणं, श्रीसंघयोग्यान्मठान्, धार्मिकसत्य  
कस्य देवकुलिकाः, नन्दीश्वरावतारे प्रासादान् इन्द्र-  
मण्डपं च, तन्मध्ये गजाधिरूढश्रीलवणप्रसादवीरधव-  
लमूर्त्तिः, तुरङ्गाधिरूढा निजमूर्त्तिः, तत्र सप्त पूर्वपुरुषमू-  
र्त्तिः सप्त गुरुमूर्त्तिश्च, तत्संनिधौ चतुष्पिकाया ज्या-  
योभ्रात्रोर्महंमालवदेवलूणिगयोराराधकमूर्त्तिः, प्रतो-

२५६ प्रबन्धचिन्तामणिः सर्ग, ४

लीः, अनुपमसरः, कपर्दियक्षमण्डपतोरणप्रभृती-  
नि बहूनि जिनधर्मस्थानानि रचयांचक्रे । तथा न-  
न्दीश्वरकर्मस्थाये कण्टेलीयापापाणसत्कजातीयपो-  
डशस्तम्भेषु पर्वतात् जलमार्गेणानीयमानेषु समुद्र-  
कण्ठोपकण्ठे उत्तार्यमाणेषु, एककः स्तम्भः पङ्के मग्न-  
स्तथा यथा निरीक्ष्यमाणोपि न लभते । तत्पदेऽपर-  
पापाणस्तम्भेन प्रासादः प्रमाणकोटिं नीतः । वर्षा-  
न्तरे वारिधिवेलावशात्पङ्कनिमग्नः स एव स्तम्भः प्रा-  
दुरासीत् । सचिवसमादेशात्तस्मिंस्तत्र संचार्यमाणे  
प्रासादो विदीर्ण इति निवेदितुमागताय परुषभा-  
पकाय हैमी जिह्वां स मन्ती ददौ । दक्षैः किमेतदि-  
ति पृष्टेऽतः परं यथा कथंचिद्धर्मस्थानानि दृढानि  
कारयिष्यन्ते यथा युगान्तेपि तेषां नान्तो भवति अ-  
तः पारितोषिकं दानं । आमूलात्तृतीयवेलायामयं  
प्रासादः समुद्धृतो विजयते । श्रीपालिताणके च पौ-  
षधशालां विशालां कारयामास । श्रीमदुज्जयन्ते च  
श्रीसंधेन सह प्रातो मन्ती तत्र च तदुपत्यकायां  
जलपुरे कारितं नव्यं वस्त्रं, तथा तन्मध्ये श्रीमदा-  
शराजविहारं, तथा कुमारदेवीसरश्च, निरुपमं वि-

लोक्य धवलगृहे पादोऽवधार्यतामिति नियुक्तै-  
रुच्यमाने श्रीमद्गुरुणां योग्यं पौषधवेश्मास्ति ना-  
स्तीति मन्त्रिणादिष्टे तन्निष्पाद्यमानमाकर्ण्य विनया-  
तिक्रमभीरुर्गुरुभिः सह बहिर्दापितावासे तस्थौ ।  
प्रातरुज्जयन्तमारुह्य श्रीशैवैयक्रमकमलयुगलमभ्य-  
र्च्य स्वयंकारितश्रीशत्रुंजयावतारतीर्थे प्रभूतप्रभावनां  
विधाय कल्याणत्रयचैत्यैर्व्यसपर्यादिभिस्तदुचिती-  
माचर्य मन्त्री यावत्तृतीये दिनेऽवरोहति तावदुभाभ्यां  
दिनाभ्यां निष्पन्ने पौषधौकसि मन्त्रिणा समं गुरव-  
स्तत्र समानीतास्तत्प्रशशंसुः पारितोषिकदानेनानु-  
जगृहुः<sup>१</sup> । श्रीमत्पत्तने प्रभासक्षेत्रे चन्द्रप्रभं प्रभाव-  
तया प्रणिपत्य यथौचित्यादभ्यर्च्य च निजेऽष्टापदप्रा-  
सादेऽष्टापदकलशमारोप्य तत्रत्यदेयलोकाय दानं  
ददानः श्रीहेमाचर्यैः श्रीकुमारपालनृपतये जगद्वि-  
दितं श्रीसोमेश्वरः प्रत्यक्षीकृत इति पञ्चदशाधिक-  
वर्षशतदेशीयधार्मिकपूजाकारकमुखादाकर्ण्य तच्च-  
रित्रचित्रितमना व्यावृत्तमानोमार्गे लिङ्गोप-  
जीविनामसदाचरेणान्नदाने निषिद्धे तत्पराभवं

१ जन्म दिक्षा केवलं च यस्मिन्दिने तीर्थकृतस्तदुत्सवं विनाय-  
यशैत्यादी विम्बं स्थाप्यते तादृशान्त्येषु २४ जगृहे. २ प्रभासना.

२५८ प्रबन्धचिन्तामणिः सर्गः ४ .

विज्ञाय वायडीयश्रीजिनदत्तसूरिभिर्निजोपासकपा-  
थ्यात्तस्मिन्क्षणे पूर्यमाणे सति दर्शनानुनयार्थ<sup>१</sup>  
तत्र समागताय मन्त्रिणे,

रत्नाकर इव क्षारवारिभिः परिपूरणात् ।

गम्भीरिमाणमाधत्ते शासनं लिङ्गधारिभिः ॥ १ ॥

यान् लिङ्गिनोनुवदन्ते<sup>२</sup> संविग्ना अपि साधवः ।

तदर्चा चर्च्यते कस्माद्दार्मिकैर्भवभीरुभिः ॥ २ ॥

प्रतिमाधारिणोप्येषां त्यजन्ति विषयं पुरः ।

लिङ्गिनां विषयस्थानामनर्चा तु विरोधिनी ॥ ३ ॥

लिङ्गोपजीविनां लोके कुर्वन्ति येऽवधीरणाम् ।

दर्शनोच्छेदपापेन लिप्यन्ते ते दुराशयाः ॥ ४ ॥

आवश्यकवन्दनानिर्युक्तौ ॥

\*तित्थयरगुणा पडिमासु नत्थि निस्संसयं विया-  
णन्तो ।

तित्थयरोवि<sup>३</sup> नमन्तो सो पावड<sup>४</sup> निज्जरं विउलं १

---

१ B अनुनयार्थे. २ C वन्दन्ति ३ तित्थयरुत्ति ४ A पावड

---

\*तीर्थररगुणाः प्रतिमासु न सन्ति नि.संसयं विमानन्तोऽपि तीर्थर-  
रान् नमन्तः ते प्राप्तुमन्ति निर्जरा विपुत्राम् १

‘लिङ्गं जिणपद्मं एव नमसन्ति निर्जरा विडला ।  
जइविं गुणपहीणं वन्दइ अज्झप्पसुद्धीए ॥ २ ॥

इति तदुपदेशान्निर्माजितसम्यक्कदर्पणो विशेष-  
पादर्शनपूजापरः स्वस्थानमासदत् । अथ ज्याय-  
सा सोदरेण मं० लूणिगनाम्ना परलोकेप्रयाणाव-  
सरेऽर्जुनवसहिकायां मेम योग्या देवकुलिका  
कारयितव्येति धर्मव्ययं याचित्वा तस्मिन्विपन्ने  
तद्गोष्ठिकेभ्यस्तद्भुवमलभमानश्चन्द्रावत्याः स्वामिनः  
पार्थिव्यां भूमिं विमलवसहिकासर्मापेऽभ्यर्च्य  
तत्र श्रीलूणिगवसहिप्रासादं भुवनत्रयचैत्यश-  
लाकारूपं कारयामासिवान् । तत्र श्रीनेमिनाथ-  
विम्बं संस्थाप्य प्रतिष्ठितं तद्गुणदोषविचारणाको-  
विदं श्रीजावालिपुराच्छ्रीयशोवीरमन्त्रिणं समा-  
नीय मन्त्री प्राप्तावस्वरूपं प्रपच्छ । ततस्तेन प्रा-  
प्तादकारकसूत्रधारः शोभनदेवोऽभ्यधायि । रहम-  
ण्डपे शालभञ्जिकामिधुनस्य विशालघाटस्तीर्थ-  
कृत्प्रासादे सर्वथानुचितो वास्तुनिपिद्वश्च । तथा

१. नमसुत्ति २ D अर्जुदे विमलवसहिकायां ३ D विशास.

‘लिङ्गं जिणपद्मं एव नमस्यन्ति निर्जरा विडला यद्यपि गुणम-  
हीनं वन्दन्तो अभ्यात्मगुद्धयै २

२६० प्रबन्धचिन्तामणिः सर्गः ४

गर्भगृहे प्रवेशद्वारे सिंहाभ्यां तोरणमिदं देवस्य वि-  
शेषपूजाविनाशि । तथा पूर्वपुरुषमूर्तियुतं गजानां  
शाला पश्चाद्भागे<sup>१</sup> प्रासादकारापैकस्यायतिविना-  
शि<sup>२</sup> । अप्रतीकारार्हं दूषणत्रयं विज्ञस्यापि सूत्रभृ-  
तो यदुत्पद्यते स भाविकर्मणो दोष इति निर्णय  
यथागतं स च गतः । तदुपश्लोकनश्लोका एवम् ।

यशोवीर यशोमुक्ताराशेरिन्दुरसौ शिखा ।

तद्रक्षणाय रक्षायाः श्रीकारो लाञ्छनच्छलात् ॥ १ ॥

विन्दवः श्रीयशोवीर शून्यमध्या निरर्थकाः ।

संख्यावन्तो विधीयन्ते त्वयैकेन पुरस्कृताः ॥ २ ॥

यशोवीर लिखत्याख्यां यावच्चन्द्रे विधिस्तव ।

न माति भुवने तावदाद्यमप्यक्षरद्वयम् ॥ ३ ॥

इति श्रीशत्रुञ्जयादितीर्थानां यात्राप्रबन्धाः ।

॥ अथ श्रीवस्तुपालस्य स्तम्भतीर्थे सद्भवनाम्ना  
नौवित्तकेन समं विग्रहे संजायमाने श्रीभृगुपुराणम-  
हासाधनिकं शङ्खनामानं श्रीवस्तुपालं प्रतिकालरूप-  
मानीतवान् । स जलधिकूले दत्तनिवासे नगरप्रवेस-  
मार्गान् शत्रुसंकीर्णानालोक्य व्यवहारिणां चित्तानि  
यानपात्रप्रणयीनि च वीक्ष्य प्रहितैर्वन्दिभिः श्री-

वत्सुपालेन समं समरवासरं निर्णीय यावच्चतुरङ्गसै-  
न्यं सन्नह्यते तावच्छ्रीवस्तुपालेन पुरः कृतो गुडजा-  
तीयो लूणपालनामा सुभटो यदि शङ्खमन्तरेणाहं  
प्रहरामि तदा कपिलां धेनुमेवेति वारवर्णिकापूर्वं  
कः शङ्ख इति तद्वचनादनु शङ्खोहमिति प्रतिसु-  
भटेनोदिते तं निपात्य पुनरनयैव रत्न्या द्वितीयेपि  
पातिते सति कथं समुद्रसामिप्यात् शङ्खबाहुल्यमि-  
त्युच्चरन् महासाधनिकशङ्खेनैव तत्सुभटतां श्लाघ-  
मानेनाहूतः कुन्ताग्रेण प्रहरन् सतुरग एकेनैव प्रहारेण  
व्यापादितः । तदनु श्रीवस्तुपालेन समराङ्गणप्रण-  
यिना केसरिकिशोरेण च शङ्खसैन्यं गजयूथमिव त्रा-  
सितं दिशो दिशमनेशत् । पश्चान्नौविचको मारितः  
सइयद् इति । तदनु लूणपालमृत्युस्थाने लूणपा-  
लेश्वरप्रासादो मन्त्रिणा कारितः । अथान्यस्मिन्न-  
वसरे श्रीसोमेश्वरस्य कवेः काव्यम् ॥  
हंसैर्लब्धप्रशंसैस्तरलितकमलप्रत्तरङ्गैस्तरङ्गै-  
र्नरैरन्तर्गभीरैश्चटुलवककुलप्रासलिनैश्च मीनैः ।  
पालीरूढद्रुमालीतलसुखशयितस्त्रीप्रणितैश्च गीतै-

२६२ प्रवन्धचिन्तामणिः सर्ग.

र्भाति प्रक्रीडदूर्मिस्तव सचिव चलच्चक्रवाकस्त-  
टाकः ॥ १ ॥

श्रीमन्त्रिणा षोडशसहस्रद्रम्माणां दत्तिः<sup>१</sup>  
प्रसादीकृता । कचिच्चिन्तातुरस्य मन्त्रिणो भूमिं मृग-  
यमाणस्य समागतः । सोमेश्वरदेवः समयोचितमि-  
दमपाठीत् ॥ तद्यथा ॥

एकस्त्वं भुवनेोपकारक इति श्रुत्वा सतां जल्पितं  
लज्जानम्रशिराः स्थिरातलमिदं यद्वक्ष्यसे वेद्मि तत्  
वाग्देवीवदनारविन्दतिलक श्रीवस्तुपाल स्वयं  
पातालाद्वलिमुद्धिर्धूर्पुरसकृन्मार्गं भवान् मार्गति १

मन्त्रिणास्य काव्यस्य पारितोषिकेऽष्टौ सहस्रा-  
णि दत्तानि ॥ तथा ॥

त्वचं कर्णः शिबिर्मोसं जीवं जीमूतवाहनः ।

ददौ दधीचिरस्थानि । इति त्रिषु पदेषु पण्डिते-  
पृथीयमानेषु पण्डितजयदेवः समस्थापदमिव वस्तु-  
पालः पुनर्वसु । इत्युच्चरन् सहस्रचतुष्टयं लेभे । त-  
था सूरिणां दर्शनप्रतिलाभनावसरे केनापि दुर्गत-  
द्विजातिना याचनया तन्नियुक्तेभ्यः कृपया पटीमु-  
पलभ्य मन्त्रिणं प्रति समयोचितमूचे ॥



क्वचित्तूलं क्वचित्सूत्रं कार्पासास्थि क्वचित्क्वचित् ।

देव त्वदरिनारीणां कुटोतुल्या पटी मम ॥ १ ॥

तत्पारितोषिके मन्त्रिणा दत्तानि पञ्चदशश-  
तानि । तथा वालचन्द्रनाम्ना पण्डितेन श्रीमन्त्रि-  
णं प्रति ॥

गौरी रागवती त्वयि त्वयि वृषो वद्धादरस्त्वं युतो  
भूत्या त्वं च लसद्गुणः शुभगणः किं वा बहु ब्रूमहे ।  
श्रीमत्तीश्वर नूनमीश्वरकलायुक्तस्य ते युज्यते  
वालेन्दुश्विरमुच्चकै रचयितुं त्वत्तोऽपरः कः प्रभुः ॥ १

इत्युक्ते तस्याचार्यपदस्थापनायां द्रम्मसहस्रं  
व्ययीकृतं ॥ कदाचिन्म्लेच्छपतेः सुरत्राणस्य गुरु-  
मालिमं मखंतीर्थयात्राकृते इह समागतमवगम्य  
तज्जिघृक्षुभ्यां श्रीलवणप्रसादवीरधवलाभ्यां श्री-  
तेजःपालमन्त्री मन्त्रं पृष्ट एवमाख्यातवान् ।  
धर्मछद्मप्रयोगेण या सिद्धिर्वसुधाभुजाम् ।  
स्वमातृदेहपण्येन तदिदं द्रविणार्जनम् ॥ १ ॥

इति नीतिशास्त्रोपदेशेन वृकयोरिव तयोः छा-  
गमुन्मोच्य पाथेयादिना सल्लुत्य तं तीर्थं प्रति प्र-  
हितवान् । स च कियद्निर्वपैः<sup>२</sup> पश्चाद्व्यावृत्तः श्रीम-

न्त्रिणा तदुचितनेपथ्यादिभिः सत्कृतः स स्वस्थानं  
 प्राप्तस्तीर्थगुणानां विस्मरन् श्रीसुरत्राणपुरतः श्री-  
 वस्तुपालमेव वर्णयामास। स सुरत्राणस्तदनन्तरम-  
 स्माकं देशे भवानेवाध्यक्षोऽहं तु भवतः सेलभृत्  
 तत्त्वयाहं यत्कृत्यादेशेनैव सर्वदानुग्राह्य इति प्र-  
 तिवर्षं तत्प्रहितयमलकपत्रेणोपरुध्यमानः श्रीम-  
 न्तीशः श्रीशत्रुञ्जयभूमिगृहयोग्यं श्रीयुगादिजिन-  
 बिम्बं धन्यं मन्यमानस्य सुरत्राणस्यानुज्ञया तद्देश-  
 वर्तिन्या उम्माणीनाम्न्याः खन्याः प्रयत्नशतैरानी-  
 तवान् । तस्मिन्नप्यारोहति श्रीमूलनायकस्यामर्षा-  
 त्पर्वते विद्युत्यातः समजनि । ततः प्रभृति श्रीम-  
 न्तीश्वरस्याजीवितान्तं श्रीदेवपादैर्दशनं न ददे ।  
 कस्मिंश्चित्पर्वणि श्रीमदनुपमया निरुपमे मुनीना-  
 मन्नदाने यदृच्छया दीयमाने कार्योत्सुक्यात्तदागतः  
 श्रीवीरधवलदेवः सिताम्बरदर्शनिनं<sup>१</sup> द्वारप्रदेशं पा-  
 णिंधममालोक्य विस्मयस्मेरमानासो मन्त्रिणमभी-  
 हितवान् । हे मन्त्रिण इत्थं सदैवाभिमतदैवतवत्  
 किममी न सत्क्रियन्ते । तवं चेदशक्तिस्तदर्द्धभागो  
 ममास्तु । मामकमेव सर्वं वा दीयतां सदैवेत्यतः

कारणान्नोच्यते तथा कृते भवतो वृथायास एव  
स्यादिति तन्मुखचन्द्रविनिर्गतैर्गोभिर्निर्वाणोपतापः  
स्वामिनः कियानर्द्धविभागः सर्वमेव भवदीयमेवे-  
त्युक्त्वा पटीं न्युञ्जनीचक्रे । अन्यथा यतिदानाव-  
सरे मिथो मुनिजनसंमर्दने श्रीमदनुपमायाः प्रण-  
मस्थाः प्राज्याज्यसंपूर्णं घृतपात्रं पृष्ठे पतितमालो-  
क्य कुपितं तेजःपालमन्त्रिणमिति सान्त्वितवती  
यत्तव स्वामिनः प्रासादात्मुनिजनपुण्यपात्रपतितै-  
राज्यैरङ्गाभ्यङ्गो भवतीति तत्पूर्णदानविधिचमत्कृतो-  
मन्त्री पञ्चाङ्गप्रसादपूर्वं

दानं प्रियवाक्सहितं ज्ञानमगर्वं क्षमान्वितं शौर्यम्  
त्यागसहितं च वित्तं दुर्लभमेतच्चतुर्भद्रम् ॥ १ ॥

इति युक्तोक्तिपूर्वं च तां मन्त्री प्रशशंस । इत्यने-  
कथा दानावदातनिकपरेखां प्राप्ता ।

लक्ष्मीश्रला शिवा चण्डी शची सापत्न्यदूषिता ।

गङ्गा न्यग्गामिनी वाणी वाक्साराऽनुपमा ततः १

इत्यादिभिः स्तुतिभिर्जेनाचार्यैः स्तूयते स्म ॥

अथान्यदा पञ्चग्रामसङ्ग्रामाधिरूढयोः श्रीवीरधव-

\* बौद्धेन विमलाचार्येण कृतोऽयं श्लोकः प्रश्नोत्तरमालायां वर्तते  
तस्मान्नारायणेन गृहीत्वा स्वग्रन्थे हितोपदेशे स्थापितं, तस्मादनेनेति

२६६ प्रबन्धचिन्तामणिः सगेः ४

ललवणप्रसादयोः श्रीवीरधवलपत्नी राज्ञी जयतल-  
देवी सन्धिविधानहेतवे जनकं प्रति श्रीशोभनदे-  
वमुपागता । किं वैधव्याद्भीरुः सन्धिवन्धं कारय-  
सीति तेनाभिहिता । वीरचूडामणेः पत्युः श्रीवीर-  
धवलस्योन्नतिमारोपयन्ती सा पितृकुलविनाशश-  
ङ्कया भूयो भूयोहमेवं व्याहरामि । तुरगष्टाधि-  
रूढे तस्मिन्वीरधवले स कोस्ति सुभटो यस्तत्स-  
न्मुखे स्थास्यतीति व्याहृत्य सामर्प्यं प्रतस्थे ।  
अथ तस्मिन्समरसंरम्भे प्रहारव्यथाख्याकुले श्रीवी-  
रधवले भुवस्तलमलंकुर्वति ।

यः पञ्चग्रामसङ्ग्रामभूमौ भीमपराक्रमः ।

घातैः पपात संजातैरश्वतो न तु गर्वतः ॥ १ ॥

इति किञ्चिदन्तर्भग्नो समरसुभटवर्गे एक एवायं  
पत्तिः पतित इति सकलं निजबलमुत्साहयन् श्री-  
लवणप्रसादः समस्तानपि रिपून् लीलयैव समूल-  
कापं कपितवान् । इत्थमेकविंशतिरुत्त्वः सत्त्वगुण-  
रोचिष्णू रणरासिकतया क्षेत्रे पितुरग्रे पतितः ॥ अ-  
थ वीरधवलस्यायुःपर्यन्ते, प्रतितीर्थं प्रस्थितेन द-  
त्तमेकग्रा सहस्रगुणमुपलभ्यत इति रूढेः श्रीतेजः-

पालेन जन्मसुकृतं ददे । तदनु तस्मिन् स्वामिनि  
विपन्ने तत्सौभाग्यातिशयात्सेवकानां विशत्याधि-  
कशतेन सहगमनं चक्रे । तदनु श्रीतेजःपालेन प्रेत-  
वने यामिकान्मुक्त्वा लोकस्य स निर्वन्धो निषिद्धः ॥  
आयान्ति यान्ति च परे ऋतवः क्रमेण  
संजातमेतद्वतुयुग्ममगत्वरं तु ।  
वरिणं वीरधवलेन विना जनानां  
वर्षा विलोचनयुगे हृदये निदाघः ॥ १ ॥

अथ श्रीमन्त्रिणा वीरधवलस्य सुतो वीसलदेवो  
राज्येऽभिषिक्तः । श्रीअनुपमदेव्या विपत्तौ तेजःपाला-  
रूढशोकग्रन्थावनिवर्तमानायां तत्रागतैः श्रीजयसेन-  
सूरिभिर्बलवत्पुरुषैरुपशमितायां विपदि किञ्चिच्चेतन-  
या सापत्रपः श्रीतेजःपालः सूरिणोचे । वयमस्मि-  
न्नप्यवसरे भवतः कैतवमालोकितुं मुपेताः । श्रीवस्तु-  
पालेन किमेतदिति पृष्ट्वा गुरवः प्राहुः । यदस्माभिः  
शिशोस्तेजःपालस्योपयामाय धरणिगपार्श्वादनुप-  
मा कन्या याचिता तदा स्थिरंता कृता । तदनु  
तस्याः कन्याया एकान्तविरूपतां निशम्य तत्संबन्ध-

१ C जनस्य २ A C D ग्रन्थेऽनिवर्तमाने ३ D आलोकायितुं

४ तत्पारिणयननिश्चयता ५ C स्थिरपत्रदानादनु

२६८ प्रबन्धचिन्तामणिः सर्गः ४

भङ्गाय चन्द्रप्रभजिनप्रतिष्ठितक्षेत्राधिपतेरष्टौ द्रम्मा-  
णां भोगमुपायनीचक्रे । इदानीं तद्वियोगग्रन्थेराम-  
नस्यमित्युभयोर्वृत्तान्तयोः कस्तथ्य इति तन्मूलसं-  
केताच्छ्रीतेजःपालः स्वहृदयं दृढीचक्रे ॥ अथान्यदा-  
वसरे मन्त्री वस्तुपालः पूर्णायुःश्रीशत्रुञ्जयं यियासु-  
रिति मत्वा पुरोधाः सोमेश्वरदेवस्तत्रागतोऽनर्घ्येषु-  
प्यासनेषु मुच्यमानेषुऽनुपविशन् हेतुं पृष्ठ इत्याह ॥  
अन्नदानैः पयःपानैर्धर्मस्थानैर्धरातलम् ।

यशसा वस्तुपालेन रुद्धमाकाशमण्डलम् ॥ १ ॥

इति स्थानाभावान्नोपविश्यते इति तदुक्तेरुचि-  
तपारितोषिकदानपूर्वं तमाष्टछय मन्त्री पथिप्रस्थि-  
तः । आकेवालीयाग्रामे देशकुट्यां दर्भसंस्तरमा-  
रूढो गुरुभिराराधनां कार्यमाण आहारपरिहारपूर्वं  
पर्यन्ताराधनया प्रध्वंसितकलिमलो युगादिदेव-  
मेवं जपन्

सुकृतं न कृतं किञ्चित्सतां संस्मरणोचितम् ।

मनोरथैकसाराणामेवमेव गतं वयः ॥ १ ॥

इति वाक्यप्रान्ते नमोऽर्हज्य इत्यक्षरैः समं प-

रिद्धतसप्तधातुबद्धं शरीरं स्वकृतफलमुपभोक्तुं स्वर्लो-  
कमलंचकार । तत्संस्कारस्थानेऽनुजश्रुतिजःपाल-  
सुतजैत्रसिंहाभ्यां श्रीयुगादिदेवदीक्षावस्थामूर्तिना-  
लंकृतस्वर्गारोहणप्रासादोऽकारि ॥

अथ मे फलवती पितुराशा  
मातुराशिर्पाशिस्वाङ्कुरिताद्य ।

यद्युगादिजिनयात्रिकलोकं  
प्रीणयाम्यहमशेषमखिन्नः ॥ १ ॥

नृपव्यापारपापेभ्यः सुकृतं स्वीकृतं न यैः ।

तान्धूलिधावकेभ्योपि मन्येऽधमतरान्नरान् ॥ २ ॥

इत्यादीनि श्रीवस्तुपालमहाकवेः काव्यानि  
स्वयं कृतान्यमूनि ॥

पूर्णः स्वामिगुणैः स वीरधवलो निर्मानं एव प्रभु-  
र्विद्वद्भिः कृतभोजराजविरुदः श्रीवस्तुपालः कविः ।

तेजःपाल इति प्रधाननिवहेष्वेकश्च मन्त्रीश्वर-

स्तज्जायानुपमागुणैरनुपमा प्रत्यक्षलक्ष्मीरभूत् ॥ १

॥ इति श्रीमेरुतुङ्गाचार्याविःकृते प्रबन्धचिन्ता-  
मणौ श्रीकुमारपालमन्त्रीश्वरवस्तुपालतेजःपालम-  
हापुरुषयशोवर्णनो नाम चतुर्थः प्रकाशः ॥

अथ पूर्वोक्तेभ्यो महापुरुषचरितेभ्यो यान्यवशिष्टानि तानि तदितराणि चेह प्रकीर्णकप्रबन्धे प्रारभ्यन्ते ॥ तद्यथा ॥

समीपस्फुरच्छिप्राश्रवन्त्यामवन्त्यां पुरि पुरा श्रीविक्रमार्कनृपः, सत्रागारे वैदेशिकं लोकं भोजनानन्तरं निद्रापरं संपन्नदीर्घनिद्रैर्मार्कण्य विस्मयस्मेरमानसस्तद्वृत्तान्तं जिज्ञासुस्तान् सर्वानपि वसनपिहितान्विधाप्य तद्वार्त्तां चापन्हुतां निजाज्ञां विधाय पुनरुपागतानध्वगांस्तथैव भोजयित्वा प्रदोषे चोष्णोदकं तैलं च तेषां चरणपरिचरणनिमित्तमुपनीय तेषु प्रसुप्तेषु महानिशायां कृपाणपाणिर्नृपतिर्निभृतीभूय स्वयं यावत्तस्थौ तादकस्मात्तत्र कोणैकदेशे प्रथमं तावद्धूमोद्गमं तदनु शिखारेखामथ दीप्रफणारत्नफणालंकृतं सहस्रफणालंकृतसहस्रफणं नागं निर्गतमवलोक्य तच्चित्रचमत्कृतो राजा यावत्साकूतं पश्यति तावत्स फणीन्द्रः किं पात्रमिति तदिनसुप्तान् पान्यान् प्रत्येकं प्रपच्छ। अथ ते धर्मपात्रं गुणपात्रं तपःपात्रं रूपपात्रं कामपात्रं कीर्तिपात्रमित्यादीनि वदन्तोऽज्ञानतया यदृच्छया तस्य



शापान्मृत्युमश्नुवन्तीति विलोक्याऽथ श्रीविक्रम-  
एव तत्पुरोभूय योजिताञ्जलिः ।

भोगीन्द्र बहुधा पात्रं गुणयोगान्नवेद्भुवि ।

मनःपात्रं तु परमं शुद्धं श्रद्धापत्रितम् ॥ १ ॥

अथ निजाशयमेवं भाषमाणं श्रीविक्रमं परि-  
तोषाद्वरं वृणीषेति प्राह । अथ श्रीविक्रमोऽमून्  
पथिकानुजीवयेति तेन वरे याचिते शेषं विशेषात्परि-  
रितोषयामास ॥

इति श्रीविक्रमार्कस्य पात्रपरीक्षाप्रबन्धः ॥

अथ कदाचित्पाटलीपुरपत्तनेऽकस्मादमन्दानन्दे  
नन्दे राज्ञि पञ्चत्वमागते कश्चिद्विप्रस्तत्कालं तदाग-  
तः परपुरप्रवेशविद्यया नृपदेहमधितस्यौ । तत्सं-  
केततो द्वितीयो द्विजो नृपद्वारमुपेत्य वेदोद्गारमुदा-  
हरन्प्रत्युजीवितो नृपः स कोशाध्यक्षैस्तस्मै स्वर्णलक्ष-  
मदापयत् । अथ तद्दृष्टान्तं विज्ञाय महामात्यो, न-  
न्दः पुरा कदर्योभूत् साम्प्रतं तु तदौदार्यमिति व-  
दंस्तं विप्रं विधृत्य परकायप्रवेशकारिणं वैदेशिकं  
सर्वत्र शोधयन् क्वापि मृतकं केनापि रक्ष्यमाणमा-  
कर्ण्य चिताप्रवेशान्नस्मरित्य पूर्वमिव तं नन्दं निरु-

पममतिवैभवान्निजप्राज्ये साम्राज्ये निर्वाहयामास ॥

इति नन्दप्रबन्धः ॥

अथ खेडमहास्थाने देवादित्यविप्रपुत्री बालका-  
ले विधवा निरूपमरूपपात्रं सुभगाभिधाना प्रधाना  
प्रातः सूर्यं प्रत्यर्घ्याञ्जलिं क्षिपन्ती अज्ञाततद्भोगा-  
दाधानममूलैकयंचित्तदसमञ्जसं पितृभ्यामवबुध्य म-  
न्दाक्षमुद्रमिति तां प्रति तद्व्याहृत्य स्वपुरुषैर्वल-  
भ्या नगर्या अभ्यासे मुमुचे । तया तत्र प्रसूतः सू-  
नुः क्रमेण वर्द्धमानः सवयोभिः शिशुभिः निःपि-  
तृकइति निर्भर्त्स्यमानो मातुः समीपे पितरं पृच्छन्  
तया न जाने इत्यभिहितस्तज्जन्मवैराग्यान्मुमूर्षोः<sup>१</sup>  
प्रत्यक्षीभूय सविता सान्त्वनापूर्वं करे कर्करान्सम-  
र्प्य भवन्मातुः संपर्ककारिणमर्कं स्वं ज्ञापयन् भव-  
तः पराभवकारिणं प्रत्यऽयं क्षिप्तः शिलारूपो भ-  
विष्यतीत्यादिशय निरपराधस्य कस्यापि क्षिप्तो य-  
दि तवैवाऽनर्थनिवन्धनं ज्ञापयंस्तिरोधत् । अथेत्य-  
मभिभवकारिणः कांश्चिद्व्यापादयन् शिलादित्य इ-  
ति सान्वयनाच्चा प्रतीतः । तन्नगरराज्ञा तत्परीक्षा-

१ C रोडा २ अज्ञातात्तद्योगभोगादाधानमभात् ३ लज्जागोप्य  
४ C मूर्खो मुमूर्षु. ५ C तत्कर कर्कर D तत्करे

यैव तथाकृते तमिलापालं शिलया तथा कालधर्म-  
मवापद्य स्वयमेव भूपतिरभूत्। तथास सवितृप्रसा-  
दीकृतहयेऽधिरूढो नभश्चर इव स्वैरविहारी परा-  
क्रमाक्रान्तदिग्वलयश्चिरं राज्यं कुर्वन् जैनमुनि-  
संसंगात्प्रादुर्भूतसम्यक्करत्नः श्रीशत्रुञ्जयस्य महा-  
तीर्थस्यामानमहिमानमवगम्य जीर्णोद्धारं चकार ॥  
कदाचिच्छिलादित्यं सभापतीकृत्य चतुरङ्गसभायां  
पराजितेन देशत्यागिनां भाव्यमिति पणवन्धपूर्वं  
सिताम्बरसौगतयोर्वादे संजायमाने पराजितान्  
सिताम्बरान्स्वविषयात्सर्वान्निर्वास्य श्रीशिलादि-  
त्यजामेयममेयगुणं मह्यनामानं क्षुल्लकं तत्र स्थितं  
समुपेक्ष्य स्वयं जितकाशिनः श्रीविमलगिरौ श्री-  
मूलनायकं श्रीयुगादिदेवं बुद्धरूपेण पूजयन्तो बौ-  
द्धा यावद्विजयिनस्तिष्ठन्ति तावत्स मल्लः क्षत्रकुलो-  
द्भवत्वात्तस्य वैरस्याविस्मरन् कृतप्रचिकीर्षुर्जैनद-  
र्शनाभावात्तेषामेव संनिधावधीयन् रात्रिन्दिनं त-  
ल्लानिचित्तः कदाचिद्भीष्मवांसरेषु निशीथकाले नि-  
द्रामुद्रितलोचने समस्तनागरिकलोके दिवाभ्यस्तं  
शास्त्रं महताभियोगेनानुस्मरन् तत्कालं गगने सं-

चरत्या श्रीभारत्या के मिष्टा इति शब्दं पृष्टः स  
 परितो वक्तारमनवलोक्य वल्ला इति तां प्रति प्र-  
 तिवचनं प्रतिपाद्य पुनः पण्मासान्ते तस्मिन्नेवा-  
 वसरे प्रत्यावृत्तया देव्या केन सहेति भूयोभिहित-  
 स्तदा त्वनुस्मृतपूर्ववाक् गुडघृतेनेति प्रत्युत्तरं व-  
 दानस्तद्वधानचमत्कृतयाभिमतं वरं वृणीष्वेत्या-  
 दिष्टः सौगतपराजयाय कमपि प्रमाणग्रन्थं प्रसादी-  
 कुरु । इत्यर्थमभ्यर्थयन् नयचक्रग्रन्थार्पणेनानुज-  
 गृहे । अथ देवीप्रसादादेवागततत्त्वंः श्रीशिलादि-  
 त्यमनुज्ञाप्य सौगतमठेषु तृणोदकप्रक्षेपपूर्वं नृप-  
 तिसभायां पूर्वोदितपणवन्धपूर्वकं कण्ठपीठावतीर्ण-  
 श्रीवाग्देवतावलेन श्रीमल्लस्तांस्तरसैव निरुत्तरीच-  
 कार । अथ राजाज्ञया सौगतेषु देशोद्वतेषु जैना-  
 चार्येष्वाहूतेषु स मल्लो बौद्धेषु जितेषु तेषु वार्दीति ।  
 तदनु भूषाभ्यर्थितैर्गुरुभिस्तस्मै पारितोषिके सूरिपदं  
 ददे । श्रीमल्लवादिभूरिनामा गणभृत्प्रभावकत-  
 या नवाङ्गवृत्तिकारश्रीअभयदेवसूरिभिः प्रकटीकृत-

१ A B आनमिज २ C मल्लदत्तसौदेवावगततत्त्वः

३ C D देशोद्वतेषु C वादिषु ४ A तस्य ५ चक्रे

६ C नवाङ्गवृत्तिकारश्रीअभय देवसूरिभिः प्रकटीकृत श्री-

श्रीस्तम्भनकस्य तीर्थस्य विशेषोन्नत्यै श्रीसङ्गेन  
चिन्तायिकत्वे नियोजितः ॥ इति मल्लवादिप्रबन्धः॥

अथ मरुमण्डले पल्लीग्रामे काकूपाताकौ भ्रातरौ  
निवसतस्तयोः कनीयान्धनवान् ज्यायांस्तु तद्गृहभृ-  
त्यवृत्त्या वर्त्तते । कस्मिंश्चिन्निशीथसमये दिवस-  
कर्मवृत्तिश्रान्तः प्रावृट्काले काकूः प्रसुप्तः क-  
नीयसाभिदधे । भ्रातः स्वकीयकेदाराः पयःपूरैः  
स्फुटितसेतवस्तव तु निश्चिन्ततेत्युपालब्धः स  
तदात्यक्तश्रस्तरैः स्वं निन्दन् कुशलं स्कन्धे निवेश्य  
यावत्तत्र याति तावत्कर्मकरान् स्फुटितसेतुवन्ध-  
रचनापरान्समालोक्य के यूथमिति पृष्ठाः भवद्भातुः  
कामुकाः इत्यभिहिते कापि मदीयाः कामुकाः  
सन्तीति पृष्ठे वलभ्यांसन्तीति ते प्राहुः । अथ सोप्य-  
वसरे सर्वस्वं पिठरे आरोप्य तं मूर्द्ध्ना दधानः श्री  
वलभीमवाप्य गोपुरसमीपवर्त्तिनामाभीराणां समी-  
पेऽवसत् । अत्यन्तकृशतया तै रङ्ग इति दत्ताभि-  
धानस्तार्णमुटजं विधाय तदवष्टम्भेन यावत्तस्थौ

१ A B श्रीमल्लेन चिन्तायिकत्व २ A D काकूआकः

३ शय्या ४ कर्मकराः ५ B अथ स पिठरे सर्वस्वमारोपितं

मूर्द्ध्ना ६ C सन्निधौ निवसन्

२७६ प्रबन्धचिन्तामणिः सर्गः ५

तावत्कश्चित्कार्पाटिकः कल्पपुस्तकप्रमाणेन रैवतक-  
शैलावलाबुना सिद्धरसमादाय मार्गभतिक्रामन् का-  
कूयतुम्बुडीत्यशरीरिणीं वाणीमाकर्ण्य विस्मयस्मे-  
रमना जातभीर्विलभीपरिसरे तस्य छद्मनो वणिजः  
सद्मनि रङ्ग इति तन्नामतो निशङ्कतया तत्सरसम-  
लाबु तत्रोपनिधीचक्रे । स स्वयं श्रीसोमेश्वरया-  
त्रायां गतः । कस्मिन्नपि पर्वणि पाकविशेषाय  
चुल्हीनियोजितायां तापिकायामलाबुरन्धाद्वलित-  
रसविन्दुना हिरण्मयीं तां निभाल्य स वणिग् तं  
सिद्धरसं चेतसा निर्णीय तदलाबुसहितगृहसर्व-  
स्वमन्यत्र नियोज्य स्वगृहं प्रदीपकेन भस्मीकृत्य  
परस्मिन्गोपुरे सौधं निर्माप्य तत्र निवसन्,  
कदाचित्प्राज्याज्यविक्रयकारिण्योः स स्वयं घृतं  
तोलयंस्तदक्षयं निरीक्ष्य घृतपात्राधः कृष्णचित्र-  
ककुण्डलिकां विमृश्य केनापि कैतवेन तद्व्यत्य-  
यादपहत्य चित्रकसिद्धिं स्वीचकार । कदाचित्तस्या-  
गण्यपुण्यवैभववशात्सुवर्णपुरुषसिद्धिरजायत । इ-  
त्थं त्रिविधसिद्ध्यां कोटिसंख्याभिधानानि धनानि

१ रसानयशास्त्रोक्तरीत्या २ C काकनुम्बुडीति सिद्धरसात्

३ तपेलीति भाषायाम् C ४ कारिणा-५ अक्षीणं ६ A कुण्डलियां

संगृह्यापि कदर्यवर्यतया कापि सत्पात्रे तथै वा-  
नुकम्पया वा तस्याः श्रियो न्यासो दूरे तिष्ठतु प्र-  
त्युत सकललोकसंजिहीर्षया तां लक्ष्मीं सकलस्य  
विश्वस्य कालरात्रिरूपामदर्शयत् । अथ स्वसुताया  
रत्नखचितकङ्कतिकाया, राज्ञा स्वसुतायाः कृते  
प्रसभमपहृतायास्तद्विरोधानुरोधात्स्वयं म्लेच्छम-  
ण्डले गत्वा वलभीभङ्गाय तद्याचितकाञ्चनकोटी-  
रस्मै<sup>१</sup> समर्प्य प्रयाणमचीकरत् । तदनुपकृतस्तु  
एकः छत्रधरः निशाशोपे सुप्तजाग्रदवस्थेऽवनीपतौ<sup>२</sup>  
पूर्वसंकेतितेन केनापि पुंसा सममित्यालापमकरो-  
त् । अस्मत्स्वामिनां मन्तेऽमूर्खः कोपि नहि<sup>३</sup> यद-  
यमश्वपतिमहीमहेन्द्रः केनाप्यऽज्ञातकुलशालेनासा-  
धुना साधुना वापि वणिजा नामकर्मभ्यां रुद्धेन<sup>४</sup>  
प्रेरितः सूर्यपुत्रं शिलादित्यं प्रति यश्चचालेति प-  
थ्यां तथ्यां तद्वाचमाकर्ण्य किञ्चिच्चेतसि विचिन्त-  
यन् तस्मिन्नहनि नृपः प्रयाणविलम्बमकरोत् । अ-

१ C कङ्कतिकाया स्वसुताकृते प्रसभमुपहृताया २ D तद्याचिताः  
काञ्चनकोटीस्तस्य नवकोटीरस्य ३ A एकच्छत्रधरो ४ C निशाशोपे  
सुप्तजाग्रदवस्थे पृथ्वीपतौ ४ B D मूर्खोपि नहि

थ रङ्गः साशङ्कस्तद्वृत्तान्तं निपुणवृत्त्यावगम्य काञ्च-  
नदानेन तस्य काञ्चन तृप्तिमासूत्र्य पुनः परस्मि-  
न्प्रत्यूषे विचार्याविचार्य वा कृतप्रयाणोऽयं महान-  
रेन्द्रश्चालितः। सिंहस्यैकपदं यथेति न्यायाञ्चलित एव  
राजते ॥ यतः ॥

मृगेन्द्रं वा मृगारिं वा हरिं व्याहरतां जनः ।

तस्य चोभयथा ब्रीडा लीलादलितदन्तिनः ॥१॥

इत्यस्य स्वाभिनो निःसीमपराक्रमस्य सन्मुखे  
कः स्थास्यातीति तद्विरा प्रोत्साहवान् म्लेच्छप-  
तिर्भेरीनिनादबधिरितरोदःकन्दरं प्रयाणमकरोत् ।  
इतश्च तस्मिन्वासरे वलभ्यां श्रीचन्द्रप्रभबिम्बमम्बा-  
क्षेत्रपालाभ्यां सहितमधिष्ठातृबलाद्गनमार्गेण शि-  
वपत्तनभुवि भूषणीबभूव । रथाधिरुढा श्रीव-  
र्द्धमानप्रतिमा चादृष्टवृत्त्याधिष्ठातृबलेन संचरन्ती-  
आश्विनपूर्णिमायां श्रीमालपुरमलंचकार । अ-  
न्या अपि सातिशया देवमूर्त्तयो यथोचितं भूभाग-  
मलंचक्रुः । तत्पुर्देवतया चै श्रीवर्द्धमानसूरीणां  
चोत्पातज्ञापनावसरे ॥



का त्वं सुन्दरि जल्य देविसदृशे' किं कारणं रोदिषि  
भङ्गं श्रीवलभीपुरस्य भगवन् पश्याम्यहं प्रत्ययम् ।  
भिक्षायां रुधिरं भविष्यति पयो लब्धं भवेत्साधुभिः  
स्थातव्यं मुनिभिस्तदेव रुधिरं यस्मिन्पयो जायते १

एवमुत्पातेषु संजायमानेषु पुरीपरिसरप्रान्तेषु  
म्लेच्छसैन्येषु देशभङ्गसमासादितपङ्केन रङ्केन पञ्च-  
शब्दवादकान्कनकवितरणैर्बहुधा विभेद्यं तस्य ह-  
यस्यारोहणकाल एव तैः क्रियमाणे प्रतिशब्दसां-  
राविणे ताक्ष्यवदुद्धीय तस्मिन्स्ताक्ष्यं 'दिवमुत्पत-  
ति किंकर्तव्यतामूढः स शिलादित्यस्तैर्निजघ्नो तदनु  
तैर्लीलयैव वलभीभङ्गः सूत्रितः ॥

'पणसयरीवासाइं' तिन्निसयाइं अङ्कमे ऊण ।

विक्रमकालाउ तउ वलहीभङ्गो समुप्पन्नो ॥ १ ॥

१ C D देवसदृशे २ A प्रत्ययः ३ D विबोध्य ४ अथे  
५ A वाससयं

\*पञ्चसप्ततिवर्षाणि त्रिशतानि अतिक्रमे तु ।

विक्रमकालात् वलभीभङ्गः समुत्पन्नः

फ. सत्यपुररूपे प. ३७ तु

तेण सप्तेण विक्रमाउं अठाहं सण्हि पणयल्लोहं वरिसाणं गण्हि  
भाञ्जिऊण सो राया मारिउं । गउं सडाणं हम्मीरो । तउं अणो म-

इति श्रीशिलादित्यराज्ञ उत्पत्तिस्तथा रङ्कोत्प-  
त्तिस्तत्कृतो वलभीभङ्गश्चेति प्रबन्धत्रयम् ॥

अथ श्रीरत्नमालनगरे श्रीरत्नशेखरो नाम राजा  
सकदाचिद्विद्यात्रायाः प्रत्यावृत्तः पुरप्रवेशमहोत्सवे  
विपणिश्रेणिं गृह्णारितां मृगयमाणः कस्मिन्नपि  
हृष्टे काष्ठपात्रीयुतं कुदालमालोक्य सौधप्रवेशान-  
न्तरं प्राभृतपाणौ महाजने समायाते सुखिनो यूय-  
मिति नृपालापानन्तरं तैर्न सुखिनो वयमिति वि-  
ज्ञप्ते विभ्रमभ्रान्तस्तावद्विसृज्य कस्मिन्नपि निर्ज-  
नावसरे<sup>१</sup> पुरप्रधानानाहूय किं न सुखिनो यूयमिति  
ष्टष्टे अपि च काष्ठपात्रीयुतकुदालस्योर्ध्वीकरण-  
कारणमनुयुक्तास्ते इति विज्ञपयामासुः ।

यत्र स्वामिना काष्ठपात्र्यामेकमेवमेवधारितं, स वि-  
त्तेश्वरः स्ववित्तसंख्यामजानन् काष्ठपात्रिकैः स्ववि-

ज्जणवर्द्धं गुज्जरं भञ्जित्वा तत्रो वलन्तो पत्तो सञ्चउरे

[ तेन सैन्येन विक्रमान् अष्टभिः शतैः पञ्चाशद्भिः वर्षाणां गतैः  
[ वलभी ] भङ्क्त्वा स राजा मारितः गतः स्वस्थानं हम्भोरः । ततोऽ-  
न्यः गज्जणपतिः गूर्जरं भङ्क्त्वा ततो वलन् प्राप्तः सत्यपुरे ]

तसंकलनां ज्ञापयितुं संकेतश्चक्रे। तथा च न सुखि-  
नो वयमिति स्वामिनः संतानाभावात्। कोटीध्वजकु-  
लाकुलं नगरमिदं स्वामिना चिरकाललालितमन्व-  
याभावात्केन परांकोटीं नीयत इति “पुरातनस्यान्तः-  
पुरस्य वन्ध्यत्वं बुद्ध्या निधाय नृपवंशवृद्धये नौतन-  
मन्तःपुरं” चिकीर्षवः ” स्वामिनो नुमत्या पुष्पार्क-  
दिने केनापि प्रधानशाकुनिकेन समं शकुनागारं  
प्राप्ताः । कामपि दुर्गतनितम्बिनीमासन्नप्रसवां का-  
ष्ठभारवाहनैकवृत्तिं शिरोधिरूढदुर्गामालोक्य शकुन-  
वित्तामक्षतादिभिः पुनरभ्यर्चयन्, तैः किमेतदिति  
ष्टेष्टे प्राह । यः कश्चिदाधाने पुत्रः स एवात्र नृपो  
भावी चेद्बृहस्पतिमतं प्रमाणमित्यसंभाव्यं वृत्तान्तम-  
नुमन्यमानाः मानोन्नतये नृपाय व्याघटय यथा-  
वस्थितं तत्स्वरूपं निवेदितवन्तः । अथ खेदमेदुर-  
मना नृप आसपुरुषैस्तां गर्त्तापूरीकर्तुं प्रारभ्यमा-  
णामिष्टं दैवतं स्मरेत्यभिहिते सा मरणभयव्याकुला  
प्रदोषकाले यावत्ताननुज्ञाप्य शङ्काभङ्गं कुरुते ताव-  
त्साऽप्रसूत पुत्रं। तं तत्र परित्यज्य पुनरुपागतां गर्त्ता-  
पूरीकृत्य पुनरपि राज्ञे विज्ञपयाञ्चक्रुः । अथ काचि-

नृमी संध्याद्वयेपि पयःपानं कारयन्ती तमनुदिनं  
 वृद्धिमन्तं कारयामास । तस्मिन्नवसरे देव्या महा-  
 लक्ष्म्याः पुरतः दृक्कशालायां हरिण्याश्चतुर्णां पा-  
 दानामधः शिशुरूपं नाणकं नूतनं संजायमानमा-  
 कर्ण्य कचिन्नवीनो नृप उत्पन्न इति प्रसृतवार्त्तया  
 श्रीरत्नशेखरः सैन्यानि प्रतिदिशं तं शिशुं विश-  
 सितुं प्राहिणोत् । तैर्यत्र तत्रावलोक्य लब्धोपि बा-  
 लहत्याभीतैः स सायं पुरगोपुरे गोकुलखुररवैर्यथा-  
 यं वालो विपन्नः सन्स्वयमपवादाय न भवतीति दू-  
 रस्थैः स्तैर्यावन्मुक्तस्तावत्तत्रायातं गोकुलं तं मूर्ति-  
 मन्तं पुण्यपुञ्जमिव बालमालोक्य तैरेव पदैः स्त-  
 म्भितमिव तस्थौ । अथ पाश्चात्यपक्षात्पुरोभूय वृषभो  
 वृषभासुरं<sup>१</sup> तं शिशुं पदानामन्तराले निधाय गोधनं  
 सकलमपि प्रेरयामास । अथ तं वृत्तान्तं नृपोऽव-  
 धार्य तैः समं तमपरेतं लोकैर्विज्ञातश्च तं बालमा-  
 नीय पुत्रीयमाणः श्रीपुञ्ज इति दत्ताभिधानः प्रव-  
 र्द्धयामास । अथ श्रीरत्नशेखरे राज्ञि दिवं गते  
 तस्य राज्ञः कृताभिषेकस्य साम्राज्यं पालयतः

१ C दृक्कशालायाः २ वृषेण पूर्वपुण्येन देदीप्यमान । वृषः  
 कामदेवस्तद्वद्वाभासुर ३ B सामन्तनगरलोकः

पुत्री समजनि सा च संपूर्णसर्वाङ्गावयव-  
सुन्दरापि कपिमुखी तेन वैराग्येण विषय-  
विमुखतां विभ्राणा श्रीमातेति नामधेयं वभार ।  
सा कदाचिज्जातजातिस्मृतिः पितुरग्रे स्वं पूर्व-  
भवं निवेदितवती, यदहमर्बुदाद्रौ पुरा कपिपत्नीत्व-  
मनुभवन्ती कस्यापि शाखिन एकस्याः शाखायाः  
शाखान्तरं संचरन्ती केनापि तदतुल्येन शिल्पेन  
विद्धतालुः पञ्चत्वमासदत्तातदधोवर्त्तिनि कामितती-  
र्थकुण्डे यावद्गलितं वपुः पपात तावत्तीर्थातिशया-  
न्मामकं वपुर्मानुषाकारमभवत् यन्मस्तकं तु तत्तथै-  
वास्ते तेनाहं कपिवदना । अथ श्रीपुञ्जनृपस्तस्यास्त-  
न्मस्तकं कुण्डे क्षेपयितुं निजान्पुरुषान्समादिदेश ।  
तैस्तु सुचिरात्तदवस्थं विलोक्य तथाकृते सा श्री-  
माता मानवानना समजनि । ततःप्रभृति सा मा-  
तरपितरावनुज्ञाप्याऽर्बुदसंख्यगुणा तस्मिन्नेवाऽर्बुदे  
तपस्यन्ती, कदाचिद्गगनगामिना योगिना दृष्टो ।  
स च तत्सौन्दर्यापहतहृदयो गगनादुत्तीर्य प्रेमाला-  
पपूर्वकं त्वं मां कथं न वृणोपीति पप्रच्छ । सेत्यवा-  
दीत् । साम्प्रतं तावत्क्षणदायाः प्रथमयामो व्य-

२८४ प्रबन्धचिन्तामणिः सर्ग. ५

तीतस्तूर्ययामस्य ताम्रचूडेपु रुतमकुर्वाणेषु यद्य-  
स्मिन्नगे कयाचिद्विद्यया द्वादश पद्याः कारयति  
ततो भवन्तमभीष्टं करोमीति तदुक्तिसमनन्तरमेव  
तत्र कर्मणि चटकपटकं नियोज्य यामद्वयेन नि-  
र्मापिते सर्वपद्यानिवहे श्रीमाता स्वशक्तिवैभवेन  
कृतकं ताम्रचूडारवं कारयन्ती तेनागत्य विवाहाय  
सज्जीभवेत्यभिदधे । तव पद्याया निष्पाद्यमानायाः  
कुक्कुटरवः समजनिष्टेति तयोक्ते भवन्मायया कृतकं  
कृकवाकुरवं को न वेत्तीत्पुत्तरं ददानः सरितीरे त-  
ज्जाम्योपढैकितविवाहोपहारः, श्रीमात्रा समस्तवि-  
द्यामूलं तन्निगूलमिहैव विहाय पाणिपीडनाय स-  
न्निहितो भवेत्याहूय, प्रेमोपहृतचित्ततया तत्तथा  
कृत्वा सामीप्यमुपागतः तत्पदयोः कृतकान् शुनो  
नियोज्य हृदये तेन त्रिगूलेनाहत्य मारितः । इत्थं  
निःसीमशीललोलायितेन स्वजन्मातिवाहितवती ।  
तस्यामखण्डशीलायां व्यतीतार्यां श्रीपुञ्जराजा तत्र  
शिखरबन्धरहितं प्राप्तादमकारयत् । यतः पण्मा-  
सान्ते तस्य गिरेरधोभागवर्ती अर्बुदनामा नागो  
यदा चलाति तदा पर्वतकम्पो भवति । अतः शि-

खररहितास्तत्र सर्वेऽपि प्राप्तादाः ।

इति श्रीपुञ्जराजा तत्पुत्रीश्रीमाता तत्प्रबन्धः ॥१॥

कदाचिच्चौडदेशे गोवर्द्धनो नाम राजाभूत् तदा-  
यःस्तम्भे निवद्धां सभामण्डपपुरतो न्यायिना हन्य-  
माना न्यायघण्टा निनदति । अन्यदा तस्यैकसूनोः  
कुमारेण रथारूढेन पथि संचरता ज्ञानवृत्त्या कश्चि-  
द्वत्सतरो व्यापादितस्तन्माता सौरभेयी नयना-  
भ्यामजस्रमश्रूणि वर्षन्ती स्वपराभवप्रतीकाराय  
शृङ्गाग्रेण न्यायघण्टामधीवदत्तघण्टाटङ्कारं नृपो नि-  
शम्यार्जुनकीर्तिस्तमर्जुनीवृत्तान्तं मूलतोवगम्य नि-  
जं न्यायं परां कोटिमारोपयितुं प्रातः स्वयं स्यन्दने  
निवेश्य प्रियपुत्रोऽपि तमेकमेव पुत्रं पथि नियोज्य  
तदुपरि तां धेनुं साक्षात्कृत्य रथं धामयामास ।  
तस्य भूभुजः सत्त्वेन तस्य सुतस्य भूयसा भाग्य-  
वैभवेन रथस्य रथाङ्गे समुद्धृते स कुमारो न वि-  
पन्नः । इति गोवर्द्धननृपप्रबन्धः ॥

अथ कान्त्यां पुरि पुरा पुराणनृपतिश्चिरं राज्यं  
निर्गर्वः कुर्वन्कदाचिन्मतिसागराभिधानेन प्रियसु-

१ B चौड २ C स्तम्भनिवद्धा ३ अर्जुन इति कीर्तिर्यस्येति ।  
अर्जुन्याः सरुद्धत्माया धेनोः

तदा महामात्येनाऽनुगम्यमानो राजपाटिकायां ब्र-  
 जनविपर्यस्तध्वस्तेनं तुरङ्गेण नृपेऽपहियमाणे चतु-  
 रङ्गचमूचक्रे क्रमेण दवीयसि संजायमानेप्यतिजवे  
 जवनेऽधिरूढः। तदानुपादिकः “कियत्यपि भूभागे उ-  
 छङ्किते सति मार्गोल्लङ्घनपरिश्रमादत्यन्तसुकुमार-  
 तया रुधिरपूरितत्वाद्विपन्ने नृपतौ” कृतानन्तरकृत्य-  
 स्तुरङ्गमं तद्वेपं च सहादाय प्रदोषसमये पुरं प्रवि-  
 शन् राज्यस्यानुसंधानचिकीः श्रीमालभूपालभया-  
 त्कमपि नृपतेः सवयसं सरूपं च कुलालमालोक्य  
 तं तद्वेपार्पणपूर्वकं तुरगेधिरोप्य सौधप्रवेशानन्तरं  
 देव्यै तं व्यतिकरं निवेद्य सचिवेन पुण्यसार इति  
 नाम विधाय स एव नृपतीचक्रे । इत्थं कियत्यपि  
 गते काले स सचिवश्चमूसमूहवृतः प्रतिनृपतिं प्र-  
 ति प्रतिष्ठासुः स्वप्रतिहस्तकप्रायं कमपि प्रधानपु-  
 रूपं नृपतिसेवाकृते निवेद्य स्वयं देशान्तरविहारम-  
 करोत् । अथ स पृथिवीपतिर्निरङ्कुशो वेश्यापतिरिव  
 स्वैरविहारी तदनन्तरं पुरकुम्भकारान्समस्तानाहूय  
 मृन्मयान् हयान् करिकलभकरभादींश्च निर्माय



तैः समं चिरं चिक्रीड । एवं स्थिते समस्तराजलो-  
कस्यावहेलनां नृपतेर्निशम्य ततः स्कन्धावारा-  
वारात् सचिवो ल्यपरिच्छदो नृपमुपेत्येत्यवादीत् ।  
यस्त्वमिदानीमेव विस्मृतकारुभावः स्वभावचला-  
चलतया यदि कामपि मर्यादां न मन्यसे तदा त्वां  
निर्विपयीकृत्य कमप्यपरं कुलालवालं भूपालं क-  
रिष्यामीति तदुक्तिक्रुद्धः स नृपः सभायामुपांशुभू-  
मौ कोत्र भोः, इति व्याहृतिसमनन्तरमेव सज्जीभू-  
तैश्चित्रपदातिभिः स सचिवः संदानितः । तदसं-  
भाव्यं महदाश्चर्यं विमृश्य तत्प्रभुप्रभावाविर्भावच-  
मत्कृतचित्तस्तत्पदयोर्निपत्य स्वं मोचयितुमत्यर्थं  
सभ्यर्थयन् नृपेण तथा कारिते स सभक्तिकं विज्ञ-  
पयामास । भवतः साम्राज्यदाने निमित्तमात्रोहं तव  
प्रभावादालेख्यरूपाणि सचेतनीभूयेत्यं निदेशव-  
शंवदानि भवन्ति तत्र प्राकृतान्येव कर्माणि का-  
रणमत एव भवान्पुण्यसार इति सान्वयनामा ॥  
इति पुण्यसारप्रबन्धः ॥

अथ पुरा कुसुमपुरे<sup>१</sup> नन्दिवर्द्धननामा राजकु-

१ B बलाबलतया २ C प्राकृतानि ३ पाटलीपुत्रनगरेऽ-  
त्र चन्द्रनृप

मारः छत्रधरेण समं देशान्तरविलोकनकुतकी पि-  
 तरावनापृच्छ यदृच्छया गच्छन् प्रत्यूषकाले कापि  
 पुरे प्राप्तस्तत्राऽपुत्रिणि नृपतौ पञ्चत्वमुपागते स-  
 ति सचिवैरभिषिक्तपट्टहस्ती निखिलेपि नगरे यदृ-  
 च्छया वभ्राम । तत्रागतनृपकुमारमासन्नमपि दुः-  
 स्वप्नमिव विस्मृत्य परं छत्रधरमभ्यपिञ्चत् । स च  
 तत्प्रधानैर्महता महोत्सवेन पुरं प्रवेश्यमानो राजा  
 कुमारमपि तयैव महत्या प्रतिपत्त्या सह गहीत्वा  
 सौधं गतः । अहं राजलोकस्वामी त्वं तु ममे-  
 त्युचितैरुपचारवचनैस्तमन्तरिमेवमारराधं । स तु  
 राजा राजगुणानामनर्हो निर्वधिदुर्मेधा वर्णा-  
 श्रमपालनानभिज्ञो<sup>१</sup> यथा<sup>२</sup> प्रजापीडनपरः सा-  
 म्राज्यं कुरुते तथा तथा पशुपतिमूर्द्धा विधृतराजेर्वै  
 स कुमारः प्रतिदिनं हीयते । कस्मिन्नप्यवसरे तं  
 तथास्थितं कुमारं स नृपतिस्तत्तनुताहेतुं पृच्छन्  
 दुर्मेधतया प्रजाः पीडयसि तेनात्यन्तमनौचित्येन  
 क्लृप्तामावहामि ।

“वासो जडाण मज्झे दोजीहा सामिसवणपंडिलग्गा।  
जीविज्जइ तं लाहो झीणिसे विम्हउं कीस ॥ ३॥

इति मया गाथार्थः सत्यापितोस्तीति वदचनान-  
नन्तरं यदस्याः प्रजायाः पापनिरताया अपुण्योदये-  
नावश्यंभाविपीडनावसरेऽहं नृपतीकृतः । यद्वि प्र-  
जायाः परिपालनां लोकेशोऽभ्यलिखिष्यत्तदा भवत  
एव पट्टहस्ती पट्टाभिषेकमकरिष्यादिति तदुक्तियुक्ति-  
भ्यां भेषजाभ्यामिव निगृहीतरूक् स कुमारो वपुः-  
पीवरतां वभार ॥ इति कर्मसारप्रबन्धः ॥

अथ गौडदेशे लक्षणावत्यां नगर्यां श्रीलक्ष्मण-  
सेनो नाम नृपतिरुमापतिधरसचिवेन सर्वबुद्धिनि-  
धिना चिन्त्यमानराज्यश्चिरं राज्यं चकार । स त्व-  
नेकमत्तमातङ्गसैन्यसङ्गादिव मदान्यतां दधानो मा-  
तङ्गसङ्गपङ्ककलङ्कभाजनमञ्जनि । उमापतिधरस्तु  
तद्व्यतिकरमवगम्य प्रकृतिक्लूरतया च स्वामिनोऽ-  
नालोकनीयतां च विचिन्त्य प्रकारान्तरेण तं वो-

“वासो जडाण मज्झे दोजीहा सामिसवणपंडिलग्गा ।

जीविज्जे यतन् लाभः झीणत्वे विस्मयः कीदृशः ॥

१ A मण. २ C नीरन्ध नद ३ C राजन्ने विम्हउं

धयितुं सभामण्डपस्य भारपट्टे गुप्तवृत्त्यामूनि का-  
व्यानि लिलेख ॥

शैत्यं नाम गुणस्तवैव तदनु स्वाभाविकी स्वच्छता  
किं ब्रूमः शुचितां व्रजन्त्यशुचयः स्पर्शात्तवैवापरे ।  
किं चातः परमस्ति ते स्तुतिपदं त्वं जीवितं देहिनां  
त्वं चेन्नीचपथेन गच्छसि पयः कस्त्वां निरोद्धुं क्षमः १  
त्वं चेत्संचरसे वृषेण लघुता का नाम दिग्दन्तिनां  
व्यालैः कङ्कणभूषणानि तनुपे हानिर्न हेन्नामपि ।  
मृद्ध्यं कुरुपे जडांगुमयशः किं नाम लोकत्रयी-  
दीपस्याम्बुजवान्धवस्य जगतामीशोसि किं ब्रूमहे २  
छिन्नं ब्रह्मशिरो यदि प्रथयति प्रेतेषु सख्यं यदि  
क्षीवः क्रीडति मातृभिर्यदि रतिं धत्ते श्मशाने यदि ।  
सृष्ट्वा संहरति प्रजां यदि तथाप्याधायं भक्त्या मन-  
स्तं सेवे करवाणि किं त्रिजगती शून्या स एवेश्वरः ३  
एतस्मिन्महति प्रदोषसमये राजा त्वमेकस्ततो  
लक्ष्मिमिम्बुरुहांपिधाय कुमुदे किं नो तनोपि श्रियः ।  
यद्वाह्मी स्थितिरत्र यच्च सुमनःश्रेणीषु संभावना  
त्वं तावत्कतमोसि तत्तिरयितुं<sup>१</sup> धातापि नैव क्षमः ४

१ A भवन्ति २ A B प्रजा ३ C आदाय ४ D तथैव

१ A तिरयितुं [ निर्द्धारयितुं आछायितुं वा

सदृत्तसद्गुणमहार्हमनर्घ्यमूल्य—

कान्तायनस्तनतटोचितचारुमूर्त्ते ।

आः पामरीकठिनकण्ठविलग्नभग्न

हा हार हारितमहो भवता गुणित्वम् ॥ ५ ॥

कस्मिन्नप्यवसरप्रस्तावे<sup>१</sup> तानि वीक्ष्य तदर्थमवग-  
म्य तस्मिन्नन्तर्द्वेपं दधौ । यतः ।

प्रायः सन्ति प्रकोपाय सन्मार्गस्योपदेशनम् ।

विलूननासिकस्येव यद्वदादर्शदर्शनम् ॥ १ ॥

इति न्यायात्सामर्पतया तं पदभ्रष्टं चकार ।  
अथ स नृपतिः कदाचिद्राजपाटिकायाः प्रत्यावृत्तो  
दुरवस्थमेकाकिनमुपायविधुरं तं वीक्ष्य क्रोधाद्वधा  
य हस्तिपकेन हस्तिनं प्रेरयामास । स तु निपा-  
दिनं प्रति प्राह । यावदहंराज्ञोऽये किञ्चिद्वच्मि ता-  
वज्जवान्निवार्यतां गजः । तद्वचनात्तेन तथा कृते  
उमापतिधरः प्राह ॥

नग्नस्तिष्ठति धूलिधूसरवपुर्गोष्ठिमारोहति  
व्यालैः क्रीडति नृत्याति स्ववदसृग्चर्मोद्वहन्<sup>२</sup>दन्तिनः

१ A महर्घ्य. B महार्घ्य. २ AC सर्वावसरप्रस्तावे

३ C राज्यजयपाटिकायाः ४ A उद्वहदन्तिनाम्

२९२ प्रबन्धचिन्तामणिः सर्ग. ५

आचारादहिरेवप्रादिचरितैरायद्धरागा हरे'  
सन्तो नोपदिशन्ति यस्य गुरवस्तस्येदमाचेष्टितम् १

इति तद्विज्ञानाङ्कुशेन वशंवदमनोगजो निजच-  
रित्रैकवित्तसानुशयः स्वममन्दं निन्दंस्तद्व्यसनं श-  
नैर्निपिध्य तं राजा पुनरेव प्रधानीचकार ॥

इति लक्ष्मसेनोमापतिधरयोः प्रबन्धः ॥

अथ काशीनगर्यां जयचन्द्र इति नृपः प्राज्य-  
साम्राज्यलक्ष्मीं पालयन्पङ्कुरीति विरुदं बभार । य-  
तो यमुनागङ्गायष्टियुगावलम्बनमन्तरेण चमूतमूह-  
व्याकुलिततया कापि गन्तुं न प्रभवति । कस्मिन्न-  
प्यवसरे तत्र वास्तव्यस्य कस्यापि शालापतेः प-  
त्नी सूहवनाम्नी सौन्दर्यनिर्जितजगन्नयस्त्वैणा भी-  
ष्मग्रीष्मतौ जलकेलिं विधाय सुरसरितीरे तस्थु-  
पी सा खञ्जनाक्षी व्यालमौलिस्थितं खञ्जनं वी-  
क्ष्य तमसंभाव्यं शकुनं कस्यापि द्विजन्मनः स्ना-  
तुमायातस्थ पदोर्निपत्य तद्विचारं पप्रच्छ । स नि-  
मित्तवित् चेन्मदादेशं सदैव तनुपे तदा तव वि-  
चारमहं निवेदयामीति तेनोक्ता तव पितृनिर्विशे-  
पस्य सा मान्या मयाज्ञा, सदैवमूर्द्धा तां वहामीति

प्रतिज्ञापरायास्तस्याः सप्तमेऽहनि त्वमस्य नृपतेरग्र-  
महिषी भविष्यसीति आदिश्य द्वावपि यथागतं ज-  
ग्मतुः ॥ अथ निमित्तविदा निष्णीति वासरे स राजा  
राजपाटिकायाः प्रत्यावृत्तः क्वापि रथ्यायां नेपथ्य-  
विहीनामपि अगण्यलावण्यपुण्याङ्गीं तां शालापति-  
वालां विलोक्य स्वचित्तसर्वस्वचौरीमूरीकृत्याग्रम-  
हिषीं चकार । तदनु तया कृतज्ञतया विप्रप्रतिज्ञां  
स्मरन्त्या नृपाय तस्मिन् विद्याधरनिमित्ते विज्ञप्ते  
पटहप्रणादपूर्वं तस्मिन् विद्याधरे आहूयमाने वि-  
द्याधराभिधानानां द्विजानां सप्तशतीमागतां विलो-  
क्य तमेकमुपलक्षितं पृथक् कृत्वा शेषेषु यथोचितं  
सत्कृत्य विसृष्टेषु नृपतिर्यथेप्सितं प्रार्थयेति विद्या-  
धरं विपद्विधुरं प्राह । राजादेशप्रमुदितेन तेना-  
ङ्गसेवा सदैवास्तु इति प्रार्थिते नृपतिना तथेति प्र-  
तिपन्ने तस्य निरवधिचातुर्यं पर्यालोच्य सर्वाधि-  
कारभारे धुरंधरो व्यधायि । स च क्रमेण संपन्न-  
संपन्न निजद्वात्रिंशदवरोधपुरध्रीणामनुवासरं जा-  
त्यकर्पूरपूराभरणानि कारयन् प्राच्यानिनिर्माल्यानी-  
त्यवकरकूपिकायां त्याजयन् साक्षादेवतावतार इव

दिव्यभोगान् भुञ्जानोऽष्टादशसहस्राणां ब्राह्म-  
 णानामभिलपिताभ्यवहारदानादनु स्वयमश्राति ॥  
 अथ कदाचित् नृपतिना वैदेशिकभूपतिमभिषेणयि-  
 तुं चतुर्दशविद्याधरोपि प्रेषितो देशादेशान्तराण्यवगा-  
 हमानः कचिदिन्धनविहीने देशे विहितावासस्तेषां  
 विप्राणां पाककाले सूपकाराणां तैलाभ्यक्तवस्त्र-  
 दुकूलान्येवेन्धनीकुर्वन् तान्विप्रान् रूढयैव भोजया-  
 मास। अथ प्रतिरिपुं निर्जित्य जितकाशितया व्या-  
 वृत्य प्राप्तनिजपुरीपरीसरः पिण्याकाभिलाषात् दु-  
 कूलज्वालनेन कुपितं भूपतिमवगम्य स्वं गृहमर्थिभि-  
 र्लुण्ठाप्य तीर्थोपासनवासनया संचरन् आनुपदिके-  
 न नृपतिनानुनीयमानो मानोन्नततया नृपतेराशये  
 स्वाभिलाषसंभवं निवेद्य कथंकथंचिदाष्टछय निजम-  
 वसानमसाधयत्। तदनन्तरं सूहवदेव्या निजाङ्गस्य  
 कृते युवराजपदवीं याचितो नृपः संगृहिणीपुत्रा-  
 यास्मद्वंशराज्यं न युज्यते इति बोधिता तं पतिं जि-  
 धांसुः म्लेच्छानाहूतवती ॥ अथ स्थानपुरुषाणां  
 समायातविज्ञप्तिकया तं व्यतिकरमवधार्य लब्धप-



द्वावतीवरप्रसादं सादरं कमपि दिग्वाससं निमित्तं  
 पृष्टवान् स पद्मावत्याः सप्रत्ययं म्लेच्छागमनिपे-  
 धरूपसमादेशं नृपतेर्विज्ञप्तवान् ॥ अथ कियदिनानां  
 प्रान्ते तान् संनिहितानाकर्ण्य स आशाम्बरः कि-  
 मेतदिति पृष्ठस्तस्यामेव निशि नृपतिप्रत्यक्षं पद्मा-  
 वत्याः पुरो होममारभत ॥ अथ निरवद्याकृष्टिविद्यया  
 होमकुण्डज्वालामालान्तरिता प्रत्यक्षीभूय श्रीपद्मा-  
 वती तुरुष्कागमनिपेधमुक्तवती ॥ अथ सामर्पः क्ष-  
 पणकंस्तां कर्णयोर्धृत्वा क्रोधानुबन्धात्तेषु संनिहितेषु  
 किं भवत्यपि वितथं ब्रूते इति तेनोपालम्भिता सती  
 सैवमवादीत् त्वं यां पद्मावतीमतीव भक्त्या पृच्छसि  
 सास्मत्प्रतापवलात्पलायांचक्रे अहंतु म्लेच्छगोत्रजं  
 दैवतं मिथ्याभाषणेन लोकं विश्वास्य म्लेच्छैर्विश्वासं  
 कारयामित्युदीर्य तस्यां तिरोहितायां म्लेच्छसैन्येन  
 प्रातर्वाराणसीं वेष्टितां चेष्टया जानन्तद्वनुर्ध्वानैश्च-  
 तुर्दशशतीमितनिःस्वानयुग्मनिस्वनेऽपद्भुते बले  
 सति प्रवलम्लेच्छकुलव्याकुलीकृतमनास्तं सूहवदे-  
 व्या अङ्गजं निजे गजे नियोज्य जान्हवीजले सगजो  
 ममज ॥ इति जयचन्द्रप्रबन्धः ॥

अथ जगदेवनामा क्षत्रियः त्रिविधामपि वीर-  
 रकोटिरतां बिभ्रत्, श्रीसिद्धचक्रवर्तिना सन्मान्योपि<sup>१</sup>  
 तद्गुणमन्त्रवशीकृतेन नृपतिना परमर्द्धि<sup>२</sup>श्रीपरम-  
 र्द्धिनाहूतः सोपरोधं पृथ्वीपुरन्धीकुन्तलकलापकल्पं  
 कुन्तलमण्डलमवाप्य यावत्तदागमं श्रीपरमर्द्धिने  
 द्वाःस्थो निवेदयति तावत्तत्सदासि काचिद्विटवनिता  
 विवसना पुष्पचलनका<sup>३</sup> नृत्यन्ती तत्कालमेवो-  
 त्तरीयकमादाय सापत्रपा सा तत्रैव निपसाद ॥  
 अथ राजदौवारिकप्रवेशिताय श्रीजगदेवाय स-  
 प्रियालापप्रभृति सन्मानदानादनु प्रधानपरिधानं  
 दुकूलं लक्ष्ममूल्यातुल्योद्भटपटयुगं प्रासादीकृत्य  
 तस्मिन् महार्हासननिविष्टे सभासंभ्रमे भग्ने सति  
 नृपस्तामेव विटनटीं नृत्यायादिदेश ॥ अथ सा  
 औचित्यप्रपञ्चचञ्चुचातुर्यधुर्या श्रीजगदेवनामा ज-  
 गदेकपुरुषः साम्प्रतं समाजगाम तत्तत्र विवसनाहं  
 जिह्मेमि । स्त्रियः स्त्रीष्वेव यथेष्टं चेष्टन्ते इति तस्या  
 लोकोत्तरया प्रशंसया प्रमुंदितमानसस्तं नृपप्रसा-  
 दीकृतं वसनयुगं तस्यै वितीर्णवान् ॥ अथ श्रीप-

१ दयादानयुद्धाख्या. २ [सिद्धराजेन सन्मानितोपि]

३ C D) चलच्चलनका ४ लक्ष्ममूल्यातुलया

रमर्दिप्रसादतो देशाधिपत्ये संजाते सति तदुपा-  
ध्यायः श्रीजगद्देवस्य मिलनाय समागतः काव्यमि-  
दं प्राभृतीचकार ॥ तद्यथा ।

चक्रः पप्रच्छ पद्मं<sup>१</sup> कथय मम सखे कास्ति किं स  
प्रदेशो  
वस्तुं नो यत्र रात्रिर्भवति भुवि चिरायेति स प्र-  
त्युवाच ।

नीते मेरौ समाप्तिं कनकवितरणैः श्रीजगद्देवनाम्ना  
सूर्येनन्तर्हितेऽस्मिन्कतिपयदिवसैर्वासराद्वैतसृष्टिः<sup>२</sup>  
अस्य काव्यस्य पारितोषिके तस्मै स स्थूललक्ष्यो  
लक्षार्द्धं विततार ॥

क्षोणीरक्षणदक्षदक्षिणभुजे दाक्षिण्यदीक्षागुरौ  
श्रेयःसद्मनि धन्यजन्मनि जगद्देवे जगदातरि ।  
वर्तन्ते विदुषां गृहाः प्रतिदिनं गन्धेभगन्धर्वयो-  
रालानद्रुमरज्जुदामघटनाव्यग्रीभवात्किंकराः॥ २ ॥

१ A D क्षेत्रश्रस्तदुपाध्यायः .

A B अक्षत्रक्षतवालिनो भगवतः कस्यापि संगीतक-

व्यासक्तस्य च तस्य कुन्तलपतेः पुण्यानि<sup>३</sup> मन्यामहे

एकः कामदुषामदुग्ध मरुतः सूनोः मुवाहुद्वयी

मत्यक्षप्रतिपक्षभार्गव भवानन्यस्य चिन्तामणिः ॥ १ ॥ चक्रः०

२ A पान्यं, ३ B पुण्याणि

२९८ प्रबन्धचिन्तामणिः सर्गः ५

त्वयि जीवति जीवन्ति बलिकर्णदधीचयः ।

दारिद्र्यं तु जगद्देव मयि जीवति जीवति ॥ ३ ॥

दरिद्रान् सृजतो धातुः कृतार्थान् कुर्वतस्तव ।

जगद्देव न जानीमः कस्य हस्तो विरस्यति ॥ ४ ॥

जगद्देव जगद्देवप्रासादमधितिष्ठतः ।

स्वयशःशिवलिङ्गस्य नक्षत्रैरक्षतायितम् ॥ ५ ॥

अगाधः पाथोधिः पृथु धरणिपात्रं<sup>१</sup> विभु नभः

समुत्तुङ्गो मेरुः प्रथितमहिमा कैटभारिपुः ।

जगद्देवो वीरः सुरतरुदरः सुरसरित्

पवित्रा पीयूषद्युतिरमृतवर्षीति न नवम् ॥ ६ ॥

न नवमिति जगद्देवनार्पिता समस्या पण्डितेन

पूरितेत्पादानी बहूनि काव्यानि यथाश्रुतं ज्ञातव्या-

नि ॥ अथ श्रीपरमर्दिमेदिनीपतेः पट्टमहादेवी

श्रीजगद्देवस्य प्रतिपन्नजामिः । कदाचित् राज्ञा श्री-

मालभूपालपराजयाय प्रहितः श्रीजगद्देवः श्री-

देवार्चनं कुर्वन् छलघातिना परबलेन सैन्यं नैजमुप-

द्रुतं गृण्वन् तमेव देवतावसरं न मुमोच । तस्मि-

न्नवसरे प्रणिधिपुरुषमुखाज्जगद्देवपराजयमश्रुतपूर्व-

मवधार्य महिषीं श्रीपरमर्दीं प्राह । भवद्भाता सं-

ग्रामवीरनाथतां विभ्राणोपि रिपुभिराक्रान्तः प-  
 लायितुमपि न प्रभूष्णुरजानि । इति नृपतेर्मर्मा-  
 भिघातनमोक्तिमाकर्ण्य प्रत्यूषसंध्याकाले सा रा-  
 ङ्गी प्रतीचीदिशमालोकितवती राज्ञा किमालोकसे  
 इत्यादिष्टे सूर्योदयमिति, मुग्धे किं सूर्योदयोऽपरस्यां  
 दिशि जाघटीति, सा तु विरञ्चिप्रपञ्चः प्रतीपः  
 प्रतीच्यामपि प्रद्योतनोदयो दुर्धटोपि घटते परं क्ष-  
 त्रियदेवजगद्देवस्य भङ्गस्तु नेति दम्पत्योः प्रि-  
 यालापः ॥ देवार्चनानन्तरं जगद्देवः पञ्चशत्या सु-  
 भटैः समं समुत्थितश्चण्डांगुरिव तमस्काण्डं, केसरि-  
 किशोर इव गजयूथं, वात्यावर्त्त इव धनमण्डलं  
 हेलयैव तदलयामास ॥ अथ परमार्दिनामा नृपो  
 जगत्पुदाहरणीभूतं परमैश्वर्यमनुभवन् निद्रावसर-  
 वर्जं रात्रिदिवं निजौजसा विच्छुरितं छुरिकाभ्या-  
 सं विदधानोऽज्ञावसरे परिवेषणाकुलं प्रतिदिन-  
 मेकैकं सूपकारमरुपः कृपाणिकया निघ्नन् पष्ट्य-  
 धिकशतत्रयेण भक्तकाराणां वर्षे निषेव्यमाणः को-  
 पकालानल इति विरुदं वभार ।

आकाश प्रसर प्रसर्पत दिशस्त्वं पृथ्वि पृथ्वी भव  
 प्रत्यक्षाकृतमादिराजयशसां युष्माभिरुज्जृम्भितम् ।

३०० प्रबन्धचिन्तामणिः सर्ग. ५

प्रेक्षध्वं परमर्दिपार्थिवयशोराशेर्विकाशोदया-  
द्बीजोञ्ज्वासविदीर्णदाडिमदशां ब्रह्माण्डमारोहति॥१

इत्यादिभिः स्तुतिभिस्तूयमानश्चिरं राज्यसुख-  
मनुवभूव । स च सपादलक्षक्षितिपतिना श्रीपृ-  
थ्वीराजेन सह संजातविग्रहः समराजिरमधिरूढः  
स्वसैन्ये पराजिते कान्दिशीकः कामपि दिशं गृही-  
त्वा पलायनपरः स्वराजधानीमाजगाम । अथ त-  
स्य पार्थिवस्यापमानितसर्वसेवको निर्विषयीकृतः  
पृथ्वीराजराजसभामुपेतः प्रणामान्ते किं दैवतं पू-  
ज्यते परमर्दिपुरे विशेषात्सुकृतिभिरिति स्वामिना-  
दिष्टस्तत्कालोचितं काव्यमिदमपाठीत् ।

मन्दश्चन्द्रकिरीटपूजनरसस्तृष्णा न कृष्णार्चने  
स्तव्यैः शम्भुनितम्बिनीप्रणतिषु व्यग्रो विधातृग्रहः  
नाथो नः परमर्द्यनेन वदनन्यस्तेन संरक्षितः  
पृथ्वीराजनराधिपादिति तृणं तत्पत्तने पूज्यते ॥१

इति स्तुतिपरितोषितेनानुजग्राह । स तत्र  
त्रिःसप्तकृत्वस्तासितम्लेच्छाधिपोपि द्वाविंशतिवेला-  
यां स एव म्लेच्छाधिपतिः पृथ्वीराजराजधानीमुपे-  
त्य निजदुर्द्धरस्कन्धावारेण समवात्सीत् । त्रासि-

तमक्षिकेव भूयो भूयो रिपुरुपैतीति निजनृपतेरर-  
तिं मनोगतामवगम्य प्रभोर्निःसीमप्रसादपात्राद्विती-  
यमिवासात्रं तुङ्गनामाक्षात्रं तेजो वहन् सुभटको-  
टीरः स्वप्रतिविम्बरूपेण पुत्रेण समं म्लेच्छाधिपते-  
रनीकं प्रविश्य निशीथसमये तस्य रिपोर्गुरूदरात्  
परितः खदिराङ्गारधगधगायमानां परिखां निरीक्ष्या-  
ङ्गजं जगाद । अस्यां मम प्रविष्टस्य पृष्ठे पदं ददा-  
नो म्लेच्छपतिं निगृहाणेति पितुरादेशान्ते का-  
र्यमेतन्ममासाध्यतमं किं च जीवितकाङ्क्षया वसु-  
र्विपत्तिदर्शनं, तदहमस्यां विशामि भवन्त एव  
तमन्तं नयन्तु । इत्युक्त्वा तेन तथा कृते स्वा-  
मिकार्थं पर्याप्तप्रायं मन्यमानस्तमरातिं लीलया  
निगृह्य यथागतमाजगाम । विभातभूयिष्ठायां नि-  
शि विपन्नं स्वामिनं निरीक्ष्य परसैन्यं पलायांचक्रे ।  
स तुङ्गसुभटस्तुङ्गप्रकृतिर्नृपतेः कदाचिन्न ज्ञापया-  
मास । कस्मिन्नप्यवसरे राजमान्यतया नितान्तप-  
रिचितां तुङ्गपुत्रवधूमवधूतमङ्गलवलयामालोक्य सं-  
भ्रमात् पतिना पृच्छयमानोपि पयोधिरिव गम्भी,  
रतया मौनमर्यादया किमप्यविज्ञपयन् निजशपथ-

३०२ प्रबन्धचिन्तामणिः सर्ग. ५

दानपूर्वं पृष्ठो निजगुणपातकं दुष्करमिति तथापि  
प्रभोरभ्यर्थनया निवेद्यमानमस्तीत्याभिधाय तद्वृत्ता-  
न्तं प्रत्युपकारभीरुर्यथावस्थितं निवेदयामास ।

इयमुच्चयियामलौकिकी  
महती कापि कठोरचित्तता ।

उपकृत्य भवन्ति निःस्पृहाः

परतः प्रत्युपकारशङ्कया ॥ १ ॥

इति तुङ्गसुभटप्रबन्धः ॥ अथ कदाचित्तस्य म्ले-  
छपतेः सूनुर्नृपतिः पितुर्वैरस्य स्मरन्, सपादलक्ष-  
क्षितिपतिर्विग्रहकाम्यया सर्वसामग्र्या समुपेतः पृ-  
थ्वीनाथस्य नासीरवीरधनुर्द्वरशरैः प्रावृषेण्यधारा-  
धरधारासारैरिव तस्मिन्सैन्ये त्रासिते पृथ्वीराज-  
स्तदा तदानुपदिकीभावं भजन्, महानसाधिकृत-  
पञ्चकुलेन विज्ञापितं करभीणां सप्तशत्यापि महान-  
सपरिस्पन्दः सुखेनोह्यते नातः कियतीभिः करभी-  
भिः प्रभुः प्रसीदत्विति विज्ञातो नृपतिर्म्लेछपतिमु-  
च्छेद्य भवदभ्यर्थिताः करभीः प्रसादीकरिष्यामीति  
तत्संवोध्य पुनः प्रयाणं कुर्वन् सोमेश्वरनाम्ना प्र-  
धानेन भूयो भूयो निषिध्यमानः, तत्पक्षपातघ्रा-



न्त्या नृपतिना निगृहीकर्णः, तदत्यन्तपराभवात् त-  
स्मिन् प्रभौ सामर्थ्यं म्लेच्छपतिं प्राप्य तदभिभव-  
प्रादुःकरणतस्तान् विश्वस्तान् पृथ्वीराजस्कन्धावा-  
रसन्निधौ समानीय पृथ्वीराजराजस्यैकादश्युपवास-  
कृतपारणादनु सुप्तस्य तन्नासीरवीरैः सह समरसं-  
रम्भे म्लेच्छाधिपतीनां जायमाने निर्भरनिद्रायमाण-  
स्तुरुष्कैर्नृपतिर्निवध्य स्वसौधं नीतः । पुनरप्येका-  
दश्युपवासपारणके नृपतेर्देवार्चनावसरे म्लेच्छराजे-  
न प्रहितं तत्र पात्राकृतमांस्पाकं गुरुदरान्तर्नियु-  
ज्य तदैव देवताराधनवैयर्थ्ये सति शुनापन्हियमा-  
णे तस्मिन् पिशिते किं न रक्षसि यामिकैरित्याभि-  
हितः करभीणां सतशत्या दुर्वहं यत्पुरा-मम महा-  
नसं तत्सांप्रतं दुर्दैवयोगादीदृशीं दुर्दशां प्राप्तमिति  
कौतुकाकुलितमानसो विलोकयन्नस्मीति तेनोक्ते  
किं काचिदपि त्वय्युत्साहशक्तिरवशिष्यत इ-  
ति तैर्विज्ञप्ते यदि स्वस्थाने गन्तुं लभेत तदा दर्श-  
यामि वपुःपौरुषमिति यामिकैर्विज्ञप्तो म्लेच्छभूपतिः  
स्तत्साहसं दिदृक्षुस्तदीयां राजधानीमानीय पृथ्वी-  
राजं तत्र राजसौधे यावदभिपेक्ष्यति तावत्तत्र चि-  
त्रशालायां शूकरनिवहैर्हन्यमानान् म्लेच्छानालो-

क्यामुना मर्माभिधातेनात्यन्तपीडितस्तुरुष्कपार्थि-  
वः पृथ्वीराजं कुठाराशिरश्छेदपूर्वं संजहार ॥

इति नृपतिपरमर्दिजगद्देवपृथ्वीपतीनां प्रबन्धाः ॥

अथ शतानन्दपुरे परिखीभूतजलधौ श्रीमहान-  
न्दो नाम राजा मदनरेखेति तस्य राज्ञी अन्तःपु-  
रप्राचुर्यात् पतिसंवर्ननकर्मनिर्माणव्याप्रत्या<sup>१</sup> ना-  
नाविधान् वैदेशिकान् कलाविदश्च पृच्छन्ती कस्या-  
पि यथार्थवादिनः सत्यप्रत्यस्य कर्मणकर्मणे किं-  
चित्सिद्धयोगमासाद्य तत्प्रयोगावसरे<sup>२</sup> ॥

मन्त्रमूलवलात्प्रीतिः पतिद्रोहोभिधीयते ।

इति वाक्यमनुस्मरन्ती सतीव तद्योगचूर्णं ज-  
लधौ न्यधत्त । अचिन्त्यो हि मणिमन्त्रौपधीनां प्र-  
भाव इति तद्भेषजमाहात्म्याद्वशीकृतो वारिधि-  
रेव मूर्त्तिमान् निशि तामुपेत्य रेमे । इत्थमकस्मा-  
दाधानवर्ती प्रतीकैस्तद्विधैर्निर्णीय सकोपो भूपो  
यावत्तस्याः प्रवासादिदण्डं कमपि विमृशति ताव-  
त्तस्याः संनिहिते निधननिर्वन्धे प्रत्यक्षीभूय जल-  
धिरधिष्ठातृदैवतमहमिति स्वं ज्ञापयन् मा भैवीरि-  
ति तामाश्वास्य प्रति नृपं प्राह ।

विवाहयित्वा यः कन्यां कुलजां शीलमण्डिताम् ।  
समदृष्ट्या न पश्येत स पापिष्ठतरः स्मृतः ॥ १ ॥

इति त्वामवज्ञाकारिणं प्रलयकालमुक्तमर्यादया  
सान्तःपुरपरीवारं मज्जयिष्यामीत्यभिधाय क्वचित्  
क्वचित् पयांस्पपहृत्यान्तरीपान् प्रादुश्चकार । तानि  
सर्वाण्यपि लोकेषु कौङ्कणानीति प्रसिद्धानि ॥

इति कौङ्कणोत्पत्तिप्रवन्धः ॥ B 17 प्रहरी 20 प्र 6:4

अथ पाटलीपुत्रपत्तने वराहनामा कश्चिद्ब्राह्मणा-  
ङ्गभूः आजन्म निमित्तज्ञानश्चक्षुर्दुर्गतत्वादसून्  
रक्षितुं पठून् चारयन् कापि शिलातले लग्नमालि-  
ख्याकृततद्विसर्जनः प्रदोषकाले गृहमुपेतः । कृतस-  
मयोचितकृत्यो निशीथकाले भोजनायोपविष्टो ल-  
ग्नविसर्जनमनुस्मृत्य निरातङ्कवृत्त्या तत्र याति ता-  
वत्तदुपरि पारीन्द्रमप्युपविष्टमवगणय्य तदुदराधो-  
भागे पाणिं प्रक्षिप्य लग्नं विमृजन् सिंहरूपमपहाय  
प्रत्यक्षीभूय रविरेव वरं वृणु इत्युवाच । अथ सम-  
स्तनक्षत्रग्रहमण्डलं दर्शयेति वरं प्रार्थयमानः  
स्वविमानेऽधिरोप्य तत्रैव नीतो वत्सरान्ते याव-  
द्ग्रहाणां वक्रातिचारोदयास्तमनादीन् भावान् प्र-

क्षरूपान् परीक्ष्य पुनरिहायातो मिहिरप्रासादाद्वराहं-  
मिहिर इति प्रसिद्धारब्धः श्रीनन्दनृपतेः परमां मा-  
न्यतां दधानो वाराहीसंहितेति नवं ज्योतिःशास्त्रं  
रचयांचकार । अथ कदाचित्स निजपुत्रजन्मावसरे  
निजगृहे घटिकां निवेश्य तथा शुद्धजन्मकाललग्नं  
निर्णयं जातकग्रन्थप्रमाणेन ज्योतिश्चक्रे । स्वयं प्र-  
त्यक्षीकृतग्रहचक्रज्ञानबलान्नस्य सूनोः संवत्सरशत-  
प्रमाणभार्युर्निर्णीतवान् । जन्ममहोत्सवे चैकं श्री-  
भद्रबाहुनामानं जैनाचार्यं कनीयांसं सोदरं विहाय  
नृपप्रभृतिकः स कोपि नास्ति य उपायनपाणिर्न  
जगाम । स निमित्तविज्जिनभक्ताय शकडालम-  
न्त्रिणे तेषां सूरीणामनागमनकारणमुयालम्भगर्भि-  
तं जगौ । तेन ज्ञापितास्ते महात्मानः संपूर्णश्रु-  
तज्ञानकरतलकलितामलकफलवत्कालत्रयास्तस्य  
शिशोर्विंशतितमे दिने विडालान्मृत्युमुपदिशन्तो  
वयं नागता इति तेषामुपदेशभूतां वाचं वराहमि-  
हिराय निवेदितायां, ततः प्रभृति निजकुटुम्बं त-  
स्य शावस्यावश्यकीं तां विपदं निरोद्धुं विडालर-  
क्षायै शतश उपायान्कुर्वन्नपि निर्णीतिं दिने निशी-

थेऽकस्माद्बालमूर्द्ध्नि पतितयार्गलया स बालः प-  
रलोकमवाप । ततस्तच्छोकशङ्कुमुधिर्दिर्पयः श्रीभ-  
द्रबाहुगुरवो यावत्तदेहमायान्ति तावत्तद्बृहाद्गणे स-  
मस्तनिमित्तशास्त्रपुस्तकान्येकत्र पिण्डीकृतानि सं-  
निहितदहनान्यालोक्य किमेतदिति पृष्ठः सांवत्सरः  
समत्सरस्तान् जैनमुनीनुपालम्भयन् एतानि सं-  
देहकारीणि धक्ष्याम्येव यैरहमपि विप्रलब्धस्तेनेति  
सनिर्वेदमुदिते तैः श्रुतज्ञानवलात्तज्जन्मलग्नं सम्यक्  
तस्मै निवेद्य सूक्ष्मेक्षिकया तद्ब्रूहवले ज्ञापिते विं-  
शतिदिनान्येव भवन्ति । इत्थं विरक्तावपनीतायां  
स ज्योतिषिक इति जगौ । यद्भवन्निर्विडालान्मृत्यु-  
रुपदिष्टस्तदेव व्यभिचारीति तेनाभिहिते तत्रार्गलां  
तामानाद्य तत्रोत्कीर्णं विडालं दर्शयन्तो भवित-  
व्यताव्यत्ययः किं कदापिभवतीति महर्षिभिरभिद-  
धे । कस्मात् रुद्यते गतः कः परमाणवोऽनपायाः  
संस्थानविशेषनाशजन्मा शोकश्चेन्न कदापि मोहि-  
तव्यम् ।

अभावप्रभवैर्भावैर्मायाविभवभावितैः ।

अभावनिष्टं पर्यन्ते सतां न क्रियते तमः ॥

इत्युक्तियुक्तिभ्यां प्रबोध्य ते महर्षयः स्वं पदं  
 भेजुः । इत्थं बोधितस्यापि तस्य मिथ्यात्वध्वान्ता-  
 न्तरितस्य कनकभ्रान्तिरिव तथात्राप्युन्मत्सरोच्छे-  
 कात्तद्भक्तानभिचारकर्मणा कांश्चन पीडयन् कांश्चन  
 व्यापादयन् तद्वृत्तान्तं तेभ्यो ज्ञानातिशयादवधा-  
 र्योपसर्गहरं पालमिति नूतनं स्तोत्रं रचयांचक्रुः ॥  
 इति वराहमिहिरप्रबन्धः ॥

अथ ढङ्गाभिधानभूभृति<sup>१</sup> रणसिंहनामा राजपु-  
 त्रस्तन्नन्दनां भूपलनाम्नी सौन्दर्यनिर्जितनागलोक-  
 वालामालोक्य जातानुरागतया तां सेवमानस्य त-  
 स्य वासुकेः सुतो नागार्जुननामा समजानि । तेन  
 पातालपालेन सुतस्नेहमोहितमनसा सर्वासामप्यौ-  
 पधीनां फलानि मूलानि दलानि च भोजितस्त-  
 त्प्रभावान्महासिद्धिभिरलंकृतः सिद्धपुरुषतया पृथ्वीं  
 विगाहमानः शातवाहननृपतेः कलागुरुर्गरीयसीं  
 प्रतिष्ठामुपागतोपि गगनगाभिनीं विद्यामध्येतुं श्री-  
 पादलिप्तपुरे पादलिप्ताचार्यान् सेवमानो व्रतमति-  
 भोजनावसरे पदे लेपप्रमाणेन गगनोत्तरीयान् श्री-  
 अष्टापदप्रभृतीनि तीर्थानि नमस्कृत्य तेषां स्वस्था-  
 नमुपेयुषां पादौ प्रक्षाल्य ज्ञातसप्तोत्तरशतसंख्यम-

होषधीनामास्वादवर्णघ्राणादिभिर्निर्णीय च गुरुन-  
वगण्य कृतपदलेपः कृकवाकुललापिवदुत्पत्त्यावटे  
निपतंश्च तद्रूणश्रेणिजर्जरिताङ्गो गुरुभिः किमेतदित्य-  
नुयुक्तो यथावद्वृत्तान्तं निवेदयन् तच्चातुर्यचमत्कृतचे-  
तोभिस्तच्छिरसि पद्महस्तदानपूर्वकं पाष्टीकतन्दुलो-  
दकेन तानि भेषजान्यभ्यञ्ज्य तत्पादलेपाङ्गनगा-  
मी भूया इति तदनुग्रहादेकां सिद्धिमासाद्य  
श्रीपार्थनाथपुरतः साध्यमानो रसः समस्तस्त्रै-  
णलक्षणोपलक्षितपतिव्रतवनितामर्द्यमानः कोटि-  
वेधी भवतीति तन्मुखादाकर्ण्य च यत्पुरा  
समुद्रविजयदाशार्हेण त्रिकालवेदिनः श्रीनेमि-  
नाथस्य मुखान्महातिशायि श्रुत्वा श्रीपार्थनाथ-  
विम्बं रत्नमयं निर्माप्य श्रीद्वारवत्यां प्रासादे  
न्यस्तं, द्वारवतीदाहानन्तरं समुद्रेण श्लावितायां  
तस्यां पुरि तत्र समुद्रे तस्मिन्विम्बे तथैव विद्यमाने  
कान्तीयसांयात्रिकस्य धनपतिनाम्नो यानपात्रे दे-  
वतातिशयात् स्थलिते इह जिनविम्बमस्तीति  
दिव्यवाचा निर्णीय नाविकांस्तत्र प्रक्षिप्य सप्तसंख्यै-  
रामतन्तुभिः सन्दानितमुद्धृत्य निजायां पुरि चि-  
न्तातीतलाभात् स्वयंकृतप्रासादे न्यस्तवान् । तत्स-

र्वातिशायिबिम्बं नागार्जुनः स्वसिद्धरससिद्धयेऽप-  
 हृत्य, सेडीतटिन्यास्तटे तदेव विन्यस्य तत्पुरतो  
 रससाधनाय श्रीसातवाहनस्यैकपत्नीं चन्द्रलेखा-  
 भिधानां प्रतिनिशं सिद्धव्यन्तरसान्निध्यात्तत्रानीय  
 रसमर्दनं कारयति स्म । इत्थं भूयो भूयस्तत्र या-  
 तायाते सति बन्धुबुद्ध्या सा नागार्जुनपार्श्वे तदौ-  
 पधीनां मर्दनहेतुं पृच्छती, सोपि स्वकल्पनया को-  
 टिवेधरसस्य यथावस्थितं वृत्तान्तं निवेदयन्, तस्या-  
 श्च वचनगोचरातीतं सत्कारं कुर्वाणो नन्यसामान्य-  
 सौजन्यं प्रवर्द्धयामास । अथ कदाचित्तया निजा-  
 ङ्गजयोरस्मिन् वृत्तान्ते निवेदिते तौ तल्लुब्धौ राज्यं  
 परित्यज्य नागार्जुनसमलंकृतां भुवमागतौ कैत-  
 वेन तस्य रसस्य जिघृक्षया गुप्तवेषौ यत्र नागा-  
 र्जुनो भुङ्क्ते तत्र तांमर्थदानेन परितोष्य, रसवार्त्तां प्र-  
 पृच्छतः । सा च तज्जिज्ञासया तदर्थं सलवणां रस-  
 वर्त्ती कुर्वती षण्मास्यां व्यतीतायां तस्मिन् क्षा-  
 रामिति रसवर्त्ती दूषयति सति, इङ्गितैः सिद्धं रस-  
 मिति ताभ्यां निवेदितवती । अथ प्रतिप्रन्नभागिने-  
 याभ्यां रसग्रसनलालसाभ्यां वासुकिना निर्णीत-



दर्भाङ्कुरमृत्युरिति परपरया. ज्ञाततत्त्वाभ्यां तेनैव  
 शस्त्रेण तथैव स निजघ्ने । स रसः संप्रतिष्ठितत्वा-  
 दैवताधिष्ठानाच्च तिरोहितो बभूव । यत्र स रसस्त-  
 म्भितस्तत्र स्तम्भनकाभिधानं श्रीपार्श्वनाथतीर्थं र-  
 सादप्यतिशायि सकललोकाभिलषितफलप्रदं । त-  
 तः कियता कालेन तद्विम्बं वदनमात्रवर्जभूम्यन्त-  
 रितं बभूव । अथ श्रीशासनदेवतादेशात् पण्मासीं  
 यावदाचाम्लानि निम्माय कठिनीप्रयोगेण नवाङ्क-  
 वृत्तौ निवृत्तायां श्रीअभयदेवसूरीणां वपुषि प्रादुर्भूते  
 प्रभूतरोगे पातालपालः श्रीधरणेन्द्रनामा सितस-  
 र्परूपमास्थाय तद्वपुर्जिह्वया विलिह्यं प्रसद्य निरा-  
 रामर्थाकृत्य तत्तीर्थं श्रीमदभयदेवसूरीणामुपदिदेश ।  
 श्रीसंघेन सह समागतास्तत्र ते सूरयः प्रस्त्रवन्तीं  
 सुरभिं विलोक्य गोपालवालैर्निवेदितायां भुवि न-  
 वं द्वात्रिंशतिकास्तवं कुर्वन्तस्त्रिंशत्तमवृत्तेन तत्र  
 श्रीपार्श्वनाथविम्बं प्रादुश्रुः । देवतादेशेन<sup>१</sup> तद्वृत्तं  
 गोप्यमेव निर्ममे ॥

यन्मार्गेऽपि चतुःसहस्रशरदो देवालये योचितः

१ B D समातिष्ठितदेवताधिष्ठानात् २ A लेलिह  
 १ A देवतावशेन

स्वामी वासववासुदेववरुणैः स्वावासमध्ये ततः ।  
 कान्त्यामिभ्यधनेश्वरेण महता नागार्जुनेनार्चितः  
 पायात्स्तम्भनके पुरे स भवतः श्रीपार्श्वनाथो  
 जिनः ॥ १ ॥

इति नागार्जुनोपतिस्तम्भनकतीर्थावतारप्रबन्धौ ॥

अथावन्त्यां पुरि कश्चिद्विप्रः पाणिनिव्याकरणो-  
 पाध्यायतां कुर्वाणः सिप्रासरित्प्रान्तवर्त्तिचिन्ताम-  
 णिगणेशप्रणामगृहीताभिग्रहः छात्रैः फक्किकाव्या-  
 ख्यानप्रश्नादिभिरुद्धेजितः कदाचित् प्रावृषि तस्या  
 सरितः पूरे प्रसर्पति कृतश्रम्यापातो दैवात् संघटि-  
 तवृक्षस्तन्मूले करावलम्बनस्तररीमासाद्य प्रत्यक्षं प-  
 रशुपाणिं प्रणमन् तेन तत्साहसानुष्ठानेन वरं वृणी-  
 प्वेत्यादिष्टः पाणिनिव्याकरणस्योपदेशं प्रार्थयमा-  
 नस्तेन तथेति प्रतिपद्य खटिकार्पणपूर्व<sup>१</sup> प्रतिदिनं  
 व्याकरणे व्याख्यायमाने पण्मासपर्यन्ते व्याकरणे  
 समर्थिते सति लम्बोदरं निर्विलम्बमनुज्ञाप्य प्रथ-  
 मादर्शं सहादाय तं पुरीं प्रविश्य स्वण्डिले कस्या-  
 पि पुरस्य निपण्ण एव सुप्वाप । ततः प्रत्यूषे प्रे-

१ A यो यद्विषये २ C अद्वितः ३ A पट्टिकार्पणपूर्व

४ A सहादीयतां

ष्याभिस्तं तथावस्थितं प्राप्यं विपणिरमणी तद्वृ-  
त्तान्तं ज्ञापितां सती ताभिरेव समानीय प्रेङ्खो-  
लपत्यङ्गे मुक्तः । अहोरात्रत्रयान्ते किञ्चित्स्थितनिद्र-  
श्चित्रशालादिचित्रं चित्रकारि पश्यन् स्वलोकसमु-  
त्पन्नमात्मानं मन्यमानस्तथा पणहरिणीदृशा ज्ञापि-  
तवृत्तान्तः स्नानपानभोजनादिभिर्भक्तिभिः परितो-  
षितो नृपसभायां समुपेतः पाणिनिव्याकरणं य-  
थावस्थितं व्याचक्षाणो नृपप्रभृतिपण्डितैरशोषैः स-  
क्रियमाणस्तदुपात्तं सर्वस्वं तस्यै समर्पयामास ।

अथ तस्य क्रमेण चतुर्णां वर्णानां स्त्रियश्चत-  
स्रः प्रिया अभवन् । तथा क्षत्रियाङ्गजः श्रीविक्र-  
मार्कः शूद्रासुतो भर्तृहरिः<sup>१</sup> स हीनजातित्वात्  
भूमिगृहस्थो गुप्तवृत्त्याध्याप्यते । अपरे त्रयः प्रत्यक्षाः  
पाठ्यन्ते एवं भर्तृहरिसंकेतेन तेषामध्याप्यमा-  
नानां ॥

दानं भोगो नाशस्तिस्रो गतयो भवन्ति वित्तस्य ।

इति पाठ्यमाने भर्तृहरी रज्जुसंकेतेऽसंजायमा-  
ने प्रत्यक्षच्छात्रैस्त्रिभिरुत्तरार्द्धे पृच्छ्यमाने कुपितः  
उपाध्यायं रे वेदयासुत अद्यापि रज्जुसंकेतं न कु-

१ D प्रेक्ष्य २ B C त वृत्तान्तं ज्ञापिता ३ A भर्तृहरः नृहरः

स्वामी वासववानुदेववरुणैः स्वावासमध्ये' ततः ।  
 कान्त्यामिभ्यधनेश्वरेण महता नागाज्जुनेनार्चितः  
 पायात्स्तम्भनके पुरे स भवतः श्रीपार्श्वनाथो  
 जिनः ॥ १ ॥

इति नागाज्जुनोपतिस्तम्भनकतीर्थावतारप्रबन्धौ ॥

१८॥ अथावन्त्यां पुरि कश्चिद्विप्रः पाणिनिव्याकरणो-  
 पाध्यायेतां कुर्वाणः सिप्रासरित्प्रान्तवार्त्तिचिन्ताम-  
 णिगणेशप्रणामगृहीताभिग्रहः छात्रैः फक्किकाव्या-  
 ख्यानप्रश्नादिभिरुद्वेजितः कदाचित् प्रावृषि तस्या  
 सरितः पूरे प्रसर्पति कृतझम्यापातो दैवात् संघटि-  
 तवृक्षस्तन्मूले करावलम्बनस्तरिमासाद्य प्रत्यक्षं प-  
 रशुपाणिं प्रणमन् तेन तत्साहसानुष्ठानेन वरं वृणी-  
 प्वेत्यादिष्ठः पाणिनिव्याकरणस्योपदेशं प्रार्थयमा-  
 नस्तेन तथेति प्रतिपद्य खटिकार्पणपूर्व<sup>३</sup> प्रतिदिनं  
 व्याकरणे व्याख्यायमाने पणमासपर्यन्ते व्याकरणे  
 समर्थिते सति लम्बोदरं निर्विलम्बमनुज्ञाप्य प्रथ-  
 मादर्शं सहादायं तां पुरीं प्रविश्य स्वण्डिले कस्या-  
 पि पुरस्य निपण्ण एव सुप्वाप । ततः प्रत्यूषे प्रे-

१ A यो यार्द्धिमध्ये २ C अजितः ३ A पष्टिार्पणपूर्व

४ A सहादीयता

ष्याभिस्तं तथावस्थितं प्राप्यं विपणिरमणी तद्वृ-  
त्तान्तं ज्ञापितां सती ताभिरेव समानीय प्रेङ्खो-  
लपत्यङ्के मुक्तः । अहोरात्रत्रयान्ते किञ्चित्पुनर्निद्र-  
श्चित्रशालादिचित्रं चित्रकारि पश्यन् स्वर्लोकसमु-  
त्पन्नमात्मानं मन्यमानस्तया पणहरिणीदृशा ज्ञापि-  
तवृत्तान्तः स्नानपानभोजनादिभिर्भक्तिभिः परितो-  
षितो नृपसभायां समुपेतः पाणिनिव्याकरणं य-  
थावस्थितं व्याचक्षाणो नृपप्रभृतिपण्डितैरशौचैः स-  
त्क्रियमाणस्तदुपात्तं सर्वस्वं तस्यै समर्पयामास ।

अथ तस्य क्रमेण चतुर्णां वर्णानां स्त्रियश्चत-  
स्रः प्रिया अभवन् । तथा क्षत्रियाङ्गजः श्रीविक्र-  
मार्कः शूद्रीसुतो भर्तृहरिः<sup>१</sup> स हीनजातित्वात्  
भूमिगृहस्यो गुप्तवृत्त्याध्याप्यते । अपरे त्रयः प्रत्यक्षाः  
पाठ्यन्ते एवं भर्तृहरिसंकेतेन तेषामध्याप्यमा-  
नानां ॥

दानं भोगो नाशस्तिस्रो गतयो भवन्ति वित्तस्य ।

इति पाठ्यमाने भर्तृहरी रज्जुसंकेतेऽसंजायमा-  
ने प्रत्यक्षच्छात्रैस्त्रिभिरुत्तरार्द्धे पृच्छ्यमाने कुपितः  
उपाध्यायं रे वेश्यासुत अद्यापि रज्जुसंकेतं न कु-

१ D भैरव २ B C त वृत्तान्तं ज्ञापिता ३ A भर्तृहरः नृहरः

३१४ प्रबन्धचिन्तामणिः सर्गः ५

रूपे इत्याकुपन् प्रत्यक्षीभूय शास्त्रकारं<sup>१</sup> निन्दन्  
आयासशतलब्धस्य प्राणेभ्योपि गरीयसः ।

गतिरेकैव वित्तस्य दानमन्या विपत्तयः ॥ १

इति पाठाद्वित्तस्यैकामेव गतिं मेने । तेन भ-  
र्तृहरिणा वैराग्यशतकादिप्रबन्धा भूयांसश्चक्रिरे ॥

इति भर्तृहर्षुत्पत्तिप्रबन्धः ॥

अथ श्रीधारायां मालवमण्डनस्य श्रीभोजरा-  
जस्यायुर्वेदवेदी कश्चित् वाग्भटनामायुर्वेदोदि-  
तानि कुपथ्यानि विधाय तत्प्रभावात् रोगान् प्रा-  
दुःकृत्य पुनस्तन्निग्रहाय सुश्रुतविश्रुतैर्भेषजैः पथ्यै-  
श्च तान्निगृह्य नरिमन्तरेण कियत्कालं जीव्यते इ-  
ति परीक्षार्थं तत्परिहृत्य दिनत्रयान्ते पिपासा-  
पीडिततालवोष्ठपुट इत्यपाठीत् ॥

कश्चिदुष्णं कचिच्छीतं कचित्कथितशीतलम् ।

कचिद्वेपजसंयुक्तं वारि कापि न वारितम् ॥ १ ॥

इति वारिसत्कारकारि वाक्यमिदमपाठीत् ।  
तेन निजानुभूतो वाग्भटनामा प्रबन्धश्चक्रे । त-  
स्य जामातापि लघुवाहडः श्वसुरेण बृहद्वाहडेन-

१ B इत्याकष्टः २ A भर्तृहरिरज्जुसंकेतं न दुरुपे इत्यादिष्टः स  
प्रत्यक्षीभूय परामुखारं

सह राजमन्दिरे प्रयातः प्रत्यूषकाले श्रीभोजस्य  
शरीरचेष्टितं<sup>१</sup> विलोक्य बृहद्वाहडेनाद्य नीरुजो यूय-  
मित्युक्ते लघोर्मुखभङ्गं विलोक्य श्रीभोजेन कारणं  
पृष्ठः स स्वामिनः शरीरेऽद्य निशाशोपे कृष्णच्छा-  
याप्रवेशसूचितो राजयक्ष्मणः प्रवेशोऽभूदिति दै-  
वतादेशेनातीन्द्रियं भावं<sup>२</sup> विज्ञपयन्, तत्कलाक-  
लापचमत्कृतेन राज्ञा तस्य व्याधेः प्रतीकारतयानु-  
युक्तः लक्षत्रयमूल्यं रसायनं निवेदयन्, पङ्क्तिर्मसै-  
स्तावता द्रव्यव्ययेन परमादरेण च तस्मिन् रसा-  
यने सिद्धे प्रदोषतमये तद्रसायनं काचमये कुम्प-  
के न्यस्य नरेन्द्रपत्यङ्गे निधाय प्रत्यूषे देवतार्चना-  
नन्तरं तद्रसायनमलुमिच्छुः रसायनपूजावर्द्धापना-  
दनु सज्जीकृतायां समग्रसामग्र्यां स लघुरगदंकारी  
केनापि कारणेन तं काचकुम्पकं भूमावास्फाल्य  
वभञ्ज । आः किमेतदिति राज्ञोक्ते रसायनपरिम-  
लादेव पलायिते<sup>३</sup> व्याधौ व्याधेरभावाद्वातु-  
क्षयकारिणानेन वृथा स्थापितेनालं यदद्या  
शर्वरीविरामे सति सा पूर्वोक्ता कृष्णा छाया

<sup>१</sup> १ A शरीरेक्षितं २ A दैवताशयेन B आत्मीयभवं  
३ D पलायमाने

३१६ प्रबन्धचिन्तामणिः सर्ग. ५

प्रभोर्वपुरपास्य दूरं गतैव ददृशे इत्यर्थे देवः प्रमा-  
णमिति तदीयसत्यप्रत्ययेन पारितोषितो राजा  
दारिद्र्यद्रोहि पारितोषिकं प्रसादीचकार ॥ अथ ते  
सर्वव्याधयस्तेन चिकित्सितेन भूतलादुच्छेदिताः  
स्वर्लोकेऽश्विनीकुमारवैद्ययोः स्वपराभवं निजगदुः ॥  
अथ तौ तथा प्रवृत्त्या चित्रीयमाणमानसौ नील-  
वर्णविहङ्गमयुग्मीभूय व्याधिप्रतिभटस्य वाग्भटस्य  
धवलगृहवातापनतले वलभ्यां निविष्टौ कोऽरुक्  
शब्दं चक्रतुः ॥ ततः स आयुर्वेदवेदी नेदीयासं  
तदीयशब्दं साभिप्रायं चेतसि चिरं विचिन्त्य ।  
अशाकभोजी घृतमत्ति योन्धसा  
पयोरसान् शीलति नात्ति योम्भसा ॥  
अभुक् विभुक् नापकृतां विदाहिनां  
चलत्प्रभुक् जीर्णभुगल्यसारभुक् ॥ १ ॥

इत्यभाणि । भणितानन्तरं चमत्कृतचित्तौ तौ  
प्रयातौ । पुनर्द्वितीयादिने द्वितीयवेलायां तादृक्-  
पक्षिरूपं विधाय प्राक्तनशब्दरूपं कुर्वाणौ समा-  
यातौ वैद्यगृहे पुनस्तयोर्वचः, प्रतिवचः ।

१ A आमुह विरुद् नापकृता B अभुह विभुक्  
नापकृता



वर्षासु यस्तिष्ठति शरदि पिवति हेमन्तशिशिर-  
धोरत्ति ।

माद्यति मधुनि ग्रीष्मे स्वपिति भवति च खग  
सोरुक् ॥

इति भणितानन्तरं पुनरेव गतौ । तृतीयदिने  
योगीन्द्ररूपं कृत्वा तद्रूहे समागतौ तयोर्वचः ।

अभूमिजमनाकाशमहन्तव्यमवारिजम् ।  
संमतं सर्वशास्त्राणां वद वैद्य किमौपधम् ॥

पुनर्वैद्यवचः

अभूमिजमनाकाशं पथ्यं रसविवर्जितम् ।

पूर्वाचार्यैः समाख्यातं लङ्घनं परमौपधम् ॥ १ ॥

तेन चमल्लतचित्तौ वैद्यौ प्रत्यक्षीभूय यथा-  
भिमतं वरं वितीर्य स्वस्थानं भेजतुः ॥

इति वैद्यवाग्भटप्रबन्धः ॥

अथ धामण्डलिग्रामवास्तव्यो<sup>१</sup> धाराभिधानः  
कोपि नैगमः श्रिया वैश्रमणस्पार्द्धिष्णुः संघाधिप-  
स्यमासाद्य मायद्द्रविणव्ययव्यतिकरजीवितजी-  
वलोकः पञ्चभिरङ्गजैः समं श्रीरैवताचलोपत्यका-

१ A तेन निजाभिप्रायसदृशप्रत्युत्तरदानेन २ A धारण्ड-  
लिग्रामे वास्तव्यो

यां विहितावासः दिगम्बरभक्तेन केनापि गिरिनग-  
 रराजेन सिताम्बरभक्त इति स स्वल्प्यमानस्तद्वयोः  
 सैन्ययोः समरसंरम्भे प्रवर्त्तमाने सति अमानेन  
 रणरसेन युद्धमाना देवभक्त्या वह्निभक्त्या प्रोत्सा-  
 हितसाहसा विपद्य ते पञ्चपुत्राः पञ्चापि क्षेत्रप-  
 तयो बभूवुः । तेषां क्रमेण नामानि । कालमेघः १  
 मेघनादः २ भैरवः ३ एकपदः ४ त्रैलोक्यपादः ५ इति  
 बभूवुः । तीर्थप्रत्यनीकं पञ्चतां नयन्तस्ते पञ्चापि  
 गिरेः परितो विजयन्ते स्म । अथ तत्पिता धाराभि-  
 धान एक एवावशिष्टः कन्यकुब्जदेशे गत्वा श्रीवप्पह-  
 दिसूरीणां व्याख्याक्षणप्रक्रमे श्रीसंघस्याज्ञां दत्तवान्  
 यद्रैवतकतीर्थे दिगम्बराः कृतवसतयः सिताम्बरान्  
 पापण्डिरूपान् परिकल्प्य पर्वताधिरूढान्नेछन्ति अ-  
 तस्तान् निर्जित्य तीर्थोद्धारं कृत्वा निजदर्शनप्रति-  
 ष्ठापरैर्व्याख्याक्षणे विधेय इति तद्वचनेन्धनप्रो-  
 ज्ज्वलितप्रतीपज्वलनां नृपतिं सहादय तेन समं तां  
 भूधरधरामवाप्य सप्तभिर्दैनैर्वादिस्थलेन दिगम्बरान्  
 पराजित्य श्रीसंघसमक्षं श्रीअम्बिकां प्रत्यक्षीकृत्य

१ A मरणरसेन २ पर्वतेधिरोहं न ददन्ति D पर्वतेधिरोहं

एकोवि नमुकारो उज्जन्तसेलसिहरे इत्यादितदुक्तां  
गाथामाकर्ण्य सिताम्बरदर्शनं स्थापिते सति  
पराभूता दिग्वसना बलानकमण्डपात् झम्पापातं  
वितेनुरिति क्षेत्राधिपत्युत्पत्तिप्रवन्धः ॥

अथ कदाचिन्नवान्या भव इति पृष्टः, यत्त्वं कि-  
यतां कार्पटिकानां राज्यं वदासीति तद्वाक्यादनु-  
यो लक्षसंख्यानामपि एक एव वासनापरस्तस्य वै  
राज्यमहं वितरामीति प्रत्ययदर्शनाय गौरीं पङ्कम-  
ग्रां जरद्वीं विधाय स्वयं नररूपेण तटस्थः  
पान्थांस्तामुद्धर्तुमाकारयन् तैरासन्नतोमेश्वरदर्शनो-  
त्कैरुपहस्यमानः केनापि कृपावता पथिकवृन्देन  
तस्यामुद्धर्तुमाख्यायां सिंहरूपेण शिव एव तान्  
त्रासयन् कश्चिदेक एव पथिको मृत्युमप्याहृत्य  
तस्या गोः समीपं नौज्झत् स एव राज्यार्ह इति  
पृथक् गौर्या दर्शित इति वासनाप्रवन्धः ।

अथ कश्चित्कार्पटिकः सोमेश्वरयात्रायां व्रजन्  
पथि लोहकारौकसि प्रसुप्तः । तस्य लोहकारस्य भार्या  
पतिं निहत्य कृपाणिकां कार्पटिकशीर्षे निदधती त्रु-  
वारवमकरोत् । आरक्षकेण तत्रागत्य तस्यापरा-  
धिनः करौ छिन्नौ स देवस्योपालम्भनपरः निशि

प्रत्यक्षीभूयेत्युक्तः। शृणु त्वया प्राग्भवे कदाचिदजा  
केनापि एकेन सोदरेण पाणिभ्यां श्रवणयोर्धृता  
तदपरेण मारिता ततः सा अजा मृत्वा ह्ययं यो-  
षिदजनि येन व्यापादिता स साम्प्रतं पतिरभूत्  
यत्त्वया तदा कर्णौ विधृतौ तदा तव समागमे  
जाते सति करौ छिन्नौ तदा कथं ममोपालम्भ  
इति कृपाणिकाप्रबन्धः॥

पुरा शङ्खपुरनगरे श्रीशङ्खे नाम नृपतिस्तत्र  
नामकर्मभ्यां धनदः श्रेष्ठी स कदाचित्करिकर्णताल-  
तरलां कमलां विमृश्योपायनपाणिर्नृपोपान्तमुपेत्य  
तं परितोष्य च तत्प्रसादीकृतायां भुवि चतुर्भिर्न-  
न्दनैः सह समालोच्य सुलभे जैनप्रासादमचीकर-  
त् । तत्र प्रतिष्ठितविम्बानां स्थापनां विधाय तस्य  
प्रासादस्य समारचनाय बहून्यायद्वाराणि रचयन्  
तत्सपर्याकुलतया नानाविधकुसुमवृक्षावलीसम-  
लंकृतमभिराममारामं च निर्माप्य तच्चिन्तकेषु  
नियुक्तेषु उदिते प्राक्तनान्तरायकर्मणि क्रमात् सं-  
ह्रियमाणसंपदधमर्णतया तत्र मानम्लानिमाकल-  
य्यानतिदूरवर्तिनि क्वापि ग्रामे कृतवसतिर्नगरया-  
तायातेन सुतोपात्तजीविकः कियन्तमपि कालमति-

वाहितवान् । अथान्यस्मिन्नवसरे संनिहिते चातुर्मा-  
सिकपर्वाणि तत्र यायिभिः सुतैः समं स धनदः श-  
ङ्खपुरं प्राप्य निजप्रासादसोपानमाधिरोहेन् निजारा-  
मपुष्पलाविकयोपायनीकृतपुष्पचतुःसारिकः पर-  
मानन्दनिर्भरस्ताभिर्जिनेन्द्रमभ्यर्च्य निशि गुरुणां  
पुरः स्वं दौस्थ्यममन्दं निन्दन् तैः प्रदत्तकपर्दिय-  
क्षाकृष्टिमन्त्रोऽन्यदा कृष्णचतुर्दशीनिशीथे तमेव म-  
न्त्रमाराधयन् प्रत्यक्षीकृतात् कपर्दियक्षात् गुरुरपदे-  
शतश्चतुर्मासकावसरे पुष्पचतुःसारिकपूजापुण्यफलं  
देहीति प्रार्थयन् एकस्यापि पूजाकुसुमस्य पुण्यफलं  
सर्वज्ञेन विना नाहं वितरीतुं प्रभूष्णुरिति किं तु  
कपर्दियक्षस्तस्य साधर्मिकस्यातुल्यवात्सल्यसंबन्धे  
तद्वाग्निचतुर्षु कोणेपु सुवर्णपूर्णानि चतुरः कलशान्  
निधीकृत्य तिरोदधे । स प्रातः स्वसन्नानि समागतः  
धर्मदानपराणां नन्दनानां तद्द्रव्यं समर्थयामास ।  
तेपि निर्बन्धात् पितुः पार्श्वे तद्वैभवलाभहेतुं पृच्छन्त-  
स्तेषां हृदि धर्मप्रभावाविर्भावाय जिनपूजाप्रभावतः  
परितुष्टेन कपर्दियक्षेण प्रसादीकृतां तां संपदं निवे-  
दयामास । तेपि संपन्नसंपत्तयस्तदेव जन्मनगरं

३२२ प्रबन्धचिन्तामणिः सर्ग. ५

समाश्रित्य निजधर्मस्थानसमारचनपराः जिनशा-  
सनप्रभावनां विविधां कुर्वन्तो वैधर्मिकाणामपि  
मनस्तु जिनधर्म निश्चलीचक्रुरिति श्रीवीतरागपू-  
जायां धनदप्रबन्धः ॥

इत्याचार्यश्रीमेरुतुङ्गाविःकृते प्रबन्धचिन्तामणौ  
विक्रमादित्याद्युदितपात्रविवेचनप्रमुखजिनपूजायां  
धनदप्रबन्धपर्यन्तवर्णनो नाम प्रकीर्णकाभिधानः प-  
ञ्चमः प्रकाशः समर्थितः ॥ ग्रन्थाग्रं ३०००.

दुःप्रापेषु बहुश्रुतेषु गुणवृद्धेषु च प्रायशः  
शिष्याणां प्रतिभाभियोगविगमादुच्चैः श्रुते सीदति  
प्राज्ञानामथ भाविनामुपकृतिं कर्तुं परामिच्छता  
ग्रन्थः सत्पुरुषप्रबन्धघटनाञ्चक्रे सुधासत्रवत् ॥ १

प्रबन्धानां चिन्तामणिरयमुपात्तः करतले  
स्यमन्तस्य भ्रान्तिं रचयति चिरायोपनिहितः ।  
हृदि न्यस्तः शस्तां सृजति विमलां कौस्तुभकलां  
तदेतस्माद्ग्रन्थाद्भवति विबुधः श्रीपतिरिव ॥ २

यथा श्रुतं संकलितः प्रबन्धै—  
ग्रन्थो मया मन्दाधियापि यत्नात् ।

मात्सर्यमुत्सार्य सुधीभिरेव  
प्रज्ञोद्गुरैरुन्नतिमेव नेयः — ३

थावद्विवि कितवाविव रविशशिनीक्रीडतो ग्रहकपदैः  
ग्रन्थस्तावन्तन्दतु सूरिभिरुपादिश्यमानोयम् ॥ ४॥  
नृपश्रीविक्रमकालातीतसंवत् १३६१ वर्षे फाल्गुन-  
सुदि १५ रवावद्येह श्रीवर्द्धमानपुरे चिन्तामा-  
णिग्रन्थः समाप्तः

---

१ A त्रयोदशस्वव्दशतेषु चैक-  
पष्ट्याधिकेषु क्रमतो गतेषु ।  
वैशाखमासस्य च पूर्णमाया  
ग्रन्थः समाप्तिं गमितो मितोयम् ॥ १ ॥

---

समाप्तम् .

# अपूर्णपुस्तकाभ्यां पाठान्तराणि तदन्यद्देयं च यथा



पत्रे पङ्क्ती मुद्रिते दृष्टे

- १ ६ गुम्फान्—ग्रन्थान् A B
- १ १० श्रीधर्मदेवः—श्रीधर्मदेवै शतधोदितेति वृत्तेश्च A  
श्रीधर्मदेवः शतधोदितेति वृत्तेश्च B
- १ १३ प्रदर्शितवान्—विनिर्मितवान् A अत्र निर्मितवान् B
- २ ८ मुसप्रदायादृग्ने—मुसप्रदायारब्धे A मुसप्रदायदृष्टे B
- २ ९ अन्त्य —अन्तःB
- २ १९ विक्रमादि—क्रमविक्रमादि B
- २ १७ द्रुतोप्यतिनीतिपर सन्परः शतैः—द्रुतः परशतैःB
- ३ १ अनुपलभमानः—अलभमानः १
- ३ २ भट्टमात्रमित्रसहायो—भट्टमात्रसहायो १ B
- ३ ३ प्रवरनामानि नगरे—प्रवरनाम्नि प्रवरनगरे १ B
- ३ ६ पुण्यश्रवणपूर्व—पुण्यश्रवणात्पूर्व A पुण्यश्रवणापूर्वB
- ३ ९ सहादाय—समादाय A आदाय B
- ३ १० यत्कश्चित्—तत्तु कश्चित् A देवःकश्चित् B
- ३ १९ प्रादुरासीत् भट्ट—प्रादुरासीत् माग्येनार्क न घटते॥यतः  
यद्यापि कृतसुकृतशतः प्रयाति गिरिकन्दरान्नेरपु  
नरः । करकलितदीपकलिका तथापि लक्ष्मीस्तमनु  
सराति ॥ १ ॥ भट्ट B
- ३ १७ शोकशङ्कुशङ्कापनोदाय—शोकापनोदाय A B



- ३ १९ विक्रमः सहजां—विक्रमस्तदानीं सहजां A  
 ४ १ व्रणरोहणं—व्रणरोपणं A  
 ४ ४ परिभ्राम्यन्—परिभ्रमन् A B  
 ४ ४ अवन्तिपरिसरं—अवन्तिदेशपरिसरे A अवन्ति-  
 परिसरे B  
 ४ ८ राज्यस्य—राज्ये A  
 ४ ११ भक्त्या वा शक्त्या—यथाशक्त्या भक्त्या वा  
 ५ ६ भक्त्या—अत्यन्तभक्त्या A B  
 ५ ७ एतावद्भक्ष्य—एतद्भक्ष्य A B  
 ५ ११ विज्ञाप्य—विज्ञाप्य A  
 ५ ११ विज्ञापयिष्यामि—विज्ञपयिष्यामि A  
 ५ १४ उपरुध्य—उपरुद्धः A B  
 ५ १८ भोज्यादिपाकं—भोजनादिकं A B  
 ६ १ आगतः स नृपं जगौ तद्भोज्य—आगतः। तद्भोज्य AB  
 ६ ४ आदिष्टः स नृपं—आदिष्टः सन् अहो अस्य करिव-  
 द्याविषट्कनैकपञ्चाननस्य महत्साहस यत्सत्त्वेन किं  
 न ज्ञापते यतः  
 सत्त्वेकतानवृत्तिनां प्रतिज्ञातार्थकारिणाम् ।  
 प्रमविष्णुर्न देवोपि किं पुनः प्राकृतो जनः ॥  
 एवं विमृश्य नृपं A  
 ६ ५ धमुनाद्भुत—तवाद्भुत A B  
 ६ ९ वन्यो—विज्ञो A  
 ६ ९ भित्तिभागे—विघ्नभागे A  
 ६ १२ साहसाद् १॥ अवन्त्या...समर्पिता—साहसाद् १॥  
 कालिदासाद्येर्महाकाविभिरित्य संस्तूयमानश्चिरं प्रा-

ज्यं राज्यं बुभुजे ॥ सांप्रतमवसरापातां कालि-  
दासमहाकवेरुत्पात्तिं संक्षेपतो ब्रूमः ॥ अवन्त्यां पुरि  
श्रीविक्रमादित्यमुता प्रियद्रुमअरीनाम्नी साध्यय-  
नाय पित्रा वेदगर्भनाम्नः पण्डितस्य समर्पिता A

वररुचिनाम्नः पण्डितस्य प्रदत्ता B

- ७ १३ अधिको विद्यतया—अधिकविद्यतया A B
- ८ १ करवर्दी—करचण्डी A B (कचिदेशे भाषायां हस्त-  
तलद्वययोजना करचुदीति केचित् )
- ८ २ अश्रुतं—अश्रुतचरं A अश्रुतपूर्वं B
- ८ ८ वपुःपरिकर्मपूर्वं—वपुःपरिकर्मणा सह पूर्वं A वपुःपरि-  
कर्मणा पूर्वं स्वस्तीत्याशिर्वादाध्यापनं B
- ८ १५ पाणिमृत्....गर्वितः ॥—पाणिगुक् । रक्षतात्तव रा  
जेन्द्र दणत्कारकरं यशः ॥ १ ॥ A B
- ९ ६ महिषीपाल एव—मूर्खोयमिति B
- ९ १२ आरराव....पुत्री—आराधयितुमुपविष्टः न भुङ्क्ते दि-  
नाष्टकं जातं पुत्री.
- ९ १२ दार्मी—कालिकानाम्नी दार्मी A B
- ९ १६ अस्ति कश्चिद्वाग्विशेषः ( इत्यनेन कुमारसंभवमेव-  
दूतरत्नवंशाख्यपद्यबद्धं काव्यत्रयं तेषां क्रमेण त  
एवादिशब्दा इति तत्त्वम् ॥ कालिदासप्रबन्धादयः  
पट् गद्यपद्यात्मका इति गुरुवाक्यम् )
- ९ १८ रचयामास । अन्यदा—रचयामास ॥ इति कालि-  
दासप्रबन्धः । अन्यदा A B
- १० १ ५ स्थितः....सुत—स्थितः पुरुषमेकमवलोक्य सुत B
- १० ९ अहीनादिभिः—अर्हणादिभिः A B

- १० ११ संध्यासर्वावसरानन्तरं—संध्यायां सर्वावसरानन्तरं  
 A B ( सर्वावसरशब्दो मध्यरात्रद्यौतक इत्यर्थः )
- १२ १ तस्युः । अथ—तस्युः । इति विक्रमादित्यसत्त्वप्रब-  
 न्यः । अथ A B
- १२ १४ विसर्जः । अथ—विसर्जः ॥ इति सत्त्वपरीक्षाप्रब-  
 न्यः । अथ A B
- १२ १९ निराकृताः—विनाकृताः A B
- १३ १० प्राहरिके द्विजे निजं—प्राहरिके द्विजन्मानि A
- १३ १२ पल्लीगात्रनिवेशित—पल्लीमृङ्गनिवेशित B
- १३ १४ विद्या सिद्धा । अधास्मिन्—विद्यासिद्धिप्रबन्धः ॥ ए-

कदा नृपो गुरुवन्दनाय गतः तत्र वृद्धं कमपि तप-  
 स्विनं पठन्तं वन्दयामास तेन नाशीर्निगदिता प-  
 ठनव्यग्रेण । राज्ञोक्तं वृद्ध पठन् मुशलं फुल्लावधि-  
 सप्यो । तदवगम्य तेन पठित्वा सूरिपदे प्राप्ते त-  
 स्यैव राज्ञः सदासि गत्वा मुशलमानाध्यालवालं  
 विधाय श्रीऋषभदेवस्तवेन मुशलं पुष्पायित्वा गतः ।  
 तावता सिद्धसेनेनापि तदवगत्य धादाय घटे गतम् ।  
 परेण केतलारसग्रामं व्रजन् वृद्धवादी रुद्धः वाद  
 विबोहि । तेनोक्तं । पुरे गम्यते तत्र सम्या भवन्ति ।  
 पुनः प्रातेवादिनोचै । अत्रैव वादः । अमी गोपाः  
 सम्याः । तेप्याकारिताः । प्रथमे सिद्धसेनेनोपन्या-  
 सो विहितो गीर्वाणबाण्या । तदनु वृद्धवादिना  
 गण्ठीयकं बध्वा गोपकुण्डकं विधाय भोचै ॥ नवि  
 मारीयए नवि चोरीयए परद्वारागमण निधारीयए  
 । थोवा विहु थोव दाईयए इम सांगि टगमगु जा-

ईयए ॥ एवं पठति गोपा नृत्यन्ति । तैरुक्तमनेन  
 जितं त्वं किमपि न वेत्ति । ततो वृद्धवादिना पुरे  
 गत्वा वादं विधाय जितः शिष्यो बभूव । ततः  
 सिद्धसेनादेवाकरेण गुरुचरणसंवाहनां विधाय मानेन  
 गुरव उक्ताः । यदि यूपमादेशं ददत तदाहमागमं  
 संस्कृतेन करोमि, गुह्यभिरुक्तं । तव महत्पाप-  
 मनानि त्वं गुरुगच्छयोग्यो न गच्छेः । तेनोक्तं,  
 प्रायश्चित्तं ददत । गुरुभिरुक्तं । यत्र जिन-  
 धर्मो न तत्र जिनप्रभावनां विधाय पुनः समा-  
 गन्तव्यमित्यवधूतवपेण चलितः । द्वादशवर्षाणि  
 यावदन्यत्र परिभ्रम्य तदनन्तरं मालवेके गूढमहा-  
 कालप्रासादे शिवाभिमुखं चरणौ कृत्वा चरणत्रा-  
 णौ द्वारकाष्ठे नियोज्य सुप्तः । तत्र वारितोपि त-  
 थैव । अतान्तरे राज्ञारक्षिकपुरुषान् प्रेषयित्वा प-  
 द्रुतः । तावतान्तःपुरे रवप्रदीपनं लग्नं, राज्ञा समाग-  
 त्य पृष्ठः । कथं शिवस्य न नमस्कारं विदधासि ।  
 तेनोक्तं मम नमोसौ न सहते । विधेहि । तेन  
 सकललोकसमक्षम्

प्रशान्तं दर्शनं यस्य सर्वभूताभयप्रदम् ।

मातृहृत्वं च प्रशस्तं च शिवस्तेन विभाव्यते ॥१॥

इति द्वात्रिंशद्द्वात्रिंशतिका कृता, तदा लिङ्गमध्या-  
 दयन्तिभुक्तुमालद्वात्रिंशत्पञ्जीकारितप्रासादे श्रीपार्श्व-  
 नाथविम्बं प्रकटीभूतं नमस्कृतं च । अस्मै सहते नम-  
 स्कारं तदाप्रभृति गूढमहाकालोजानि । राजा विक्रमार्कः  
 परमनैनोभूत् । सिद्धसेनोपि स्वगुरुपार्श्वं समेत्य मूरिमन्तं

प्राप्यैकदोजयिन्यामेव चातुर्मासक स्थितः । अथान्यस्मिन्

- १३ १६ वन्दिपुत्रैः—वन्दिवृन्दैः B  
 १४ १ (आसे दर्शनमिति पद्य नास्ति A B)  
 १४ १९ नराधिपः—धराधिपः  
 १४ १७ वृथा तृप्तस्य—वृथा भुक्तस्य A B  
 १४ १८ सुवर्णं..उपदिष्टे-सुवर्णदानेनावनीमृन्मृणोक्तावित्युपादिष्टः B  
 १९ १ (अष्टौ पद्यानि तानि न A B)  
 १७ ९ पृष्टः...श्री-पृष्ट इति जगौ । जगुर्दालिदिरिह दुत्थिय  
 उ बलिबन्धणह मुद्गज ॥ १ ॥ इत्याकर्ण्य श्री-B  
 १७ ८ आरेभे...अथ—आरेभे । उज्जयिन्या राजा विक्रमा-  
 दित्यो मष्टमात्रेण सम महाकाले नाटकालोकनार्थं  
 गुप्तवेपो गतः कालान्तरितेन नागरिकसुतेन कार्य-  
 माणे नाटके सूत्रवारमुखात्तद्वर्णनं श्रुत्वा राजापि  
 नागरिकद्रव्यग्रहणाय मनसि लोभे कृतवान् ।  
 पश्चात्किञ्चालमतिक्रम्य तृपितो मुख्यवेश्यागृहे  
 मष्टमात्रपार्श्वीत्पानीयं याचितवान् । तत्र वृद्धवेश्या  
 प्रधानान्पुरुषान् भणित्वा तन्निमित्तमिक्षुरसमादातु-  
 मुपवने गता । सूत्रैरिक्षुदण्डान् भित्त्वा तयार्द्ध-  
 घटेप्यसभृते दुर्मनस्का करकं भृत्वा वेलाविलम्बे-  
 नागता रात्रिक्षुरसे पीते मष्टमात्रेण वेलाविलम्बदौ-  
 र्मनस्यकारणं पृष्टा जगाद । अन्यदिने एकेन नि-  
 मित्रेक्षुदण्डेन सकरको घटो त्रियते । अद्य घटोपि  
 न संपूरितः । तत्कारणं न ज्ञायते । मष्टमात्रेण  
 (पुनः) पृष्ट यूयमेव परिणतमतयस्तत्कारणं जानीत

ततो विचार्य निवेदयन्तु । वेश्यापि वदति । पृ-  
थ्वीपतेर्मनः प्रजामु विरुद्धं जातं ततः पृथ्वीरसोपि  
क्षीणो जातः । इति कारणं निवेदितवती । राजापि  
तद्वृद्धिकौशलाच्चमत्कृतः । स्वभुवनशयनीये सुप्त  
इति चिन्तितवान् । अकृतेपि प्रजापतेर्दने विरुद्धचि-  
न्तामात्रेणापि पृथ्वीरसहानिर्जाता । अतः प्रजां न  
पीडयिष्यमीति कृतनिश्चयो नृप इति परीक्ष-  
णार्थं द्वितीयायां निशायां तृषामिषात्तद्वृहे गत्वा  
शीघ्रमेव सहर्षया तयानीतामिक्षुरसं पीत्वा, शयनी-  
ये सुप्तवान् । वेश्यापि भट्टमात्रपृष्टा राज्ञः प्रजामु  
द्वष्टं मनो निवेदितवती राज्ञापि आत्मानेशावृ-  
त्तान्तं निवेद्य पुनरपि तस्यै वृद्धवेश्यायै पराचि-  
त्तोपलक्षणतुष्टेन हारो दत्तः । इति नृपतिमनोतु-  
सारो पृथ्वीरसप्रबन्धः ॥ अथ B

१९ ३ ताडयतः.....अत्रान्तरे—उपरि च फणो पुच्छवलम्बे-  
नाबोभूय कुसुमगान्धेनृपशिरसि दंशाय पुनः पुनः  
फूत्कुर्वति । अत्रान्तरे B

२० ३ चकार....रुदानिदायुः—  
स्रच्छं सञ्जनचित्तवल्लभ्युतरं दीनार्थिवच्छातलं  
पुत्रालिङ्गनवत्तथा च मयुरं बालस्य संनरुपात् ।  
एतेऽसंरुपवङ्गनन्दनलसत्कर्पूरपात्रीमिदं—  
त्पाट्युत्पलकेतकीमुरामितं पानीयमानीयताम् ॥ १॥  
यदा जीविश्च मुक्तश्च पारितश्चन्द्रमण्डलम् ।  
पारिप्रेयस्तद्वै याना कष्टेन क्षीयति ॥ १ ॥ इति  
रिक्तमार्गस्य निगमेनाप्रबन्धः

अथान्यस्यां निशि ( इत्यादि भोजवृत्तान्ते दृष्टव्यं  
तत्रायं विशेषः )

एका रजकी राज्ञा पृष्टा वस्त्राणि विरूपाणि कथं  
सैकतानि तयोक्तम् ।

यासौ दक्षिण दक्षिणार्णवधूरेवाप्रातिस्पर्दिनी  
गोविन्दाप्रियगोकुलाकुलतटा गोदावरी विश्रुता ।  
तस्यां देव गतेपि भेषसमये स्वच्छं न जातं जल  
त्वदण्डद्विरदेन्द्रदन्तमुशालप्रक्षोभितैः पांसुभिः ॥ १ ॥  
रजकवधूवचनामिदं श्रुत्वा नरनाथनायकः स ददौ ।  
स्वाङ्गपृष्ठकसहितं लक्षं भ्रूक्षेपमात्रेण ॥ १ ॥  
चौरमागवविप्रभ्यो रजक्यै कविताश्रुतौ ।  
चातुःप्रहारिकं दानं दत्तं विक्रमभूभुजा ॥ ३ इति  
प्रबन्धाः नानाविधा यथाश्रुतं विज्ञेयाः । कदाचिदायुः B

२२ ९ एव रूपं—एकमेव रूपं A B

२२ ६ ताः सहस्त—ता दत्तहस्त—A B

२२ ६ निजमपराधं—निजमेवापराधं A B ;

२२ ९ तासु मुख्यया—तासां मुख्यया

२३ ९ निधीन् वेद्मि—निधीनवतीर्णान्वेद्मि A B

२४ २ शातवाहनकथा यथा श्रुता ज्ञेया—शातवाहनप्रबन्धा  
लिख्यन्ते B

२४ ११ वृत्तिस्तस्यां—वृत्तिः ।

अहो कोपि दरिद्राणां दारिद्र्यव्याविरद्भुतः ।

घृष्टिकाथेपि यः पीयमाने न क्षयभूरभूत् ॥ १ ॥

तस्यां B

२४ १४ व्रजन्तमाहूय तं सक्तुपिण्डं—व्रजन्तं जैनमु—नि दृष्टा

पूर्वभवे मया कस्मैचिन्न ददे तस्येदं फलम् । यदुक्तम् ।  
 रम्येषु वस्तुषु मनोहरतां गतेषु  
 रे चित्तं खेदमुपयासि कथं कृथा त्वम् ।  
 पुण्यं कुरुष्व यदि तेषु तवास्ति वाञ्छा  
 पुण्यैर्विना नहि भवन्ति समीहितार्थाः ॥ १ ॥  
 इत्थं चिन्तयित्वा मुनिमाकार्यं सक्तुषिण्डं B

२४ ११ शालवाहननृपतिरासीः—सातवाहननृपतिरासीः A  
 ( कथासरित्सागरे । सातेन ( सुसेन ) यस्मादूढो-  
 भूतस्यात्तं सातवाहनमिति )

३१ ३ गाथा....(दशश्लोका न AB)....गुर्जरभुवि—गाथाच-  
 तुष्टयं बहुश्रुतेभ्यो ज्ञेयम् । षट्त्रिंशद्वामलक्षम-  
 मिते कन्यकुब्जदेशे कल्याणकटकनाम्नि राजधानी-  
 नगरे भूराज इति राजा राज्यं कुर्वन् कस्मिंश्चित्प्र-  
 भातसमये राजा राजपाटिकायां संचरन्नेकस्मिन्स्त्री-  
 धतये वातायनस्थितां कामापे मृगाक्षीं मृगयमाणो  
 निजचित्तापहारापराधिनां तां जिहीर्षुर्निजं पानीया-  
 दधिष्ठितपुरुषं समादिदेश । स च तां नृपसौधे स-  
 नानीय कस्मिंश्चित्संकेतप्रदेशे स्थापयित्वा नृपं  
 विज्ञापयामास । नृपेण च तत्रागतेन बाहुदण्डे  
 घृणा सती भूषमयादीत् । स्वामिन् सर्वदेवतायतारस्य  
 भवतो हन्त कोयं नीचनारीमभिलापः । ततस्त-  
 द्वात्स्यामृतेनैषच्छान्तकामानगो नृपः कोसीति तां  
 मोचे । तयाहं दासोत्पन्नमिदं किं तद्व्यमतादिति  
 नृगदेशात्प्रभोर्दासः पानीयाधिष्ठितस्तस्य पत्न्यहं  
 दासानुदासीति न द्वात्स्यान्तश्मल्लुतो नृपतिः सर्वथा



विलीनकामार्त्तिः स्वां सुतां मन्यमानो विससर्ज ।  
 तस्या वपुषि निजकरौ लग्नावेति विचिन्त्य तान्नि-  
 ग्रहवाञ्छया निशीथे निजैरेव यामिकैर्गवाक्षप्रवि-  
 ष्टनरकरभ्रान्त्या निजावेव भुजौ निग्राहयामास ।  
 अथ प्रत्यूपे तान्यामिकान् सचिवैर्निगृह्यमाणान्नि-  
 वार्य मालवमण्डले महाकालदेवप्रासादे गत्वा स्वयं  
 देवमाराधयन्तस्थौ । देवादेशाद्भुजद्वये लग्ने सति तं  
 कन्यकुब्जार्द्धमालवदेशं शान्तपुरं तस्मै देवाय दत्त्वा  
 तद्रक्षाधिकृतान् परमारराजपुत्रान्नियोज्य स्वयमेव  
 तापसीं दीक्षामङ्गीचक्रे । ( इति शीलव्रते भूयराज-  
 प्रबन्धः ) तस्य कन्यकुब्जस्यैकदेशो गूर्जरधारिव्री  
 तस्यां गूर्जरभुवि B

- ३१ १० वणनान्नि—बाणनान्नि A  
 ३१ १२ शीलगुण—शीलगुणि-A शीलगण B  
 ३२ २ गणिन्या—गणिना A  
 ३२ २ परिपाल्यमानः—प्रतिपाद्यमानः B  
 ३२ ५ लोष्टैर्निघ्नन्—बाणैर्निघ्नन् A B  
 ३२ ९ अकरोत् । काकरग्रामे—अकरोत् । चौरस्वभावे लग्ने न  
 सुखं कदाचिदपि । यतः ॥

नक्तं दिवा न शयनं प्रकटा न चर्या  
 स्वेरं न चान्नमलयत्त्रकलत्रभोगः ।

शङ्खानुनादपि सुतादपि दारतोपि

लोकस्तथापि कुरुते ननु चौर्यवृत्तिम् ॥ १ ॥ A

- ३२ १४ आहूतः....पूर्वकं—त्नानभोजनवस्त्रदानपूर्वकं A—

- ३२ १७ चरटवृत्त्या—चौरवृत्त्या A

- ३२ १८ जम्बाभिधानः—जाम्बाभिधानः B
- ३३ १ बलवेध्यं—चलवेध्यं B
- ३३ ३ तद्योव—तद्योधृ-A
- ३३ ५ पञ्चकुलेन ( राजाधिकारिणां पञ्चानां समूहेन ) तादृ-  
शराज्ञः—तद्देशराज्ञः A B
- ३३ ६ कञ्चुकसंबन्धे ( उद्धहनावसरे दुहितृदत्तसेवका-  
द्यसंबन्धे
- ३३ ७ सेलभृत्—सेलभृत् A B ( राजद्रव्योद्वाहणाय लक्ष्म-  
विशेषधारी )
- ३३ ९ रूप्यकद्रम्म—पारूप्यकद्रम्म-B
- ३४ २ शशकेनोच्छासिता—शशकेन श्वा त्रासितः A
- ३४ ७ श्रियादेवी—श्रीदेवी A
- ३४ ९ जम्बाभिधानः—जाम्बाभिधानः A
- ३५ १ धवलगृहकण्ठे—धवलगृहे कण्ठीश्वर-A
- ३५ ४ नैव नन्दति-तन्न नन्दति B
- ३५ ५ निरुद्धं वर्ष ५९ मास २ दिन १० ( यस्मिन्वर्षे रा-  
३५ १४ ज्ये स्थितस्ततो मरणपर्यन्तं निरुद्धशब्दार्थः)
- ३५ ८ सुदि ३ गुरी—शुद्ध १३-A
- ३५ १४ सादृशती संख्यया—सादृश्यता संख्यया रूपं १८ B
- ३६ ३ प्रतिपन्त्यादि कृतं—प्रत्यादिष्टं B
- ३६ १२ अस्मत्पुरुषैः—अस्मत्स्थानपुरुषैः A B
- ३७ १ अनुजीविना—द्विजन्मनां A B
- ३७ ६ अनेन....वाहकेल्यां—अनेन राज्ञा वर्षाणि ३९ राज्यं  
कृतं सं० ८२७ पूर्ण वर्षे २९ श्रीतेमराणेन रा-  
ज्यं कृतं सं० ९२२ पूर्ण वर्षे २९ श्री भुयङ्गेन

राज्यं कृतं । अनेन श्रीपत्तने श्रीभूयडेश्वरप्रासा-  
दः कारितः । सं. ९९१ पूर्वे श्रीवैरोसिंहेन (वी-  
रोसिंहेन B ) वर्षाणि २९ राज्यं कृतं सं. ९७६  
पूर्वे वर्ष १९ श्रीरत्नादित्येन राज्यं कृतं स ९९१  
पूर्व वर्षाणि ७ श्रीसामन्तासिंहेन राज्यं कृतं एवं  
चापोत्कटवंशे सत नृपतयोभूवन् विक्रमकालतः  
सख्यया वर्षाणि ९९८॥ पूर्वोक्तश्रीभूयडराजवशे  
राजवीजदण्डकनामानन्वयः पुत्राः सहोदरा  
यात्रायां श्रीसोमनाथं नमस्कृत्य ततः प्रत्यावृत्त्य  
श्रीमदणहिल्लपुरे श्रीसामन्तासिंहनृप बाहकेल्यां AB

३९ १४ श्रीभूयडदेवेन—श्रीसामन्तासिंहेन A

३९ १८ सं० ९९३....अवसरे—९९८ श्रीमूलराजस्य राज्या-  
भिषेको निष्पन्नः

मूलार्कः श्रूयते शास्त्रे सर्वकल्याणकारकः ।

अधुना मूलराजेन योगश्रित्रं प्रशस्यते ॥ १ ॥

इत्यादिस्तुतिभिः स्तूयमानः साम्राज्यं कुर्वन्नास्ते ।

तास्मिन्नवसरे A

४० ३ अभिषेणयितुं—पराजेतुं A

४० ४ वारवनामा—चारपनामा A B

४१ ९ राजा लहणिकां—राजलहणिकां B

४१ ९ सामन्तान् .... करण—सामन्तानाकार्यं क्षुण्णलेखेन  
व्ययकरण B

४१ ९ ज्ञापनापूर्वं—ज्ञापनपूर्वं A

४१ १२ प्रत्युपकाले—प्रदोषकाले A

४२ ९ उपयाचितैः—उपयाचितशतैः A B

- ४३ ४ वसहिका—(बहुदेवतावासरूपा )
- ४३ . ९ मुञ्जालदेव—मूलस्वामिदेव A
- ४३ १७ कन्यादि—कान्यादि. B
- ४४ ६ आनृण्ये—आनृण्यं
- ४४ ९ चिन्तायकत्वाय—( मठाधिपतित्वाय )
- ४४ १३ वाक्यं—वाक्यतत्त्वं
- ४५ ८ ग्रामसहितं—ग्रामसहितं A B
- ४५ ११ अभिषिक्तः....इत्थं—अभिषिक्तः । इत्थं A B
- ४५ १७ पुरा कस्मिन्नपि—पुरा कदाचिदपि B
- ४७ १ बोधवाक्यानि—बहूनि वाक्यानि B
- ४८ १४ का यत्—काचित् A कापि B
- ४८ १६ अथ सं १०९०....अभिषिच्य—अथ सं. ९९८ पूर्वं वर्षाणि ९९ राज्यं मूलराजेन चक्रे । इति मूलराजप्रबन्धः ॥ संवत् १०९३ पूर्वं वर्षाणि १३ श्रीचामुण्डराजेन राज्यं कृतम् । अथ सं. १०९९ पूर्वं मास ६ श्रीवल्लभराजेन राज्यं कृतम् । अथ सं. १०९६ पूर्वं वर्ष ११ मास ६ श्रीदुर्लभराजेन राज्यं कृतम् । [ अथ तस्य राजमदनशंकर तथा जगद्वंशपण इति विरुद्धद्वयं जातम् B ] तेन राज्ञा श्रीपत्तने दुर्लभसरोवरं रचयाचक्रे । तदनु श्रीभीमाभिषान निजमङ्गलं राज्येभिषिच्य A B
- ५५ १९ स्वदयितापि० टि० अ०  
भीमभूपसुता सिंहभटेन मेदिनीभुजा ।  
श्रीमती सन्महं मुअकुमारः परिणायितः ॥
- ५६ ८ स सीन्वलो० टि० अ०

रुष्टेन मुञ्जभूपेन सिन्धुलो दुर्दमस्तदा ।  
 देशान्निकासितो मेदपाटे नागहृदे ययौ ॥ ४९ ॥  
 नागहृदपुरोयान्ते निजा पछी निवेश्य सः ।  
 स्थितश्च मृगया कर्तुमागादीपोत्सेवोपासि ॥ ५० ॥  
 चौरवध्यावनौ वीक्ष्य चरन्त शूकरं निशि ।  
 शूलिकास्यशब्दे दत्त्वादिनी वनुधि निर्भयः ॥ ५१ ॥  
 समारोप्य गुणं तीक्ष्णभागेन भूपभूस्तदा ।  
 यावद्धान्ति किरिं तावद्देवीभूय जगावद ॥ ५२ ॥  
 त्वत्साहसेन तुष्टोऽस्मि वर याचस्व सप्रति ।  
 सिन्धूलोकश्च क्षितौ क्षिप्तो मापतद्विशिखो मम ।

- ५७ ३ अभिहितो—अभिहिते A  
 ५७ १३ आयुधानि—दण्डायुधानि A B  
 ५७ १८ भोक्तव्यं भोजराजेन—भोजदेवेन भोक्तव्यं A  
 ५८ १६ गोदावरीं सरितं० टि० अ०

गोदावर्यास्तटादर्याक्स्थितेन भवता रणम् ।  
 कार्यं न चेत्तवाह्नाय वपुर्भङ्गो भविष्यति ॥ ५१ ॥  
 गोदावरोपुरोभागभूः शूरास्ति भृशं नृप ।  
 तेन तत्र न गन्तव्यं रणाय भवता मनाम् ॥ ५२ ॥

- ५९ ६ जातकलत्रसंबन्धः टि० अ०

इतस्तैलिपदेयस्य पित्रा देवलभूभुजा ।  
 पत्नीस्थाने कृता दासी सुन्दरीत्यभिधा पुरा ॥ ६९ ॥  
 पुत्रीं मृणाश्वत्याह्वा मूते स्म सुन्दरी पराम् ।  
 दद्वयामाम नाना च ता स्तन्यादिप्रदानतः ॥ ७० ॥  
 वर्द्धमाना क्रमात्प्रामा यौवनं भगिनौ पुनः ।  
 दत्ता तैलिपदेवेन श्रीपुरे चन्द्रभूषतः ॥ ७१ ॥

चन्द्रान्यदागमच्छूलरेगेण यममन्दिरम् ।  
 सापि तेलिपदेवस्य भ्रातुर्गेहमुपागमत् ॥ ७२ ॥  
 स्वसा तेलिपदेवस्य रण्डा मृणालवत्यथ ।  
 भक्तपानादि मुञ्जस्य चक्रे भ्रातृनिदेशत ॥ ७३ ॥  
 तिलङ्गनगरोपान्ते गत्वा गन्धूतपञ्चके ।  
 ग्रामे चन्द्राभिषे तस्थुः सुरङ्गा दातुमेव ते ॥ ९ ॥

- ६३ १६ राज्येभ्यपिच्यत टि अ.  
 विक्रमाद्वासरादष्टमुनि-येमिन्दुसमिते ।  
 वर्षे मुञ्जपदे भोजभूपो पट्टे निवेशित ॥
- ६८ १३ वैतालिकस्यार्पितम् ( कथा-रत्नाकरादिय कथा ज्ञेया )  
 ७३ ९ निशान्त—निशान्ते निशान्त Δ ( निशान्ते गृहे )
- ८८ ११ सर्वदेवनामा ( भा. सु. प्रा. ले. प. १६ )  
 अमात्ये मम्मटे सति ॥ ८, अछटमेदिनीपतिः, तदी-  
 यपुत्रो नरवाहन, वज्रट, शिम्बादित्य, महीवर,  
 नारायणभट्ट, सर्वदेव, ( एते समकालीनाः ॥ )  
 दशदिग्बिक्रमकाले वेशारसे शुद्धसप्तमीदिवसे ।  
 हारेरिह निवेशितोय घटितप्रतिमो वराहेण ॥ १९ ॥
- ९६ १० सिचभवणे. टि ( तदुत्पत्तिस्तु ) पूर्वोक्ते ले. प. ९१  
 सप्तसरशतेर्यातेः सप्तवनसत्यर्गलेः ।  
 सप्तभिर्मालवेशाना मन्दिर धूर्जटे कृतम् ॥ १ ॥ .  
 रुष्णमुतो गुणाढ्यश्च मूत्रवारोत्र गण्णकः ।  
 एतत्फाण्णाश्रमं ज्ञात्वा सर्वपापहर शुभम् ॥  
 कृत हि मन्दिर शमोर्ध्वमस्तीर्त्तविरुद्धनम् ।
- १३१ १६ मयणछदेवो टि चा. सु. ग. क. क. च. मर्ग १  
 ( भीमपुत्रपुत्रपुत्रः क्षेमराजो “होरपा” इति केचित् )

मरुराजपुत्री तारामुपयेमे )

कर्णोपि कर्णाटनृपाङ्गजाया—

अकार पाणिग्रहण जयायाः ।

( तति मृते क्षेमराजेन पितृवचनत्वात्कनिष्ठोमिषिको  
राज्ये श्रीकर्णः )

श्रीकर्णः किमु वर्ण्यते स कविभिः सद्धर्मचिन्तामणि—

विज्ञान्मोक्षविकाशवासरमणिर्भूमिशूडामणिः ।

स्फूर्जत्कीर्त्तितरंगिणी दिशि दिशि प्रध्वस्ततापा जना

यस्य श्रोतृपुटैः पिबन्ति विकटैरद्याप्यपूर्णस्पृहाः ॥१॥

गोपीपीनपयोधराहतमुरः संत्यज्य लक्ष्मीपते—

र्मन्ये पङ्कजशङ्कया नयनयोर्विश्राम्यति श्रीस्तव ।

श्रीमत्कर्णनरेन्द्र यत्र चलाति भ्रूवल्लीपङ्कज—

स्तत्र बुध्यति भीतिभङ्गुरतया दारिद्र्यमुद्रा यतः ॥२॥

( कर्णोपि पुनः मीणलदेवीमुपयेमे )

कर्णाय काश्मीरपतिः स्वपुत्री

मैषोदयो मीणलदेवीनाम्नीम् ।

चकार पाणिग्रहणं महेन

तस्याः स लोकोत्कृतविस्मयेन ॥

( सोन्यासक्तस्तस्या नामापि न नगृहे )

बालाबलावालिनभूमिपाला

नद्य विटा वानरवारनार्यः ।

चौराश्चरा याचकवज्रकाश्च

भवन्ति नूनं क्षणरागिणोमी ॥ १ ॥

१३४ १० कर्णावतीपुरं टि. तत एव ।

( मातङ्गीवेषवती मीणलदेवी मुमुने कर्णस्ततः सिंहखन-

सूचितः पुत्रो नाम्ना जयसिंहोभूत् । सोष्टवार्षिकः प-  
ट्टणे राज्यं चकार । कण्ठेस्तु आशापङ्क्तिं “ आशाउर  
सैव कर्णावती तत्र ” गत्वा राज्यमकरोत् । )

१४४ ६ श्रीपत्तनं प्राप. टि. (तत एव ।)

बालोपि जयसिंहः आलिङ्गसचिवं पुरे संस्थाप्य  
मालवं जेतुं गतः । द्वादशवर्षेर्भोलवेशं जित्वा पार्श्वगुणै-  
र्बध्वा “ तेन पट्टारं पराजितत्वात् ” नीतः  
कर्णाटलाटमगधात्तकालिङ्गवङ्ग—

काश्मीरकीरमरुमालवसिन्धुमुख्यान् ।

देशान्विजित्य तरणिप्रमितैः स वर्षैः

सिद्धाधिपो निजपुरं पुनरासत्ताद ॥ ३८ ॥

१४५ ८ श्री हेमचन्द्रमुख्याः टि. (तत एव )

अथ श्रीपूर्णतल्लाख्यगच्छे स्वच्छेन्दुमुन्दराः ।

सूरयो देवचन्द्राब्हा दन्धुरेव हृदा स्वयम् ॥ १ ॥

पादलिप्तवप्पभाट्टेवज्जार्यैःपुटादयः ।

प्रभावकाः पुराभूवन्सूरयो दूरितारयः ॥ २ ॥

(नाधुनास्ति कोपि, ततस्ते सर्वलक्षणसंपन्नं जैनशा-  
सनप्रभावकं मोढब्राह्मणस्य चाविगनाम्नः सुतं चाङ्गदेवं  
तन्मातुः पाहिणीनान्याः समभ्यर्थ्य शिष्य सोमचन्द्र-  
नामानंरुतन्तः । पुनरपि मुनिचन्द्रेण सह गोचरचर्या  
गतेन तेन कस्यापि सोमाख्यदरिद्रतरवाणेनो गृहद्वार-  
पुञ्जं हेमरूपं दृष्टं ततो हेमचन्द्र इति नामतस्य चक्रुर्गु-  
राः । दशान्देनापि निःशङ्केन तेन सिद्धरानायाशीर्दिता)

१५८ ९ सगाराई. टि. (गङ्गावररुतनण्डश्रीरुनृपचरित्रसर्गे ।  
यदुल्लोक्षः सङ्गारनामा राजा जीर्णदुर्गपुरे )



शृङ्गारः शास्त्रविद्यानां भृङ्गारः सद्रुणाम्भसाम् ।  
 अङ्गारः शत्रुयूपानां खङ्गारः समभून्नृपः ॥ ६७ ॥  
 प्रभासपत्तने येन गृहीत्वा यवनभूपतीन् ।  
 श्रीसोमनाथप्रासादजर्णोद्धारः कृतः कलौ ॥....  
 सुराष्ट्रदेशसाम्राज्यसिंहासनमुखस्थिते ।....  
 तस्याभूत्तनयः श्रीमाञ्जयसिंह इति श्रुतः ।  
 येन यावनराजैर्भयं विवदिता रणे ॥ ७७ ॥  
 गिरिनारायणगिरौ जयसिंहेतिगर्जति ।  
 प्रतिभूपतिसारङ्गा व्यद्ववन्विदिशो दिशः ॥ ७८ ॥  
 तस्मान्मोलकसिंहोभूद्विभूतेरास्पदं सताम् ।  
 यस्याभिधानमात्रेण व्यद्ववन्दैन्यवारणाः ॥ ७९ ॥...  
 तस्मान्मोलकसिंहेन्द्रादाविरासीञ्जयन्तवत् ।  
 श्रीमान्मिलिङ्गभूजानिर्यो रणे शत्रुमृत्युदः ॥ ८२ ॥  
 तस्मिन्मिलिङ्गभूपाले सुराष्ट्रवरणोत्तलम् ।  
 पालयत्यरिभूपानां बलं विगलतां गतम् ॥ ८५ ॥ ....  
 योहम्मदसुरत्राणं निजदुर्गग्रहाग्रहम् ।  
 न्यगृहीच्च गृहीततृणं तत्सर्वस्वं समग्रहीत् ॥ ८८ ॥  
 तस्मादुदभवच्चन्द्रात्प्रकाश इव नन्दनः ।  
 महोपाल इति ख्यातः सार्वयाभिधया भुवि ॥ ८९ ॥  
 (इत्यादि टिप्पणं प्रतिप्रबन्धं बहु दर्शनीयमपि त्रि-  
 स्तरादिभयादलं कृतम् ॥ )

